अमित खान- हिन्दी पल्प फिक्शन का बेहद मशहूर और सबसे युवा चेहरा
hindustantimes
अमित खान
मैडम नताशा
का प्रेमी
हिन्दी बेस्टसेलर लेखक
ज़रा सोचिये - क्या ऐसा संभव है, जिसका मर्डर होने वाला हो, खुद वही अपने मर्डर की योजना तैयार करे ?
जी हां - अमित ख़ान के रहस्यमयी रचना संसार में ऐसा भी संभव है ।
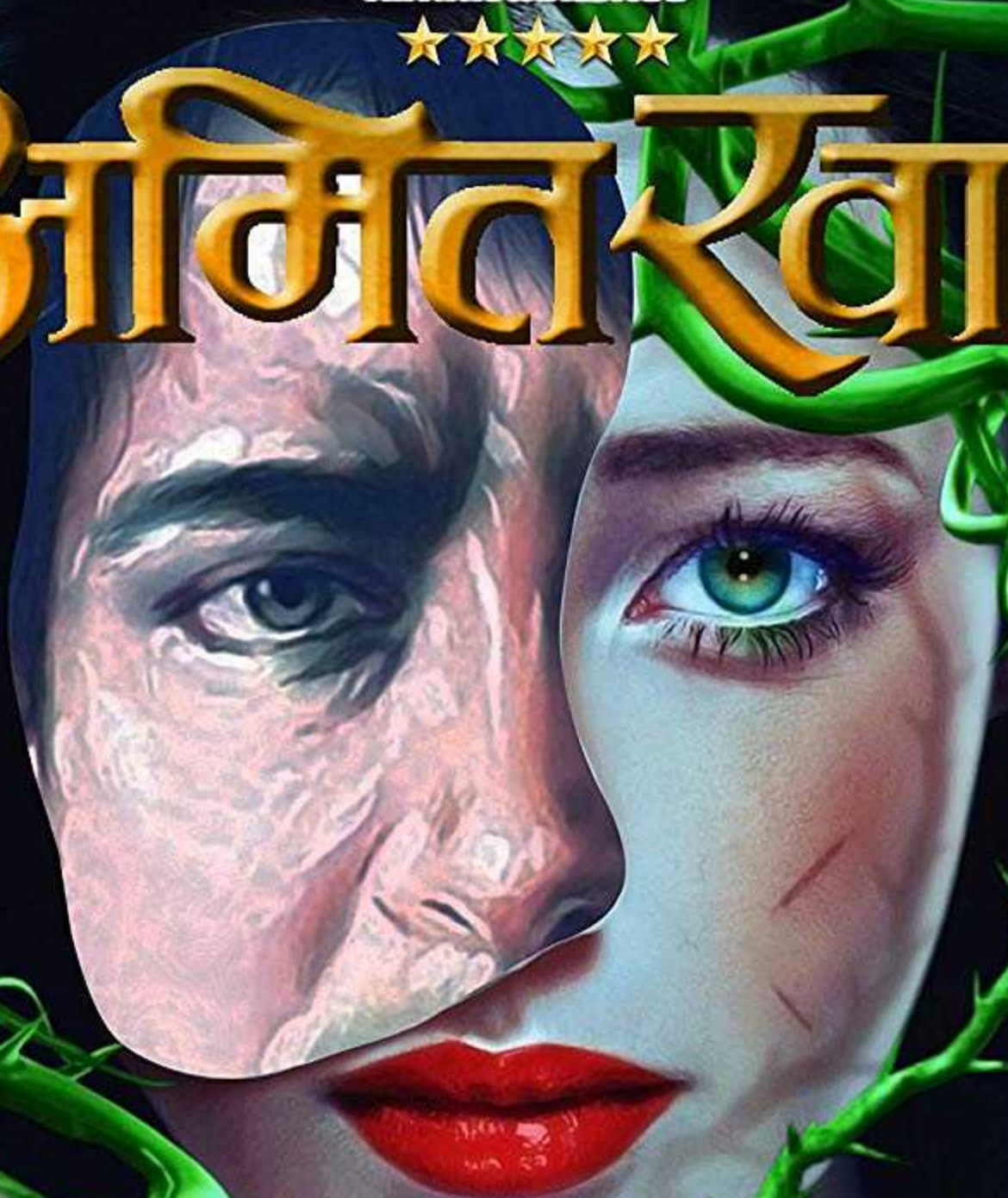
एक

मेरी किस्मत शुरू से ही खराब रही।

हालांकि इस दुनिया में एक लड़की होना ही अपने आपमें सबसे बड़ा अभिशाप है।

जबकि मैं तो लड़की भी थी और बदकिस्मत भी।

यानी दोनों अवगुण मेरे अन्दर थे।

ज़रा सोचिये, ऐसी हालत में मेरे ऊपर क्या गुज़री होगी।

सबसे पहले मैं आपको अपना नाम बताती हूँ।

नताशा शर्मा!

यही मेरा नाम है।

अपने नाम की तरह ही मैं बहुत खूबसूरत थी।

मेरा जन्म गोरखपुर के 'अली नगर' मोहल्ले में हुआ। अली नगर, जो अब 'आर्य नगर' के नाम से जाना जाता है। मेरी बदकिस्मती की शुरूआत तो तभी हो गयी थी, जब मेरे जन्म लेते ही मेरे पिता का देहावसान हो गया।

मेरे पैदा होने की खबर सुनकर वह साइकिल पर जल्दी-जल्दी हॉस्पिटल की तरफ दौड़े चले आ रहे थे, तभी उनकी साइकिल का एक एम्बेसडर कार से बहुत भीषण एक्सीडेन्ट हुआ और वह तत्काल मारे गये।

मेरी मां ने अभी मेरी शक्ल भी नहीं देखी थी कि उससे पहले ही उन्हें अपने सुहाग के उजड़ जाने की सूचना मिली।

उनकी चीख निकल पड़ी।

वह पछाड़े खा-खाकर रो पड़ीं।

उनके दिल-दिमाग पर कैसा भीषण वज्रपात हुआ होगा, उसका आप सहजता से अनुमान लगा सकते हैं।

पैदा होते ही मैं सबकी नफरत का निशाना बन चुकी थी।
हर किसी ने मुझे सुलगती आंखों से देखा।
"अरे नागिन है, नागिन।"
"अरे जन्मजली है। पैदा होते ही अपने बाप को खा गयी।"
यह विष में बुझे वो ताने थे, जो पैदा होने पर मुझे आस-पड़ोस की औरतों से सुनने को मिले।
मेरी मां ने कई दिन तक मेरी शक्ल भी नहीं देखी।
जब मेरा रोते-रोते बुरा हाल हो गया, तो पड़ोस की ही एक औरत ने मुझे जबरदस्ती मां की गोद में डाल दिया था। बेचारी मां, वह भी आखिर कब तक मेरा रोना देखती।
कब तक मुझसे नफरत करती।
आखिरकार वो एक 'मां' थी।
थक-हारकर उसने मुझे मेरे नसीब के साथ कबूल कर ही लिया।
यही उसकी मजबूरी थी।

□□□

फिर मुझे एक घटना और याद आती है, जिसका मेरे जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।
आज सोचती हूँ, अगर वो घटना मेरे जीवन में न घटी होती, तो ज्यादा बेहतर रहता।
गोरखपुर में एक बहुत प्रसिद्ध 'गोरखनाथ मंदिर' है। वह मंदिर कई एकड़ भूमि में फैला है और उसका प्रांगण भी अत्यंत विशाल है। उस 'गोरखनाथ मंदिर' में हर वर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर एक बहुत बड़ा धार्मिक मेला लगता है, जो 'खिचड़ी मेला' के नाम से प्रसिद्ध है।
उस मेले में दूर-दूर से साधु आते हैं।
भक्तगण आते हैं।
उन दिनों में उस मंदिर की भव्यता और वहां की गहमा-गहमी देखते ही बनती है।
तब मेरी आयु सिर्फ छः वर्ष थी, जब मैं अपनी माँ के साथ उस खिचड़ी मेले में गयी।
बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूंछे और गेरुए वस्त्र धारण किये साधुओं को देखकर मेरे शरीर में सिहरन दौड़ जाती। मैं अपनी माँ की साड़ी पकड़कर बहुत सहमी-सहमी सी चल रही थी। वैसे भी बच्चों की तरह शरारतें तो मैं कर ही नहीं पाती थी।
हालातों के चक्रव्यूह में उलझकर मैं बचपन से ही बहुत गंभीर हो गयी थी।
मेरी माँ ने मुझे एक लम्बे-चौड़े डील-डौल वाले साधु के सामने ले जाकर बिठा दिया। उस साधु की आँखें अंगारे की तरह धधक रही थीं। गले में रुद्राक्ष की ढेर सारी मालाएं थीं। चौड़े मस्तक पर टीके वाली जगह चन्दन से 'त्रिशूल' बना था और उसके आसन के नजदीक ही पीतल का चमकदार कमंडल रखा हुआ था।
माँ ने सबसे पहले उसके कमंडल में पांच रुपये श्रद्धास्वरूप डाले।
"महात्मन !" फिर वो उसके सामने हाथ जोड़कर बोलीं- "आप मेरी इस बेटी की हस्तरेखा देखकर बतायें कि इसके भविष्य में क्या है ?"
साधु की लाल सुर्ख आँखें तत्काल मेरे चेहरे पर जाकर टिक गयीं।

उसकी आँखों में ऐसा न जाने क्या था, मैं और भी ज्यादा डर गयी तथा कसकर माँ से लिपट गयी।

जबकि मेरा चेहरा देखते-देखते उस साधु की आँखों में अब और भी लाल-लाल डोरे उभर आये थे। वह मेरे मस्तक की रेखाएं पढ़ रहा था।

"अभागी है, अभागी।" एकाएक वो विषधर की भांति फुंफकार उठा- "इसकी किस्मत में प्रेम नहीं है। यह सदा पुरुष के प्रेम को तरसेगी। पुरुष का प्रेम, वह चाहे पिता के रूप में हो या प्रेमी के रूप में, इसे कभी पुरुष का प्रेम नहीं मिलेगा।"

"नहीं! नहीं! !" मैं चीख उठी- "वह साधु पागल है। मूर्ख है।"

मैं एकदम साधु के सामने से उठी और भीड़ की तरफ भाग खड़ी हुई।

माँ ने दौड़कर किसी तरह मुझे पकड़ा तथा फिर जोर से मेरे गाल पर एक झन्नाटेदार झापड़ रसीद कर दिया।

मैं रो पड़ी।

मैं आज तक नहीं समझ पायी, माँ ने मुझे वो झापड़ क्यों मारा था?

क्या इसलिये, क्योंकि मैंने उस साधु को अपशब्द कहे?

या फिर इसलिये, क्योंकि मैं अभागी थी?

बहरहाल फिर साधु के वह शब्द तमाम जिन्दगी मेरा पीछा करते रहे।

कुछ महीनों बाद ही मेरा स्कूल में एडमिशन हो गया और मैं पढ़ने के लिये जाने लगी।

लेकिन स्कूल में मास्टर भी मुझसे द्वेष भावना रखते और बात-बात पर मेरी पिटाई कर डालते।

सबसे बड़ी बात ये है, मैं अपराधबोध से इतनी बुरी तरह ग्रस्त थी कि माँ से भी शिकायत नहीं कर पाती थी।

मुझे यही लगता, सारा कसूर मेरा है।

मैं बदकिस्मत क्यों हूँ?

कुल मिलाकर 'पुरुष-जाति' बचपन से ही मेरे लिये कौतूहलता का कारण बनने लगा।

मैं बचपन से ही पुरुषों को इस तरह देखती, जैसे वह दूसरे लोक की कोई चीज हों।

जैसे उनमें कोई खास बात है। उन सब बातों ने पुरुषों के प्रति मेरे दिल में चुम्बकीय आकर्षण पैदा कर दिया था।

□□□

फिर धीरे-धीरे हालात बदलने शुरू हुए।

मैं जैसे-जैसे बड़ी होने लगी, ठीक वैसे-वैसे मेरा रूप निखरता चला गया।

मां ने भी अब गृहस्थी चलाने के लिये गोरखपुर के एक बहुत बड़े सेठ के यहां आया की नौकरी कर ली थी।

मेरी उम्र अब चौदह वर्ष हो चुकी थी।

उम्र की उस दहलीज तक पहुंचते-पहुंचते मैं बहुत कड़क जवान लड़की बन गयी। मेरे हाथ-पैर मखमली थे और दूध जैसे सफेद थे।

सुराहीदार गर्दन।

रेशम से मुलायम सुनहरी रंगत लिये भूरे बाल।

मैं अपने कूल्हों में ख़म देते हुए जब चलती, तो उन पुरुषों के मुंह से कराहें फूट-फूट जातीं, जो कभी मुझसे द्वेष भावना रखते थे।

वह मुझे बड़े हसरत भरी निगाहों से देखते।

उनकी निगाहें मेरे अंग-प्रत्यंग पर घूमतीं।

वह मेरे हवा में उड़ने के दिन थे। मेरी आँखों में अब गजब चमक पैदा हो गयी थी। मुझे जब भी 'खिचड़ी मेले' में मिले उस साधु की भविष्यवाणी याद आती, जिसने यह कहा था कि मेरी किस्मत में 'पुरुष का प्रेम' नहीं है, तो मैं हंस पड़ती।

आज की तारीख में इतने पुरुष मेरे आगे-पीछे मधुमक्खियों की तरह मंडराते थे कि अगर मैं उन्हें लिफ्ट देना शुरू करती, तो मेरे आसपास पुरुषों की एक बड़ी भीड़ जमा हो जाती।

जादूगर को तो जादूगरी की कला सीखने में सालों लग जाते हैं, जबकि एक औरत तो पैदाइशी ही जादूगर होती है। ऊपर से अगर वो खूबसूरत भी हो और अपने हुस्न को सोने की तश्तरी में रखकर परोसना भी जानती हो, तब तो कहने ही क्या। तब तो उसकी बल्ले बल्ले। फिर तो वह बड़े से बड़े जादूगर, सॉरी मर्द की भी ऐसी तेसी फेर सकती है।

सच तो यह है कि औरत से बड़ा काबिल और करिश्माई जीव दुनिया में दूसरा कोई नहीं। औरत में ही वो क़ाबलियत होती है कि वह किसी भी अच्छे-भले मर्द को बेवकूफ बना सकती है और अगर उसकी किसी पर नज़रे-इनायत हों, मेहरबानी हो, तो वह बेवकूफ को भी अच्छा-भला मर्द बना सकती है।

सबसे दिलचस्प बात ये है, मेरा यह हाल सिर्फ चौदह साल की उम्र में था।

अब आप सावधान हो जाइये, क्योंकि मैं आपकी मुलाक़ात अपने सबसे पहले 'प्रेमी' से कराने जा रही हूँ।

प्रेमी, हालांकि मैं नहीं जानती कि उसके लिये'प्रेमी' का संबोधन कितना उपयुक्त है।

फिर भी मेरे प्रति उसका आकर्षण तो था ही।

मेरे पहले प्रेमी का नाम था- 'हरीश सोढी'। वैसे सब उन्हें 'सोढा साहब' कहते थे।

सोढा साहब की उम्र सैंतीस-अड़तीस साल थी। उनकी दो मेरे से भी बड़ी-बड़ी बेटियाँ थीं, एक बेटा था। इसके अलावा अच्छी-खासी बीवी थी। यानि सोढा साहब का भरा-पूरा परिवार था।

आप चौंक रहे होंगे, जब सोढा साहब मेरे मुकाबले इतने उम्रदराज व्यक्ति थे, तो वह मेरे प्रेमी कैसे हुए?

जनाब, मर्द की फितरत बड़ी रंगीन होती है। वह जैसे-जैसे उम्र की ढलान की तरफ बढ़ता है, वैसे-वैसे उसके 'पर' फड़फड़ाने लगते हैं। तबीयत मचलने लगती है और वह औरत के मामले में बड़ा नदीदा बन जाता है।

ऐसे ही सोढा साहब थे।

औरत की 'सेक्स अपील' को देखकर अन्दर ही अन्दर फड़फड़ाने वाले।

बहरहाल मुझे ऐसे कई वाकये याद आते हैं, जब वो बिल्कुल भूखों की तरह मुझे देखते थे। उनकी निगाह मेरे भारी-भरकम उरोजों पर जाकर टिक जाती थीं और फिर धीरे-धीरे फिसलती हुई मेरी जाँघों तक का जुगाराफियाँ नापती चली जातीं।

अलबत्ता वो मुझे सबके सामने ‘बेटी-बेटी’ कहकर बुलाते थे।
देर तक बात करते।
कभी मुझे टाफियां लाकर देते, तो कभी मेरे लिये फ्रॉक ले आते। या कभी अपने बच्चों के साथ सिनेमा ही ले जाते।
यानि सोढा साहब की मेरे ऊपर ख़ास नज़रे इनायत थी।

□□□

फिर एक घटना घटी।
जबरदस्त घटना।
वह घटना ऐसी थी, जिसने मुझे अन्दर तक झंझोड़कर रख दिया।
गर्मी की छुट्टियों के दिन थे। सोढा साहब की बीवी अपने बच्चों के साथ एक महीने के लिये मायके जा चुकी थी। और अब सोढा साहब घर पर अकेले ही रहते थे। उनका प्रॉपर्टी का धन्धा था, इसलिये वैसे भी उनका ज्यादा समय घर पर ही गुजरता था।
मैं भी घर पर अकेली होती, क्योंकि मम्मी तो सुबह ही अपनी ‘आया’ की नौकरी करने निकल पड़ती थीं।
उस दिन खूब चिलचिलाती हुई धूप पड़ रही थी।
तभी सोढा साहब घर पर आ धमके।
“हैलो माई हनी !” उन्होंने आते ही बड़ी गरमजोशी के साथ कहा।
“हैलो अंकल !”
“तुम भी घर पर पड़े-पड़े बोर हो जाती होगी।”
“यह तो है अंकल।”
“देखो मैं तुम्हारे लिये क्या लाया हूँ ?”
मैंने देखा, वो उस दिन भी मेरे लिये काफी सारी चाकलेट लेकर आये थे।
चाकलेट देखते ही मेरी आँखों में विलक्षण चमक कौंध उठीं। मैंने झपटकर उनके हाथ से सभी चाकलेट ले ली और खाने लगी।
तब-तक सोढा साहब अन्दर से दरवाजा बंद कर चुके थे।
“मैं भी दअरसल पड़े-पड़े बोर हो रहा था।” सोढा साहब ने कहा- “इसलिये मैंने सोचा, क्यों न तुम्हारे पास चलूँ।”
“आपने अच्छा किया अंकल, आइए बैठिये।”
“बैठने से पहले मैं टी.वी. ऑन करता हूँ। आज हम दोनों एक साथ बैठकर टी.वी. देखेंगे।”
“ठीक है अंकल !”
मैंने गर्दन हिलाई।
सोढा साहब ने अब तक टेलीविज़न खोल लिया और चैनल बदलने लगे। वह शायद अपना कोई पसंदीदा प्रोग्राम ढूंढ रहे थे।
जल्द ही उन्होंने एक इंग्लिश फिल्म पर टी.वी. सेट कर दिया।
वह इंग्लिश फिल्म भी काफी रोमांटिक और उस समय भी परदे पर काफी गरमा-गरम

दृश्य चल रहा था।
बाथरूम का सीन था।
एक औरत और मर्द कसकर चिपटे हुए थे।
दोनों खड़े थे। औरत ने अपना घुटना मर्द के पेट में इतनी बुरी तरह घुसाया हुआ था, मानो उसकी अंतड़ियां फाड़ डालना चाहती हो।
उसके हाथ औरत की पीठ पर सरसरा रहे थे।
आहें-कराहें फूट रही थीं।
मैं अपलक उस दृश्य को देखने लगी।
मैं बच्ची जरूर थी लेकिन प्रेम की उस भाषा को मैं तब तक खूब अच्छी तरह समझने लगी थी। इतना ही नहीं, वह दृश्य मुझे आकर्षित भी करते थे।
सोढा साहब ने वहीं मेरे पास बैठकर वो फिल्म काफी देर तक देखी।
फिर जब फिल्म समाप्त हो गयी, उन्होंने टी.वी. बंद कर दिया।
"अब तुम थोड़ी देर आराम कर लो।" सोढा साहब बोले।
मैं वही बिस्तर पर लेट गयी।
एक बात मैंने नोट नहीं की। फिल्म देखते-देखते सोढा साहब की आँखों में लाल-लाल डोरे उभर आये थे।

□□□

मेरी कब आँखें मुंद गयी, मुझे पता तक न चला।
थोड़ी ही देर बाद मैंने अनुभव किया, सोढा साहब भी वहीं मेरे बराबर में लेट गये थे।
मुझे कुछ भी अजीब न लगा।
मैं उस समय चौंकी, जब सोढा साहब के हाथ धीरे-धीरे मेरे भारी-भरकम उरोजों पर सरसराने लगे।
मेरे शरीर में ऐसी सनसनाहट दौड़ गयी, जैसे एक साथ हजारों चीटियाँ मेरे बदन में गर्दिश करने लगी हों।
वह अद्‌भुत एहसास था।
वैसा एहसास मुझे जिन्दगी में पहले कभी नहीं हुआ था।
फिर सोढा साहब के हाथ सरसराते हुए मेरी जाँघों तक पहुँच गये।
मेरी आँख भक्क से खुल गयी।
सोढा साहब सकपकाये।
वह खिसियाने हो गये।
"ल... लगता है... तुम्हें नींद नहीं आ रही।" वह बोले।
मैंने कुछ न कहा।
मैं सिर्फ अपलक उनकी तरफ देखती रही।
मेरे देखने के अंदाज में 'चुभन' थी।
"सो जाओ... थोड़ी देर बाद मैं तुम्हें खुद जगा दूंगा।"
मैंने अपनी आँखें वापस बंद कर लीं।

सोढा साहब कुछ देर बिल्कुल खामोश मेरे बराबर लेटे रहे। शायद वो यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे थे, उनकी उस हरकत की मेरे ऊपर क्या प्रतिक्रिया हुई है।

जब मैं थोड़ी देर कुछ न बोली, तो उनका हाथ दोबारा मेरे शरीर पर सरसराने लगा।

इस मर्तबा मैंने कुछ न कहा।

मेरे अन्दर धीरे-धीरे आग-सी भरती चली जा रही थी।

तभी सोढा साहब ने हिम्मत दिखाकर मेरा एक प्रगाढ़ चुम्बन भी ले लिया।

मैं तब भी शान्त लेटी रही।

इससे सोढा साहब का हौसला बहुत बढ़ गया। अब वह बिल्कुल खुलकर खेलने के मूड में आ गये।

उन्होंने आनन-फानन मेरे सारे कपड़े उतार डाले।

"आइ लव यू!"

"आइ लव यू!!"

सोढा साहब के शब्द मेरे कानों में मिश्री घोलने लगे।

वह सुखद अनुभूतियाँ मुझे पागल बनाए दे रही थीं।

"सचमुच तुम बहुत ज्यादा अच्छी बच्ची हो, बहुत ज्यादा।" सोढा साहब बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाए।

वह पागल हो रहे थे।

जो 'पुरुष जाति' सदा से मेरे लिये कौतुहलता का कारण रही थी, उसी 'पुरुष जाति' का एक नया रूप अब मुझे देखने को मिल रहा था।

थोड़ी देर बाद ही मेरे हलक से एक बहुत तेज चीख निकली, जिसने पूरे घर को कंपकपा कर रख दिया।

□□□

वह मेरी जिन्दगी का पहला सहवास था।

वह पहली बार था, जब मैं किसी पुरुष के साथ हमबिस्तर हुई। हालांकि उस पहले सहवास के दौरान मुझे बहुत भयंकर पीड़ा झेलनी पड़ी थी, मगर उससे कहीं ज्यादा सुख की अनुभूतियां मुझे हुईं। ख़ासतौर पर जब सहवास क्रिया अपने चरम बिंदु पर थी, तो उस समय के असीम आनंद को तो शब्दों में वर्णित भी नहीं किया जा सकता।

मैं मानो इस क्षण हवा में उड़ रही थी।

मेरी कल्पनाओं को 'पर' लग गये थे।

सोढा साहब भी अब हरदम मेरे आगे-पीछे मंडराते रहते थे। अलबत्ता उनकी आँखें अब मेरे सामने झुकी-झुकी रहतीं।

उसके बाद उन्होंने मेरे साथ कई मर्तबा सेक्स किया।

फिर एक दिन वह मेरे पास आये और उन्होंने मुझे कुछ सफ़ेद गोलियां दीं।

"यह क्या है?" मैंने पूछा।

"यह कुछ खाने की गोलियां हैं।" सोढा सागब संजीदा अंदाज में बोले- "तुम इनमें से एक गोली रोज खा लिया करो, लेकिन इन गोलियों के बारे में तुम्हारी मम्मी को कुछ पता

न चलने पाये।”
“इन गोलियों को खाने से क्या होगा?” मैंने पूछा।
“कुछ नहीं होगा। इन गोलियों को खाने से बस तुम्हारी सेहत ठीक रहेगी तथा तुम और भी ज्यादा ख़ूबसूरत लगने लगोगी।”
“मुझे नहीं खानी यह गोलियां।” मैंने आवेश में वह गोलियां सामने बिस्तर पर फेंककर मारी।
“बेवकूफों जैसी बात मत करो।” सोढा साहब ने वह गोलियां उठा लीं और मेरी तरफ पलटे- “अगर तुम एक गोली रोज खा लिया करोगी, तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायेगा ?”
“मैंने कहा न... ।” मैं गुर्रायी- “मुझे नहीं खानी यह गोलियां।”
“देखो… बच्चों जैसी जिद मत करो।” सोढा साहब मुझे समझाते हुए बोले- “अब तुम पहले जैसी बच्ची नहीं रही हो।”
“फिर कैसी बच्ची हो गयी हूँ मैं ?”
सोढा साहब से एकाएक मेरे उस सवाल का जवाब देते न बना।
“यानि तुम यह गोलियां नहीं खाओगी ?”
“नहीं, बिल्कुल नहीं।”
“जानती हो नताशा, अगर तुमने यह गोलियां नहीं खायी।” सोढा साहब इस बार थोड़ा आवेश में बोले- “तो क्या होगा ?”
“क्या होगा ?”
“त...तो बहुत बुरा हो जायेगा।” सोढा साहब का शुष्क स्वर। उन्होंने अपनी गर्दन मेरी तरफ से घुमा ली- “त...तो तुम्हारा पेट फुल जायेगा। मालूम है, पेट फूलने का क्या मतलब है ?”
मैं सन्न रह गयी।
मेरे शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।
मैं खूब अच्छी तरह जानती थी कि पेट फूलने का क्या मतलब है। मैंने उस तरह के बहुत से किस्से सुने थे।
“क्या सोच रही हो ?”
“अ… अगर मैं यह गोलियां खाऊँगी।” मैं गंभीरतापूर्वक सोढा साहब की तरफ देखते हुए बोली- “तो मेरा पेट नहीं फूलेगा ?”
“नहीं, बिल्कुल नहीं। इसीलिये तो मैं यह गोलियां तुम्हें दे रहा हूँ।”
मैंने अब चुपचाप वह गोलियां पकड़ लीं।
जबकि सोढा साहब बड़े खिसियाने ढंग से हँसे।
उन्होंने मुझे अपनी बाहों में समेट लिया। मेरे भरे-भरे उरोज कसकर अपने सीने से चिपटा लिये और मेरे गाल का एक प्रगाढ़ चुम्बन लिया।
“तुम सचमुच बहुत अच्छी बच्ची हो, बहुत ज्यादा अच्छी। अपनी मम्मी को इन गोलियों के बारे में कुछ मत बताना। इन्हें कहीं छुपाकर रखना और यह देखो, मैं तुम्हारे लिये क्या लाया हूँ।” सोढा साहब ने अपनी जेब से चाकलेट का एक पूरा ‘गिफ्ट पैक’ निकालकर मेरी तरफ बढ़ाया।

"मुझे नहीं चाहिए यह चाकलेट !" मैंने एकाएक सोढा साहब के हाथ से वह 'गिफ्ट पैक' छीनकर बहुत जोर से सामने दीवार की तरफ फेंककर मारा- "मैं अब बच्ची नहीं रही हूँ, समझे !"

सोढा साहब बहुत विस्मित नेत्रों से मुझे देखते रह गये।

वह मेरे अंदर एक बड़े परिवर्तन की शुरूआत थी।

बड़े और हंगामाई परिवर्तन की शुरूआत।

□□□
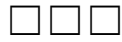
उस घटना के बाद भी हम दोनों ने कई बार सेक्स किया।

सोढा साहब अब मेरे साथ खुलकर हमबिस्तर होते थे और बार-बार इस बात को दोहराते थे, वह मुझसे 'प्रेम' करते हैं।

प्रेम!

मैं तब इस छोटे से शब्द की सार्थकता और गहराई अनुभव नहीं करती थी। मैं यही समझती थी, सोढा साहब जो करते हैं, वही प्रेम है। बहरहाल मेरे लिये यही बहुत बड़ी संतुष्टि की बात थी कि मुझे एक पुरुष का प्रेम मिल रहा था। फिर चाहे उस 'प्रेम' का रूप कितना ही वीभत्स क्यों न था। आखिर सोढा साहब की बदौलत ही मैं कभी-कभी उस साधु की भविष्यवाणी की खिल्ली उड़ा लिया करती थी, जिसने ये कहा था कि मेरे भाग्य में पुरुष का प्रेम नहीं है।

फिर एक घटना घटी, बहुत दिल दहला देने वाली घटना।

मैं 'गर्भनिरोधक गोलियां' बिल्कुल रूटीन से खा रही थी, फिर भी पता नहीं कैसे मासिक धर्म रुक गया।

मुझे तो इस बारे में ज्यादा जानकारी भी नहीं थी। दरअसल सोढा साहब ही मेरी इस बात का ज्यादा ख्याल रखते थे। जैसे ही उन्हें यह खबर हुई, उनके होश उड़ गये।

"क्या तुम रोजाना वह सफ़ेद गोलियां खाती हो ?" सोढा साहब मेरे ऊपर गुर्रा उठे।

"हाँ।" मेरे हाथ-पैर भी कांपे- "मैं तो रोजाना वह गोलियां खा रही हूँ।"

"तो फिर कैसे हुआ यह सब ?"

मैं चुप।

मेरा रंग बिल्कुल हल्दी की तरह पीला पड़ चुका था। यह बात ही मुझे दहला देने के लिये काफी थी कि मेरा पेट अब फूल जायेगा।

और सोढा साहब का मेरे से भी बुरा हाल था। मैं शर्त लगाकर कह सकती हूँ, मैंने अपनी जिन्दगी में सोढा साहब को पहले कभी इतना आतंकित नहीं देखा था, जितना उस दिन देखा। उनके चेहरे की रंगत बिल्कुल सफ़ेद फक्क पड़ चुकी थी। आँखों में हवाइयां थीं और होंठ कागज़ की तरह फड़फड़ा रहे थे।

वह बेचैनीपूर्वक इधर-उधर टहलने लगे।

"मुझे ही कुछ करना होगा।" वह बार-बार एक ही बात बड़बड़ा रहे थे- "जल्दी कुछ करना होगा।"

वह क्या करने वाले थे, यह मुझे भी मालूम न था।

□□□

उसी रात सोढा साहब ने मम्मी से बात की।

सोढा साहब का हर अंदाज निराला था। मक्खन लगाना तो वह खूब जानते थे।

रात के सवा दस बज रहे थे, जब सोढा साहब ने घर में कदम रखा। वह अपने साथ गुलाब जामुन भी लेकर आये थे।

"लीजिये बहन जी !"

मम्मी चौंकीं।

"अ... आप यह सब क्यों ले आये ?"

"कुछ भी नहीं है। दरअसल मैं घर आ रहा था कि तभी हलवाई ने आवाज दे ली।" सोढा साहब बोले- "अब कुछ-न-कुछ तो मुझे वहां से लाना ही था। आखिर यह भी तो मेरा ही घर है, सोचा यहाँ के लिये लेता चलूँ या फिर नहीं है यह मेरा घर ?"

"आप कैसी बात करते हैं भाई साहब !" मम्मी तुरंत बोलीं- "यह घर भला आपका क्यों नहीं है ? आपका ही तो है।"

मम्मी ने गुलाब जामुन का पैकिट पकड़ लिया।

"बैठिये।"

सोढा साहब जूते उतारकर वहीं लकड़ी की एक कुर्सी पर बैठ गये।

"जब से भाई साहब गुजरे हैं।" सोढा साहब बहुत अफसोसजनक लहजे में बोले- "तब से यह घर बहुत सूना-सूना रहने लगा है।"

सोढा साहब के उन शब्दों ने सीधे मम्मी के मर्म को स्पर्श किया।

वह उदास हो गयीं।

"मैं दरअसल आपसे कुछ कहने आया था बहन जी !"

"क्या ?"

"कल ही मैं प्रॉपर्टी के काम से जयपुर जा रहा हूँ।" सोढा साहब बोले- "काफी बड़ा काम है। अगर डील फाइनल हो गयी, तो यूं समझो कि इस बार मेरे वारे-न्यारे हो जायेंगे।"

"यह तो अच्छी बात है भाई साहब !"

"लेकिन मैं एक बात और सोच रहा हूँ।"

"क्या ?"

"इन गर्मियों की छुट्टियों में नताशा कहीं भी घूमने के लिये नहीं गयी।" सोढा साहब योजना के तार फैलाते हुए बोले- "मैं सोच रहा हूँ, क्यों न नताशा को इस बार मैं अपने साथ जयपुर ही ले जाऊं ? इसी बहाने वह भी जयपुर घूम आयेगी। वैसे भी मेरा सिर्फ तीन दिन का टूर है।"

"नहीं-नहीं !" मम्मी तुरंत बोलीं- "आप खामखाह परेशान हो जायेंगे भाई साहब !"

"इसमें परेशानी की क्या बात है ?" सोढा साहब ने कहा- "आखिर नताशा मेरी बेटी जैसी ही तो है। फिर आप तो जानती हैं, प्रॉपर्टी का काम भी कोई बहुत ज्यादा लंबा-चौड़ा नहीं होता। बस एक दो मीटिंग ही करनी पड़ती है।"

"लेकिन फिर भी आपको खामखाह दिक्कत होगी।"

"आप यूं कहिये कि आप नताशा को मेरे साथ भेजना नहीं चाहतीं।"

"यह आप क्या कह रहे हैं ? ऐसी बात नहीं है ।"

"तो फिर नताशा को मैं ले जा रहा हूँ ।" सोढा साहब अधिकारपूर्वक बोले- "मेरी आप चिंता न करें । मैं इसे सब संभाल लूंगा । इसी बहाने यह थोड़ा घूम भी लेगी । अभी बच्ची ही तो है । इसे थोड़ा घूमना-फिरना भी चाहिए ।"

"जैसा आप चाहें ।"

आखिरकार मम्मी ने मुझे जयपुर जाने की इजाजत दे ही दी ।

□□□

अगले दिन ही सोढा साहब मुझे लेकर जयपुर के लिये रवाना हो गये थे ।

जैसा कि आप समझ ही गये होंगे, सोढा साहब की जयपुर में कोई प्रॉपर्टी डील नहीं थी । वह सिर्फ मुझे गोरखपुर से दूर ले जाना चाहते थे, ताकी मेरे गर्भधारण की खबर वहां न फ़ैलने पाये ।

जयपुर पहुंचकर वो अपने एक दोस्त के घर ठहरे ।

दोस्त का नाम राकेश था । राकेश सत्ताइस-अट्ठाइस साल का एक तंदरुस्त नौजवान था । वह दो कमरों के एक फ्लैट में अकेला रहता था । अभी उसकी शादी नहीं हुई थी और सबसे बड़ी बात ये है कि प्रॉपर्टी के धंधे में वो सोढा साहब को अपना गुरु मानता था ।

उस रात उन दोनों दोस्तों ने बाहर वाले कमरे बैठकर खूब जमकर शराब पी ।

"एक बात बोलूँ सोढा साहब !" राकेश नशे की पिनक में बोल रहा था ।

मैं अंदर वाले कमरे में थी और लेटी हुई थी । उन दोनों की बात करने की आवाजें मुझे वहां तक सुनाई पड़ रही थीं ।

"बोलो !" सोढा साहब की आवाज- "क्या कहना चाहते हो ?"

"य... यह आपने ठीक नहीं किया सोढा साहब ! अभी उस बच्ची की उम्र ही क्या है ?"

"बेकार की बात मत करो ।" सोढा साहब गुर्रा उठे- "मैं तुम्हारा भाषण सुनने के लिये यहाँ नहीं आया हूँ । अब जो होना था, हो चुका है ।"

"आप मामले की गंभीरता को नहीं समझ रहे हैं सोढा साहब !" राकेश बोला- "कोई भी लेडी डॉक्टर आसानी से इस केस को हैंडल करने के लिये तैयार नहीं होगी ।"

"क्यों ? तुम्हारी वो डॉक्टर सहेली कहाँ है, जिससे तुम जल्दी शादी करने वाले हो?"

"अब इस बारे में, मैं उससे मदद लूं ?" राकेश चौंका ।

"क्यों ? क्या हुआ?"

"ल... लेकिन अगर मैंने उसे यह सारी बात बताई सोढा साहब, तो उसकी निगाह में मेरे करैक्टर का कितना गलत इम्प्रेशन पड़ेगा । वह क्या सोचेगी कि मेरे दोस्त कैसा-कैसा काम करते हैं । आखिर उस मासूम लड़की की उम्र... ।"

"फिर उम्र को ले बैठे ?" सोढा साहब दहाड़े- "अब अपनी यह बक-बक बंद करो । मैं पहले ही बहुत टेंशन में हूँ । एक बात तुम खूब अच्छी तरह समझ लो राकेश ! मेरी इस समस्या का समाधान तुमने ही ढूँढना होगा । मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि तुम्हारी वो डॉक्टर सहेली इस केस को हैंडल करती है या फिर तुम किसी दूसरी डॉक्टर को पकड़कर लाते हो, लेकिन डॉक्टर का इंतजाम तो तुमने ही करना होगा।और इतना भी

बड़ा केस नहीं है, जितना तुम इसे बना रहे हो। अगर बच्ची की उम्र कम न होती, तो मैं ही इसे कोई टेबलेट खिला देता। लेकिन उम्र की वजह से मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता, इसलिए डॉक्टर की बात कर रहा हूँ।"

राकेश के चेहरे पर बेचैनी झलकने लगी।

शायद सोढा साहब की बात ने उसे बहुत उलझन में डाल दिया था।

शराब के गिलासों की खनखनाहट मुझे निरंतर सुनाई दे रही थी।

"यह काम इतना आसान नहीं है।" राकेश काफी देर बाद बोला।

"मैं जानता हूँ, इसीलिये तुम्हारे पास आया हूँ।"

"क... क्या मतलब ?"

"मतलब बहुत साफ़ है राकेश। तुम मानो या न मानो, लेकिन यह सच है कि इस काम को तुम्हारी वो डॉक्टर सहेली ही बेहतर अंजाम दे सकती है। अगर तुम किसी दूसरी लेडी डॉक्टर को पकड़ोगे, तो उससे बदनामी का पूरा खतरा है। राज खुलने का पूरा खतरा है, जोकि मैं नहीं चाहता।"

"लेकिन मैं उससे यह सब कैसे कहूं ?"

"हाँ, यह बात जरूर विचार करने लायक है।"

वह दोनों बाहर वाले कमरे में बैठे न जाने कितनी देर तक शराब पीते रहे।

उन दोनों के बीच जबरदस्त टेंशन का माहौल था।

गिलासों की खनखनाहट और आपस में न जाने क्या-क्या बड़बड़ाने की आवाजें मुझे निरंतर सुनाई दे रही थीं।

लेकिन अंत में सोढा साहब ही जीते।

वो आखिरकार राकेश को इस बात के लिये तैयार करने में कामयाब हो ही गये कि वह काम उसकी डॉक्टर सहेली ही करेगी।

उधर!

मेरा भी दहशत से कुछ कम बुरा हाल न था।

मेरी निगाहें बार-बार अपने पेट पर आकर ठहर जाती थीं।

□□□

अगले दिन सुबह-ही-सुबह वहां सत्ताइस-अट्ठाइस वर्ष की एक लड़की ने कदम रखा।

वह शक्ल से ही बहुत कुलीन परिवार की नजर आती थी। डॉक्टर थी और राकेश की भावी पत्नी थी।

सोढा साहब उस दिन जान-बुझकर फ्लैट से गायब रहे।

लड़की ने आने के बाद सबसे पहले मेरा चेकअप किया। उसकी आँखों में मेरे लिये ढेर सारी हमदर्दी के निशान थे।

उसने धीरे-धीरे मेरा पेट दबाकर देखा और आँखें चैक की।

"तुम्हारे पेट में दर्द तो नहीं हो रहा ?" वह अचानक मुझे निहारते हुए बोली।

"नहीं !"

मेरी गर्दन आहिस्ता से इनकार में हिली।

“खट्टी-खट्टी डकारें आ रही हैं ?”

“नहीं, मुझे कुछ नहीं हो रहा।” मेरी एकाएक बहुत जोर से रुलाई फूट पड़ी। मैं कसकर उस लड़की से चिपट गयी- “मुझे बस बहुत डर लग रहा है आंटी। म... मैं ठीक तो हो जाऊंगी न ?”

लड़की की आंखों में भी आंसुओं की नन्हीं-नन्हीं बूँदें उमड़ आयीं।

उसने अपनी रुलाई को फूट पड़ने से बड़ी मुश्किल के साथ रोका।

“चिंता मत करो।” उसका बहुत स्नेह भरा हाथ मेरे बालों में फिरने लगा- “तुम्हें कुछ नहीं होगा। मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगी।”

लड़की ने मुझे आहिस्ता से बिस्तर पर लिटा दिया।

फिर वो वापस बाहर वाले कमरे में पहुँची, जहाँ राकेश मौजूद था।

“तुम्हारा दोस्त आदमी है या जानवर।” वह बाहर पहुंचते ही राकेश पर बरस पड़ी। उसकी आवाज बेहद गुस्से से भरी हुई थी- “कितनी मासूम-सी और भोली बच्ची है। उस दरिन्दे को इसकी उम्र का ख्याल नहीं आया ?”

‘अब यह सारी बातें छोड़ो।”

“क्यों छोड़ दूं यह सारी बातें ?” वह कर्कश लहजे में बोली- “क्या इतना सब कुछ करते समय उसने फूल जैसे चेहरे की तरफ़ भी नहीं देखा। तुम सब मर्द एक जैसे होते हो। बदजात ! बेगैरत ! लड़की को देखते ही लार घुटनों तक टपकने लगती है।”

“इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।” राकेश भी चिल्ला उठा- “मैंने कुछ नहीं किया।”

“क्यों नहीं किया तुमने कुछ ? तुमने उसके पाप पर पर्दा डालने का जघन्य अपराध किया है।”

“लानत है, मैं इसीलिये इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहता था।”

“क्या इसके माँ-बाप नहीं हैं ?”

“सिर्फ माँ है।” राकेश बोला- “बाप का तो पैदा होते ही देहावसान हो गया था।”

“तभी तो...।”

“क्या तभी तो...?”

“तभी तो वह मामला यहाँ तक पहुँचा। अगर इस बच्ची का बाप ज़िंदा होता, तो तुम्हारे सोढा साहब की बत्तीसी बिखेर देता। तब तुम्हारे सोढा साहब को पता चलता कि ऐसे कुकर्म करने का क्या फल मिलता है ? कहीं तुम्हारे सोढा साहब ने इसकी माँ के साथ भी तो...।”

“अब तुम हद से आगे बढ़ रही हो।” राकेश चिल्ला उठा।

“क्यों ? इसमें हद से आगे बढ़ने की क्या बात है ? जो आदमी यौन-शोषण करने के लिये इतनी मासूम-सी बच्ची के ऊपर रहम नहीं खा सकता, उसके लिये माँ क्या चीज है ?”

“मुझे सिर्फ एक लाइन में जवाब दो।” राकेश के सब्र का बाँध टूटने लगा- “तुम यह केस एग्जामिन कर रही हो या नहीं ?”

“करना ही पड़ेगा।” लड़की बोली- “तुम्हारे सोढा साहब के लिये नहीं, बल्कि इस फूल-सी बच्ची की जिन्दगी के लिये करना पड़ेगा। भगवान ने भी लड़की को क्या चीज बनाया है, सारे कुकर्म मर्द करता है, लेकिन भुगतना लड़की को पड़ता है। वह तो शुक्र करो, ज्यादा

दिन नहीं हो गये। वरना जितनी कम उम्र की यह बच्ची है, उस हालत में कुछ भी हो सकता था।"

मैं वह सारी बातें सुन रही थी।

और!

वह बातें सुन-सुन कर मैं बार-बार काँप रही थी।

मुझे अहसास हो रहा था, 'पुरुष प्रेम' की उस कौतुहलता ने मुझे कितने खतरनाक गड्ढे में धकेल दिया है।

□□□

बहरहाल फिर सब कुछ आसानी से निपट गया।

उस प्रकरण को लेकर कोई बहुत बड़ी घटना नहीं घटी।

उस लेडी डॉक्टर ने मुझे दिन में तीन बार दो-दो कैप्सूल खाने के लिये दिए। कैप्सूल मुझे गरम पानी के साथ खिलाये गये थे।

रात तक ही नतीजा निकल आया।

मेरा 'मासिक धर्म', जो पिछले कई दिन से रुका हुआ था, वह पुन: शुरू हो गया।

अलबत्ता खून मेरे बड़ी तादाद में निकला, जिसे देखकर मैं घबरा गयी। लेकिन लेडी डॉक्टर हर पल मेरे करीब थी, उसने मुझे ढांढस बंधाया।

"चिंता मत करो।" लेडी डॉक्टर ने बड़े ही स्नेहपूर्ण अंदाज में मेरा कंधा थपथपाते हुए कहा- "कुछ नहीं हुआ है, बल्कि तुम्हारी समस्या हल हो गयी है बेटी। अब तुम्हें कोई खतरा नहीं।"

लेडी डॉक्टर ने मेरे माथे पर स्नेहसिक्त अंदाज में चुम्बन अंकित किया और बहुत प्यार से बालों में उंगलियाँ फिराई।

उसका स्पर्श ममता भरा था।

जिसने मुझे बहुत हौंसला दिया।

यह बात अलग है, मेरा रंग अब और भी ज्यादा हल्दी की तरह पीला जर्द पड़ गया था और मैं मरीज नजर आने लगी थी, जैसे मैं पिछले कई महीनों से बीमार चल रही होऊं।

फिर अगले दिन तक मुझे काफी फल-फ्रूट खाने के लिये दिए गये।

जूस के कई गिलास पिलाए गये।

इससे मेरी तबीयत थोड़ी संभली।

मेरे चेहरे की रौनक कुछ वापस आयी।

हम दो दिन जयपुर में और रुके। सोढा साहब ने मम्मी को टेलीफोन करके इत्तला दे दी थी कि उनका प्रॉपर्टी का थोड़ा काम और बाकी है, इसलिये वो एक दिन लेट आयेंगे।

चौथे दिन हम गोरखपुर पहुंचे।

तब तक मेरी तबीयत काफी संभल चुकी थी।

□□□

तबीयत तो संभल गयी, मगर उसके बाद मेरी जिन्दगी में एक बड़ा भूकंपकारी मोड़

आया।

दरअसल महीना पूरा होते ही सोढा साहब के बीवी-बच्चे वापस लौट आये थे। वैसे भी सोढा साहब अब मुझसे खिंचे-खिंचे रहने लगे थे और पहले की तरह प्रेमपूर्वक तो वह हरगिज भी पेश नहीं आते थे। मैं ही कभी उनके घर चली जाती थी, उन्होंने तो हमारे घर आना अब बिल्कुल छोड़ दिया था।

इससे मेरे दिल को काफी धक्का लगा।

मुझे साधु की भविष्यवाणी पुन: याद हो आयी, तुम्हारे जीवन में पुरुष का प्रेम नहीं है।

त...तो क्या सोढा साहब मुझसे सिर्फ खेल रहे थे ?

उनका प्रेम, प्रेम नहीं था ?

मैंने सोढा साहब के बारे में जितना सोचा, उतना मैं गुस्से में धधक उठी।

एक दिन सोढा साहब की बीवी अपने बच्चों के साथ एक धार्मिक आयोजन में गयी हुई थी। सोढा साहब घर पर अकेले थे।

तभी मैं सोढा साहब के सामने जा धमकी।

"त... तुम ?" उस वक्त सोढा साहब मुझे वहां देखकर घबरा उठे।

"क्यों ?" मैं सीधे खंजर की तरह उनकी आँखों में आँखें डालकर फुंफकारी- "मुझे यहाँ देखकर घबरा रहे हैं ?"

कम-से-कम पिछले दिनों जो घटनाएं घटी थीं, उन्होंने मेरे अन्दर इतना हौसला जरूर भर दिया था कि मैं सीधे सोढा साहब की आँखों में आँखें डालकर बात कर सकूं।

"क... कैसी बात कर रही हो ?" सोढा साहब खिसियाने ढंग से हँसे- "म ... मैं भला तुमसे क्यों घबराऊँगा? आओ बैठो।"

"मैं यहाँ बैठने नहीं आयी हूँ।" मैं नागिन की तरह फुंफकारी- "बल्कि मैं आपसे कुछ पूछने आयी हूँ।"

"क्या ?"

"क्या यह सच है, आप मुझसे प्रेम नहीं करते ? पिछले दिनों आपने मेरे साथ जो कुछ किया, वह सिर्फ आपका मतलब था ?"

"यह तुम कैसी बात कर रही हो नताशा ?"

सोढा साहब चालाक सियार की तरह खीं-खीं करके हँसते हुए मेरी तरफ बढ़े और उन्होंने मुझे प्यार से बाहों में भर लेना चाहा।

"मुझे छूना मत।" मैं दहाड़ उठी।

सोढा साहब ठिठके।

उस समय मेरे चेहरे पर जलजले जैसे आसार थे।

मेरी आँखें भट्टी बनी हुई थीं।

"मैं आपकी असलियत पहचान गयी हूँ।" मैं गरजते हुए ही बोली- "मुझे मालूम हो गया है, पिछले दिनों आपने मेरे साथ जो कुछ किया, वह सिर्फ आपका नाटक था। आपने मुझसे कभी प्रेम किया ही नहीं, बल्कि मैं अब एक बात और सोच रही हूँ।"

"क्या ?"

"पिछले दिनों जितनी भी घटनाएं घटी हैं, मैं क्यों न उन सबके बारे में आंटी को बता दूं

? मम्मी को बता दूं ?"
सोढा साहब दहल उठे।
मेरे उन शब्दों ने उनके दिल-दिमाग पर भीषण वज्रपात किया था।
"नहीं।" वह जल्दी से बोले- "तुम ऐसा नहीं करोगी ?"
"क्यों ? ऐसा करने से कौन रोकेगा मुझे ? क्या आप ?"
"हाँ ! मैं रोकूंगा तुम्हें। तुम पागल हो गये हो, बिल्कुल पागल।"
सोढा साहब एकाएक जमीन को बुरी तरह रौंदते हुए मेरी तरफ बढ़े।
उस क्षण न जाने क्यों मुझे ऐसा लगा, वह मुझे मारने के लिये मेरी तरफ बढ़ रहे हैं।
मैं घबरा गयी।
वहीं मेरे नजदीक पीतल का एक भारी-भरकम फूलदान रखा हुआ था। मेरे अन्दर न जाने कहाँ से इतनी शक्ति आ गयी कि एकाएक मैंने वह फूलदान उठा लिया और उसे बहुत जोर से सोढा साहब की खोपड़ी पर खींचकर दे मारा।
तत्काल सोढा साहब की खोपड़ी अंडे के छिलके की तरह फट पड़ी।
वह चीखते हुए धड़ाम से नीचे गिरे। उनकी चीख अत्यंत कष्टदायक और वीभत्स थी। गिरते ही उनके प्राण-पखेरू उड़ गये।
सब कुछ सेकंड के सौवें हिस्से में हो गया।
पलक झपकते ही।
हालांकि सोढा साहब की हत्या करने मेरा उद्देश्य नहीं था, लेकिन फिर भी सोढा साहब की हत्या हो चुकी थी।
सोढा साहब की लाश देखकर मैं भी आतंकित हो उठी।
मैं तुरंत वहाँ से भागी।

□□□

थोड़ी ही देर में सोढा साहब की हत्या का समाचार पूरे मोहल्ले में फ़ैल गया था।
जिसने भी सोढा साहब के बारे में सुना, वही चौंका।
उसी की हैरानी बढ़ी।
क्योंकि थोड़ी देर पहले तक सभी ने सोढा साहब को ठीक-ठाक देखा था।
पूरे मोहल्ले में एक ही चर्चा थी।
"दरअसल वो नहाकर बाहर निकले थे।" कोई औरत कह रही थी- "तभी न जाने कैसे उनका पैर फिसल गया और पीतल का फूलदान बहुत जोर से उनके सिर में जा लगा। फ़ौरन उनकी मौत हो गयी।"
"यानि वो दुर्घटनावश मारे गये ?"
"हाँ।"
हर किसी ने सोढा साहब की मौत को एक आकस्मिक हादसा समझा। यह बात तो किसी को ख्वाब तक में नहीं सूझी कि वास्तव में सोढा साहब की हत्या की गयी है।
और वो हत्या मैंने की है। ऐसी तो कल्पना करना भी किसी के लिये मुश्किल था।
बहरहाल सोढा साहब की मौत को जो आकस्मिक हादसा समझा जा रहा था, वह मेरे

लिये अच्छी बात थी।

लेकिन एक बात का अफसोस मुझे जरूर था।

और बहुत अफसोस था।

सोढा साहब के मरने का मुझे इतना दुःख नहीं था, जितना इस बात का था कि वह मुझसे 'प्रेम' नहीं करते थे।

उस घटना के बाद 'पुरुष जाति' के प्रति मेरी कौतुहलता पहले से भी ज्यादा बढ़ गयी।

□□□

फिर आगामी छ: वर्ष मेरे झील के उस शांत पानी की तरह गुजरे, जिसमें कोई हलचल नहीं होती।

कोई हंगामा नहीं होता।

यानि उन छ: वर्षों के अन्दर मेरी जिन्दगी में कोई पुरुष नहीं आया।

यह काफी चौंका देने वाली बात थी।

अलबत्ता मैं अब बीस साल की बहुत अनिंद्य सुन्दरी बन चुकी थी। अपने मुजस्सम हुस्न को मैं खुद न जाने कितनी देर तक आईने में निहारती रहती। इसमें कोई शक नहीं, ऊपर वाले ने किस्मत मेरी चाहे जैसी लिखी थी, मगर मेरे ऊपर सुन्दरता का भण्डार उसने जमकर लुटाया था।

ज्यों-ज्यों मेरी उम्र बढ़ी, वैसे-वैसे मेरी सुन्दरता में चार चाँद लगते चले गये।

मैंने इंटर की परीक्षा भी फर्स्ट डिविज़न में पास की। मैं पढ़ने में काफी तेज थी। इस बीच मैंने कंप्यूटर भी सीख लिया और शॉर्ट हैंड भी सीख ली।

न जाने कब इनकी जरूरत पड़ जाये।

इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मैंने 'गोरखपुर विश्वविद्यालय' के अन्दर बी.ए. में एडमिशन ले लिया।

इस तरह मैं कॉलेज पहुँच गयी।

कॉलेज ही वो जगह थी, जहाँ मेरी अपने दूसरे 'प्रेमी' से मुलाक़ात हुई।

आदित्य!

जी हाँ, मेरे दूसरे प्रेमी का नाम 'आदित्य' था।

□□□
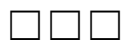
"नताशा!" वह मेरा गुलाब-सा मुखड़ा अपनी हथेलियों में भरकर बहुत अनुरागपूर्ण ढंग से कहता- "मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं। मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता।"

मैं खिलखिलाकर हंस पड़ती।

मेरी हंसी ऐसी खनकदार होती, जैसे स्टील की थाली में एक साथ तांबे के असंख्य सिक्के बज उठे हों।

"सच आदित्य ? क्या तुम मुझसे वाकई इतना ही प्यार करते हो ?"

"हां नताशा !"उसकी आवाज मानो गहरे अन्धकूप से निकलती- "मैं तुम्हें दिल चीरकर नहीं दिखा सकता, वरना तब मालूम पड़ता कि मेरे दिल में तुम्हारे लिये कितनी जगह है।"

“जनाब !” मैं उसके माथे का प्रगाढ़ चुम्बन लेकर बोली- “किसी दिन तुम्हारी यह तमाम रोमांटिक बातें हवा न हो जाएं।”

“नहीं। मैं मर जाऊंगा, लेकिन तुम्हें अपने आपसे अलग न होने दूंगा। अब हम दोनों की सांसें एक ही डोर से बंध चुकी हैं नताशा! यू आर द स्वीटेस्ट ड्रीम ऑफ माई लाइफ !”

“सपना ? सिर्फ एक खूबसूरत सपना ?”

“नहीं।” आदित्य जोर देकर बोला- “तुम मेरी जिन्दगी का खूबसूरत सपना हो, जिसे मैं हकीकत में बदलना चाहता हूं।”

“स... सच आदित्य ?”

उसकी बातें सुनकर मैं हवा में उड़ने लगी।

“हां, नताशा !”

“तुम मुझे धोखा तो नहीं दोगे ?”

“कभी नहीं।”

सोढा साहब को मैं बिल्कुल भूल चुकी थी।

सच्चे प्यार का अहसास मुझे हो रहा था।

प्रेम की सार्थकता मैं अनुभव कर रही थी।

□□□

वह मेरे दीवानगी से भरे दिन थे।

प्रेम क्या होता है, इसका अहसास मुझे आदित्य ने कराया।

मैं सोते-जागते, उठते-बैठते उन दिनों सिर्फ और सिर्फ आदित्य के बारे में सोचा करती थी।

वो मेरे ख्वाबों में आकर बस गया था।

मुझे कदम-कदम पर यही लगता, आदित्य मुझसे सच्चा प्यार करता है, क्योंकि उसकी आंखों में मैंने वासना की वो ललक नहीं देखी थी, जो सोढा साहब की आंखों में थी।

आदित्य ने तन्हाइयों में भी कभी मेरे साथ गलत हरकत करने की कोशिश नहीं की।

वह सिर्फ मेरे काले घनेरे बालों से खेलता था।

उसकी उंगलियां मेरे होठों पर सरसरातीं।

या फिर वो देर तक मेरी आंखों में झांकता रहता।

यही उसका ‘प्रेम’ था।

हम दोनों ने कई बार गोरखपुर में ‘तरंग टॉकीज’ और ‘राज टॉकिज’ में जाकर फिल्में देखी थीं।

‘बॉबीना’ में डिनर भी लिया।

दिन-ब-दिन हमारा प्यार गहरा होता जा रहा था। मुझे बस एक ही बात का डर था, आदित्य एक धनवान पिता की संतान था।

उसके पिता बहुत बड़े इण्डस्ट्रियलिस्ट थे।

मुझे भय था, कहीं उसकी दौलत हमारे आड़े न आ जाये।

लेकिन फिर भी आदित्य पर विश्वास था मुझे। उसके कसमें-वादों पर भरोसा था।

वह मुझे अपनी मजबूत बाहों में समेटता, तो मुझे लगता, यही मेरी जिन्दगी की मंजिल है।

यही वो प्रेमी है, जिसकी मुझे तलाश थी।

□□□

14 मार्च!

यह मेरे जन्म दिन की तारीख थी।

हालांकि वो मेरे लिये कोई बहुत शुभ दिन नहीं था, लेकिन आदित्य ने मेरा बीसवां जन्मदिन बहुत धूमधाम के साथ मनाया।

'बॉबीना' होटल में आदित्य ने उस दिन एक शानदार सुइट बुक किया था।

दिल के आकार का एक काफी बड़ा केक उसने वहां मंगाया।

अलबत्ता उस खूबसूरत शाम के मेहमान और मेजबान हम सिर्फ दो ही थे। वैसे भी जहां प्रेमी-प्रेमिका मौजूद हों, वहां तन्हाई से खूबसूरत मेहमान तथा दिलकश बातों से ज्यादा नशीली शराब और भला क्या हो सकती है?

मैंने केक काटा।

फिर आदित्य ने खुद अपने हाथों से मुझे केक खिलाया।

एक-एक लम्हा मुझे यादगार लग रहा था।

"मैं एक बात कहूं नताशा?" थोड़ी देर बाद ही आदित्य ने मेरी बालों में उंगलियों की कंघी-सी करते हुए कहा।

उस समय हम दोनों बिस्तर पर बैठे थे। मेरा सिर आदित्य की गोद में रखा था और वह बड़े प्यार से मेरे ऊपर झुका हुआ था।

"क्या कहना चाहते हो?"

"मैं पिछले कई दिन से एक बात सोच रहा हूं, मुझे अब तुमसे शादी कर लेनी चाहिए।"

मैं हंस पड़ी।

मेरी हंसी बहुत बुलन्द थी।

"क्यों?" आदित्य के नेत्र सिकुड़े- "तुम इस तरह हंस क्यों रही हो?"

"माई डियर, तुम्हें शायद एक कहावत मालूम नहीं है। इट इज नो एज बिल्डिंग कॉसल्स इन द एअर।"

"नहीं, मैं यह हवा में इमारत नहीं बना रहा हूं।" आदित्य दृढ़तापूर्वक बोला- "बल्कि मैं सचमुच तुमसे शादी करना चाहता हूं।"

"लेकिन शादी करने के लिये मम्मी-डैडी से परमिशऩ भी लेनी पड़ती है। क्या तुमने उनसे परमिशन ली?"

"मैं वही सोच रहा हूँ, क्यों न कल ही उनसे बात करूं?"

"दैट्स गुड! काफी अच्छी बात है।"

"ल... लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"क्यों न तुम भी अपनी मम्मी से बात कर लो?"

"उनकी तुम चिंता मत करो आदित्य । उन्हें तैयार करना मेरा काम है । वह ना नहीं करेंगी ।"

"फिर भी ?"

"मैंने कहा न ।" मैं उसकी बात काटकर बोली- "उन्हें मैं तैयार कर लूंगी ।"

उसके बाद भी हम दोनों के बीच प्यार-मोहब्बत की ढेर सारी बातें होती रहीं थीं ।

देर तक ।

फिर वो पहला दिन था, जब आदित्य और मेरे बीच सहवास क्रिया हुई ।

हालांकि हम दोनों में से किसी की भी ऐसी इच्छा नहीं थी ।

मगर प्यार की बातें करते-करते हम दोनों कब उस डगर पर चल पड़े, दोनों में से किसी को पता न चला ।

वो भावनाओं की गर्मी थी ।

वासना की तपिश थी, जो गरम मोम की तरह धीरे-धीरे पिघलने लगी ।

□□□

उसके बाद आदित्य का एकाएक कॉलेज आना बंद हो गया ।

वो छ: दिन तक कॉलेज नहीं आया ।

मैं बेचैन हो उठी ।

मेरा पागलपन सीमाएं तोड़ने लगा । मेरी रातों की नींद उड़ चुकी थी । तब मुझे अहसास हुआ, मैं खुद आदित्य से कितना प्यार करती थी । उसके बिना अब मेरे लिये एक लम्हा भी गुजारना नामुमकिन था ।

मैंने दर्जनों मर्तबा आदित्य के घर फोन मिलाया, लेकिन हर बार दूसरी तरफ से उसकी मम्मी फोन उठाती थीं ।

सातवें दिन आदित्य के कॉलेज में दर्शन हुए ।

उसकी शक्ल देखते ही मुझे ऐसा लगा, मानो दुनिया की न जाने कौन-सी नेमत मुझे हासिल हो गयी हो ।

"ओह आदित्य !" मैं कॉलेज के प्रांगण में ही दौड़ती हुई उसके नजदीक पहुँची और एकदम कसकर उससे लिपट गयी- "तुम इतने दिन से कहाँ थे ? कहाँ चले गये थे तुम ?"

आदित्य कुछ सकपकाया ।

उसने इधर-उधर देखा ।

"सॉरी !" मुझे भी तुरंत कॉलेज के प्रांगण का अहसास हुआ- "सॉरी !"

मैं पीछे हटी ।

लेकिन आदित्य न जाने क्यों मुझे कुछ बदला-बदला लग रहा था ।

"तुम कुछ बोल क्यों नहीं रहे आदित्य ?"

"मुझे तुमसे जरूरी बात करनी है ।" आदित्य संजीदा लहजे में बोला- "मेरे साथ आओ ।"

"कहाँ ?"

"आओ तो ।"

मैं चुपचाप आदित्य के पीछे-पीछे चल पड़ी।

आदित्य मुझे लेकर कॉलेज की विशाल लाइब्रेरी में पहुंचा।

वह आज बहुत उदास था।

लाइब्रेरी में एक कोने वाली टेबल पर जाकर हम बैठ गये।

"मुझे तुम्हें एक बहुत बुरी खबर सुनानी है नताशा !" आदित्य थोड़े विचलित लहजे में बोला।

"कैसी बुरी खबर ?"

मेरा दिल धड़क उठा।

मेरी बेचैनी और बढ़ी।

"द... दरअसल मम्मी-डैडी ने मेरे लिये एक लड़की पसंद कर ली है। नेक्स्ट वीक मेरी एंगेजमेंट भी है।"

"न... नहीं !"

मेरे हलक से चीख निकल गयी।

मुझे ऐसा लगा, मानो लेंटर गड़गड़ाता हुआ मेरे सिर पर आ गिरा हो।

"क... क्या तुमने अपने मम्मी-डैडी से मेरे बारे में बात नहीं की थी ?"

"की थी।" आदित्य शुष्क स्वर में बोला- "लेकिन वो तुम्हारे साथ मेरी शादी करने को तैयार नहीं हुए। उनकी जिद थी, मेरी शादी उसी लड़की से होगी, जो उन्होंने पसंद की थी।"

"क... क्या तुम भी उस लड़की से शादी कर लोगे ?" मेरी आवाज बुरी तरह कंपकंपा रही थी।

"तुम मेरी मजबूरी समझो नताशा !" आदित्य नजरें झुकाए-झुकाए बोला- "मैं और कर भी क्या सकता हूँ ? मैंने मम्मी-डैडी को काफी समझाने की कौशिश की, लेकिन वो नहीं माने। अब मैं उन्हें छोड़ भी तो नहीं सकता।"

मेरा सिर घुमने लगा।

यह अहसास ही मेरे होश उड़ा देने के लिये पर्याप्त था कि अब आदित्य किसी और का हो जायेगा।

वो आदित्य किसी और का हो जायेगा, जिससे सचमुच मैंने दिलोजान से प्यार किया था।

जिसके बिना मैं एक लम्हा नहीं गुजार सकती थी।

मेरी आंखों में आंसू छलछला आए।

"आई बैग युअर पार्डन नताशा !"आदित्य बहुत धीरे-धीरे मेरा हाथ थपथपा रहा था- "रियली आइ एम सॉरी।"

मैंने दोनों हथेलियों में अपना चेहरा छुपा लिया और मैं रो पड़ी।

मेरी हिचकियां बंध गयी।

"हिम्मत रखो।" आदित्य बोला- "मैं जानता हूं, सचमुच तुम्हें बहुत दुख पहुंचा है, लेकिन मेरी मजबूरी समझो।"

"आदित्य ! मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।" मैं फफकते हुए ही बोली- "मुझे अपने से

अलग मत करो।"
"मैं भी तुम्हें अपने से अलग नहीं करना चाहता नताशा, लेकिन मैं क्या कर सकता हूं।"
उस दिन मैं आदित्य के सामने खूब रोयी।
खूब गिड़गिड़ायी।
लेकिन आदित्य मुझसे शादी करने के लिये तैयार न हुआ। वो बार-बार अपनी मजबूरी की दुहाई देता रहा।
बार-बार अपने मम्मी-डैडी का रोना रोता रहा।
उसके बाद वो चला गया।

□□□

आप अंदाजा नहीं लगा सकते, उस सारी रात मुझे नींद नहीं आयी।
मैं जागती रही।
मेरे तमाम सपने, तमाम उम्मीदें एक ही झटके में फना हो चुकी थीं।
यह अहसास ही मेरे शरीर में अजीब-सी सिहरन दौड़ा देता था कि अब आदित्य किसी और की बांहों में होगा।
वह किसी और का सुहाग बनेगा।
मैं बेचैन हो गयी।
मुझे लगा, मैं पागल हो जाऊंगी।
उफ्फ- मर्द भी क्या चीज़ है, इस बात का अहसास आप बस मेरे जैसी किसी औरत की एक "आह" से लगा सकते हैं। एक तन्हा, अकेली, बेआसरा औरत रात में बिस्तर पर बिना मर्द के ऐसे कलपती है, जैसे बिन पानी के मछली।
मर्द ही नहीं औरत भी प्यार में पागल होती है।
आदित्य को खोने के नाम से ही मुझे डर लग रहा था। मैं उसे किसी भी हालत में नहीं खोना चाहती थी।
फिर मैंने एक फैसला किया।
खतरनाक फैसला।
पिछले कई दिन से मैं कॉलेज नहीं गयी थी, मगर चौथे दिन मैं कॉलेज जा पहुंची। आदित्य भी उस दिन कॉलेज आया हुआ था।
"आदित्य !" मैं कॉलेज कॉरीडोर में उसके साथ-साथ चलते हुए बोली- "मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं।"
"क्या ?"
"तुम मुझसे एक बार अकेले में मिलना पसन्द करोगे आदित्य ?"
"किसलिये ?"
"मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात करनी है।" मैं गम्भीरतापूर्वक बोली- "मैं वादा करती हूं, उसके बाद मैं तुम्हारी जिन्दगी से हमेशा के लिये चली जाऊंगी।"
"ठीक है।" आदित्य ने कहा- "बताओ, किस जगह मिलना चाहती हो ?"
"आज शाम सात बजे तुम मुझसे 'यूनिवर्सिटी पार्क' में मिलो।"

“ओ.के.! मैं ठीक सात बजे पार्क में पहुंच जाऊंगा।”

हम दोनों अलग हो गये।

उसके बाद ठीक सात बजे हमारी ‘यूनिवर्सिटी पार्क’ में मुलाकात हुई। यूनिवर्सिटी पार्क’ उस समय बिल्कुल सुनसान पड़ा हुआ था और शाम की कालिमा धीरे-धीरे वहां फैलने लगी थी।

आदित्य जैसे ही पार्क में पहुंचा, मैंने फौरन अपने कपड़ों से लम्बे फल वाला चाकू निकाल लिया और इससे पहले कि आदित्य कुछ समझ पाता, मैंने आनन-फानन वह चाकू उसके पेट में घोंप डाला।

इतना ही नहीं, मैं मशीनी गति से वह चाकू उसके पेट में घोंपती चली गयी।

बारम्बार।

जबरदस्त स्पीड से।

आदित्य की चीखें निकल गयीं।

पेट से खून का फव्वारा छूट पड़ा।

“आदित्य !” मैं खून से सना चाकू हाथ में लिये-लिये जहरीली नागिन की भांति फुंफकार उठी- “अगर तुम मेरे नहीं हुए, तो किसी के भी नहीं हो सकते। किसी के भी नहीं।”

मैंने उसके पेट में कुछेक प्रहार और किये।

आदित्य धड़ाम से पीछे जा गिरा।

गिरते ही उसके प्राण पखेरु उड़ गये।

आप समझ ही गये होंगे- औरत अगर मौहब्बत में सब कुछ लुटाना जानती है, तो फिर धोखेबाज़ मर्द को जहन्नुम रसीद करना भी जानती है। औरत के अन्दर अगर मौहब्बत का ज़ज्बा किसी समुन्द्र जितना विशाल होता है, तो वहीं मौहब्बत में खता खाई हुई औरत भी किसी जहरीली नागिन से कम नहीं होती। जिसके डसे का कोई इलाज़ नहीं।

आदित्य का मर्डर करने के बाद मैंने एक ख़ास काम और अंजाम दिया। उसके पास जितना भी कीमती साज-समान था, वह सब मैंने लूट लिया। उसका पर्स, अंगूठी, सोने की चेन, सब-कुछ।

उसके बाद मैं बड़ी खामोशी के साथ वहां से भाग निकली।

□□□

अगले दिन पूरे ‘गोरखपुर विश्वविद्यालय’ में हड़कम्प मच गया था।

आदित्य की लाश पार्क से बरामद हो चुकी थी।

अलबत्ता सबने यही समझा कि वह किसी सड़क छाप चेन स्नेचर्स या बूट लैगरस का काम है, जिसने आदित्य का वह कीमती साज-सामान छीनने की खातिर उसके चाकू घोंप दिया था।

उस प्रकरण में भी किसी का मेरे ऊपर शक न गया।

वह मामला भी यूं ही निपट गया।

उसके बाद मेरी जिन्दगी में शंकर आया।

□□□

शंकर!

वह मेरा एक और प्रेमी था।

शंकर ऐसे शाही ठाठ-बाट के साथ रहता था, मानो वह किसी बड़ी रॉयल फैमिली को बिलांग करता हो।

वह विदेशी गाड़ियों में घूमता।

कीमती-से-कीमती कपड़े पहनता।

इसके अलावा वह मुझे जो प्रजेंट देता, वह भी बेहद कीमती होते।

कभी वो मुझे हीरे के टॉप्स लाकर देता।

तो कभी सोने की अगूंठियाँ।

हद तो तब हो गयी, जब एक दिन उसने कई लड़ी वाला सोने का भारी-भरकम हार लाकर मुझे दिया।

सबसे रोमांचकारी बात ये थी, शंकर का बिज़नस क्या है, यह भी मुझे मालूम न था।

बहरहाल वो प्रेम कोई बहुत ज्यादा लम्बा न चला।

जल्द ही शंकर की असलियत मेरे सामने उजागर हो गयी थी। उसकी असलियत भी एक बहुत पुराने अखबार से उजागर हुई, जो अखबार इत्तेफाक से मेरे हाथ लग गया। उसी फटे-पुराने अखबार में छपी एक खबर से मुझे पता चला, दरअसल शंकर एक पेशेवर चोर था।

उसकी जिन्दगी के दो ही शौक थे।

चोरी करना और शादी करना।

वह चोरी कर-करके पहले कीमती उपहार लड़कियों को प्रजेंट करता था और फिर उन्हें अपने प्रेमजाल में फांसकर उनसे शादी कर लेता। वह अब तक बीस शादियाँ कर चुका था। पुलिस बहुत सरगर्मी से उसे तलाशती घूम रही थी।

उस खबर को पढ़ते ही मेरे पैरों के नीचे से धरती खिसक गयी।

यानि मैं शंकर का इक्कीसवां शिकार थी।

माई गॉड!

यही शुक्र था, मुझे वक्त रहते वो जानकारी हो गयी।

□□□

अगले दिन ही मैंने वो फटा-पुराना अखबार शंकर के सामने रखा।

क्या मजाल, जो वह अखबार देखकर शंकर ज़रा भी घबराया हो। उल्टे वो किसी शातिर बदमाश की तरह बहुत जोर से खिलखिलाकर हंसा।

“चलो अच्छा हुआ।” शंकर हँसता हुआ ही बोला- “कि तुम्हें मेरे बारे में सब कुछ मालूम हो गया।”

“य… यानि तुम मुझसे प्रेम नहीं करते थे ?” मैं भौंचक्के लहजे में बोली।

“सवाल ही नहीं उठता डार्लिंग !” शंकर बहुत दृढ़तापूर्वक बोला- “इस शंकर ने कभी किसी से प्रेम नहीं किया, कभी भी नहीं। इस शंकर ने तो सिर्फ शादियाँ मनाई हैं और अब यह शंकर तुमसे भी शादी करेगा। यह इक्कीसवीं शादी होगी !”

"तुम मूर्ख आदमी हो।" मैं दहाड़ उठी। मैंने उसे जलती आँखों से घूरा- "तुम क्या समझते हो, तुम्हारे बारे में इतना सब-कुछ पता चलने के बाद भी मैं तुमसे शादी करूंगी ? हरगिज नहीं।"

"शादी तो तुम्हें अब मुझसे करनी ही पड़ेगी नताशा डार्लिंग !" शंकर की आवाज में यकीन कूट-कूट कर भरा था- "अब तुम चाहते हुए भी इस शादी को नहीं रोक सकती।"

मैं चौंकी।

शंकर यह एक नया रहस्योद्घाटन कर रहा था।

"क... क्या मतलब?"मेरे नेत्र सिकुड़े- "मैं इस शादी को क्यों नहीं रोक सकती ?"

"यह देखो डार्लिंग !" शंकर ने तुरंत अपनी जेब से ढेर सारे फोटोग्राफ्स निकालकर मेरे सामने फेंके- "इन तस्वीरों को देखो और फिर फैसला करो कि क्या तुम्हारे अन्दर मेरे खिलाफ जाने की हिम्मत है?"

मेरी निगाह तस्वीरों पर पड़ी।

और!

तस्वीरों पर निगाह पड़ते ही मेरे होश उड़ गये।

मेरे शरीर का एक-एक रोंआ खड़ा हो गया।

वह मेरी बहुत अश्लील तस्वीरें थीं, जिनमें मैं शंकर के साथ लगभग रति-क्रीड़ा जैसी मुद्रा में नजर आ रही थी। तस्वीरें अलग-अलग एंगल से खींची गयी थीं और वह फोटोग्राफी का बेहतरीन नमूना थीं।

ऐसा मालूम पड़ता था, जैसे किसी प्रोफेशनल फोटोग्राफर ने वो तस्वीरें खींची हों।

"म... मेरी यह तस्वीरें कब खींची गयीं?" मैं हतप्रभ लहजे में बोली।

"डार्लिंग !" शंकर ने आगे बढ़कर मेरे गाल पर बड़े भौंड़े अंदाज में चिकोटी काटी- "यह शंकर चिड़ियाँ को फांसने के लिये ऐसे आड़े-तिरछे हथकंडे हमेशा तैयार करके रखता है।"

"चिड़ियाँ !" मैंने उसे क्रोधपूर्ण नज़रों से घूरा- "मैं तुम्हें चिड़ियाँ नजर आती हूँ ?"

"हाँ !"

"लगता है शंकर, अभी तुम्हारा वास्ता किसी ऐसी चिड़ियाँ से नहीं पड़ा, जो अपने शिकार की जान भी ले लेती हो।"

"क... क्या मतलब?"

मैंने एकाएक बड़े अप्रत्याशित रूप से पॉइंट टू एट की रिवाल्वर निकालकर शंकर की खोपड़ी की तरफ तान दी।

शंकर भयभीत हो उठा।

"य... यह रिवाल्वर तुम्हारे पास कहाँ से आयी ?"

"तुम्हारे जैसे दरिंदों से निपटने के लिये ही मैं यह रिवाल्वर अपने पास रखती हूँ।" मैं अर्द्धविक्षिप्त की भांति बोली- "अब बताओ, क्या अब भी तुम्हारे अन्दर इतनी हिम्मत है, जो मुझसे शादी कर सको ?"

शंकर ने जोर से अपने गले का थूक सटका।

उसी क्षण मैंने रिवाल्वर का ट्रेगर दबा दिया। तत्काल शंकर इस तरह डकार उठा, जैसे जिबह होते समय कोई बकरा डकराया हो।

गोली उसकी गर्दन की हड्डी फाड़ती हुई सीधे खोपड़ी में जा घुसी और वह फ़ौरन एक लाश में तब्दील हो गया।

मैं तुरंत घटनास्थल से भाग निकली।

□□□

शंकर की मौत ने भी गोरखपुर में काफी जबरदस्त हडकंप मचाया।

पुलिस ने उसके हत्यारे को तलाशने के लिये खूब एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया था, मगर वह हत्यारे को न तलाश सकी।

शंकर की मौत का रहस्य भी रहस्य ही रहा।

उसके बाद मेरी जिन्दगी में तीन प्रेमी और आये तथा वह तीनों भी सोढा साहब, आदित्य और शंकर की तरह मेरे हाथों मारे गये।

उन सबका एक ही कसूर था, उन्होंने पहले मुझसे प्रेम किया तथा फिर मुझे धोखा दे दिया।

सबके सब धोखेबाज थे।

अपना मतलब हल करने वाले।

बहरहाल पुलिस हत्या के किसी भी मामले को न सुलझा सकी, क्योंकि मैंने प्रत्येक हत्या बहुत चालाकी और सफाई के साथ की थी।

कहीं कोई सबूत नहीं छोड़ा।

उन एक के बाद एक होने वाली रहस्यमयी हत्याओं के कारण अब गोरखपुर में भी जबरदस्त आतंक फ़ैल गया था।

पुलिस अब इतना अनुमान जरूर लगा चुकी थी,वह हत्यायें कोई एक लड़की कर रही है।

जल्द ही मैं पूरे गोरखपुर में ‘लेडी किलर’ के नाम से विख्यात हो गयी।

लेडी किलर!

जिसके पीछे गोरखपुर की पुलिस अब बुरी तरह हाथ धोकर पड़ चुकी थी।

मगर वो ‘लेडी किलर’ कौन है, यह किसी को मालूम न था।

यह कोई नहीं जानता था।

□□□

इसी दरम्यान मुझे एक जबरदस्त हादसे का भी सामना करना पड़ा।

मेरी माँ का देहान्त हो गया।

वह पिछले काफी समय से बीमार चल रही थीं।

माँ की मौत ने मुझे झंझोड़ डाला। इस दुनिया में माँ ही थी, जो मेरी अपनी थी। जिससे मुझे कुंठा में लिपटा हुआ ही सही, मगर प्यार मिला था।

सच्चा प्यार मिला था।

दोस्तों! मैं अपने प्रेमियों के बारे में बता-बताकर अब आपको ज्यादा बोर नहीं करूंगी।

मैं बस आपको एक व्यक्ति के बारे में और बताना चाहती हूँ। वह व्यक्ति, जो मेरा सातवाँ

प्रेमी था।

उसने मेरी जिन्दगी में कदम रखा और उसके बाद मेरी जिन्दगी की धारा ही बदल गयी।

गौतम पटेल, यह मेरे उस सातवें प्रेमी का नाम था।

गौतम पटेल बिल्कुल अलग व्यक्तित्व का मालिक था।

वह लम्बे-चौड़े कद-काठी वाला था। भरा-भरा बदन। उसका चेहरा बहुत रौबदार था और गुबरैली मूंछें थीं, जो उसकी पर्सनेलिटी को और भी ज्यादा रौबदार बनाती थीं। गौतम पटेल डिटेक्टिव एजेंसी चलाता था।हालांकि गोरखपुर जैसे छोटे से शहर में 'डिटेक्टिव एजेंसी' चलाना भारी दिल-गुर्दे का काम था, मगर गौतम पटेल वह काम करता था।

गौतम पटेल से मेरी मुलाकात भी बड़े हंगामाई माहौल में हुई।

रात के नौ बजे का समय था, मैं 'राकेश टाकिज' से अकेली फिल्म देखकर लौट रही थी। तभी एक मारुति कार बहुत तूफानी स्पीड से दौड़ती हुई मेरे बिल्कुल बराबर में आकर रुकी।

उसके पहिये चीख उठे। अगर वो ज़रा भी स्लिप होती, तो मैं उसकी चपेट में आ जाती।

"यह क्या बद्तमीजी है ?" मैं चीखते हुए एकदम पलटी।

मैंने देखा, उस मारुति कार में तीन रईसजादे सवार थे, जो मस्ती में मालूम पड़ रहे थे और उन्होंने खूब शराब पी हुई थी।

"हैलो जान !" उनमें से एक खिलखिलाकर हँसता हुआ बोला- "आज रात क्या करने का मूड है? आओ आज हम तुम्हें अपने बेडरूम की सैर करा दें।"

"बैडरूम की नहीं दोस्त!" दूसरे ने हंसते हुए उसके जोर से कोहनी मारी- "स्वर्ग की कहो। स्वर्ग की सैर।"

"पहले यह तो पूछ लो।" तीसरा बोला- "कि यह पैसे कितने लेगी ?"

"पैसे की कोई चिंता नहीं है। हम इसे रुपयों के ढेर से लाद देंगे। बस यह हमारी आज की रात रंगीन कर दे।"

"शटअप !" मैं गुस्से से चिल्ला उठी- "मैं वैसी लड़की नहीं हूँ, जैसी तुम मुझे समझ रहे हो।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कैसी लड़की हो।" उनमें से एक अब कार से नीचे से उतर आया- "तुम्हें बस लड़की होना चाहिए और वो हम देख रहे हैं कि तुम हो। चलो, हमारे साथ चलो।"

उसने आगे बढ़कर मेरा हाथ पकड़ लिया और जबरदस्ती मुझे कार की तरफ खींचा।

"छोड़ो मुझे।" मैं चिल्लाई- "छोड़ो !"

"माई डेलीशस डार्लिंग !" बाकी दोनों भी अब कार से नीचे उतर आये- "हमने तुम्हें छोड़ने के लिये नहीं पकड़ा है। आज की रात तो तुम्हें हमारी रंगीन करनी ही पड़ेगी।"

'नहीं !" मैं चिल्लाई- "नहीं !"

उन लोगों ने अब मुझे जबरदस्ती कार की तरफ खींचा।

मैं फड़फड़ाई।

"हेल्प मी !" मैं चिल्ला उठी- "प्लीज हेल्प मी !"
मेरी आवाज उस निर्जन इलाके में दूर-दूर तक गूंजने लगी।
परन्तु उन तीन रईसजादों के दिल-दिमाग पर वासना का भूत बुरी तरह सवार था। वह मुझे किसी भी हालत में छोड़ने के लिये तैयार न थे। उन तीनों ने ही अब मुझे कसकर जकड़ लिया और फिर वह घसीटते हुए कार की तरफ ले जाने लगे।
वह तीन थे, मैं अकेली।
मैं कबूतर की भांति फड़ाफड़ा रही थी।
मेरी चीखें गूँज रही थीं।
वह तीनों मुझे कार के अन्दर धकेलकर बंद करते, उससे पहले ही वहां एक और कार बहुत ही तूफानी स्पीड से आकर रुकी तथा फिर उसके पहिये यूं चीखे, जैसे वहां भूकंप आ गया हो। उसके बाद गौतम पटेल उसमें से किसी 'एक्शन-हीरो' की तरह जम्प लगाकर नीचे कूदा।
"यह क्या हो रहा है?" वह उन तीनों को ललकारते हुए चीखा- "इस लड़की को छोड़ते क्यों नहीं ?"
तीनों लड़कों का ध्यान अब गौतम पटेल की तरफ आकर्षित हुआ।
उसका लंबा कद।
बलिष्ठ शरीर।
वह किसी को भी कंपकंपा देने के लिये पर्याप्त था।
मगर !
गौतम पटेल के उस व्यक्तिव का उन तीनों पर कोई फर्क नहीं पड़ा।
"क्यों बे ?" उनमें से एक मुझे पकड़े-पकड़े बोला- "तू कौन है ? इस लड़के का भाई लगता है ?"
"अभी बताता हूँ, मैं कौन हूँ।"
तुरंत गौतम पटेल की राउंड किक इतनी तेज़ गति के साथ घूमी कि उनमें से दो लड़के हलक फाड़कर चिल्लाते हुए इधर-उधर जा गिरे।
तीसरा बड़ी तेजी से उसकी तरफ झपटा, मगर उससे पहले ही गौतम पटेल का भारी-भरकम पंच उसके चेहरे पर इतनी जोर से पड़ा कि लड़के की वीभत्स चीख निकल गई और उसकी नाक से खून जाने लगा।
उसी क्षण पीछे से दोनों लड़के गौतम पटेल की तरफ झपटे।
एक ने उछलकर उसका गला पकड़ना चाहा।
दूसरे का घूँसा उसके चेहरे की तरफ लपका।
मगर गौतम पटेल के शरीर में चीते जैसी फुर्ती समा चुकी थी। उसने घूमकर धड़ाधड़ अपनी कोहनियों के प्रचंड प्रहार लड़कों के सीने पर किये।
वह भैंसे की तरह डकरा उठे।
फिर दो घूंसे उनके चेहरे पर भी पड़े।
उनका पूरा जबड़ा दहल उठा।
जबकि गौतम पटेल ने अब झपटकर अपनी जेब से पॉइंट अड़तीस कैलीबर की रिवाल्वर

निकाल ली। रिवाल्वर हाथ में आते ही गौतम पटेल ने उसका सेफ्टी लॉक पीछे खींचा और उसकी नाल एक लड़के की खोपड़ी की तरफ उठाई।

रिवाल्वर हाथ में आने की देरी थी, तुरंत उन लड़कों की सारी दिलेरी हवा हो गई।

उनका चेहरा एकदम रुई की तरह सफ़ेद फक्क पड़ गया। वह गिरते-पड़ते फ़ौरन कार में सवार हुए और एकदम उनकी कार बन्दूक से छूटी गोली की तरह वहां से भागी।

मैं उस समय एकटक गौतम पटेल को देख रही थी। नि:संदेह उसकी मजबूत कद-काठी और उसके एक्शन ने मुझे इम्प्रेस किया था।

गौतम पटेल कुछ देर सुनसान पड़ी उस सड़क को देखता रहा, जिधर से कार भागी थी- फिर वो मेरी तरफ घूमा। उसने रिवाल्वर वापस अपनी जेब में रख ली और एक सिगरेट सुलगाई।

“कहाँ जा रही हो तुम ?”

“अ... आर्य नगर।” गौतम पटेल के सवाल का जवाब देते समय मेरी आवाज में हल्की सी कंपकपाहट दौड़ी थी।

“तुम्हें इतनी रात को अकेले सड़क पर नहीं घूमना चाहिए।” गौतम पटेल बोला- “तुम्हें शायद मालूम नहीं है, पिछले काफी दिन से इस शहर का माहौल ठीक नहीं चल रहा।”

“मैं जानती हूँ।” मैं शुष्क स्वर में बोली- “लेकिन मैं इस दुनिया में अकेली हूँ मिस्टर! मैं भला कब तक किसी का साथ तलाशूंगी।”

गौतम पटेल के चेहरे पर हैरानी के चिह्न दौड़ गये।

वह सिगरेट का कश लगाते-लगाते ठिठका।

“क्या तुम्हारे माँ-बाप नहीं हैं ?”

“नहीं।”

“बहन-भाई?”

“कोई भी नहीं है।”

“ओह! सॉरी! वैरी सॉरी! !”

मैं खामोश रही।

रात की नीरवता अब पहले से भी ज्यादा बढ़ चुकी थी।

“चलो ! मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ देता हूँ।”

मैंने ऐतराज न किया।

उस दिन गौतम पटेल पहली बार मुझे मेरे घर छोड़ने आया।

□□□

गौतम पटेल मेरे पुराने प्रेमियों के मुकाबले में कई मायनों में अलग था। सबसे अलग तो उसकी पर्सनेलिटी ही थी। वह बड़ी मजबूत कद-काठी और आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक था। वैसा आकर्षक व्यक्तित्व मेरे पहले किसी प्रेमी का न था। इसके अलावा वो सीधे मेरी आँखों में आँखें डालकर बात करता था, उसकी पलकें तक नहीं झपकती थीं।

अगर आप पुरुषों की फितरत के अच्छे जानकार हैं, तो आपको मालूम होगा कि ऐसे बहुत कम ही पुरुष होते हैं, जो किसी लड़की की आँखों में आँख डालकर देर तक बात कर

सकें।

मगर गौतम पटेल में वह खूबी विद्यमान थी।

वह जब मुझसे बात करता, तो मैं अपने आपको किसी अबोध बच्ची जैसी अनुभव करती थी। उसका मर्दाना व्यक्तित्व हर समय मेरे ऊपर बुरी तरह हावी रहता। जल्द ही गौतम पटेल और मेरे बीच अच्छी दोस्ती हो गयी। उसी दौरान मुझे गौतम पटेल के बारे में एक बात और पता चली, वह अभिजीत घोष के जासूसी उपन्यासों का जबरदस्त शौक़ीन था।

हालाँकि यह बात चर्चा करने के लायक नहीं है, मगर कहानी में आगे इस बात की अच्छी-खासी महत्ता है।

इतना ही नहीं, अभिजीत घोष के विषय में बात करने में भी गौतम पटेल को खूब आनंद आता था।

"तुम्हें सुनकर हैरानी होगी।" एक बार गौतम पटेल ने मुझे बताया- "अभिजीत घोष ने अपने पूरी जिन्दगी में कुल पचास उपन्यास लिखे हैं और वह सभी उपन्यास मैंने पढ़े हुए हैं। एक बार नहीं, बल्कि कई-कई बार पढ़े हैं।"

अभिजीत घोष के बारे में चर्चा करते समय गौतम पटेल की दीवानगी साफ़ झलकती थी।

मैं हंसी।

"क्यों ?" मैंने गौतम पटेल से पूछा- "अभिजीत घोष के उपन्यासों में ऐसा क्या है, जो तुम उनका एक-एक उपन्यास कई मर्तबा पढ़ते हो ?"

"लगता है, तुमने कभी जिन्दगी में अभिजित घोष का कोई उपन्यास नहीं पढ़ा है।"

"नहीं !"

"तभी तो !" गौतम पटेल बोला- "तभी तो तुम यह बात कह रही हो। अगर तुमने जिन्दगी में कभी अभिजित घोष का कोई एक उपन्यास भी पढ़ा होता नताशा, तो तुम्हें मालूम पड़ता कि वह आदमी कितनी कमाल की कहानियाँ लिखता है। खासकर उसके मर्डर प्लान भी ऐसे गजब के होते हैं कि कोई भी पाठक उन्हें पढ़ते समय अपने दांतों तले उंगलियाँ दबा ले। आश्चर्यजनक बुद्धी का मालिक है वह आदमी। मैं तो जैसे-जैसे उसके उपन्यास पढ़ता हूँ, वैसे-वैसे मेरी उसके प्रति दीवानगी बढ़ती जाती है। वैसे वह आदमी समाज के लिये ख़तरा भी है।"

"क्यों ?" मैं चौंकी- "अभिजीत घोष समाज के लिये खतरा क्यों है ?"

"क्योंकि वह अपने उपन्यासों में हत्या की ऐसी-ऐसी योजनायें बनाता है।" गौतम पटेल बोला- "कि अगर कोई अपराधी उन योजनाओं से प्रेरित होकर वास्तविक जिन्दगी में मर्डर कर डाले, तो मेरा दावा है कि हिन्दुस्तान की पुलिस तो क्या स्कॉटलैंड की पुलिस भी उसे गिरफ्तार न कर सके। वह कहीं कोई सबूत ही नहीं छोड़ता। उसकी हर मर्डर प्लानिंग बहुत फुलप्रूफ होती है।"

"अगर यह बात है।" मैं बोली- "तो सचमुच अभिजीत घोष समाज के लिये बहुत बड़ा खतरा है। क्या उसके किसी उपन्यास पर आज तक कभी कोई मर्डर हुआ है ?"

"अभी तक तो नहीं हुआ।" गौतम पटेल बोला- "लेकिन मर्डर हो तो सकता है, ख़तरा तो बना ही हुआ है।"

“यह बात तो है।”

अगर अभिजीत घोष वास्तव में ही इतने दमदार मर्डर प्लान बनाता था, तो इसमें कोई शक नहीं कि उसके उपन्यास को आधार बनाकर कभी भी कोई हत्या हो सकती थी।

बहरहाल अभिजीत के बारे में हम लोगों के बीच चर्चाएं खूब होती थीं। उन चर्चाओं से मुझे एक फायदा जरूर हुआ। मैं अभिजीत घोष के बारे में काफी कुछ जान चुकी थी। जैसे वह पचपन-साठ साल का अधेड़ किन्तु तंदरुस्त बुड्ढा था और मुम्बई के पॉश इलाके में रहता था।

इसी दौरान मुझे अभिजीत घोष का एक उपन्यास पढ़ने का मौक़ा भी मिला।

वाकई!

मर्डर मिस्ट्री तो वह आदमी खूब लिखता था।

वह उपन्यास पढ़ने के बाद मैं भी उस लेखक की फैन हो गयी।

□□□

गौतम पटेल अब मेरे घर भी काफी आने-जाने लगा था।

परन्तु न जाने क्यों कभी-कभी उसकी गतिविधियाँ बहुत संदिग्ध हो जाती थीं और तब ऐसा मालूम होता था, जैसे वह किसी चक्कर में है।

एक दिन मैं बाथरूम में थी और स्नान कर रही थी। गौतम पटेल कमरे में बैठा था। तभी मुझे ऐसा लगा, जैसे किसी ने मेरा कबर्ड खोला हो।

मेरी समस्त इन्द्रियां सजग हो उठीं।

मैंने स्नान करते-करते झिरी में-से बाहर झांककर देखा। यह देखकर मेरे आश्चर्य से नेत्र फट पड़े कि गौतम पटेल ने मेरा कबर्ड खोला हुआ था और वह बिल्कुल चोरों की तरह उसमें कुछ तलाश रहा था।

मैं जल्दी से कपड़े पहनकर बाहर निकली।

मेरे यूं अप्रत्याशित ढंग से बाहर निकलने पर गौतम पटेल थोड़ा सकपका उठा।

“क्या बात है?” मैं उस पर डायरेक्ट हमला करते हुए बोली- “तुम इस तरह मेरे कबर्ड में क्यों घुस रहे हो ?”

“दरअसल तुम्हारे कुछ पुराने प्रेमियों की तस्वीरें देख रहा था।”

मेरे हाथ-पैरों में बर्फ जैसी लहर दौड़ गयी।

पुराने प्रेमी।

मैंने देखा, गौतम पटेल के हाथ में उस समय दो तस्वीरें थीं।

एक तस्वीर मेरी शंकर के साथ थी और दूसरी आदित्य के साथ।

“जहाँ तक मैं समझता हूँ।” गौतम पटेल एक तस्वीर को दिखाता हुआ बोला- “यह शंकर है। शंकर, एक पेशेवर चोर ! जिसके जीवन में दो ही शौक थे, चोरी करना और शादी करना। वह बीस शादियाँ कर चुका था और इक्कीसवीं शादी करने जा रहा था, लेकिन... !”

“लेकिन क्या ?”

मेर शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

मुझे तुरंत ख्याल हो आया। गौतम पटेल एक जासूस भी है। शहर के अपराध तंत्र पर उसकी बड़ी पैनी निगाह रहती है।

"लेकिन शंकर की वह इक्कीसवीं प्रेमिका हद से ज्यादा चालाक निकली माय हनी डार्लिंग !" गौतम पटेल कुछ स्टाइल के साथ मुस्कुराकर बोला- "वह उसे अपना शिकार बना पाता, उससे पहले उस इक्कीसवीं प्रेमिका ने ही उसे अपना शिकार बना डाला। शंकर की इक्कीसवीं प्रेमिका।" गौतम पटेल ने बहुत अभेद्य नज़रों से मुझे घूरा- "कहीं शंकर की वो इक्कीसवीं प्रेमिका तुम ही तो नहीं थी माय स्वीट हार्ट ?"

"यह क्या बकवास लगा रखी है तुमने ?" मैं चीख उठी- "लगता है, तुम पागल हो गये हो गौतम !"

"क्यों ?" गौतम पटेल बोला- "शंकर के साथ वाली तुम्हारी यह तस्वीर तो यही कहानी कह रही है कि तुम उसकी इक्कीसवीं प्रेमिका थी।"

मुझे एकाएक कोई जवाब देते न बना।

मेरे ऊपर अब घबराहट बुरी तरह हावी होने लगी थी।

"और यह आदित्य है।" गौतम पटेल ने अब दूसरी तस्वीर पर दृष्टिपात किया- "बेचारा आदित्य! जिसकी लाश यूनिवर्सिटी पार्क में पड़ी मिली और गोरखपुर के सम्पूर्ण पुलिस डिपार्टमेंट ने यही समझा कि उसे किसी चेनस्नेकर या बूट लैगरस ने मार डाला है।"

"तो और सच्चाई क्या थी ?" मैंने बहुत दबंग लहजे में कहा- "सच्चाई भी तो यही थी कि आदित्य को किसी चेनस्नेकर या बूट लैगरस ने मार डाला था।"

"सच्चाई यह नहीं थी नताशा !" गौतम पटेल एकाएक दुर्दांत लहजे में बोला- "सच्चाई ये थी कि आदित्य को उसकी प्रेमिका ने मारा था। कोल्ड ब्लाडिड मर्डर किया था उस शरीफ आदमी का। और उसका कसूर... उस शरीफ आदमी का कसूर बस इतना था कि वह उससे शादी नहीं कर सकता था। हालांकि वह उस लड़की को सचमुच प्यार करता था, लेकिन अपने माई-बाप की बात टालने की हिम्मत उसके अन्दर नहीं थी और इसी की सजा आदित्य को भुगतनी पड़ी। उसी लड़की ने बहुत खतरनाक ढंग से उसकी जान ले ली, जिससे वो सबसे ज्यादा प्यार करता था।"

मैं चौंक उठी।

मेरे चेहरे पर अचरज के भाव दौड़े।

"त... तुम यह सब बातें कैसे जानते हो कि आदित्य की जिन्दगी में कोई लड़की भी थी ?"

"क्योंकि मैडम नताशा !" गौतम पटेल एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला- "मैं उसी आदित्य का छोटा भाई हूँ। आदित्य, जिसका पूरा नाम आदित्य पटेल था।"

"नहीं !"

मेरे मुंह से चीख निकल गयी।

मेरे दिमाग में अनार छूटते चले गये।

गौतम पटेल, आदित्य का छोटा भाई। मेरे सभी मसामों ने एक साथ ढेर सारा पसीना उगल दिया।

उफ़ !

क्या मायाजाल था।

“मैडम नताशा !” गौतम पटेल अब मुझे धधकती निगाहों से घूर रहा था- “जिस दिन मेरे बड़े भाई की खून से सनी लथपथ लाश यूनिवर्सिटी पार्क से बरामद हुई, मैं उसी दिन समझ गया था वह किसी सड़कछाप लुटेरे का काम नहीं है बल्कि आदित्य की प्री-प्लांड हत्या की गयी है और वो हत्या तुमने की है। लेकिन तब अपनी बात को साबित करने के लिये मेरे पास सबूत नहीं थे। किसी के पास सबूत नहीं थे। उसके बाद गोरखपुर में ‘लेडी किलर’ का आतंक फ़ैल गया। न जाने क्यों तब एक बार फिर मेरे शक की सुई तुम्हारी तरफ घूमी। मुझे लगा, तुम्हीं वो लड़की हो, जो गोरखपुर में इस तरह एक के बाद एकअपने प्रेमियों का मर्डर कर रही हो। मैंने तुम्हारी हकीकत का पर्दाफाश करने के लिये तुम्हारे इर्द-गिर्द एक जाल बुना।”

“जाल !” मेरे स्वर में कौतुहलता साफ़-साफ़ झलकी- “कैसा जाल?”

“उस दिन ‘तरंग टॉकीज’ से वापस लौटते समय जो तीन लड़के तुम्हारे साथ छेड़-छाड़ कर रहे थे, वह मेरे ही जासूस साथी थे और मेरे कहने पर ही उन्होंने वो ड्रामा अंजाम दिया। हालांकि किसी लड़की से संपर्क बनाए की वह स्टाइल बहुत घिसी-पिटी थी, बहुत पुरानी थी और फ़िल्मी थी। लेकिन फिर भी मेरा वह ड्रामा काम कर गया और शायद इसलिये काम कर गया, क्योंकि फिल्मों में भी उस तरह का ड्रामा भले चाहे कितनी ही बार रिपीट हो चुका हो, लेकिन आम जिन्दगी में वैसे ड्रामे कम ही होते हैं।”

“य...यानि तुमने मुझसे प्रेम नहीं किया।” मेरे दिल-दिमाग पर पत्थर से गड़गड़ाते हुए गिरे- “तुम भी मुझसे सिर्फ प्रेम का नाटक ही कर रहे थे ?”

“इसमें कोई शक नहीं।” गौतम पटेल बेहिचक बोला- “कि मैं तुम्हारे साथ प्रेम का नाटक कर रहा था और इसलिये कर रहा था, ताकि तुम्हें आदित्य की हत्या के इल्जाम में गिरफ्तार कर सकूं। ताकि तुम्हारे खिलाफ ऐसे सबूत इकट्ठा कर सकूं, जिनसे साबित हो जाये कि तुम्हीं ‘लेडी किलर’ हो।”

“यू चीट !” मैं अर्द्धविक्षिप्तों की भांति चिल्ला उठी- “यू फुलिश! बास्टर्ड !”

मुझे मानो गुस्से का दौरा पड़ गया।

जबरदस्त दौरा।

यह अवस्था ही मुझे पागल बना देने के लिये पर्याप्त था कि मेरा ‘वो सातवाँ’ प्रेमी भी धोखेबाज था।

वहीं एक छोटी-सी टेबल रखी थी। मैंने तुरंत वो टेबल उठाकर बहुत जोर से गौतम पटेल के ऊपर खींचकर मारी।

गौतम पटेल बुरी तरह हड़बड़ा उठा। शायद उसे मेरी तरफ से ऐसे अप्रत्याशित हमले की उम्मीद नहीं थी।

वो नीचे झुका।

टेबल बहुत जोर से उसके सिर के ऊपर से सनसनाती हुई गुज़री और सामने दीवार से जाकर टकराई।

मैं उसके ऊपर दूसरा हमला कर पाती, उससे पहले ही गौतम पटेल ने झपटकर अपनी पॉइंट अड़तीस कैलीबर की रिवाल्वर बाहर निकाल ली और उसे मेरी तरफ ताना।

“खबरदार !” वो दहाड़ा- “खबरदार! अगर कोई और हरकत की तो !”

लेकिन मैं मानो पागल हो चुकी थी।
मुझे उस पल कुछ भी नजर नहीं आ रहा था।
मैंने आंधी-तूफ़ान की तरह अब झपटकर वहीं रखा मिट्टी का एक गमला उठा लिया।
धांय!
गौतम पटेल ने रिवाल्वर का ट्रेगर दबा दिया।
मेरे हाथ में मौजूद मिट्टी का गमला बिल्कुल इस तरह फटा, जैसे मेरे हाथ में ही कोई बम फट पड़ा हो।
मेरी वीभत्स चीख निकल गई।
"तुम आज नहीं बचोगी।" गौतम पटेल कहर भरे स्वर में बोला- "तुम्हें आज उन सभी हत्याओं का हिसाब देना होगा, जो तुमने की है।"
गौतम पटेल ने धांय-धांय पुन: दो फायर किये।
मेरे होश उड़ गये।
मेरे ऊपर आतंक हावी हो गया।
मैं उन गोलियों से बचती हुई तत्काल वहां से भागी।
मैं घर से बाहर निकल पाती, उससे पहले ही गौतम पटेल मेरी मंशा भांपकर दौड़ता हुआ दरवाजे के पास जा खड़ा हुआ और उसने दरवाजा अन्दर से बंद कर लिया।
उसके बाद उसने रिवाल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े फिर मेरी तरफ अबाउट टर्न लिया।
मेरे और होश उड़ गये।
गौतम पटेल गोली चला पाता, उससे पहले ही मैं अद्वितीय फुर्ती के साथ दौड़ती हुई दूसरे कमरे में जा घुसी और मैंने धड़ाक से दरवाजा भीतर से बंद कर लिया।

□□□

मैं पहली बार एक खतरनाक प्रतिद्वंदी का सामना कर रही थी।
ऐसे प्रतिव्दन्द्वी का, जिससे मेरी जान को पूरा-पूरा खतरा था।
मैं वहीं दरवाजे से पीठ लगाकर खड़ी हो गयी और बुरी तरह हांफने लगी। यह एहसास मुझे अन्दर तक हिलाये दे रहा था कि मेरा वह सातवां प्रेमी भी धोखेबाज था।उसने भी मेरे साथ प्रेम का खेल खेला था। मेरे कानों में पुन: उस साधु के वाक्य गूंजने लगे, जो मुझे 'गोरखनाथ मंदिर' में मिला था।
"नहीं! नहीं! !" मैं गुस्से से कांप उठी- "मैं गौतम पटेल को भी नहीं छोड़ूंगी। मैंने आज तक किसी को धोखा नहीं दिया। सभी ने मुझे धोखा दिया। सब धोखेबाज हैं।"
मैं हिम्मत करके दरवाजे के पास से हटी और फिर मैंने बड़ी तेजी से उसी कमरे में बने स्टोर रूम की तरफ कदम बढ़ाए।
मेरी टांगें अजीब से अहसास से काँप-काँप जा रही थीं। मेरे शुष्क होठों पर बार-बार पपड़ी-सी जम जाती।
गौतम पटेल!
गौतम पटेल!!
वही एक नाम मेरे दिमाग में हथौड़े की तरह बज रहा था।

स्टोर रूम के पास पहुंचकर मैंने उसका दरवाजा खोला और फिर अन्दर दाखिल हुई।

सामने ही लोहे का एक बड़ा-सा संदूक रखा था।

मैंने संदूक खोल डाला और फिर उसमें भरे कपड़े निकाल-निकालकर आनन-फानन बाहर फेंकने लगी।

जैसे ही संदूक खाली हुआ, तुरंत मेरी निगाह रिवाल्वर पर जाकर ठहर गयी।

रिवाल्वर उस संदूक में कपड़ों के नीचे छुपाकर रखा गया था और वो पॉइंट टू एट कैलीबर की वही रिवाल्वर थी, जिससे मैं पहले भी कई हत्याएं कर चुकी थी।

मैंने झपटकर वो रिवाल्वर उठा ली।

क्या मैं आज फिर उस रिवाल्वर से एक और हत्या करने में कामयाब हो सकूंगी?

मेरा विश्वास डोलने लगा।

आखिर गौतम पटेल एक जासूस था।

उसकी हत्या करनी इतनी आसान नहीं थी, जितनी आसानी से मैंने अपने पहले प्रेमियों की हत्या कर डाली थी।

तभी मुझे टेलीफोन का ध्यान आया, जो बगल वाले कमरे में मौजूद था और वहीं गौतम पटेल मौजूद था। गौतम पटेल टेलीफोन द्वारा अपना कोई मददगार वहां बुला सकता था। मैं रिवाल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े कमरे की खिड़की के नजदीक पहुँची और मैंने खिड़की में मुश्किल से दो इंच झिर्री पैदा करके बाहर वाले कमरे में झांका।

मैं सन्न रह गयी।

गौतम पटेल उस समय टेलीफोन पर ही किसी से बात कर रहा था और रिवाल्वर अब भी उसके हाथ में थी। फिर उसके टेलीफोन का रिसीवर वापस क्रेडिल पर रख दिया।

मैंने खिड़की से ही तत्काल एक फायर किया।

लेकिन गौतम पटेल की किस्मत अच्छी थी। उसी समय उसकी निगाह मेरे ऊपर पड़ गयी।

वह झुका।

उसकी खोपड़ी तरबूज की भांति फटने से बस बाल-बाल बची।

मैं फुर्ती के साथ अब दरवाजे की तरफ झपटी। दरवाजे की कुंडी खोली और बाहर निकली।

मैं जानती थी, अब वहां रुकना खतरनाक है।

जैसे ही मैं कमरे से बाहर निकली, तभी गौतम पटेल ने भी मेरे ऊपर फायर किया।

मेरे माथे पर मौत के पसीने चुहचुहा आये।

मैं चीखते हुए एकदम नीचे बैठ गयी।

"बेवक़ूफ़ लड़की!" गौतम पटेल चिंघाड़ा- "मैं आज तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। तुम्हारी मौत आज निश्चित है।"

मैंने बैठे-बैठे फिरकनी की तरह घूमकर एक फायर किया।

गौतम पटेल के अंतिम शब्द एक भयावह चीख में तब्दील हो गये।

गोली ठीक सनसनाती हुई उसकी जांघ में जाकर धंसी थी। वह चीखता हुआ अपनी जांघ पकड़कर नीचे झुका।

हालांकि मैं उस समय मैदान छोड़कर भागने की इच्छुक थी, लेकिन तब मैं ठिठक गयी।

मुझे लगा, किस्मत मेरे साथ है।

मैं फिर जीत सकती हूँ।

मैं अपनी टांग फैलाकर खड़ी हो गयी तथा मैंने दो फायर और किये।

दोनों गोलियां गौतम पटेल के सीने में जाकर लगीं।

वह कुत्ते की तरह डकरा उठा। उसके सीने से खून का फव्वारा इस तरह छूटा, जैसे किसी ने नल खोल दिया हो।

वो धड़ाम से नीचे गिरा।

परन्तु गिरते-गिरते उसने रिवाल्वर का ट्रेगर दबाना चाहा, मगर कामयाब न हुआ। उसकी कंपकंपाती उंगली ट्रेगर के नजदीक पहुँची। एक क्षण के लिये ऐसा लगा, वह ट्रेगर दबा देगा। लेकिन वो ट्रेगर दबा पाता, उससे पहले ही उसके हाथ की पकड़ रिवाल्वर के ऊपर ढीली पड़ गयी और रिवाल्वर उसके हाथ से छूटकर नीचे जा गिरी।

वह खुद भी गिरा।

"ब्लडी शिट !" मैंने बहुत जोर से अपनी ऊंची हील वाला सैंडिल उसके मुंह पर खींचकर मारा- "मैं नफ़रत करती हूँ तुमसे। सख्त नफ़रत! तुम सब मर्द एक जैसे हो। धोखेबाज ! पाखंडी ! कुत्ते की जात के ! जिस तरह आदित्य ने मुझे धोखा दिया, उसी तरह तुमने भी मुझे धोखा दिया। यू आर ए कनिंग फेलो। आई हेट यू !"

मैंने क्रोध में एक और दनदनाती हुई लात उसके चेहरे पर जड़ी।

गौतम पटेल मर चुका था।

मगर उसकी आँखें खुली हुई थीं और उन खुली हुई आँखों में अंतिम क्षण तक मेरी लिये नफ़रत थी।

□□□

तभी एकाएक 'अली नगर' का वह सारा इलाका पुलिस सायरन की आवाज से गूँज उठा।

मैं दहल गयी।

उफ़ ! तो गौतम पटेल ने मरने से पहले पुलिस को वहां बुला लिया था।

वह मरते-मरते भी मेरे लिये संकट खड़ा कर गया था।

पुलिस सायरन की आवाज जोर-जोर से उस सारे वातावरण को कंपकंपा रही थी। ऐसा मालूम होता था, जैसे वह कई सारी पुलिस पेट्रोलिंग कारें थीं, जो उस पूरे क्षेत्र की घेराबंदी कर रही थीं।

मैं पसीने में नहा गयी।

मेरे शरीर का एक-एक रोंगटा खड़ा हो गया।

मैंने तुरंत फिंगर प्रिंट मिटाकर अपनी पॉइंट टू ऐट कैलीबर की रिवाल्वर वहीं गौतम पटेल की लाश के पास फेंकी तथा फिर दरवाजा खोलकर बेपनाह फुर्ती के साथ घर में से भागी।

शुक्र था, पुलिस अभी वहां नहीं पहुँची थी।

मैंने एक बार भागना शुरू किया, तो फिर पता नहीं मैं कब-तक भागती चली गयी।

मैं बस भागती रही।

भागती रही।

पुलिस के सायरन की आवाजें निरंतर मेरे कान में गूँज रही थीं। मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे पुलिस मेरे पीछे लगी हो।

वह अजीब दहशत का माहौल था।

मेरा चेहरा बिल्कुल सफ़ेद फक्क पड़ा हुआ था। होंठ कागज़ की तरह फड़फड़ा रहे थे।

मुझे सिर्फ इतना मालूम है, मुझे जब होश आया तो मैं गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर खड़ी थी।

मैं दौड़ती हुई एक ट्रेन में चढ़ गयी।

मुझे नहीं मालूम, वह ट्रेन कौन सी थी ?

मुझे यह भी नहीं मालूम, वह ट्रेन कहाँ जा रही थी ? मुझ सिर्फ इतना पता था कि मैं जब उस ट्रेन में चढ़ी, तो वह धीरे-धीरे प्लेटफार्म छोड़ रही थी और फिर देखते-ही देखते उसने स्पीड पकड़ ली।

वह तूफानी गति से पटरियों पर दौड़ने लगी।

मैं उसी डिब्बे में एक सीट पर बैठ गयी और बुरी तरह हांफने लगी।

मेरी सांसें उखड़ी हुई थीं और मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मेरा दिल उछल-उछल कर पसलियों को कूट रहा हो।

मेरी सांसें जब थोड़ी व्यवस्थित हुईं, तो मैंने देखा कि जिस डिब्बे में मैं बैठी हुई थी, वह फर्स्ट-क्लास कम्पार्टमेंट था।

मैं काँप गयी।

मैंने खिड़की से बाहर झांककर देखा, गोरखपुर अब धीरे-धीरे पीछे छूट रहा था।

वह गोरखपुर पीछे छूट रहा था, जहाँ मेरा जन्म हुआ। जहाँ बचपन की वेदना मैंने सही। जिस शहर में मैंने अपने सात प्रेमियों को मौत के घाट उतारा। गोरखपुर के साथ-साथ अब मेरी ढेर सारी यादें पीछे छूटती जा रही थीं।

मेरे जिन्दगी अब एक नई दिशा में भाग रही थी।

ऐसी दिशा में, जिसके बारे में मुझे खुद कुछ मालूम न था।

“टिकट प्लीज !”

तभी वह आवाज मेरे कानों में पड़ी।

मेरे शरीर का पुर्जा-पुर्जा काँप गया।

मैंने पलटकर देखा, वह टी.सी. (टिकट-चैकर) था, जो टिकट चेक करता हुआ धीरे-धीरे मेरी तरफ बढ़ रहा था।

मैं बेचैन हो गयी।

मैं तूफानी स्पीड से दौड़ती उस ट्रेन से उतरकर भाग भी तो नहीं सकती थी।

मेरा आधे से ज्यादा शरीर पसीने में लथपथ हो गया और मुझे जेल के सीखंचे दिखाई पड़ने लगे।

जेल!

जिस जेल से बचने के लिये मैं अपना भरा-पूरा घर छोड़कर भागी थी, वही जेल फिर मेरे सामने थी।

"यस मैडम !" तभी टी.सी. मेरे नजदीक आकर खड़ा हो गया- "टिकट !"

"ट... टिकट !"

"हाँ मैडम ! आपने कहाँ जाना है ? आप कृपया अपना टिकट दिखाइए।"

मैं भला टिकट कहाँ से दिखाती ?

"ल... लेकिन...।"

"ऑफिसर... यह मेरे साथ है।" मैं अपनी बात पूरी करती, उससे पहले ही कोई मेरे पीछे से बोल पड़ा- "दरअसल मैं जल्दबाजी में इनका रिज़र्वेशन न करा सका। मगर आप चिंता न करें। आप जो भी जुर्माना कहेंगे, मैं भरने के लिये तैयार हूँ।"

मैं चौंकी।

मैंने पलटकर उस फ़रिश्ते की शक्ल देखी, जिसने यूं बड़े अप्रत्याशित ढंग से मेरी मदद की थी।

और उसकी शक्ल देखते ही मेरे दिल-दिमाग पर भीषण बिजली गड़ागड़ा कर गिरी।

वह अभिजीत घोष था।

हिन्दुस्तान का प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार- अभिजीत घोष!

यहीं से मेरी जिन्दगी के एक बिल्कुल नए और धमाकाखेज अध्याय की शुरूआत हुई।

दो

दोस्तों! अब तक मैं एक बात बहुत अच्छी तरह समझ चुकी थी।

यही कि 'पुरुष का प्रेम' मेरे जीवन में नहीं है।

अगर 'गोरखनाथ मंदिर' में मिले उस साधु की बात गलत होती, तो अब तक किसी न किसी पुरुष का प्रेम मुझे जरूर हासिल हो गया होता। फिर मुझे यूं सात हत्याएं करने की आवश्यकता न पड़ती। यानि अब इस बात के प्रति मेरा विश्वास भी दृढ़ हो गया था।

मैंने एक संकल्प और किया।

अगर अब कोई प्रेमी मेरे जीवन में आयेगा भी तो मैं उसे अपने जीवन में नहीं आने दूंगी। क्योंकि मैं नहीं चाहती थी, मुझे फिर अपने किसी नए प्रेमी से धोखा खाना पड़े तथा पुन: किसी के खून से अपने हाथ रंगने पड़े। मैं अब एक पुरसकून जिन्दगी गुजारने के मूड में थी, जिसमें कोई हलचल न हो। यानि अब मैंने अपनी किस्मत के आगे पूरी तरह घुटने टेक दिए थे और फिलहाल मैं कोई नई प्रेम-लीला रचाने के मूड में नहीं थी।

यह एक तरह से मेरी हार थी।

परन्तु मैं धोखा खा-खाकर इतना थक चुकी थी कि फिलहाल मुझे अपनी वो हार भी दिल से कबूल थी।

इस वक्त, टी.सी. अपना जुर्माना लेकर जा चुका था और मैं अभिजीत घोष के सामने वाली सीट पर बैठी थी।

वो एक्सप्रेस ट्रेन पहले की भांति धुंआधार स्पीड से पटरियों पर दौड़ी जा रही थी।

"क्या मैं तुम्हारा नाम पूछ सकता हूँ ?" अभिजीत घोष अपलक मुझे निहारता हुआ बोला।

"न... नाम ?"

"हाँ, बशर्ते तुम्हें अपना नाम बताने में कोई एतराज न हो तो।"

"नहीं... नहीं।" मैं तुरंत बोली- "मुझे भला अपना नाम बताने में क्या ऐतराज हो सकता है। मेरा नाम नताशा शर्मा है।"

मैंने उसे बेझिझक अपना असली नाम बता दिया।

हालांकि मैं उसके सामने अपना कोई 'फर्जी नाम' ले सकती थी, मगर मैंने ऐसा नहीं किया।

क्यों नहीं किया ?

यह मुझे भी नहीं मालूम था।

अभिजीत घोष पचपन-साठ बरस का अधेड़ व्यक्ति था, लेकिन फिर भी उसका व्यक्तित्व काफी आकर्षक था। उसने काफी मूल्यवान सूट पहना हुआ था। टाई लगाई हुई थी और हाथ में 'बजक' कंपनी का एक स्याह काला सिगार था, जिसके वह बीच-बीच में छोटे-छोटे कश लगाता था।

"तुम इस वक्त कहाँ जा रही हो ?"

"इस बारे में मैं कुछ नहीं जानती।"

"क्या मतलब?" अभिजीत घोष सीट पर बैठा-बैठा इस तरह चिहुंका, जैसे उसे जोर से बिच्छू ने काट खाया हो- "तुम्हें यह भी मालूम नहीं कि तुम कहाँ जा रही हो ? तुम्हारी मंजिल क्या है ?"

"नहीं !"
"आश्चर्य है।"
मैं चुप बैठी रही।
"क्या तुम्हारे माँ-बाप तुम्हारी गलत जगह शादी करना चाहते थे, जो तुम घर छोड़कर भागी हो ?"
"ऐसी कोई बात नहीं है घोष साहब।"
अभिजीत घोष अपने 'बजक' सिगार का कश लगाते-लगाते कुछ ठिठका।
उसने मुझे गौर से देखा।
"तुम मुझे पहचानती हो ?"
"हाँ !" मैंने स्वीकृती में गर्दन हिलाई।
"कौन हूँ मैं ?"
"आपका नाम अभिजीत घोष है और आप हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार हैं।"
"चलो शुक्र है।" अभिजीत घोष ने राहत की लम्बी सांस ली- "कम-से-कम एक तरीके की बात तो तुम जानती हो।"
मैं कुछ न बोली।
"लेकिन फिर भी कहीं तो जा रही होओगी तुम ?" अभिजीत घोष बोला- "कहीं-न-कहीं पहुँचने के लिये तो तुम इस ट्रेन में चढ़ी होओगी ?"
"मैं सिर्फ जल्द-से-जल्द गोरखपुर से दूर हो जाना चाहती हूँ।" मैं व्यग्रतापूर्वक कहा- "इसीलिये मैं इस ट्रेन में चढ़ी थी।"
"थैंक गॉड! तुम तो मेरे उपन्यासों के करेक्टरों से भी ज्यादा रहस्यमयी ढंग से बातें करती हो। लेकिन गोरखपुर से भी दूर क्यों जाना चाहती हो तुम ?"
"वह एक लम्बी कहानी है।"
"कितनी लम्बी ?"
"बहुत लम्बी !" मैं बोली- "फिलहाल मेरे सिर में दर्द है। मैं उस बारे में बात भी नहीं करना चाहती।"
"ठीक है।" अभिजीत घोष बोला- "मैं इस वक्त मुम्बई जा रहा हूँ। जब तक तुम अपनी मंजिल के बारे में कोई फैसला न कर लो, तब तक अगर तुम चाहो, तो मेरे साथ मेहमान के तौर पर रह सकती हो।"
मुझे अभिजीत घोष का वह प्रस्ताव बेहतर लगा।
वैसे भी इस वक्त कहीं-न-कहीं सिर छुपाने के लिये मुझे एक छत की जरूरत तो थी ही।

□□□

मुम्बई रेलवे स्टेशन पर जो आदमी अभिजीत घोष को रिसीव करने आया, वह भी एक अलग ही दुनिया का प्राणी था।
नाटा कद।
भारी डील-डौल।

आधे से अधिक गंजा सिर।
अलबत्ता उसने सफ़ेद फक्क वर्दी पहनी हुई थी। सफ़ेद पीक-कैप लगाई हुई थी, जिस पर सुनहरी चेन लगी हुई थी। साफ़ जाहिर हो रहा था, वह अभिजीत घोष का ड्राइवर है।
वो रेलवे स्टेशन के बाहर एक चमचमाती काली कैडीलॉक कार लिये प्रतीक्षा कर रहा था।
"नमस्ते साहब !" ड्राइवर की निगाह जैसे ही अभिजीत घोष पर पड़ी, उसने आगे बढ़कर अभिजीत घोष के हाथ से ब्रीफकेस लिया।
"नमस्ते !" अभिजीत घोष बोला- "कैसे हो माधवन ?"
उसका नाम माधवन था।
जरूर वो राजस्थानी था।
"पीछे बंगले पर तो सब-कुछ ठीक-ठाक रहा ?"
"जी साहब !"
तभी माधवन की निगाह मेरे ऊपर जाकर ठिठकी।
अपने साहब के साथ एक सुन्दर लड़की को देखकर उसे हैरानी हुई थी। वह चौंका।
"इनसे मिलो माधवन !" अभिजीत घोष बोला- "यह नताशा है।"
"नमस्ते मेम साब !"
माधवन ने फ़ौरन अपने हाथ जोड़ दिए।
"नमस्ते !"
"यह हम लोगों की मेहमान हैं। अब यह कुछ दिन हम लोगों के साथ बंगले पर ही रहेंगी।"
"बहुत अच्छा साहब !"
इस बीच अभिजीत घोष और मैं काली कैडीलॉक की पिछली सीट पर बैठ चुके थे।
मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं, मैं जिन्दगी में पहली बार इतनी मूल्यवान कार में बैठी थी।
माधवन ने भी अपनी ड्राइविंग सीट संभाली।
तुरंत वह काली कैडीलॉक मुम्बई शहर की सड़क पर तूफानी स्पीड से भागने लगी।
यह मेरा एक बिल्कुल नई और चमचमाती दुनिया में आगमन था। मैं सब कुछ बहुत विस्मित निगाहों से देख रही थी। खासतौर पर अभिजीत घोष जैसे अत्यंत नामचीन और इतने बड़े आदमी ने जिस तरह मुझे आश्रय दिया था, वह भी कुछ कम अचरज ह ' पूर्ण न था।
आखिर अभिजीत घोष मेरे बारे में जानता भी क्या था ?
कुछ भी नहीं।
और उससे भी ज्यादा अचरजपूर्ण ये था, अभिजीत घोष ने अभी तक मेरे बारे में जानने का कोई बहुत ज्यादा प्रयास भी नहीं किया था।

□□□

अभिजीत घोष का मड-आइलैंड में काफी बड़ा बंगला था।

मड आइलैंड, जो मुम्बई से थोड़ा अलग हटकर था । शांतिपूर्ण क्षेत्र था और अत्यंत ऐश्वर्यशाली सुख-सुविधाओं से पूर्ण था । वहां ऐसे निर्माता, निर्देशक, फिल्म-कलाकार और बड़े-बड़े तकनीशियनों के बंगले बने हुए थे, जो मुम्बई की गहमा-गहमी दुनिया से दूर भागना चाहते हैं । ऐसे में मड-आइलैंड में पहुंचकर उन्हें आध्यात्मिक शान्ति महसूस होती थी ।

"हालांकि मड आइलैंड मुम्बई से थोड़ा दूर जरूर है ।" अभिजीत घोष अपना 'बजक' सिगार सुलगाते हुए बोला- "लेकिन मेरे जैसे लेखक के लिये यह जगह बहुत ही बढ़िया है और सिर्फ मेरे जैसे लेखक के लिये ही क्यों, यह मड-आइलैंड तो हर उस आदमी के लिये बहुत बढ़िया जगह है, जो शान्ति का तमन्नाई हो । सकून का तमन्नाई हो और साफ-सुथरी हवा को पसंद करता हो । इस तन्हा इलाके में मेरे दिमाग के अन्दर ऐसे-ऐसे 'खतरनाक प्लाट' जन्म लेते हैं, जो पहले कभी जन्म नहीं लेते थे ।

खतरनाक प्लाट!

वह बात कहकर खुद ही बहुत जोर से हंसा अभिजीत घोष ।

मैं भी मुस्कुराई ।

"आप पहले कहाँ रहते थे ?"

"पहले मैं जुहू तारा रोड पर रहता था ।" अभिजीत घोष ने सिगार का एक कश लगाया- "हालांकि वो काफी पॉश इलाका है, लेकिन सकून और साफ़ हवा की चाहत ने मुझे मड-आइलैंड की तरफ खींच लिया ।"

"ओह !"

कैडीलॉक कार तूफाने गति से सड़क पर दौड़ती रही ।

वह मड-आइलैंड की तरफ़ भागी जा रही थी ।

"आप वहां अकेले रहते हैं ?"

"नहीं ! मैं अकेला कहाँ हूँ?" अभिजीत घोष बोला- "बंगले के जितने कर्मचारी हैं, वह सब मेरे साथ हैं । इसके अलावा उपन्यासों के जितने भी करैक्टर हैं, वह हरदम मेरे साथ होते हैं । बड़े-बड़े दुर्दांत कातिल, ठग, लुटेरे और पुलिस ऑफिसर ! देखा, मैं चौबीसों घंटे कैसे-कैसे लोगों से घिरा रहता हूँ ?"

"आप सचमुच काफी दिलचस्प हैं ।"

"एक आदमी को दिलचस्प होना भी चाहिए ।"

"आपने शादी क्यों नहीं की घोष साहब ?"

मेरे उस प्रश्न पर अभिजीत घोष थोड़ाउदास हो गया ।

लगता था, मैंने उसके दिल का कोई तार छेड़ दिया था ।

"शादी भी मैंने करनी चाही थी ।" अभिजीत घोष ने सिगार का एक और कश लगाया- "लेकिन शायद शादी मेरे नसीब में नहीं लिखी थी । मैंने जिस लड़की से मोहब्बत की, उससे मेरी शादी नहीं हो सकी, क्योंकि उसका बाप एक बड़ा पैसे वाला आदमी था और मैं अपने शुरूआती दिनों में क्या था, एक संघर्षशील लेखक । पैसे-पैसे का मोहताज लेखक! भला ऐसे में कौन अपनी लड़की का हाथ मेरे हाथ में देकर उसकी किस्मत फोड़ता । उसके पश्चात मेरे उपन्यास एक के बाद एक हिट होते चले गये । मेरा नाम देश भर में फ़ैलने लगा

। मेरे पास दौलत आने लगी। मेरी हर मुराद पूरी हुई, लेकिन फिर वही मेरी जिन्दगी में न आई, जिसकी मुझे सबसे ज्यादा चाहत थी।"

अभिजीत घोष ने एक लम्बी सांस खींची।

"सच बात तो ये है।" वह थोड़ा रूककर बोला- "किसी ने इस बाबत आज मुझसे सवाल भी एक लम्बे अरसे बाद पूछा है, शायद बीस-पच्चीस साल बाद। वरना हर कोई मेरे उपन्यासों पर ही चर्चा करता है। हर कोई यही जानना चाहता है कि मैं अब किस सब्जेक्ट पर नया उपन्यास लिख रहा हूँ।"

"सॉरी घोष साहब !" मैं बोली- "लगता है, मैंने आपका दिल दुखाया है।"

"नहीं! ऐसी कोई बात नहीं।"

अभिजीत घोष ने 'बजक' कंपनी के उस सिगार का एक कश और लगाया।

कार अब मड-आइलैंड क्षेत्र में प्रविष्ट हो चुकी थी।

चारों तरफ अब लम्बी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े बंगले ही दिखाई पड़ रहे थे। ऐसा महसूस होता था, मानो बंगलों की एक श्रृंखला अंतहीन दूरी तक चली गयी है। उन बंगलों में अक्सर फिल्मों और सीरियल्स की शूटिंग भी होती रहती थी। अब भी हो रही थी। वहाँ ज़्यादातर बंगले बने ही इस मकसद के लिये थे।

कैडीलॉक कार अब चढ़ाई वाले रास्ते पर दौड़ने लगी।

फिर वो अत्यंत भव्य बंगले के सामने पहुंचकर रुकी।

वह काले पत्थरों से बना एक बहुत बड़ा बंगला था। ऊंची बाउंड्री वाल थी, जिस पर कटीले तार लगे थे। एक विशाल आयरन गेट था और आयरन गेट के उस पार एक लंबा-चौड़ा ड्राइव-वे नज़र आ रहा था। आयरन गेट के बराबर में ही लगी एक तख्ती पर लिखा था- 'अभिजीत घोष'

माधवन ने जोर से कार का हॉर्न बजाया।

फ़ौरन अन्दर से 'बहादुर' (नेपाली चौकीदार) दरवाजे की तरफ भागता दिखाई दिया।

उसने आयरन गेट खोला।

तत्काल कार बंगले के लम्बे-चौड़े ड्राइव-वे पर भागती चली गयी।

□□□

फिर इस दुनिया के शायद सबसे ज्यादा रहस्यमयी आदमी से मेरी मुलाक़ात हुई।

आप लोगों को लग रहा होगा, मैं अतिशयोक्ति से काम ले रही हूँ, मगर ऐसी बात नहीं है। वह अभिजीत घोष के जासूसी पात्रों से भी कहीं ज्यादा रहस्यमयी था और उसकी खामोशी तो ज़बरदस्त सस्पेंस पैदा करती थी।

वह अरेबियन घोड़ा था।

बिल्कुल चांदनी की तरह सफ़ेद फक्क।

उस घोड़े पर एक आदमी राइडिंग कर रहा था और बंगले के विशाल प्रांगण में दौड़ा-दौड़ा फिर रहा था। उसकी घुड़सवारी का अंदाज़ बड़ा मर्दाना था, जो बरबस ही किसी को भी अपनी तरफ आकर्षित कर ले। वह आदमी भी कुछ कम आकर्षक न था। वह बिल्कुल इंग्लिश फिल्मों के जेम्स-बांड की तरह लम्बा-चौड़ा और छरहरा था। उसने बहुत टाइट

जींस पहनी हुई थी। चमड़े की जैकिट और पैरों में ब्राउन कलर के जिप वाले शिकारी जूते, जो बस उसके घुटनों से थोड़ा ही नीचे थे।

"विक्रम !" अभिजीत घोष ने उसे आवाज दी।

तत्काल विक्रम नाम के उस आदमी ने अरेबियन घोड़े को जोर से ऐड़ लगायी।

घोड़ा भी अपनी दोनों टांगें उठाकर बहुत जोर से हिनहिनाया और घूमा। उसके बाद वो अभिजीत घोष की तरफ दौड़ता चला गया था।

घोड़ा अभिजीत घोष से मुश्किल से तीन फुट के फासले पर आकर रुका और विक्रम ने बेहद सधे हुए अंदाज में नीच छलांग लगायी।

"गुड इवनिंग घोष साहब !"

"गुड इवनिंग! कैसे हो विक्रम ?"

"फाइन सर !"

विक्रम के नजदीक आते ही मुझे उसके अन्दर से ऐसी बदबू आयी, जैसी घोड़े की लीद में से आती है। उसकी शेविंग हद दर्जे तक बढ़ी हुई थी। उसके बाल रूखे और बेजान हो चुके थे। न जाने उसे अपने बालों में कंघा किये और तेल लगाये कितना जमाना गुजर चुका था।

मैंने अपनी नाक-भौं सिकोड़ी।

"यह विक्रम है।" अभिजीत घोष ने मेरी तरफ देखते हुए कहा- "हमारे अस्तबल का ख़ास सिक्योरिटी गार्ड, सब कुछ ! विक्रम जहाँ एक बहादुर इंसान है, वहीं इसमें कुछ बुराइयाँ भी हैं।"

"कैसी बुराइयाँ ?"

"जैसे यह नहाता बहुत कम है।" अभिजीत घोष ने हंसते हुए कहा- "इसके अलावा बात भी कम करता है।"

विक्रम खामोश खड़ा रहा।

उसके ऊपर उन शब्दों की कोई प्रतिक्रिया न हुई।

"फिर भी विक्रम से तुम्हारी मुलाक़ात अच्छी रहेगी।" अभिजीत घोष बोला- "विक्रम एक ऐसी बंद किताब की तरह है, जिसका कवर कोई बहुत अच्छा भले ही न सही, लेकिन जैसे-जैसे इस किताब के पन्ने पलटते हैं, आदमी की उस किताब को पढ़ने की इच्छा-शक्ति बढ़ती चली जाती है।"

'इंटरेस्टिंग! मिस्टर विक्रम की शख्सियत का आपने काफी अच्छा वर्णन प्रस्तुत किया है घोष साहब !"

"आप घोष साहब की बातों पर न जाओ मैडम !" विक्रम ने अपनी खामोशी तोड़ी- "घोष साहब मेरे बारे में मजाक कर रहे हैं।"

"मैं मजाक कर रहा हूँ या नहीं, यह तुम्हें आगे चलकर मालूम होगा। कम ऑन।"

मैं अभिजीत घोष के साथ-साथ अब बंगले के अन्दर की तरफ बढ़ गयी।

विक्रम!

उस आदमी से मेरी पहली मुलाक़ात काफी अजीब थी।

बंगले में अन्दर की तरफ बढ़ते हुए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे विक्रम की ब्लेड की धार जैसी पैनी आँखें मेरी पीठ में गड़ी हुई हैं।

□□□

अभिजीत घोष का वह बंगला कई एकड़ भूमि में फैला था। आधी से ज्यादा जगह में तो खाली कंपाउंड और ड्राइव-वे ही था। इसके अलावा इमारत भी काफी विशालकाय जगह में निर्मित थी। काफी लंबा-चौड़ा पत्थर का चबूतरा था, जिस पर चार सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ऊपर पहुंचा जाता, फिर चबूतरा पार करके इमारत में दाखिल हुआ जाता। वहां कोई बीस कमरे थे। स्टडी रूम था। ड्राइंग हाल था और थोड़ा हटकर सर्वेन्ट क्वार्टर थे।

कुल मिलाकर अभिजीत घोष का वह बंगला किसी महल से हरगिज कम न था।

बंगले के अन्दर मेरी एक नौकर से और मुलाक़ात हुई।

अभिजीत घोष को देखते ही उसने भी अपने दोनों हाथ जोड़े।

"इनसे मिलो कुमार!" अभिजीत घोष ने उससे मेरा सबसे ख़ास परिचय कराया- "इनका नाम नताशा है।"

"हैलो मैडम !"

"हैलो !"

उस नए नौकर का नाम कुमार था। कुमार साधारण शक्ल-सूरत वाला आदमी था। साधारण कद था और उम्र तीस-बत्तीस साल के आसपास थी। अलबत्ता वह अपने हाव-भाव से थोड़ा शातिर मालूम होता था।

"कुमार, यह मैडम अब कुछ दिन इधर बंगले में ही रहेंगी।" अभिजीत घोष बोला- "तुमने इनका ख़ास ख्याल रखना है।"

"आप निश्चिंत रहें घोष साहब !" कुमार ने तत्परतापूर्वक कहा।

"गुड! मुझे यही उम्मीद है। जाओ, इन्हें इनका कमरा दिखाओ।"

"आइये मेम साहब !"

अभिजीत घोष जहाँ अब बंगले में अपने बेडरूम की तरफ बढ़ गया, वहीं मैं कुमार के साथ-साथ चल पड़ी।

कुमार काफी बातूनी था।

वह एक बहुत लंबा-चौड़ा संगमरमरी गलियारा था, जिसमें से मैं अब कुमार के साथ होकर गुजर रही थी।

"आप शायद घोष साहब के बुआ की लड़की हैं मैडम !" कुमार मेरे साथ-साथ चलते हुए बोला- "जो पहले शिमला में रहती थी।"

"नहीं।"

कुमार चौंका।

उसने हैरानीपूर्वक मेरी तरफ देखा।

"फिर आप घोष साहब की क्या लगती हैं ?"

"कुछ भी नहीं।" मैंने मुस्कुराकर कहा- 'दरअसल आपके घोष साहब से मेरी मुलाक़ात सिर्फ कुछ घंटे पुरानी है। मेरी ट्रेन में ही उनसे मुलाक़ात हुई थी।"

"ट्रेन में?"

"हाँ !"

"बड़ी अजीब बात कर रही हैं आप।"

कुमार के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभर आये। मुझे देखकर उसके चेहरे पर जो खुशी पैदा हुई थी, वह अब पूरी तरह नदारद हो चुकी थी।

उस क्षण मुझे अहसास हुआ, मैंने कुमार को सच्चाई बताकर शायद ठीक नहीं किया।

लेकिन तीर कमान से छूट चुका था।

तभी कुमार ने आगे बढ़कर एक कमरे का दरवाजा खोला। कमरा काफी ऐश्वर्यशाली ढंग से सजा हुआ था और उसमें सुख-सुविधा की लगभग तमाम चीजें उपलब्ध थीं।

“वाऊ! फैन्टास्टिक!” कमरा देखते ही मेरी तबीयत खुश हो गयी।

“जगह आपको पसंद आयी मैडम?”

“बिल्कुल!”

“अगर आपको किसी चीज की जरूरत पड़े, तो सिर्फ यह बटन दबा देना।” कुमार ने अन्दर आकर वहीं बेड के नजदीक लगे एक बटन की तरफ इशारा किया- “मैं तुरंत यहाँ उपस्थित हो जाऊंगा।”

मैंने बटन को ध्यानपूर्वक देखा।

“ठीक है।”

कुमार तब तक जाने के लिये मुड़ चुका था।

“सुनो!”

कुमार जाते-जाते ठिठका।

“तुम यहाँ क्या करते हो?”

“मैं यहाँ का बावर्ची हूँ।” कुमार ने बताया- “सब लोगों के लिये खाना बनाता हूँ और घोष साहब की तमाम जरूरतों का ध्यान रखता हूँ।”

“घोष साहब के अलावा यहाँ और कितने आदमी हैं?”

“कुल चार आदमी हैं। विक्रम, माधवन, बहादुर और मैं... यानि कुमार।”

“ओ.के.!”

कुमार चला गया।

□□□

शाम के समय घोष साहब ने और मैंने एक साथ डिनर किया।

डिनर वाकई बहुत लजीज था।

हालांकि मुम्बई शहर में ज्यादा ठण्ड नहीं पड़ती, लेकिन जहाँ तक मुझे याद आता है, वह एक सर्द शाम थी। मैं भी ठण्ड अनुभव कर रही थी और मैंने शाल लपेट ली थी। मड आइलैंड का वह इलाका वैसे भी बहुत खुला हुआ और हवादार था।

डिनर लेने के पश्चात हम दोनों स्टडी में आकर बैठ गये।

“मेरे एक सवाल का जवाब दोगी?” अभिजीत ने अपलक मेरी तरफ देखते हुए कहा।

उस समय वह ईजी चेयर पर बैठा था।

एक किताब खुली हुई उसकी गोद में रखी थी।

“क्यों नहीं? जरूर!”

“तुमने किसका खून किया है?”

घोष साहब ने एकाएक इतने अप्रत्याशित ढंग से मुझसे वो सवाल पूछा कि मैं उछल पड़ी।

"ख...खून?" मैं हतप्रभ लहजे में बोली- "यह आप क्या कह रहे हैं घोष साहब ?"

"क्यों ?" अभिजीत घोष के होठों पर हल्की-सी मुस्कान दौड़ी- "क्या मैंने कुछ गलत कहा ? क्या तुमने किसी का खून नहीं किया है ?"

मुझे अपनी जान सूखती अनुभव हुई।

"दरअसल मेरे इस सवाल पर तुम्हें कोई बहुत ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिये नताशा!" अभिजीत घोष बोला- "तुम शायद भूल रही हो, मैं एक जासूसी उपन्यासकार हूँ। सुबह से शाम तक मैं खून-खराबा करने वाले इसी तरह के किरदारों के बीच जीता हूँ। तुम्हारी जानकारी के लिये बता दूं, तुम जितनी बुरी तरह हड़बड़ाई हुई ट्रेन में चढ़ी थी, मैं तभी समझ गया था कि तुम कुछ गड़बड़ करके आर रही हो। फिर टी.सी. के टिकट माँगने पर तुम जितनी भयभीत हो उठी थी, उससे तो यह बात और भी ज्यादा साबित हो गयी।"

मुझे अपना खून बर्फ की तरह ठंडा पड़ता अनुभव हुआ।

मुझे पहली बार एहसास हुआ, मैं वाकई एक दिग्गज जासूसी उपन्यासकार के सामने थी।

"तुम्हारी उस समय की हालत देखकर दो ही चीजें अपेक्षित थीं।" अभिजीत घोष बाल की खाल निकालता हुआ बोला- "या तो तुम्हारे माता-पिता तुम्हारी मर्जी के खिलाफ तुम्हारी शादी कर रहे थे, इसलिये तुम अपना घर छोड़कर भाग आयी थीं। या फिर तुमने किसी का खून कर दिया था। शादी वाली बात तो मैंने तुमसे वहीं ट्रेन में पूछ ली थी और तुमने उस बात से इंकार भी कर दिया। अब सिर्फ एक ही बात संभव थी, तुमने किसी का खून कर दिया है।"

मैं हतबुद्ध-सी अभिजीत घोष की तरफ देखने लगी।

अभिजीत घोष!

वो अब बहुत शांतचित्त मुद्रा में अपना सिगार सुलगा रहा था।

"य... यह जानते हुए भी कि मैं किसी का खून करके आयी हूँ।" मेरे दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी- "आपने मुझे अपने यहाँ शरण दी ?"

"दरअसल मैंने तुम्हें अपने यहाँ शरण ही इसलिये दी।" अभिजीत घोष धमाका-सा करता हुआ बोला- "क्योंकि तुम किसी का खून करके भागी थीं।"

□□□

मैं भौचक्की रह गयी।

मेरे नेत्र बुरी तरह फट पड़े, मानो अभी अपनी कटोरियों से बाहर निकल पड़ेंगे।

"य... यह आप क्या कह रहे हैं घोष साहब ?"

"क्यों ?" अभिजीत घोष बोला- "क्या मैंने कुछ गलत कहा ?"

मैं अभिजीत घोष को इस तरह देखने लगी, जैसे किसी अजूबे को देख रही होऊँ।

"दरअसल मुझे तुम्हारे अन्दर एक निर्दोष लड़की दिखाई दी थी।" अभिजीत घोष स्याह काले सिगार का छोटा-सा कश लगाते हुए बोला- "अगर मैं तुम्हें उस वक्त जाने देता, तो

तुम न जाने कहाँ-कहाँ भटकती। कहाँ-कहाँ ठोकरें खाती। ऐसी परिस्थितियों में तुम्हें सहारे की जरूरत थी। अगर मैंने तुम्हें सहारा दिया, तो क्या बुरा किया ?"

"यानि आपने यह जानते हुए भी कि मैं एक खूनी हूँ, मेरी मदद की ?"

"हाँ !"

मेरी निगाह में अभिजीत घोष का दर्जा एकाएक अब बहुत बुलंद हो गया।

"क्या तुम यह बताना पसंद करोगी कि तुमने किसकी हत्या की है ? मैं यह बात भी तुमसे किसी उद्देश्यवश पूछ रहा हूँ।"

"किस उद्देश्यवश ?"

"मैं नहीं चाहता, तुमने किसी बचकाने अंदाज में वह मर्डर कर दिया हो और वह खून तुम्हारी जिंदगी में आइन्दा कोई फसाद पैदा करे।"

बात अभिजीत घोष की काफी हद तक ठीक थी।

मुझे न जाने क्यों अब उस आदमी से कुछ भी छुपाना ठीक न लगा।

मेरी पिछली जिन्दगी में जो कुछ गुजरा था, मैं वह सब एक ही सांस में अभिजीत घोष को बताती चली गयी।

मैंने उससे कुछ नहीं छुपाया।

मेरी गुज़री हुई कहानी सुनकर अभिजीत घोष भी एकाएक बहुत संजीदा हो गया। वह ईजी चेयर पर थोड़ा और पसरकर बैठ गया तथा उसने स्याह काले सिगार का एक कश लगाया।

"यह सब ठीक नहीं हुआ।" अभिजीत घोष संजीदा लहजे में ही बोला- "तुम नहीं जानती, तुम इस वक्त कितने खतरे में हो।"

"क्या मतलब ?"

"क्या तुम्हारे आख़िरी शिकार गौतम पटेल ने जब फोन करके पुलिस को वहां बुलाया, तो क्या उसने फोन पर ही पुलिस को तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया था ?"

"कुछ कह नहीं सकती।"

"फिर भी कुछ अंदाजा ?"

"नहीं! कोई अंदाजा नहीं। मुझे सिर्फ इतना मालूम है, उसने फोन करके पुलिस को वहां तलब किया था। अब उसकी टेलीफोन पर पुलिस से क्या बातें हुईं, यह मैं नहीं सुन सकी।"

"यानि गौतम पटेल मरने से पहले गोरखपुर पुलिस को तुम्हारे बारे में सब कुछ बता चुका था या नहीं बता चुका था।" अभिजीत घोष बोला- " तुम्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।"

"नहीं !"

"ओह! यह और भी ज्यादा गड़बड़ वाली बात है।"

"क्यों ? इसमें गड़बड़ क्या है?"

"ज़रा सोचो।" अभिजीत घोष ने चिंतित भाव से सिगार का एक कश लगाया- "अगर गौतम पटेल मरने से पहले ही पुलिस को तुम्हारे बारे में सब कुछ बता चुका था, तो वो यह

भी बता चुका होगा कि वास्तव में तुम्हीं 'लेडी किलर' हो। फिर इस समय गोरखपुर के अन्दर तुम्हारे नाम का कितना हडकंप मचा होगा। पुलिस तुम्हें गोरखपुर में भूसे में सुई की तरह ढूँढती फिर रही होगी और जब तुम पुलिस को पूरे गोरखपुर में कहीं नहीं मिलोगी, तो मालूम है क्या होगा?"

"क... क्या होगा ?"

"फिर पुलिस तुम्हें पूरे देश के अन्दर तलाश करने की मुहिम छेड़ेगी।" अभिजीत घोष बोला- "तुम्हारे फोटो अखबारों में प्रकाशित होंगे। तुम्हारे से सम्बंधित खबरें टी.वी. पर ब्रॉडकास्ट की जायेंगी। 'मोस्ट वांटेड' जैसे अत्यंत पॉपुलर सीरियलों में तुम्हारे ऊपर प्रोग्राम तैयार होंगे। तुम्हारे ऊपर इनाम घोषित किया जायेगा और उसके बाद तुम समझ सकती हो, तुम्हारे लिये कहीं भी छुपकर रहना नामुमकिन होगा। फिर पूरे हिन्दुस्तान की जमीन तुम्हारे लिये छोटी पड़ जायेगी।"

मैं भयभीत हो उठी।

मैं जानती थी, 'मोस्ट वांटेड' जैसे प्रोग्रामों में आने का क्या मतलब था ?

आज तक न जाने कितने अपराधी उस प्रोग्राम में आने के बाद पकड़े जा चुके थे।

क्या मेरा भी वैसा ही हश्र होना था ?

"इसके अलावा तुमने एक बात पर गौर नहीं किया है।"

"किस बात पर ?"

"एक प्रतिशत मान लो, गौतम पटेल ने पुलिस को तुम्हारे बारे में कुछ बताया भी नहीं, तब भी गौतम पटेल का मर्डर तुम्हारे घर पर हुआ है। ऐसी परिस्थिति में पुलिस वैसे भी तुम्हें तलाशने की हरचंद कोशिश करेगी और चूंकि तुम वहां उपस्थित नहीं होओगी, इसलिये पुलिस का येन-केन प्रकारेण तुम्हारे ऊपर ही शक जायेगा। दरअसल तुमने ज़रा भी बुद्धिमानी से काम नहीं लिया और गौतम पटेल का खून करने के बाद वहां से भागने में काफी जल्दबाजी दिखाई बल्कि तुम्हें वहां रुककर पुलिस के सामने कोई कहानी गढ़नी चाहिए थी और उससे भी पहले यह कोशिश करनी चाहिए थी कि तुम गौतम पटेल से ही यह पूछती कि उसने पुलिस को तुम्हारे बारे में कुछ बताया था या नहीं बताया था। अगर गौतम पटेल ने पुलिस को तुम्हारे बारे में कुछ नहीं बताया था, तो तुम्हारे लिये मुश्किल ही कुछ नहीं थी। खतरा ही कुछ नहीं था। फिर तुम गौतम पटेल को पॉइंट ब्लैंक शूट करने के बाद किसी को भी उसकी हत्या के इल्जाम में लपेट सकती थीं।"

अभिजीत घोष की बात में दम था।

मैं जितनी उसकी बातें सुन रही थी, उतने ही मेरे होश उड़ रहे थे।

"अ... आप ठीक कह रहे हैं घोष साहब।" मैं कंपकंपाये स्वर में बोली- "लेकिन अब क्या हो सकता है ?"

"यही तो अफसोस है कि अब कुछ नहीं हो सकता है।" अभिजीत घोष गहरी सांस लेकर बोला और ईजी चेयर छोड़कर उठ खड़ा हुआ- "तुम्हारे बचने के जितने भी रास्ते थे, वह सब तुम्हारी जल्दबाजी के कारण पहले ही बंद हो चुके हैं।"

मैं भी जल्दी से कुर्सी छोड़कर उठी और अभिजीत घोष के नजदीक पहुँची।

"फिर भी मेरे बचने का कोई तरीका तो होगा घोष साहब ?" मेरे स्वर में साफ़-साफ़

व्यग्रता झलकी।
"मुझे सोचने दो।"
अभिजीत घोष की मुद्रा एकाएक काफी विचारपूर्ण हो गयी।
वह अपनी 'बजक' कंपनी के सिगार के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ इधर-से-उधर टहलने लगा।
मुझे अभिजीत घोष उस समय देवता नजर आ रहा था। अब वही इंसान मुझे बचा सकता था।
इधर-से-उधर टहलते-टहलते एकाएक अभिजीत घोष ठिठका।
उसने मेरी तरफ देखा।
"एक बात बताओ।"
"प...पूछिए।" मैं कौतुहलता पूर्वक बोली।
"तुम कुछ फोटोग्राफ्स का जिक्र कर रही थी। वह फोटोग्राफ्स, जो तुम्हारे शंकर तथा आदित्य के साथ थे और उन फोटोग्राफ्स को गौतम पटेल ने देख लिया था।"
"हाँ...वह फोटोग्राफ्स थे।" मैं जल्दी से बोली।
"अब वो फोटोग्राफ्स कहाँ हैं? क्या तुम उन्हें वहीं छोड़ आयी?"
"नहीं। मैं घर छोड़कर भागते समय उन्हें अपने साथ ले आयी थी।"
"थैंक गॉड!" अभिजीत घोष ने गहरी नि:श्वास छोड़ी- "कम-से-कम एक तरीके का काम तो तुमने किया। तुम नहीं जानती, अगर वह फोटोग्राफ्स तुम वहीं छोड़ आती, तो फिर दुनिया की कोई ताकत तुम्हें 'लेडी किलर' साबित होने से नहीं बचा सकती थी। अब तुम एक काम करो, तुम्हारे पास वह जो फोटोग्राफ्स हैं, उन्हें तुरंत नष्ट कर डालो। अपनी मौत को दावत देने वाले इस तरह के सबूत कभी अपने पास नहीं रखने चाहिए।"
"ठीक है।" मैं बोली- "मैं आज रात को ही वह फोटोग्राफ्स नष्ट कर दूंगी।"
"बहुत बेहतर।"

□□□

अभिजीत घोष का दिमाग उस समय काफी तेज स्पीड से चल रहा था।
जितनी बारीकी से वह एक-एक स्थिति का अवलोकन कर रहा था, उससे साबित हो रहा था कि वह वास्तव में ही एक बेहतरीन जासूसी उपन्यासकार है और मर्डर मिस्ट्री लिखने में उस आदमी को महारथ हासिल है।
"अब बस एक तरीका है।" अभिजीत घोष बोला।
"क... क्या?"
"तुम चार-पांच दिन तक इस बंगले से बाहर किसी भी हालत में बिल्कुल कदम नहीं रखोगी। किसी को पता भी नहीं चलना चाहिए कि तुम इस बंगले के अन्दर मौजूद हो या मैंने तुम्हें आश्रय दिया हुआ है।"
"उससे क्या होगा?"
"वही बता रहा हूँ।" अभिजीत घोष एक-एक बात बहुत सोचता-विचरता हुआ बोला- "इन चार-पांच दिन में हम पूरी तरह अखबारों पर निगाह रखेंगे। टी.वी.चैनल्स पर

निगाह रखेंगे तथा यह जानने का प्रयास करेंगे कि गोरखपुर से तुम्हारे भाग आने के बाद वहां 'लेडी किलर' को लेकर पुलिस की गतिविधियाँ क्या हैं ? उन गतिविधियों के बारे में पता चलने के बाद ही हम यह फैसला करेंगे कि अब आगे क्या कदम उठाया जाये । ठीक ?"

"ठीक है ।" मैंने स्वीकृती में गर्दन हिलाई ।

अभिजीत घोष की एक-एक बात बहुत नपी-तुली थी ।

"लेकिन एक बात तुम अच्छी तरह समझ लो नताशा !" एकाएक अभिजीत घोष की आवाज बहुत सख्त हो उठी ।

मैं काँप गयी ।

मुझे लगा, अभिजीत घोष कोई गंभीर बात कहने जा रहा है ।

"क... क्या बात समझ लूं ?"

"मुझे अपराध और अपराधी, दोनों से सख्त नफ़रत है ।"अभिजीत घोष दांत किटकिटाता हुआ बोला- "तुम्हें शायद सुनकर आश्चर्य होगा कि एक अपराधी से जितनी सख्त नफ़रत मैं करता हूँ, उतनी शायद ही दुनिया में कोई और करता हो। क्योंकि मेरा मानना है कि एक अपराधी बेहद गंदे और मानसिक रूप से बीमार समाज का जन्मदाता होता है । अगर आप एक अपराधी को गोली मारते हैं, तो आप कम-से-कम सौ ड्राईक्लीन सिटीजन्स को नारकीय जिन्दगी जीने से बचाते हैं । लेकिन क्राइम के ऊपर इतनी लम्बी-चौड़ी फिलास्फी देने के बावजूद भी अगर मैं तुम्हारी मदद कर रहा हूँ, तो सिर्फ इसलिये कर रहा हूँ, क्योंकि तुम मूलभूत तौर पर अपराधी नहीं हो । तुम हालातों की शिकार एक लड़की हो । तुमने जितने खून किये, वो प्री-प्लांड नहीं थे । पूर्व योजनाबद्ध नहीं थे । बल्कि तुमने आवेश में और हताशा का शिकार होकर वह सारे मर्डर किये । वह सारे खून किस्मत के प्रति तुम्हारा विरोधाभास थे । इसलिये मैं समझता हूँ, फिलहाल तुम्हें कानून के हवाले करना तुम्हारे साथ नाइंसाफी होगी । लेकिन यह बात तुम्हें भी सोचनी चाहिए और इसलिये समझनी चाहिए, कहीं तुम मुझे अपराधियों का मददगार न समझ लो ।"

"ओह घोष साहब !" मैं एकाएक कसकर अभिजीत घोष से लिपट गयी- "मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मेरी आप जैसे आदमी से मुलाक़ात होगी । आप जैसा आदमी संकट के इन घनघोर क्षणों में मेरी इतनी हेल्प करेगा।"

"चिंता मत करो ।" अभिजीत घोष स्नेहपूर्वक मेरी पीठ थपथपाता हुआ बोला- "मैं हर पल तुम्हारे साथ हूँ । मैं तुम्हें आसानी से कुछ नहीं होने दूंगा ।"

"थैंक यू ! थैंक यू वैरी मच घोष साहब ! आपने यह शब्द कह दिए, तो मुझे लग रहा है, जैसे मेरी आधी से ज्यादा मुश्किलें इसी क्षण ख़त्म हो गईं ।

अभिजीत घोष ने अपने स्याह काले सिगार का एक छोटा-सा कश और लगाया ।

□□□

उसके बाद अभिजीत घोष ने एक महत्वपूर्ण कार्य अंजाम दिया ।

वो एक ख़ास कदम था ।

उसने बंगले के चारों नौकरों को अपने उसी स्टडी रूम में बुलाया ।

उस क्षण अभिजीत घोष अपनी ईजी चेयर पर पहले की तरह टांग फैलाए बैठा था ।

सिगार उसके हाथ में था। जबकि मैं पीछे की तरफ ईजी चेयर की ऊंची पुश्त को दोनों हाथ से पकड़े खड़ी थी।

"आपने हमें बुलाया घोष साहब ?" कुमार बड़े अदब के साथ बोला।

विक्रम, माधवन और बहादुर, वह उसके बराबर में ही खामोश खड़े थे।

"हाँ, कुमार !" अभिजीत घोष ने उन चारों की तरफ नजरें उठाईं- "मैंने तुम लोगों को एक जरूरी बात कहने के लिये बुलाया है।"

"कैसी जरूरी बात?"

चारों चौंके।

उनकी जिन्दगी में यह पहला वाकया था, जब अभिजीत घोष ने उन्हें इस तरह तलब किया था।

वह भी जरूरी बात करने के लिये।

"नताशा से तो आज तुम लोगों का परिचय हो ही चुका है।"

"जी साहब !"

"मैं नताशा के बारे में तुम लोगों से बात करना चाहता हूँ।" अभिजीत घोष बोला।

"क्या ?"

"दरअसल मैं चाहता हूँ, नताशा यहाँ ठहरी हुई है, यह बात किसी को पता न चलने पाये।" अभिजीत घोष ने बेहद शांत लहजे में कहा।

"क्यों ?" विक्रम आहिस्ता से चौंका।

उसके दिमाग में धमाका-सा हुआ।

"बहस मत करो।" अभिजीत घोष की आवाज में सख्ती पैदा हुई- "तुमसे जो कहा जा रहा है, सिर्फ वह करो। दिस इज माय आर्डर ! ओ.के.?"

"ओ.के. घोष साहब !"

उन चारों में से पहले किसी ने अभिजीत घोष को इतना सख्ती के साथ बात करते नहीं देखा था।

वह उनके लिये आश्चर्य का कारण था।

"इसके अलावा एक बात और ध्यान रहे।" अभिजीत घोष ने उन चारों पर नजर घुमाते हुए कहा।

"क्या ?"

"यह बात अगर इस बंगले की चारदीवारी से बाहर जाती है, तो मैं समझूंगा कि वह तुममें से किसी के द्वारा बाहर गयी है। क्योंकि इस बंगले में कोई लड़की भी मौजूद है, यह बात हम पाँचों के अलावा कोई नहीं जानता। समझ गये ?"

सब खामोश रहे।

"मुझे तुम लोगों से इस सम्बन्ध में कुछ और तो नहीं कहना है ?"

"नहीं।"

"यू मे गो नाउ।"

चारों चले गये।

विक्रम की निगाह न जाने क्यों उस क्षण भी मुझे ऐसी लगीं, मानो वह मेरे शरीर में गड़ी

जा रही हैं।

विक्रम!

उसमें न जाने कैसा चुम्बकीय आकर्षण था।

मैं जब-जब उसे देखती, मेरे दिल की धड़कनें तेज हो जातीं।

फिर उस रात अभिजीत घोष और मैंने एक साथ बैठकर टी.वी. की ख़बरें सुनीं।

एक-एक करके सभी चैनल देखे।

मगर मेरे से सम्बंधित कोई खबर किसी चैनल पर नहीं थी।

□□□

अगले दिन अभिजीत घोष ने मेरे लिये बाजार से कुछेक कपड़े मंगा दिए।

मेरे पास कपड़े नहीं हैं, यह बात अभिजीत घोष रात ही भांप गया था। सुबह ही उसने माधवन को रेडीमेड कपड़े लेने भेज दिया। माधवन जो कपड़े लेकर आया, वो काफी अच्छे थे।

ग्यारह बजे का समय था। मैं धारीदार लाउजिंग पायजामा और हाईनेक का पुलोवर पहने बंगले में टैरेस पर खड़ी थी तथा हल्की-हल्की धूप का आनंद ले रही थी।

तभी मैं चौंक उठी।

मुझे ऐसा लगा, जैसे कोई 'आफत' गड़गड़ाती हुई मेरे सिर पर गिरी हो।

वह एक नीले रंग की जिप्सी थी, जिसे मैंने पहले बंगले अन्दर दाखिल होते और फिर रुकते देखा।

पुलिस!

मेरे दिमाग पर मानो बिच्छू ने बहुत जोर से डंक मारा।

मेरे होश गुम।

जिप्सी के रुकते ही उसमें से एक वर्दी में सजा-धजा पुलिस इन्सपेक्टर बाहर निकला।

लंबा कद। गौर वर्ण। उम्र तीस-पैंतीस के आसपास। वह पुलिस इंस्पेक्टर खाकी वर्दी में बिल्कुल ऐसा नजर आ रहा था, मानो वह खासतौर पर उसी वर्दी के लिये बना हो।

पुलिस इंस्पेक्टर को देखते ही मेरा चेहरा एकदम कागज की तरह सफेद पड़ गया।

आंखों में हवाइयां।

होठ शुष्क।

मैं कुमार की तरफ मुड़ी। कुमार, जो उस वक्त टैरेस की सफाई कर रहा था।

"य...यहां पुलिस क्यों आयी है ?" मैं भयभीत मुद्रा में बोली।

"पुलिस ?"

कुमार ने भी चौंककर नीचे ड्राइव-वे की तरफ देखा, लेकिन फिर वो धीरे से मुस्कुरा दिया।

"यह इंस्पेक्टर विकास बाली हैं मैडम !"

"व...विकास बाली ?"

"हां !" कुमार ने बताया- "यह घोष साहब के उपन्यासों के बहुत ज़बरदस्त फैन हैं। यह अक्सर घोष साहब से मिलने बंगले पर आते रहते हैं।"

"ओह !"
मेरे सिर से मानो कोई बड़ा बोझ उतर गया।
मैंने लम्बी राहत की सांस ली। वरना मैं तो घबरा ही गयी थी।
मैं टैरेस से थोड़ा पीछे हट गई, ताकि एकाएक किसी की निगाह मेरे ऊपर न पड़ सके।
"मैडम- मुझे घोष साहब के साथ इस बंगले में रहते हुए काफी साल हो गये हैं।" कुमार बड़ी तन्मयतापूर्वक बोला- "लेकिन मैंने इंस्पेक्टर विकास बाली जैसा उनके उपन्यासों का फैन आज तक नहीं देखा।"
"क्यों, विकास बाली में ऐसी क्या खास बात है ?"
"दरअसल इंस्पेक्टर विकास बाली को घोष साहब के तमाम उपन्यासों की घटनाएं मानो जबानी याद हैं मैडम ! इतना ही नहीं, इंस्पेक्टर विकास बाली का यह भी कहना है कि घोष साहब के उपन्यास पढ़-पढ़कर उसे अपने पुलिस कैरियर में काफी लाभ पहुंचा है। उसने कई अपराधियों को तो बिल्कुल वैसी ही योजना बनाकर पकड़ लिया, जैसी घोष साहब अपनी उपन्यासों में योजना बनाते हैं।"
"ओह ! वेरी इण्ट्रेस्टिंग !"
मेरी आंखें चमक उठीं।
वो काफी दिलचस्प बात थी।
"विकास बाली कभी सिर्फ एक मामूली कांस्टेबल के तौर पर पुलिस के महकमें में भर्ती हुआ था।" कुमार बोला- "लेकिन फिर वह काफी जल्दी-जल्दी तरक्की की सीढ़ियां चढ़ता हुआ इंस्पेक्टर की पोस्ट तक जा पहुंचा। विकास बाली का मानना है, अगर वह घोष साहब के उपन्यास न पढ़ता होता, तो इतनी जल्दी तरक्की की सीढ़ियां हरगिज़ न चढ़ता। जासूसी उपन्यास पढ़-पढ़कर इंस्पेक्टर विकास बाली का दिमाग भी काफी शार्प हो गया है। खासतौर पर उसने अपनी पत्नी के हत्यारे को जिस तरह पकड़ा, वह तो अद्भुत ही था।"
इंस्पेक्टर विकास बाली के करैक्टर में अब मेरी दिलचस्पी भी काफी बढ़ने लगी।
विकास बाली!
वह अपने आपमें बहुत अनोखी चीज मालूम हो रहा था।
वैसे भी इस दुनिया में ऐसे काफी लोग होते हैं, जिनके बारे में इंसान ज्यादा-से-ज्यादा जानना चाहता है।
विकास बाली उन्हीं में से एक था।
"क्या किसी ने उसकी पत्नी की हत्या कर दी थी ?" मैंने कौतुहलतावश पूछा।
"हां ! वह एक इश्तिहारी मुजरिम था।" कुमार बोला- "जिसने इंस्पेक्टर विकास बाली की पत्नी को गोलियों से भून डाला। लेकिन फिर विकास बाली ने उसे जिस तरह पकड़ा, उसने सम्पूर्ण पुलिस डिपार्टमेन्ट को चमत्कृत करके रख दिया। वो एक आश्चर्यजनक मामला था।"
"किस तरह पकड़ा इंस्पेक्टर विकास बाली ने उसे ?" मैं उत्सुकतापूर्वक कुमार की तरफ देखने लगी।
मैं उसके बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानने को बैचेन थी।
"आज से कोई छः महीने पुरानी घटना है।" कुमार बोला- "उस गुंडे का नाम 'कांति

भाई' था। कांति भाई का मुंबई शहर में बड़ा आतंक था। बड़ा दबदबा था। वह सुपारी ले-लेकर कई मर्डर कर चुका था, मगर एक दिन कांति भाई विकास बाली के हत्थे चढ़ गया और विकास बाली ने उसे जेल की सलाखों के पीछे धकेल दिया। कांति भाई को दस साल की सजा हुई, मगर कांति भाई दस साल तक सलाखों के पीछे कहां रहने वाला था?"

"फिर क्या हुआ?"

"फिर वही हुआ।"कुमार बोला- "जिसकी आशंका थी।"

"यानि कांति भाई जेल तोड़कर भाग निकला?" मैंने अपने अधरों पर जबान फिराई।

"बिल्कुल।" कुमार बोला- "वह न सिर्फ जेल तोड़कर भाग निकला, बल्कि उसने सौगंध खाई कि विकास बाली से बदला जरूर लेगा। जेल तोड़कर भागने के बाद वो सीधा विकास बाली के घर पहुंचा। किस्मत का खेल देखो, वहां इन्सपेक्टर विकास बाली तो उसे न मिला, लेकिन उसकी बीवी जरूर मिल गई। कांति भाई प्रतिशोध की ज्वाला में इतना इतना धधक रहा था कि उसने विकास बाली की बीवी को ही गोलियों से भून डाला और वहां से भाग खड़ा हुआ।"

"ओह!" मेरे शरीर में तेज सिहरन दौड़ी- "इंस्पेक्टर की बीवी को मारकर उसे क्या मिला?"

"कुछ भी नहीं मिला। बस प्रतिशोध की ज्वाला में धधकती उसकी आत्मा को थोड़ा सुकून पहुंचा होगा। बहरहाल रात को ही जब इन्सपेक्टर विकास बाली अपने घर पहुंचा और वहां उसने अपनी बीवी की लाश देखी, तो उसके ऊपर मानो भीषण वज्रपात हुआ। सबसे बड़ी बात ये है कि उसके घर में इतनी बड़ी घटना घट गई थी, लेकिन मोहल्ले-पड़ोस में किसी को कुछ पता न था। इंस्पेक्टर विकास बाली ने कांति भाई को पकड़ने के लिये तुरंत एक योजना बनाई। उसने अपनी बीवी के शव को वहीं एक कमरे में छुपा दिया और मोहल्ले-पड़ोस में लोगों के सामने ऐसा शो किया, जैसे उसकी बीवी को कुछ न हुआ हो। वह रोजाना तैयार होकर तथा घर का ताला लगाकर बकायदा पुलिस स्टेशन जाता था और शाम को अपनी ड्यूटी ऑफ होने के बाद वापस आता। मोहल्ले-पड़ोस वालों को उसने यह बताया कि उसकी बीवी बाहर गई हुई है।"

"लेकिन इतने दिन तक एक शव को घर में रखने से तो उसके अन्दर से बदबू उठने लगी होगी।" मैं सिहरकर बोली।

"नहीं। ऐसा नहीं हुआ।" कुमार ने बताया- "विकास बाली क्योंकि एक इन्सपेक्टर था और मॉर्ग में उसका आना-जाना होता रहता था, इसलिये वो जानता था कि किसी भी शव को किस प्रकार लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। उसने मॉर्ग से कुछ केमिकल वगैरह अरेंज कर लिये थे, जिन्हें उसने शव के ऊपर लगाकर रखा।"

"ओह!"

"बहरहाल इंस्पेक्टर विकास बाली के उस नाटक का कान्ति भाई के ऊपर अपेक्षित प्रभाव पड़ा।"कुमार बोला- "कान्ति भाई यह समझ रहा था, उसने चूंकि इंस्पेक्टर विकास बाली की बीवी को मार डाला है, इसलिये उस हत्याकाण्ड का पूरे महकमे में बड़ा जबरदस्त हंगामा मचेगा। बड़ी हाय-तौबा होगी, लेकिन जब वैसा कुछ न हुआ। हंगामा मचना तो अलग बात है, यह खबर किसी अखबार के छोटे कॉलम में भी न छपी कि

इन्सपेक्टर विकास बाली की बीवी की हत्या हो गई है। इतना ही नहीं, कांति भाई ने विकास बाली को भी बड़ी मुस्तैदी के साथ रोजाना अपनी ड्यूटी पर आते जाते देखा, तो अब कांति भाई की खोपड़ी चकराई। वो समझ न सका, क्या माजरा है। वो इसी बात को लेकर कंफ्यूज होने लगा कि उसने विकास बाली की बीवी की हत्या की भी है या नहीं की है। इसी तरह एक-एक करके सात दिन गुजर गये।"

"कान्ति भाई की बैचेनी तो अब अपने चरम पर पहुंचने लगी होगी?"

"बैचेनी क्या, उस आदमी की खोपड़ी बुरी तरह चकरघिन्नी बनी हुई थी। सातवें दिन जब बात उसकी बर्दाश्त के बाहर हो गई, तो वह विकास बाली की बीवी को देखने के लिये रात के समय चुपचाप उसके घर में जा घुसा और इन्सपेक्टर विकास बाली मानो उसी क्षण के इंतजार में था। वह तत्काल कांति भाई के ऊपर झपट पड़ा। कांति भाई ने माजरा भांपकर वहां से भागने का प्रयास किया, तो इन्सपेक्टर विकास बाली ने उसे फौरन शूट कर दिया। तब आठवें दिन जाकर लोगों को मालूम हुआ कि इन्सपेक्टर विकास बाली की बीवी की मौत हो चुकी है। तब एक साथ दो लाशें विकास बाली के घर से बाहर निकलीं। जिसने भी इस घटनाक्रम का विवरण सुना, वही भौचक्का रह गया। कांति भाई को पकड़ने के लिये इन्सपेक्टर विकास बाली ने जो योजना बनाई, उसके घोष साहब भी आज तक बहुत बड़े फैन हैं। अलबत्ता विकास बाली यही कहता है, वह ऐसी योजना इसलिये बना सका, क्योंकि वह घोष साहब के उपन्यास पढ़ता है।"

मैं सन्न रह गई।

वाकई।

इन्सपेक्टर विकास बाली ने अपनी पत्नी के हत्यारे को पकड़ने के लिये जो योजना बनाई, वह अद्‌भुत थी।

बेहद अद्‌भुत।

उसके लिये विकास बाली की जितनी भी प्रशंसा की जाती, वह कम ही थी।

थोड़ी देर बाद मैंने विकास बाली को जाते देखा। न जाने क्यों उसे देखकर मेरे शरीर में हल्की-सी सिहरन दौड़ गई।

□□□

मैंने देखा, बंगले में अभिजीत घोष से मिलने के लिये सुबह से शाम तक अक्सर लोग आते रहते थे।

मिलने आने वालों में मुख्य तौर पर उनके प्रकाशक, प्रशंसक या शहर के सम्मानित व्यक्ति होते। इसके अलावा बड़े-बड़े क्लबों के प्रतिनिधि भी वहां आते रहते थे, जो किसी समारोह की अध्यक्षता का प्रपोज़ल लेकर उनके पास आते। किसी इमारत के उद्घाटन का प्रस्ताव लेकर लोग उनके पास आते या कहीं किसी गोष्ठी का आयोजन होता, जिसमें अभिजीत घोष ने अपने विचार व्यक्त करने होते।

अभिजीत घोष का पूरा दिन काफी व्यस्त रहता।

उपन्यास लेखन में भी वो बेहद तल्लीन रहते थे।

इसके अलावा देश के कोने-कोने से उनके प्रशंसकों की जो चिट्ठियां या मेल आतीं, वह भी

कुछ कम न थीं। उन्हें देश भर से समारोहों में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाता था। उस फैन मेल को देखकर पता चलता था, अभिजीत घोष कितना फेमस आदमी है।

जैसाकि पहले भी बताया जा चुका है, अभिजीत घोष को घोड़ों का भी शौक था।

उनके अस्तबल में कोई आठ घोड़े थे और सभी बेहतरीन नस्ल के थे और बेहद मूल्यवान थे। वह घोड़े रेस के मैदान में भी किराए पर जाते थे। इसके अलावा अभिजीत घोष कभी-कभार सुबह के समय किसी घोड़े पर बैठकर हवाखोरी करते।

कुल मिलाकर अभिजीत घोष की जिंदगी शानदार ढंग से चल रही थी।

उसमें कहीं कोई हलचल न थी।

कहीं कोई हड़कंप न था।

परंतु यह बात कुछ ठीक नहीं है, जहां मैं होऊं, वहां कोई हलचल न हो।

□□□
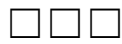
अगले चार दिन तक अभिजीत घोष और मैंने अखबारों पर बड़ी पैनी निगाह रखी।

कई-कई अखबार मंगाए गये।

टी.वी. की खबरों को देखा।

परन्तु कहीं भी मेरे से सम्बंधित कोई न्यूज नहीं थी।

चौथे दिन आज तक पर एक खबर प्रसारित हुई।

खबर गोरखपुर की 'लेडी किलर' से संबंधित थी। खबर में बताया गया, गोरखपुर पुलिस को एक लड़की की लाश बरामद हुई है और पुलिस का अनुमान है, संभवतः वह लेडी किलर की लाश है। खबरों में यह भी बताया गया, लेडी किलर अपने किसी नए प्रेमी का मर्डर करने जा रही थी, लेकिन इस बार दाव उल्टा पड़ गया और उसके प्रेमी ने ही उसे मार डाला। अलबत्ता लेडी किलर को मार डालने वाला उसका कथित प्रेमी अभी पुलिस के सामने नहीं आया है।

आज तक पर इस खबर को सुनते ही अभिजीत घोष और मेरे चेहरे पर रौनक आ गई।

मैंने खुशी में बियर के दो लॉर्ज पैग तैयार किए, जिन्हें हमने एक दूसरे से टकराया।

"चियर्स !" मैंने गरमजोशी के साथ कहा।

"चियर्स !" घोष साहब भी बोले।

उस खबर को सुनने के बाद मेरा मानो तमाम सिरदर्द गायब हो चुका था।

"जहाँ तक मैं समझता हूँ।" अभिजीत घोष ने कहा- "गौतम पटेल ने पुलिस को 'लेडी किलर' के तौर पर तुम्हारा नाम नहीं बताया था। उसने जरूर टेलीफोन पर यह कहा होगा कि 'लेडी किलर' उस इलाके में मौजूद है, आप लोग जल्दी यहाँ पहुंचे। अगर गौतम पटेल गोरखपुर पुलिस को उस समय तुम्हारा नाम बता देता, तो आज पुलिस कन्फ्यूजन का शिकार न होती।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" मैंने भी बीयर के दो घूँट भरे- "जरूर गौतम पटेल मेरे बारे में पुलिस को नहीं बता सका था, मैं खामखाह परेशान हो रही थी।"

"अलबत्ता एक मामला मुझे अभी भी कुछ पेचीदा नजर आ रहा है।" अभिजीत घोष विचारपूर्ण मुद्रा में बोला।

"क्या ?"
मैं ठिठकी।
"गौतम पटेल की हत्या तुम्हारे घर पर हुई थी। ठीक?"
"बिल्कुल ठीक।"
"पुलिस को गौतम पटेल की लाश भी तुम्हारे ही घर से बरामद हुई होगी।"
"यह भी ठीक है।"
"ऐसे हालात में गोरखपुर पुलिस को तुम्हारे बारे में छानबीन जरूर करनी चाहिए थी, तुम्हें ढूँढने की कोशिश करनी चाहिए थी। जबकि ऐसी कोई सूचना उपलब्ध नहीं है।"
"इसकी एक दूसरी वजह भी तो हो सकती है।"
"क्या ?"
"यह भी तो संभव है।" मैं बोली- "कि गोरखपुर पुलिस ने यह समझ लिया हो कि मैं भी 'लेडी किलर' का शिकार बन चुकी हूँ। अलबत्ता मेरी लाश ढूँढने की पुलिस ने कोशिश की हो और मेरा नाम फिलहाल वहां 'मिसिंग परसन स्क्वायड' की डायरी में लिखा हो।"
"हाँ !" अभिजीत घोष बोला- "यह सम्भव है।"
अभिजीत घोष ने भी बीयर के दो घूँट लगाये।
हम दोनों ही अब काफी तनावपूर्ण नजर आ रहे थे।
"फिर भी मैं समझता हूँ।" अभिजीत घोष बोला- "अब तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। 'लेडी किलर' वाला अध्याय फिलहाल पूरी तरह समाप्त हो चुका है और तुम अब आज़ाद हो।"
"थैंक गॉड !" मैंने अपने गले की घंटी को छुआ- "मैं आज़ाद हूँ घोष साहब, यह एहसास ही मेरे शरीर में अजीब-सा रोमांच पैदा कर रहा है। मैं अपनी खुशी बयान नहीं कर पा रही हूँ।"
"मैं तुम्हारी स्थिति समझ सकता हूँ।"
मैंने बीयर का अपना पूरा गिलास खाली करके सामने टेबल पर रख दिया।
मैं खुश थी।
बहुत ज्यादा खुश।
"अब एक नई जिन्दगी तुम्हारे सामने पड़ी है नताशा !" अभिजीत घोष उत्साहपूर्वक बोला- "एक नई, लम्बी और आशाओं से भरी जिन्दगी, जिसकी तुम बिल्कुल नए तरह से शुरूआत कर सकती हो। पीछे गोरखपुर में जो कुछ गुज़रा है, उस सबको भूल जाओ।"
"आप ठीक कह रहे हैं घोष साहब ! पीछे जो कुछ गुजरा है, मुझे उन सब बातों को भूल जाना होगा। मुझे सचमुच अब इस नए शहर में, नए तरह से अपनी जिन्दगी शुरू करनी होगी।"
अभिजीत घोष ने भी अपना गिलास खाली करके टेबल पर रखा और फिर सीधे मेरी आँखों में झाँका।
"नये तरह से जिन्दगी शुरू करने के लिये क्या करना चाहती हो तुम ?"
"मुझे सबसे पहले एक नौकरी करनी होगी घोष साहब !"
"नौकरी ?"

“हाँ !”

“किस तरह की नौकरी करना चाहती हो तुम ? मेरा मतलब है, नौकरी करने के लिये तुम क्या जानती हो ?”

“मैं शॉर्टहैंड और टाइप काफी अच्छी जानती हूँ । मैं कहीं भी रिशेप्सनिस्ट या सेक्रेटरी की सर्विस काफी बेहतर कर सकती हूँ ।”

“वैरी गुड !” मेरी बात सुनकर न जाने क्यों अभिजीत घोष की आँखों में तेज चमक पैदा हुई- “यह तो तुमने आज ही बताया कि तुम शॉर्टहैंड और टाइप भी काफी अच्छी जानती हो । फिर तो तुम्हें सर्विस ढूँढने की भी जरुरत नहीं ।”

“क्यों ?”

“दरअसल मुझे भी अपनी फैन मेल और देश के कोने-कोने से आने वाले समारोहों के आमंत्रणों का जवाब देने के लिये ऐसी ही एक सेक्रेटरी की सख्त जरूरत है । अगर तुम यह सब कर सकती हो, तो तुम इसी बंगले में क्यों नहीं ठहर जाती ।”

मेरी आँखों मं विलक्षण चमक कौंध उठी ।

सच तो ये है, मैं खुद यही चाहती थी ।

अभिजीत घोष ने लगभग मेरे मुंह की बात छीन ली थी ।

“बोलो क्या कहती हो ?”

‘कहना क्या है घोष साहब !” मैं प्रफुल्लित लहजे में बोली- “इस बंगले में रहकर आपके वास्ते काम करना तो मेरे लिये सौभाग्य की बात होगी ।”

“यानि नौकरी पक्की ?”

“बिल्कुल पक्की ।”

इस तरह मेरी जिन्दगी ने एक नए पड़ाव पर कदम रखा ।

वह मेरी जिन्दगी का एक नया मोड़ था । नया और हंगामाखेज मोड़ ।

□□□

अगले दिन से ही एक प्रसिद्ध उपन्यासकार की सेक्रेटरी का जितना काम हो सकता है, वह सारा काम मैंने संभाल लिया ।

बंगले के मुख्य ड्राइंग हाल से जुड़ा हुआ ही एक काफी बड़ा कमरा था, वह कमरा मेरे अधिकार में आ गया ।

सेक्रेटरी का काम भी कम न था ।

अस्सी से सौ के बीच तो रोजाना अभिजीत घोष के प्रशंसकों की ही चिट्ठियां आती थीं । फैन मेल होती थी, जिनमें से छांट-छांट कर मुझे कुछेक को जवाब देना होता ।

इसके अलावा देश के कोने-कोने से अभिजीत घोष को जिन समारोहों में आमंत्रित किया जाता, उन समारोहों के आयोजकों को भी मुझे अत्यंत सुसंस्कृत भाषा में आमंत्रण रद्द करने वाले ऐसे जवाब लिखने होते, जो उन्हें जरा भी बुरा न लगे । उन जवाबों को पहले मैं टेपरिकार्डर पर डिटेक्ट करती थी और फिर अभिजीत घोष को एक बार सुनाती । अभिजीत घोष को उनमें जो भी परिवर्तन करने होते, वह मुझे बता देते । फिर मैं वह जवाब टाइप करके भेज देती थी ।

उनके प्रकाशक के हिसाब-किताब वाली फाइल भी मैंने चेक की।
उसमें बड़ा घपला था।
कुछेक प्रकाशक ऐसे थे, जो उनके एक-एक उपन्यास के सात-सात रिप्रिंट छाप चुके थे, लेकिन उन्होंने अभिजीत घोष को रॉयल्टी के चेक मुश्किल से दो-तीन बार भेजे थे। जब मैंने वह सारा हिसाब अभिजीत घोष के सामने रखा, तो वह भी चौंक उठे।
उन्होंने तत्काल प्रकाशकों को फोन खड़खड़ाया।
उस धोखाधड़ी के लिये वह उनके ऊपर लाल-पीले हुए।
बहरहाल उस घटना के बाद प्रकाशकों के हिसाब-किताब की जिम्मेदारी भी मेरे ऊपर आ गयी।
अब अगर किसी प्रकाशक ने अभिजीत घोष का नया उपन्यास छापना होता था, तो वह पहले मुझसे आकर बात करता।
धीरे-धीरे मैं उस बंगले के अन्दर सबसे ज्यादा शक्तिशाली पोजीशन प्राप्त करने लगी।
अलबत्ता उस शक्तिशाली पोजीशन के कारण अब कुछ लोग मेरे से ईर्ष्या भी रखने लगे थे।
कुमार उनमें सबसे ऊपर था।
उसकी आँखें बताती थीं, वह मुझे पसंद नहीं करता है।
"क्यों ?"
यह मुझे भी मालूम न था।

□□□
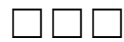
एक रात बंगले में बड़ी खौफनाक घटना घटी।
रात के दो बजे का समय था। एकाएक मेरी भक्क से आँख खुली। पूरे बंगले में बड़ा जबरदस्त तूफ़ान आया हुआ था। वह ऐसी आवाजें थीं, जैसे बंगले की दीवारें गड़गड़ाकर गिर रही हों। जैसे शीशे चटक रहे हों।
"बचो !" तभी मुझे बाहर से किसी के चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी- "भागो।"
मैं आनन-फानन अपने गाउन की डोरियाँ कसती हुई कमरे में से बाहर निकली।
तभी मैंने बुरी तरह आतंकित अवस्था में माधवन को भागते देखा।
"क्या हो गया?" मैं चिल्लाई।
"जैकी अस्तबल से भाग निकला है।" माधवन भागते हुए ही चिल्लाकर बोला।
"जैकी... कौन जैकी?"
"वही सफ़ेद रंग का अरेबियन घोड़ा।"
"हे भगवान! इतना जबरदस्त हंगामा वही घोड़ा मचा रहा है ?"
"हाँ !"
मैं दौड़ती हुई टैरेस पर पहुँची।बंगले की लाइटें जल उठी थीं। सर्वेंट क्वार्टर की लाइटें भी जली हुई नजर आ रही थीं। पूरे बंगले में ऐसा हंगामा बरपा था, जैसे न जाने वहां कौन-सी आफत आ गयी हो।
बंगले के कंपाउंड में मुझे घोड़ा कहीं नजर न आया।

तभी अभिजीत घोष भी दौड़ता हुआ वहां पहुंचा।
"घोड़ा आपे से बाहर हो रहा है।" अभिजीत घोष ने हांफते हुए बताया।
"लेकिन उसे हुआ क्या ?"
"मालूम नहीं।"
"मगर वो दिखाई तो कहीं नहीं दे रहा है।"
"वो बंगले के अन्दर घुस आया है।"
"हे भगवान !"
मेरे शरीर में रोमांच की लहर दौड़ गयी।
मैंने ध्यान से वो हंगामे की आवाजें सुनी।
वह वाकई बंगले के अन्दर से आ रही थीं।
विक्रम बुरी तरह गला फाड़कर चीख-चिल्ला रहा था।
"उसने ड्राइंग हाल में काफी तोड़-फोड़ की है।" अभिजीत घोष बोला- "मुंह में दबाकर कालीन फाड़ डाला है। सोफा तोड़ दिया है और कई दूसरी मूल्यवान चीजों को नुकसान पहुंचाया है।"
"मगर वो बंगले में घुसा कैसे ?"
"कुछ समझ में नहीं आ रहा।"
ड्राइंगहाल में अभी भी जबरदस्त हंगामा मचा हुआ था। घोड़ा इधर-से-उधर भागा-भागा फिर रहा था। चीजों के टूटने की आवाजें आ रही थीं। विक्रम उसे काबू करने की हरचंद कोशिश कर रहा था।
मगर अभी तक वो नाकाम था।

□□□
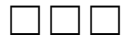
तभी एकाएक शोर बढ़ गया।
घोड़े ने अपने दोनों पैर उठा-उठाकर बहुत जोर से फर्श पर पटके और उसके बाद वो कमान से छूटे तीर की तरह भागा।
"जैकी !" विक्रम चिल्लाया- "जैकी !"
कुमार के भी चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी।
"घोष साहब!" कुमार हड़बडाकर भागता हुआ टैरेस के सामने पहुंचा- "भागिये ! घोड़ा इसी तरफ आ रहा है।"
अगले ही पल कुमार की हृदय-विदारक चीख निकल गयी।
घोड़ा वहां आ पहुंचा था।
कुमार चीखता हुआ एक टेबल के नीचे घुस गया।
घोड़ा आंधी-तूफ़ान बना था। वह ऐसे भाग रहा था, जैसे रेस के मैदान में निर्द्वंद होकर भाग रहा हो।
विक्रम उसके पीछे था।
तभी गलियारे में रखा एक स्टूल घोड़े के सामने आ गया। घोड़े ने उसमें जोर से लात मारी।

स्टूल उछलकर सीधा मेरे और अभिजीत घोष के सामने आ गिरा।
मेरी चीख निकल गयी।
"विक्रम !" अभिजीत घोष चिल्लाया- "पकड़ो इसे ! पकड़ो !"
"मैं कोशिश कर रहा हूँ घोष साहब !"
विक्रम पसीने में नहा रहा था।
हांफ रहा था।
उसकी दौड़ भी इस समय देखने लायक थी। वह बड़े मर्दाना अंदाज में दौड़ लगा रहा था।
तभी घोड़े ने अपनी दोनों टाँगे उठाकर दीवार पर मारीं।
वह जोर-जोर से हिनहिनाया।
फिर भागा।
वह बहुत गुस्से में था।
"जैकी !" विक्रम के चिल्लाने की आवाज पूरे बंगले में गूंजी- "रुक जाओ जैकी !"
लेकिन जैकी रुकने वाला कहाँ था ?
"डोंट बी एंग्री जैकी !"
मगर जैकी भागता रहा।
मैंने घबराकर अभिजीत घोष का कंधा पकड़ लिया।
माहौल बहुत खतरनाक था।

□□□

फिर एक जानलेवा क्षण और आया।
मैं और अभिजीत घोष अब टैरेस से निकलकर गलियारे में आकर खड़े हो गये थे। कुमार भी टेबल के नीचे से बाहर निकल आया।
मैंने देखा, गलियारे के अंतिम छोर पर सामने की तरफ एक बहुत बड़ा कांच का 'एक्वेरियम' रखा था, जिसमें ढेर सारा पानी और हजारों के हिसाब से छोटी-छोटी रंग-बिरंगी मछलियाँ मौजूद थीं।
घोड़ा उसी 'एक्वेरियम' की तरफ दौड़ा जा रहा था।
उस दृश्य को देखकर अभिजीत घोष के नेत्र भी आतंक से फ़ैल गये।
"विक्रम !" अभिजीत घोष पुन: बुरी तरह गला फाड़कर चिल्लाया- "पकड़ो इसे! जल्दी पकड़ो। वरना यह 'एक्वेरियम' तोड़ डालेगा।"
विक्रम का ध्यान भी अब 'एक्वेरियम' की तरफ केन्द्रित हुआ।
और!
अगले पल विक्रम ने जबरदस्त जाबांजी का परिचय दिया।
घोड़ा 'एक्वेरियम' को तोड़ पाता, उससे पहले ही विक्रम एकदम जम्प लगाकर घोड़े के सामने जा पहुंचा। एक क्षण के लिये ऐसा लगा, जैसे घोड़ा, विक्रम को भी रौंदता हुआ आगे गुजर जायेगा।
मगर वैसा कुछ नहीं हुआ। घोड़े ने जैसे ही उसे मारने के लिये अपनी दोनों टांगें ऊपर

उठाईं, विक्रम ने तत्काल झपटकर उस अरेबियन घोड़े की दोनों अगली टांगें कसकर हवा में ही पकड़ लीं।

घोड़ा बुरी तरह हिनहिनाया।

अपनी पिछली टांगों पर जोर-जोर से उछला।

परन्तु विक्रम उसकी दोनों टांगें कसकर पकडे खड़ा रहा। इतना ही नहीं, फिर उसने अपने सिर का भी प्रचंड प्रहार घोड़े के मुंह पर किया।

घोड़े की दर्दनाक चीख निकल गयी।

वह और उछला।

और हिनहिनाया।

"जैकी ! डोंट बी एंग्री !" विक्रम चिल्ला रहा था- "डोंट बी एंग्री !"

लेकिन घोड़े पर उन शब्दों का कुछ असर न था।

ऐसा लग रहा था, मानो उन दोनों के बीच शक्ति-परिक्षण हो रहा हो। विक्रम को उसकी दोनों अगली टांगें पकड़े रखने के लिये अपने शरीर की सम्पूर्ण जान लगानी पड़ रही थी।

मगर दिलचस्प नजारा ये था, विक्रम कमजोर नहीं पड़ रहा था।

उल्टे घोड़े के ही धीरे-धीरे कस-बल ढीले पड़ने लगे।

"वेलडन विक्रम !" अभिजीत घोष उसका अदम्य साहस देख प्रशंसा किये बिना न रह सका- "वैरी वेलडन !"

तभी विक्रम ने अपने घुटने का भीषण प्रहार घोड़े की गर्दन पर किया।

घोड़ा पुन: हिनहिनाया।

पुन: उछला।

मगर फिर धीरे-धीरे शांत पड़ने लगा। जैसे उस द्वंद्व युद्ध में उसने विक्रम के हाथों पराजय स्वीकार कर ली हो।

उसने अपने दोनों पैर जमीन पर टिका दिए।

जबकि विक्रम ने अब उसकी लगाम पकड़ ली थी। फिर वो घोड़े की लगाम पकड़े-पकड़े मुड़ा।

"सॉरी घोष साहब !" वो अभिजीत घोष की तरफ आकर्षित होकर बोला- "जैकी के कारण आज सबकी नींद डिस्टर्ब हो गयी।"

"लेकिन यह अस्तबल से बाहर निकला कैसे ?" अभिजीत घोष की आवाज में विस्मय का पुट था।

"कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"क्या तुम इसे बांधना भूल गये थे ?"

"नहीं !" विक्रम ने बहुत शान्त मुद्रा में इंकार में गर्दन हिलाई- "मैंने शाम के समय इसे अच्छी तरह बांधा था, फिर भी यह न जाने कैसे खुल गया। वैसे भी आज शाम से इसकी तबीयत कुछ खराब थी और यह हंगामे के मूड में लग रहा था। मैं इसे अभी दवाई देता हूँ।"

अभिजीत घोष खामोश खड़ा रहा।

“गुड नाइट एवरीबडी !”

“गुड नाइट !”

विक्रम घोड़े को लेकर बाहर की तरफ बढ़ गया।

इतना बड़ा हंगामा हो गया था, मगर विक्रम के चेहरे पर उस समय ज़रा भी शिकन नहीं था।

वो बिल्कुल सहज था।

□□□

विक्रम के उस गंदे-गलीज और बदबू से भरे व्यक्तित्व में ऐसा न जाने क्या था, मैं धीरे-धीरे उसकी तरफ आकर्षित होने लगी।

लेकिन जैसा कि मैं पहले ही बता चुकी हूँ, अब मैं किसी नए प्रेमी को अपने जीवन में नहीं आने देना चाहती थी। क्योंकि अब मैं यह बात भली-भांति समझ चुकी थी, पुरुष का प्रेम मेरे जीवन में नहीं है।

और!

जब किसी पुरुष का प्रेम मेरे जीवन में ही नहीं है, तो मैं पुन: क्यों नई सिरदर्द मोल लूं ?

क्यों फिर किसी के खून से अपने हाथ रंगू ?

लेकिन फिर भी कोई बात थी, जो मैं विक्रम की तरफ खींची जा रही थी।

खींचती ही चली जा रही थी।

अलबत्ता मैं विक्रम के प्रेमपाश में फंसने से बचने के लिये हमेशा उसे डांटती-फटकारती रहती थी। हमेशा उससे बड़े मालिकाना अंदाज में रौब के साथ बात करती।

मैं सुबह-ही-सुबह बंगले के कंपाउंड में टहल रही थी, तभी मुझे सामने से विक्रम आता दिखाई पड़ा। उसके शरीर से भीषण बदबू आ रही थी।

“तुम नहा नहीं सकते?” विक्रम जैसे ही करीब आया, मैं गुर्रा उठी- “क्या यहाँ पानी का अकाल पड़ गया है ?”

विक्रम कुछ न बोला।

वह घोड़े पर बैठा हुआ धीरे-धीरे आगे की तरफ बढ़ गया।

“तुमने सुना नहीं ?” मैं पलटकर चिंघाड़ी- “मैं तुम्हीं से कह रही हूँ। क्या तुम नहा नहीं सकते ? अस्तबल के अन्दर से भी इतनी बुरी बदबू नहीं आती, जितनी तुम्हारे अन्दर से आती है।”

उसका घोड़ा रुक गया।

“जी, मैं जानता हूँ।” वह बिना मेरी तरफ पलटे बोला।

“क्या जानते हो तुम ?”

“यही कि मेरे अन्दर से बदबू आती है।”

“तो फिर तुम नहा नहीं सकते ?”

वह चुप रहा।

बिल्कुल खामोश।

उसकी खामोशी उसका बहुत बड़ा हथियार थी।

“तुम्हारी बेहतरी इसी में है, तुम आज शाम तक नहा लो ।”

विक्रम ने घोड़े पर बैठे-बैठे पलटकर मेरी तरफ देखा और फिर बहुत धीरे से मुस्कुराया ।

तौबा !

उसकी मुस्कान बहुत वेधक थी । वह ऐसी मुस्कान थी, जो किसी नश्तर तक को चीरती चली जाये । ब्लेड की धार तक में छेड़ कर दे । मैं गारंटी से कह सकती हूँ, मैंने अपने पूरे जीवन-काल के दौरान किसी मर्द के होंठों पर ऐसी वेधक मुस्कान नहीं देखी थी । वो ऐसी मुस्कान थी, जैसे वह मेरे अन्दर की छटपटाहट को महसूस कर रहा था । जैसे वो जानता था, मेर दिल में क्या है और मैं उससे क्या छुपा रही हूँ ।

विक्रम बहुत धीरे-धीरे घोड़े पर आगे बढ़ गया ।

मगर मेरी चेतावनी के बावजूद वो शाम तक नहाया नहीं । मेरी बात का उसके ऊपर कोई असर न था ।

□□□
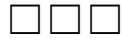
इस बीच अभिजीत घोष और मेरे सम्बन्ध भी काफी विकसित हुए ।

यही वो दौर था, जब मैंने घोष साहब के एक के बाद एक कई उपन्यास पढ़ डाले । बिना शक घोष साहब एक बेहतरीन उपन्यास लेखक थे । उनके उपन्यासों में अंत तक काफी रहस्य बना रहता था । खासतौर पर मैं फिर कहूंगी कि हत्या की योजना बनाने में तो वह मास्टरमाइंड थे ।

अब मैं घोष साहब के साथ उनके आगामी उपन्यासों में स्टोरी डिस्कशन में भी शामिल होती थी और घोष साहब किसी भी कहानी को फाइनल करने से पहले बाकायदा मेरी उचित राय लेते ।

घोष साहब के साथ मेरा नजदीकी रिश्ता जुड़ने लगा था ।

“मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूँ घोष साहब!” एक बार स्टोरी डिस्कशन के दौरान मैंने अभिजीत घोष से प्रश्न किया ।

“क्या ?”

“बिना शक आपने एक-से-एक बेहतरीन उपन्यास लिखे हैं ।” मैं बोली- “आपने उपन्यासों में एक-से-एक बेहतरीन कहानी लिखी है । लेकिन क्या कोई ऐसी कहानी भी है, जिसे लिखने की आपकी बड़ी तमन्ना हो ? जिसे आप अभी तक न लिख पाये हों ?”

मेरी बात सुनकर अभिजीत घोष के चेहरे पर संजीदगी की परत पुत गयी ।

अभिजीत घोष ने ‘बजक’ कंपनी के अपने स्याह काले सिगार का छोटा-सा कश लगाया ।

“हाँ !” अभिजीत घोष ने धीरे से कहा- “ऐसी एक कहानी है, जिसे लिखने की मेरी बड़ी तमन्ना है । जिसे लिखने का मैं बरसों से सपना देख रहा हूँ ।”

मेरे चेहरे पर उत्सुकता झलकने लगी ।

आखिर वो क्या कहानी हो सकती है, जिसे लिखना अभिजीत घोष जैसे मिस्ट्री राइटर की भी तमन्ना हो ।

“मेरा एक बात का और दावा है ।” अभिजीत घोष थोड़े उन्माद में बोला ।

"क्या ?"
"जिस दिन भी मैं वह उपन्यास लिखूंगा, वह मेरी जिन्दगी का सबसे ज्यादा सुपरहिट उपन्यास साबित होगा और वह मिस्ट्री राइटिंग की दुनिया में तहलका मचा देगा।"
"आखिर उस उपन्यास की कहानी क्या होगी ?" मेरी कौतुहलता बढ़ती जा रही थी।
"कहानी गजब की होगी।"
"क्या?"
"मैं एक ऐसे व्यक्ति की कहानी लिखना चाहता हूँ।" वह बोला- "जिसकी हत्या होने वाली है। मगर दिलचस्प बात ये है कि अपनी हत्या की योजना वो खुद बनाता है और यह बात उसे ही नहीं मालूम होती कि उस मर्डर की प्लानिंग के अनुसार उसी की हत्या होने वाली है।"
मैं चौंक उठी।
मेरे चेहरे पर गहन अचरज के भाव दौड़े।
"यानि मकतूल खुद अपनी हत्या की योजना तैयार करता है ?"
"बिल्कुल।"
"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है।" मेरा विस्फारित स्वर- "मकतूल खुद अपनी हत्या की योजना बनाये ?"
"फिलहाल मैं यही बात सोच रहा हूँ। जिस दिन भी मुझे अपने इस सवाल का जवाब मिल गया, मैं उसी दिन उपन्यास लिख डालूँगा।"
हालांकि अभिजीत घोष के साथ मेरी वो बातचीत वहीं ख़त्म हो गयी।
लेकिन फिर भी कहानी का वो प्लाट सारी रात मेरे दिमाग में घूमता रहा।
वाकई !
स्टोरी का वन लाइनर बहुत गजब था।
ज़रा सोचिये, कितना आश्चर्यजनक मामला है कि जो आदमी मरने वाला है, वही अपनी मौत का सामान तैयार करे।
ऐसी बात भी कोई अभिजीत घोष जैसा जासूसी उपन्यासकार ही सोच सकता था।

□□□

अब एक रहस्योद्घाटन मैं आपके सामने और करती चलूँ।
आप थोड़ा संभलकर बैठ जाइए।
मैं समझती हूँ, अब आपके कमरे में भयानक भूचाल आने वाला है।
मैं एक ऐसा रहस्योद्घाटन करने वाली हूँ, जिसे सुनकर आप निश्चित तौर पर उछल पड़ेंगे। तो सुनिए !
घोष साहब भी अब मुझे मुझसे प्यार करने लगे थे।
हालांकि हम दोनों की उम्र में बहुत बड़ा फासला था। लेकिन फिर भी मैंने अभिजीत घोष की आँखों में अनेक बार ऐसे भाव देखे थे, जैसे भाव एक मर्द की आँखों में तब पैदा होते हैं, जब वो उस औरत से ख़ास इच्छा रखता हो। जब वो उस औरत के साथ सेक्सुअल अटैचमेंट चाहता हो। सबसे बड़ी बात ये है, औरत, मर्द की आँखों मं ऐसे भाव पढ़ने का

ख़ास माद्दा रखती है। मैंने दर्जनों मर्तबा देखा था कि अभिजीत घोष के चेहरे पर मुझसे बात करते-करते बड़े अनुराग के भाव दौड़ जाते थे। वह मुझसे बड़ी हमदर्दी के साथ पेश आने लगते थे और उनका हमदर्दी का अंदाज ऐसा होता था, जैसे वह अपना सब कुछ मेरे ऊपर लुटा देना चाहते हों।

मुझे सोढा साहब की याद हो आयी।

वाकई कभी मैंने यह बात बिल्कुल ठीक कही थी, मर्द की फितरत बड़ी रंगीन होती है। वह जैसे-जैसे उम्र के ढलान की तरफ बढ़ता है, वैसे-वैसे उसके 'पर' फड़फड़ाने लगते हैं। तबीयत मचलने लगती है और वह औरत के मामले में बड़ा नदीदा बन जाता है।

ऐसे ही सोढा साहब थे।

ऐसा ही अब अभिजीत घोष था।

और अभिजीत घोष ही क्या दुनिया में सबके सब मर्द एक जैसे होते हैं।

बेगैरत !

बेहया !

घोष साहब अब मुझे हर जगह अपने साथ लेकर जाते।

इतना ही नहीं, अब वो धीरे-धीरे अपना प्यार भी मेरे ऊपर प्रकट करने लगे थे।

वह बड़ा अजीब माहौल था।

मेरे दिल-दिमाग पर जहाँ हमेशा विक्रम सवार रहता था, वहीं अभिजीत घोष के दिल-दिमाग पर सदा मैं सवार रहती।

अलबत्ता मैं विक्रम को अपने दिल-दिमाग से निकालकर फेंक देना चाहती थी।

मेरी इच्छा नहीं थी, अब मेरे जीवन में कोई नया प्रेमी कदम रखे।

लेकिन विक्रम किसी तूफ़ान की तरह मेरी जिन्दगी में ज़बरदस्ती घुसा चला आ रहा था।

फिर भी मैंने उस तूफ़ान को रोकना था, किसी भी हालत में रोकना था।

□□□

विक्रम मेरे जीवन में प्रेमी बनकर न आ जाये, इसका मैंने एक बड़ा नायाब फार्मूला खोज निकाला।

मैं भी अभिजीत घोष में दिलचस्पी दिखाने लगी।

मैं भी उससे घुट-घुटकर बात करने लगी।

मुझे आज भी याद है, इंस्पेक्टर विकास बाली को उस दिन डिनर पर आमंत्रित किया गया था।

डिनर लेने के बाद अभिजीत घोष, इन्सपेक्टर विकास बाली और मेरे बीच देर तक बातें हुईं।

"सचमुच आपको एक अच्छी सेक्रेटरी मिल गयी है घोष साहब !" इन्सपेक्टर विकास बाली ने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराते हुए कहा- "यह अपना हर काम बहुत जिम्मेदारी के साथ अंजाम देती हैं।"

"इसमें कोई शक नहीं।" अभिजीत घोष ने भी मेरी प्रशंसा में कसीदे पढ़े- "नताशा

वाकई ब्रिलिएंट है। नताशा जबसे बंगले में आयी है, तब से मैं खुद को काफी फ्री महसूस करने लगा हूँ। फैन मेल का जवाब अब समय पर चला जाता है। मेरी रॉयल्टी भी काफी बढ़ गयी है और सबसे बड़ी बात ये है, मेरे समारोहों में आने-जाने के शेड्यूल बिल्कुल सही रहते हैं। वरना पहले तो कभी-कभी मुझे बड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ता था।"

"यानि नताशा के आने से आपको काफी फ़ायदा हुआ है।"

"बिल्कुल !"

डिनर के बाद बीयर का दौर शुरू हुआ।

मैं भी बीयर के छोटे-छोटे घूँट भरने लगी। ऐसे हर दौर में, मैं अभिजीत घोष का खुलकर साथ देती थी।

"लेकिन नताशा जी आपको मिलीं कहाँ ?" इंस्पेक्टर विकास बाली ने भी बीयर का छोटा-सा घूँट भरते हुए कहा।

"इनसे मेरी पहली मुलाक़ात ट्रेन में हुई थी।"

"ट्रेन में ?" विकास बाली चौंका।

और !

चौंक मैं भी पड़ी थी।

मुझे लगा, अभिजीत घोष मेरे बारे में सारी असलियत उगलने वाला है।

मगर वैसा कुछ न हुआ।

"दरअसल यह नौकरी की तलाश में मुम्बई आ रही थी।" अभिजीत घोष बोला- "और मुझे भी एक सेक्रेटरी की सख्त जरूरत थी, इसलिये मैंने तुरंत इन्हें यहाँ रख लिया।"

"यानि सब कुछ संयोगवश हुआ।"

"हाँ !"

"वैसे आप रहने वाली कहाँ की हैं ?" इन्सपेक्टर विकास बाली ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

"गोरखपुर की।"

"दैट्स गुड ! काफी अच्छा शहर है।" विकास बाली ने बीयर का एक घूँट और भरा- "खासतौर पर धार्मिक पुस्तकों के लिये देश भर में प्रसिद्ध है।"

"जी हाँ !"

हम लोग बातें करते रहे और बीयर पीते रहे।

"मैं तुम्हें एक खुशखबरी और सुनाना चाहती हूँ इन्सपेक्टर !" अभिजीत घोष ने काफी प्रसन्नचित लहजे में कहा।

"क्या ?"

"मैं बहुत जल्द नताशा को एक नई पोस्ट पर नियुक्त करने की सोच रहा हूँ।"

"किस पोस्ट पर ?"

"जल्द ही बताऊंगा। फिलहाल उपन्यासों की तरह थोड़ा सस्पेंस रहने दो।" वह बात कहकर अभिजीत घोष बहुत जोर से ठठाकर हंसा।

विकास बाली भी मुस्कुराया।

काफी देर तक बियर का वह दौर चलता रहा।

रात के दस बज रहे थे, जब इन्सपेक्टर विकास बाली बंगले से विदा हुआ।

परन्तु अभिजीत घोष के पीने का क्रम तब भी जारी रहा था। अभिजीत घोष मुझसे बातें करता रहा और पीता रहा।

पीते-पीते वो बहकने भी लगा था।

उसकी आँखों में सुर्ख-सुर्ख डोरे उभर आये थे।

"अब आप बस कीजिये घोष साहब !"

"नहीं ! मुझे पीने दो।"

अभिजीत घोष एक ही सांस में पूरा पैग खाली कर गया।

फिर उसने अपने लिये दूसरा पैग तैयार किया।

रात के ग्यारह बजे एक विहंगमकारी घटना घटी। अभिजीत घोष की अब नशे में बुरी हालत हो गयी थी। फिर उसी हालत में उसने मुझे अपनी बाहों में समेट लिया।

मैं हक्की-बक्की रह गयी।

"यह... यह आप क्या कर रहे हैं घोष साहब ?" मैंने उसकी बाहों की गिरफ्त से निकलना चाहा।

परन्तु अभिजीत घोष की बाहों का दायरा अब और भी सख्त हो गया।

"अ... आई लव यू नताशा !" अभिजीत घोष के धधकते होंठ मेरे गालों पर आ टिके।

"हाँ, घोष साहब !"

"आई लव यू !"

उस क्षण अभिजीत घोष को मानो कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था।

वो खुलकर खेलने के मूड में था।

जबकि मैं समझ नहीं पा रही थी, मैं क्या करूं ?

मैं अजीब उलझन में थी।

मैंने एक ही झटके में अभिजीत घोष को शिकंजे से आजाद होने का फैसला कर लिया, परन्तु फिर मैं ठिठक गयी।

दरअसल एकाएक मेरी निगाह ग्लास विंडो पर जाकर टिक गयी थी। ग्लास विंडो के उस पार एक काला साया खड़ा नजर आ रहा था, जिसकी निगाह हमारे ऊपर ही थी। उस काले साए को मैं देखते ही पहचान गयी, वो विक्रम था।

मैं मुस्कुरा उठी।

एकाएक मेरे दिमाग में बड़ा नायाब विचार कौंध गया। अगर मैंने विक्रम नाम के उस नए प्रेमी को अपने जीवन में दाखिल होने से रोकना था, तो मेरे लिये वह एक बेहतरीन अवसर था।

मैं अपनी बाहें उठाकर एक भरपूर अंगड़ाई ली और फिर बाहों का दायरा अभिजीत घोष की कमर के गिर्द लपेट दिया।

"वैरी गुड !" अभिजीत घोष का उत्साह कई गुना बढ़ गया- "सचमुच तुम बहुत अच्छी हो। मैं तुमसे प्यार करने लगा हूँ नताशा !"

मैं खामोश रही।

"क्या तुम भी मुझसे प्यार करती हो ?"

मैं कुछ न बोली।

"जवाब दो नताशा !"

"क्या सब कुछ मुझे अपनी जबान से ही कहना होगा घोष साहब ?" मैं धीरे से फुसफुसाई।

"ओह ! मैं भूल गया था कि तुम एक लड़की हो।"अभिजीत घोष ठठाकर हंसा।

उसके बाद वह बिल्कुल खुलकर खेलने के मूड में आ गया।

उसने मुझे अपनी दोनों बाहों में भरकर उठा लिया तथा फिर मुझे लेकर बिस्तर की तरफ बढ़ा।

अगले कुछ क्षण तूफानी थे।

जबरदस्त तूफानी।

पिछले काफी दिन से मैंने भी सेक्स नहीं किया था, इसलिये मेरे शरीर में भी भूख जाग रही थी।

अभिजी घोष ने पहले मुझे बिस्तर पर पटका और फिर मेरे ऊपर सवार हो गया। शनै: शनै: मेरी नस-नस में भी अंगारे भरते चले जा रहे थे।

मैं अजीब से आनन्द से सराबोर होने लगी थी।

एक जानी-पहचानी सुखद गुदगुदाहट की अनुभूति मेरी रग-रग में होने लगी।

अभिजीत घोष के हाथ अब मेरे शरीर पर फिसलने लगे थे।

खेल चल निकला।

परन्तु वो खेल कोई बहुत ज्यादा लंबा और मजेदार न था। उम्र अभिजीत घोष के ऊपर हवी होने लगी थी।

बहुत जल्दी उसने बिस्तर पर घुटने टेक दिए।

एक क्षण तो ऐसा आया, जब मैं बुरी तरह झुंझला उठी।

फिर भी मैंने जब्त किया।

किसी तरह उसे झेला।

□□□
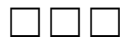
अगले दिन अभिजीत घोषऔर मेरे बीच कोई बहुत ज्यादा बातें न हुईं। हम दोनों ही एक-दूसरे से नजरें चुरा रहे थे।

शाम का समय था।

अभिजीत घोष ने कुमार को भेजकर मुझे अपने राइटिंग रूम में बुलाया।

राइटिंग रूम का वातावरण उस दिन कुछ बदला-बदला था। हमेशा की तरह अभिजीत घोष अपने उपन्यास लेखन में व्यस्त नहीं था। काफी सारे पन्ने उसकी टेबल पर इधर-से उधर फैले हुए थे और कमरे में 'बजक' कंपनी के सिगार का धुंआ भरा था।

"आओ नताशा !" राइटिंग रूम में घुसते ही मेरे कानों में अभिजीत घोष की आवाज पड़ी।

मैंने देखा, अभिजीत घोष उस समय अपनी रिवाल्विंग चेयर पर मेरी तरफ पीठ किये बैठा था और धीरे-धीरे सिगार के कश लगा रहा था।

"बैठो।"

मैं कुर्सी खींचकर बहुत शान्त भाव से टेबल के इस तरफ बैठ गयी। मेरा दिल न जाने क्यों धड़क-धड़क जा रहा था।

"मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ नताशा !"

"क… क्या ?"

अभिजीत घोष ने पहले गहरी नि:श्वास छोड़ी।

वो शायद भूमिका बाँध रहा था।

"हालांकि मैं नहीं जानता, वो बात सही है या गलत।" अभिजीत घोष मेरी तरफ से पीठ किये-किये धीमे स्वर में बोला- "लेकिन फिर भी मैं वो बात तुमसे कहना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है, तुम मेरी पत्नी बन जाओ।"

"यानि शादी।"

मेरे दिमाग पर भीषण बिजली गड़ागड़ाकर गिरी।

"हाँ !"

"लेकिन घोष साहब...।"

मैं हड़ाबड़ाई।

"पहले मेरी पूरी बात सुनो।" अभिजीत घोष ने सिगार का छोटा-सा कश लगाया- "मैं जानता हूँ, हम दोनों की उम्र में काफी फर्क है। परन्तु फिर भी मैं समझता हूँ, हम दोनों अच्छे पति-पत्नी बन सकते हैं। हम दोनों समझदार हैं। एक-दूसरे को समझने की सलाहियतें हमारे अन्दर हैं और फिर दुनिया में ऐसी मिसालें कम तो नहीं, जब उम्र का फर्क होने के बावजूद भी इस तरह की शादियां कामयाब हुई हों।"

मैं चुप बैठी रही।

मैंने कल्पना भी नहीं की थी, अभिजीत घोष जैसा आदमी मेरे सामने ऐसा प्रस्ताव भी रख सकता है।

"एक बात और ध्यान रहे नताशा !"

"क्या ?"

"तुम्हारे ऊपर मेरा दबाव कुछ नहीं है।" अभिजीत घोष मेरी तरफ से पीठ किये-किये बोला- "तुम इंकार भी कर सकती हो। तब भी मेरी निगाह में तुम्हारा आदर कम नहीं होगा। तुम पूरी तरह आजाद होकर कोई भी फैसला ले सकती हो।"

मैं एकाएक कुर्सी छोड़कर उठ खड़ी हुई।

फिर मैं बिल्कुल अभिजीत घोष के सामने जाकर खड़ी हो गयी और मैंने अपना एक हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

अभिजीत घोष ने मेरी तरफ देखा।

उसकी आँखें धुंआ-धुंआ थीं।

"घोष साहब !" मैं संतुलित लहजे में बोली- "इसमें सोचना क्या है। बल्कि यह तो मेरे लिये गर्व की बात होगी कि मैं आप जैसे सम्मानित लेखक की पत्नी बनूँ।"

"स… सच ?" अभिजीत घोष एकदम अपनी रिवाल्विंग चेयर छोड़कर खड़ा हो गया।

"हाँ, सच घोष साहब।"

अभिजीत घोष ने कसकर मुझे अपनी बाहों में भर लिया मेरे गाल पर एक प्रगाढ़ चुम्बन अंकित किया।

दोस्तों, आप सोच रह होंगे, मैंने अभिजीत घोष के साथ शादी करने का वो फैसला काफी जल्दबाजी में किया।

परन्तु ऐसा नहीं था।

वह फैसला मैंने काफी सोच-समझकर लिया था।

अगर मैंने एक बार फिर अपनी जिन्दगी में किसी नए 'प्रेमी' को आने से रोकना था, तो इसका अब बस एक ही तरीका था कि मैं जल्द-से-जल्द किसी से शादी कर लूं।

किसी की पत्नी बन जाऊं।

और आप ही सोचिये, इस वक्त मुझे अभिजीत घोष से ज्यादा बढ़िया पति और कहाँ मिल सकता था ?

एक तरह से शादी करने का फैसला लेकर मैंने अपनी उस हंगामाखेज जिन्दगी का लगभग 'दी एंड' ही कर दिया, जिसके कारण मुझे अतीत में सात-सात पुरुषों के खून से हाथ रंगने पड़ गये थे।

तीन

22 दिसम्बर।

दिन शुक्रवार।

यह वो तारीख थी, जिस दिन मेरी हिंदुस्तान के उस महान जासूसी उपन्यासकार अभिजीत घोष के साथ शादी हुई।

लेकिन मुझे बाद में जाकर अहसास हुआ कि मैंने अभिजीत घोष के साथ शादी करके अपनी जिन्दगी का सबसे गलत कदम उठाया था।

मेरी जिन्दगी में तो चैन था ही नहीं।

उसमें तो बस हंगामा-ही-हंगामा था।

हमारी शादी बहुत धूम-धड़ाके के साथ संपन्न हुई।

पूरा बंगला किसी दुल्हन की तरह सजाया गया।

बंगले के कई एकड़ भूमि में फैले विशाल कंपाउंड में बड़े-बड़े सफ़ेद कन्नात लगाये गये। एक बहुत बड़ा डांसिंग फ्लोर बनाया गया, जहाँ मेहमानों के वास्ते मिड नाइट जैसी रोशनी में फैले डांस का आयोजन रखा गया।

उस शादी में एक हजार से ज्यादा लोगों ने शिरकत की।

और वह सब मुम्बई शहर के बड़े-बड़े लोग थे।

जिनमें महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से लेकर फिल्मों के बड़े-बड़े निर्माता-निर्देशक, अभिनेता-अभिनेत्री, क्रिकेट प्लेयर, प्रकाशक, दूसरे लेखकगण तथा सरकारी सेवा में रत बड़े-बड़े अधिकारी शामिल हुए।

जिसने भी मुझे देखा, उसी ने मुक्तकंठ से मेरी सुन्दरता की तारीफ़ की।

प्रत्यक्षत: मुझे अपना भविष्य बड़ा उज्ज्वल दिखाई दे रहा था।

आखिर इतने धनी और नामचीन आदमी की पत्नी बनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था।

इन्सपेक्टर विकास बाली भी हमें उस शादी की मुबारकबाद देने आया।

"ओह !" आते ही उसने अभिजीत घोष से कहा- "तो आपने इनके लिये नई पोस्ट यह चुनी थी।"

"हाँ !" अभिजीत घोष मुस्कुराया- "कैसी लगी तुम्हें मैडम नताशा की नई पोस्ट ?"

"बेहतर !"

"बेहतर या बहुत बेहतर ?"

"बहुत ज्यादा बेहतर घोष साहब।"

"गुड !"

अभिजीत घोष की मुस्कान और ज्यादा गहरी हो गयी।

लेकिन मैंने अनुभव किया, इन्सपेक्टर विकास बाली ने यह बात दिल से नहीं कही थी। न जाने क्यों मुझे इन्सपेक्टर विकास बाली उस शादी से उतना खुश नहीं दिखाई दिया, जितने दूसरे लोग खुश थे।

मैंने विक्रम को देखा।

विक्रम को तो जैसे इस बात की कोई परवाह ही नहीं थी कि मेरी शादी भी हो गयी है। दुल्हन के लिबास में उसने मुझे एक बार भी नजर उठाकर नहीं देखा था और वह बस जरूरत के काम निपटाता हुआ इधर-से-उधर घूम रहा था।

हालांकि मेरी जिन्दगी में कोई नया प्रेमी न आ जाये, इसीलिये मैंने आनन-फानन वो

शादी की थी।

परन्तु फिर भी न जाने क्यों विक्रम की वो बेरुखी मुझे अच्छी नहीं लगी। मैं चाहती थी, वो मुझे देखे। उसके चेहरे पर इस बात का मलाल पैदा हो कि मेरी शादी किसी और से हो गयी थी। अगर उसके चेहरे पर दुःख के भाव प्रकट होते, तो मुझे अच्छा लगता।

मेरे दिल को सुकून पहुंचता।

□□□

जिस दिन हमारी शादी हुई, उसी दिन शाम के समय हम हनीमून मनाने के लिये एक आइलैंड पर चले गये।

इसमें कोई शक नहीं, अभिजीत घोष ने हनीमून मनाने के लिये जो जगह चुनी, वह वाकई लाजवाब थी।

वह स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम के पास बीच समुद्र में बना एक छोटा-सा आइलैंड था, जो अत्यन्त सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण था और उस आइलैंड की आबादी किसी छोटे कस्बे जैसी थी। वहां रेस्तरां थे। बीयर बार थे। दो इंटर-कॉन्टिनेंटल होटल थे।

हम एक होटल में जाकर ठहर गये।

हम चूंकि थके-हारे थे, इसलिये दोपहर तक तो हमने आराम ही किया और फिर आइलैंड में घूमने निकल पड़े।

वहां कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी।

परन्तु फिर भी वहां काफी लोग घूमने के लिये आये हुए थे। ख़ासतौर पर उस आइलैंड के उन ऐतिहासिक खंडहरों में सबकी रूचि थी, जो पुर्तगाली साम्राज्य की याद दिलाते थे।

हम सारा दिन उन्हीं खंडहरों में भटकते रहे।

फिर धीरे-धीरे शाम ढलने लगी।

"चलो!" अभिजीत घोष ने मेरी आँखों में झांका- "अब हमें वापस होटल चलना चाहिए।"

"इतनी भी क्या जल्दी है?"

"क्यों?" अभिजीत घोष बोला- "आज हमारी सुहागरात है। एक रात तो हम वैसे ही सफ़र में बर्बाद कर चुके हैं।"

"स... सुहागरात?"

मैं कांप गयी।

"क्यों?" अभिजीत घोष मुस्कुराया- "क्या तुम नहीं जानती, शादी के बाद पति-पत्नी सुहागरात भी मनाते हैं, जबकि हमने तो अभी तक सुहागरात मनायी ही नहीं है।"

"यह आप क्या कह रहे हैं?" मैं थोड़े शरारती लहजे में बोली- "क्या हम यह सब पहले नहीं कर चुके।"

"डार्लिंग! सैक्स चाहे कितनी ही बार क्यों न कर लिया जाये, परन्तु फिर भी सुहागरात का महत्व कम नहीं होता। चलो अब ज्यादा बोर मत करो।"

मै जानती थी, उस बात को बहुत देर तक टाला नहीं जा सकता था।

अन्ततः वो तकलीफ तो मुझे बर्दाश्त करनी ही थी।

हालांकि बहुत से पुरुषों के साथ प्रेम-लीलाएं रचाने और सहवास करने के बाद मेरी यह मान्यता बन गयी थी कि अंधेरे में मर्द-मर्द में कोई फर्क नहीं होता।

सब मर्द बिस्तर पर तकरीबन एक जैसे होते हैं।

सब एक जैसी ही हरकतें करते हैं।

परन्तु मेरी वह मान्यता कितनी गलत थी, यह मुझे उस रात अहसास हुआ।

मैं भूल गयी थी कि उम्र भी कोई चीज होती है। उम्र ज्यादा होने के बाद मर्द, मर्द नहीं रहता, बल्कि वह स्थूलकाय-सी कोई चीज बन जाता है। जैसी अब अभिजीत घोष बन चुका था। उस रात वह मेरे साथ सहवास ही न कर सका, पहले ही उसके हाथ-पैर ढीले पड़ गये।

मैं क्रोधित हो उठी।

उस रात मुझे सख्त अफसोस हुआ कि मैंने क्यों उस आदमी से शादी कर ली थी।

□□□

हमारी सुहागरात का बेड़ागर्क हो चुका था और इस बात का अहसास अभिजीत घोष को भी था।

वह अगले दिन से मेरी चाटुकारिता में जुट गया।

वो हर क्षण मुझे खुश रखने की कोशिश करता था। वो चाहता था, मैं उसके सामने कोई इच्छा व्यक्त करूं, जिसे वो दौड़कर पूरी करे। मैं जानती थी, वह अपनी झेंप मिटाने की कोशिश कर रहा था।

मैं और भड़क उठी।

मुझे ऐसे मर्द सख्त नापसन्द थे, जो औरत की चमचागिरी करते हैं।

बहरहाल अभिजीत घोष फिलहाल वही सब कुछ कर रहा था।

अगला पूरा दिन हमने फिर आईलैण्ड में घूमते हुए और खरीदारी करते हुए गुजारा। उस दिन हम काफी रात को होटल वापस लौटे। अभिजीत घोष ने भी जल्दी लौटने की जिद नहीं की थी।

हम सारा दिन के थके-हारे थे, इसलिये बिस्तर पर पड़ते ही हमें दोनों को नींद आ गयी।

हमारा आइलैंड में तीन दिन तफरीह करने का मूड था, परन्तु अभिजीत घोष मुझे दो दिन बाद ही लेकर स्टॉकहोम पहुंच गया।

स्टॉकहोम काफी खूबसूरत शहर था।

मगर न जाने क्यों मुझे वह इतना सुन्दर नहीं लगा। शायद इंसान के अन्दर से फूट पड़ने वाली खुशियां ही वस्तु की सुन्दरता और असुन्दरता का पैमाना बन जाती हैं। हम दस दिन के प्रोग्राम के साथ निकले थे, मगर अब इतना लम्बा हनीमून मुझे भयभीत कर रहा था।

स्टॉकहोम में हम एक पांच सितारा होटल के काफी बड़े सुइट में ठहरे।

उस सुइट में एक डबल बेड वाला बहुत बड़ा बेडरूम था। दो बाथरूम थे। एक बड़ा सा स्टैण्डरूम था और एक ड्रेसिंग रूम था, जिसमें एक बेड लगा हुआ था।

“सुइट पसन्द आया न डार्लिंग?”अभिजीत घोष मुझे देखते ही जल्दी से बोला।

“बहुत सुन्दर है।” मैं स्टैण्डरूम में झांकती हुई बोली- “आपकी पसन्द कभी घटिया हो

सकती है घोष साहब !”

“घोष साहब नहीं !”अभिजीत घोष मेरे करीब आकर खड़ा हो गया- “तुम मुझे अब सिर्फ अभिजीत कहा करो डार्लिंग !”

“लेकिन... ।”

“इस मामले में कोई बहस नहीं ।” मेरे कुछ कहने से पहले ही अभिजीत घोष ने मेरी बात काटी- “यह मेरी इच्छा है ।”

“ठीक है ।” मैं बोली- “अगर आप चाहते हैं, तो मैं आपको अभिजीत ही कहा करूंगी। लेकिन इसमें मेरी भी एक शर्त है ।”

“क्या ?”

“अभिजीत मैं आपको अकेले में कहूंगी । बाकी सबके सामने मैं आपको घोष साहब ही कहा करूंगी ।”

“ओ.के. ।”

अभिजीत घोष ने उस बारे में मुझसे ज्यादा बहस नहीं की ।

तभी मैं ड्रेसिंग रूम का अवलोकन करने लगी ।

“वाउ!” ड्रेसिंग रूम देखते ही मैं खुशी से चहक उठी- “फन्टास्टिक ! यह सबसे बेहतरीन जगह है । मैं अब इसी ड्रेसिंग रूम में सोया करूंगी । मैं थोड़ी बेचैनी की नींद सोने वाली लड़की हूं अभिजीत । मैं नहीं चाहती कि मेरे कारण आपके आराम में परेशानी हो ।”

अभिजीत घोष की पीठ उस समय मेरी तरफ थी।

मगर सामने ड्रेसिंग टेबल के शीशे में मुझे उसकी शक्ल नजर आ रही थी । मेरी बात सुनते ही उसका चेहरा लटक गया था । वह और भी ज्यादा बूढ़ा दृष्टिगोचर होने लगा ।

“ओह ! मैं सोच रहा था कि तुम मेरे साथ बेडरूम में सोना पसन्द करोगी ।”

“ऐसी कोई बात नहीं ।” मैं उसका थोड़ा ख्याल रखते हुए बोली- “आप जहां कहोगे, मैं वहां सो जाऊंगी । लेकिन मैं शादी में जिस्मानी रिश्तों से ज्यादा दोस्ती की भावना की कद्र करती हूं । मैं बिल्कुल आपकी तरह हूं अभिजीत । जिस तरह आप जिस्मानी रिश्तों को ज्यादा प्रधानता नहीं देते, वही नजरिया मेरा है । यह हमारा सौभाग्य है कि हम दोनों के विचार एक जैसे हैं ।”

अभिजीत घोष का चेहरा फक्क पड़ गया ।

मैंने उससे कन्नी काटने के लिये काफी चालाकी से काम लिया था और अच्छा-खासा शब्दों का मायाजाल बुन डाला था ।

“ठीक है !” अभिजीत घोष बोला- “जैसा तुम मुनासिब समझो ।”

वह बहुत थके-हारे कदमों से बेडरूम की तरफ बढ़ गया ।

मुझे उस क्षण उस आदमी पर बहुत तरस आया ।

आखिर इसमें उसकी क्या गलती थी, जो वह बूढ़ा था, ग्लैमरविहीन था और बहुत जोश-खरोश के आलम में मेरे साथ रति-क्रीड़ा नहीं कर पाता था ।

मेरी इच्छा हुई, मैं दौड़ूं और उसके साथ उसी के बेडरूम में जाकर सो जाऊं ।

लेकिन फिर मैं इस काम के लिये खुद को तैयार न कर सकी ।

मुझे खुद पर गुस्सा आने लगा ।

आखिर इतनी लम्बी जिन्दगी उसके साथ कैसे कटेगी। फिर मैंने अपने दिल को तसल्ली दी कि मुम्बई पहुंचने के बाद एक बार फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा। वह जहां अपने लेखन में, प्रशंसकों में और सामाजिक क्रियाकलापों में व्यस्त हो जायेगा, वहीं मेरे वास्ते भी करने के लिये काफी कुछ होगा।

उस दिन बिस्तर पर लेटकर मुझे विक्रम की याद आई।

उसका लम्बा-चौड़ा कद-काठ। चीते जैसा फुर्तीला शरीर। विक्रम की याद आते ही घोड़े की लीद जैसी बदबू मेरी सांसों में समा गयी, परन्तु उस क्षण वह बदबू मुझे ज्यादा बुरी नहीं लगी।

एकाएक मेरा जी चाहने लगा, मैं उड़कर मड-आइलैण्ड के बंगले में पहुंच जाऊं और वहां पहुंचकर विक्रम से ढेर सारी बातें करूं।

उससे दोस्ती करूं।

□□□

वह अजीब पागलपन भरा अहसास था।

मैं किसी भरपूर जवान मर्द के साथ सहवास करने के लिये तड़पने लगी थी। वह तड़प ऐसी थी, जैसे मैं आज तक किसी मर्द के लिये नहीं तड़पी थी।

अभिजीत घोष ने मेरी भूख जगा दी थी, लेकिन उस भूख को वह शान्त नहीं कर पाया था।

और यही मेरे पागलपन की वजह थी।

अगले तीन दिन हमने स्टॉकहोम में घूमते हुए गुजारे।

साथ-साथ पिक्चरें देखीं।

कैण्डिल लाइट डिनर लिया।

मगर फिर भी एक अनचाहा-सा फासला हम दोनों के बीच बढ़ने लगा था। हम एक-दूसरे से पहले के मुकाबले काफी कम बात करते थे और थोड़ा खिंचे-खिंचे रहते।

एक दिन रात का समय था।

मैं होटल के ड्रेसिंग रूम में सोने की तैयारी कर रही थी।

"नताशा !"

मैंने चौंककर सिर उठाया।अभिजीत घोष अपने बेडरूम में से मुझे आवाज दे रहा था।

"क्या है ?"मैं थोड़े संतुलित लहजे में बोली।

"जरा यहां आओ।"

मैं कांप गयी।

इस तरह अभिजीत घोष ने मुझे पहले कभी नहीं बुलाया था।

मैं जल्दी से अपने रेशमी गाउन को दुरुस्त करती हुई बिस्तर छोड़कर खड़ी हुई, स्लीपर पहनी और फिर अभिजीत घोष के बेडरूम में पहुंची।

मैंने देखा, अभिजीत घोष बेड पर ही कम्बल टांगों के ऊपर डाले बैठा था। एक किताब खुली हुई उसकी गोद में रखी थी और वह अपने काले स्याह सिगार के छोटे-छोटे कश लगा रहा था।

"अन्दर आ जाओ नताशा ! मुझे तुमसे कुछ बात करनी है ।"
"मैं सोने जा रही थी ।" मैं धीरे से बोली, परन्तु फिर आगे बढ़कर उसके सामने बिस्तर पर जा बैठी ।
मेरा दिल धड़क-धड़क जा रहा था ।
उस क्षण मेरी हिम्मत नहीं थी, जो मैं अभिजीत घोष का सामना करूं ।
"आखिर क्या बात है?"
"वही तो मैं तुमसे जानना चाहता हूं नताशा, आखिर क्या बात है ? क्या तुम मुझसे शादी करके खुश नहीं हो ?"
मुझे अभिजीत से इस तरह के सीधे हमले की उम्मीद नहीं थी ।
मैं बौखला गयी ।
हालांकि अभिजीत घोष ने मुझे बिस्तर पर खुश नहीं किया था, लेकिन फिर भी मैं उसे खोना नहीं चाहती थी ।
मुझे फिलहाल एक पति की जरूरत थी ।
फिर चाहे वह 'नाम' का ही पति क्यों न हो ।
"खुश, मैं तो बहुत ज्यादा खुश हूं ।" मैं तुरन्त बोली- "आपने यह कैसे सोच लिया कि मैं खुश नहीं हूं ?"
"तुम्हारे व्यवहार से तो ऐसा ही मालूम होता है, जैसे तुम मुझसे बहुत खुश नहीं हो ।" अभिजीत घोष ने संजीदगी के साथ सिगार का एक कश लगाया- "तुम मुझसे इस तरह पेश आती हो, जैसे मैं छूत का कोई मरीज होऊँ ।"
"अ... अभिजीत !"
मेरे मुंह से तीव्र सिसकारी छूट पड़ी ।
मैं बड़ी तेजी से उसकी तरफ बढ़ी ।
"प्लीज, मुझे हाथ मत लगाना ।" अभिजीत घोष थोड़ा पीछे सरक गया- "तुमने सैर-सपाटे और हनीमून का सारा मजा चौपट कर डाला है । मुझे अफसोस हो रहा है, मैं तुम्हारे साथ यहाँ आया ही क्यों ?"
"यह आप कैसी बातें कर रहे हो अभिजीत ?" मैं आंदोलित लहजे में बोली- "मैंने हनीमून का मजा चौपट नहीं किया है । अगर मुझे ज्यादा सैर-सपाटा पसंद नहीं है, तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ । अजीब तरीका है आपके हनीमून मनाने का । जब दो प्रेमी-प्रेमिका आपस में बातें करते हों, तो सैर-सपाटा करने या खंडहरों में सिर टकराते रहने की क्या जरूरत है ?"
अभिजीत ने अपनी बड़ी वेधक निगाहों से मेरी तरफ देखा ।
"प्रेमी-प्रेमिका ?"
"हाँ !"
"लेकिन तुम्हारे व्यवहार से मुझे ऐसा नहीं लगता, जैसे तुम मुझसे प्रेम करती होओ । तुम तो मेरे साथ बिस्तर पर सोने से भी परहेज करती हो ।"
अब मैं डर गयी ।
मुझे लगने लगा, कहीं वो मुझे तलाक देने की बात न कह बैठे ।

वह मेरे अतीत के बारे सब-कुछ जानता था। वह मेरा बहुत कुछ बिगाड़ सकता था।

"मैं आपके साथ सोने की इच्छुक नहीं हूँ ?" मैं जल्दी से बात संभालती हुई बोली- "लेकिन आपके व्यवहार से तो मुझे ऐसा लगता था, जैसे आप खुद ही मेरे संसर्ग के इच्छुक नहीं हो।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो?"

"एक बार स्टोरी डिस्कशन के दौरान आपने ही तो कहा था कि मोहब्बत में जिस्मानी रिश्तों से ज्यादा मित्रता की कीमत होती है।"

"ओह! लगता है, हम दोनों के बीच कोई गलतफहमी पैदा हो गयी है।"

"जरूर यही बात है अभिजीत !" मैं बड़ी तेजी से आगे की तरफ सरकी- "यह सच है, हम दोनों के बीच वह रात एक नाकामयाब रात इसलिये थी, क्योंकि हम दोनों के बीच म्युचुअल अंडरस्टैंडिंग नहीं बन पायी थी। हम दोनों ही एक-दूसरे से खिंच रहे थे।"

"हम दोनों नहीं, बल्कि तुम्हीं मुझसे खिंच रही थी।" अभिजीत घोष बोला- "मैं तो तुमसे मोहब्बत करता हूँ।"

"मगर मुझे तो यही लग रहा था कि उस रात के बाद आप ही मुझसे दूरी बनाना चाह रहे हो। इसीलिये मैं दूसरे कमरे में जाकर सोने लगी थी। क्या आप यह चाहते हैं, मैं आपके साथ इसी कमरे में सोया करूं?"

'और नहीं तो क्या ?" अभिजीत घोष कम्पित स्वर में बोला- "मैं चाहता हूँ कि हम दोनों के बीच कोई दीवार न रह जाये।"

"ओह माय गॉड ! हम दोनों इतने समझदार होते हुए भी किस प्रकार एक-दूसरे से मूर्खों की तरह बर्ताव कर रहे थे। किस तरह एक-दूसरे को गलत समझ रहे थे। ओह अभिजीत !"

मेरे मुंह से सिसकियाँ छूट पडीं।

आप समझ ही सकते हैं, मेरी वह सिसकियां बनावटी थीं।

नाटकीय !

मैंने आगे बढ़कर अभिजीत घोष को अपनी बाहों में भर लिया।

अभिजीत घोष भी मुझसे कसकर लिपट गया।

"आप वाकई मुझसे प्यार करते हो अभिजीत ?"

"बिल्कुल, दिल की गहराइयों से।"

"ओह माय स्वीट हार्ट !"

अभिजीत घोष ने अब मुझे अपनी गोद में समेट लिया था।

उसकी सूखी और कमजोर उंगलियाँ मेरे कन्धों में धंसी जा रही थीं।

उस रात मैं अभिजीत घोष के कमरे में उसी के बिस्तर पर सोई। वह रात मेरे लिये भारी कष्टदायक थी। परन्तु उस रात मैंने एक काम अच्छा किया, मैंने लेटने से पहले कमरे की लाइट बंद कर दी।

उस सारी रात मैं सोई नहीं।

अभिजीत घोष तमाम रात मेरे अंग-प्रत्यंग के साथ खिलवाड़ करता रहा।

उसकी मरगिल्ली जांघे और स्थूलकाय पेट रह-रहकर मेरे शरीर से टकराता रहा।

परन्तु वह रात नाकामयाब रात नहीं रही।
अभिजीत घोष ने उस रात काफी धैर्य से काम लेकर दिखाया।

□□□

जैसाकि मैं पहले बता चुकी हूँ, हम पूरे दस दिन के प्रोग्राम से स्कॉटलैंड आये थे। परन्तु अब अभिजीत घोष भी यही समझने लगा था कि मेरी ज्यादा सैर-सपाटे में रूचि नहीं है, इसलिये सातवें दिन ही हम वापस मुम्बई लौट गये।

यह मेरे लिये भारी खुशी की बात थी।

मेरी उम्मीदों को मानो पर लग गये थे।

मैं हवा में उड़ रही थी।

मैंने जब अभिजीत घोष के बंगले में कदम रखा, तो मेरा चेहरा ताजे गुलाब की तरह दमक रहा था।

बंगले में पहुंचते ही मैंने खुशी-खुशी सबसे पहले नौकरों से मिलना शुरू किया।

मगर जिसे मैं देखना चाहती थी, वो वहां कहीं नहीं था।

मेरी बेचैन नजरें उसे इधर-उधर खोजने लगीं।

“विक्रम कहाँ है ?” अंतत: मैंने पूछ ही लिया।

“विक्रम !” माधवन बोला- “वह घोड़े को लेकर रेसकोर्स गया हुआ है।”

“ओह !”

“कोई ख़ास बात मैडम ?”

“नहीं ! ऐसे ही पूछ रही थी। वो दिखाई नहीं दिया न ! पीछे तो बंगले में सब कुछ ठीक-ठाक रहा न ?”

“जी मैडम ! सब ठीक रहा।”

“कुमार !”

मैंने कुमार को आवाज दी।

“यस मैडम !”

कुमार तत्काल भागा-भागा मेरे पास आया।

हालांकि कुमार मुझे पसंद नहीं करता था, लेकिन फिर भी अपनी नापसंदगी उसने कभी मेरे ऊपर जाहिर करने की कोशिश नहीं की।

“पीछे जो डाक आयी होगी, वो कहाँ हैं ?”

“वह सब मैंने आपकी टेबल पर रख दी थी मैडम !”

“कोई फोन ?’

“एक प्रकाशक का फोन आया था। वो घोष साहब का नया उपन्यास छपने के लिये आपसे मिलना चाहता है। एक-दो दिन में शायद वो आपको फिर फोन करेगा।”

“हूँ !”

मैं लम्बे-लम्बे डग रखती हुई अब अपने कमरे की तरफ बढ़ गयी।

हालांकि मैं अब अभिजीत घोष की बीवी बन चुकी थी। लेकिन फिर भी उसकी सेक्रेटरी का काम छोड़ने की मेरी इच्छा नहीं थी।

आखिर इतने विशालकाय बंगले में वक्त गुजारने का वही एक साधन तो मेरे पास था।
मैं सबसे पहले नहा-धोकर फ्रेश हुई और फिर अपने ऑफिस में पहुंचकर मैंने डाक देखी।
मेरी टेबल पर चिट्ठियों का अम्बार लगा हुआ था।
ढेर सारा काम मेरी प्रतीक्षा में था।
मैं तुरंत अपने काम में मग्न हो गयी।
यह बात अलग है, मेरा ध्यान विक्रम की तरफ ही लगा हुआ था। हालाँकि मैं जानती थी, मेरी वो बेकरारी खुद मेरे लिये ही खतरनाक है। मैं खुद ही तो चाहती थी, मेरे जीवन में कोई नया प्रेमी कदम न रखे और फिर मैं जान-बूझकर एक झंझट को आमंत्रण दे रही थी।
परन्तु मैं बेबस थी।
मैं करना कुछ चाहती थी, कर कुछ रही थी।
विक्रम !
उस आदमी का चेहरा आँखों के सामने कौंधते ही मैं ट्रांस जैसी स्थिति में पहुँच जाती थी। यह शायद पागलपन की इन्तहा थी।
पागलपन, जिसका दूसरा नाम 'मोहब्बत' है।

□□□
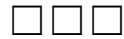
शाम के छ: बजे तक मैं चिट्ठियां तथा मेल पढ़ती रही और उनमें से कुछेक के जवाब मैं टेपरिकार्डर पर बोल-बोलकर डिटेक्ट भी करती रही।
उसके बाद मैं टहलने के इरादे से बंगले के कंपाउंड में पहुँची।
मेरी आँखें तब भी विक्रम को ही तलाश रही थीं।
मैं सर्वेंट क्वार्टरों की तरफ गयी। विक्रम वाले क्वार्टर का बाहर से कुंडा लगा था।
मैं अस्तबल की तरफ बढ़ी।
वो वहीं था।
उस समय विक्रम एक मोटर से चलने वाली मशीन हाथ में पकड़े खड़ा था और उससे घोड़े की पीठ का रूआं साफ़ कर रहा था। हालत उसकी वही थी। वो शायद पिछले सात दिन के दौरान भी नहीं नहाया था। उसने कपड़े भी वही पहने हुए थे, शिकारी जूते, टाइट जींस और लेदर की जैकिट।
"हेलो !"
"हेलो मैडम !"
विक्रम ने एक सरसरी-सी निगाह मेरे ऊपर डाली।
परन्तु उसने मशीन बंद नहीं की और वो पहले की तरह ही घोड़े की पीठ का रूआं तन्मयतापूर्वक साफ़ करता रहा।
मैं जल-भुन गयी।
आज तक कभी किसी मर्द ने मुझे इस कदर नजरअंदाज नहीं किया था।
"माधवन बता रहा था।" मैं उससे वार्तालाप जारी रखते हुए बोली- "कि तुम रेसकोर्स गये हुए हो। रेसकोर्स से कब लौटे ?"

"दो घंटे पहले ही लौट आया था।"
"घोष साहब से मिले ?"
"हाँ !"
मैंने कहना चाहा, मुझसे क्यों नहीं मिले ? परन्तु फिर मैं चुप लगा गयी।
वहीं स्टूल पर अंग्रेजी की दो-तीन किताबें रखी हुई थीं, जिनमें से एक आधी खुली हुई थी।
मैंने आगे बढ़कर वो किताब उठाई।
वह विश्व प्रसिद्ध जासूसों के ऊपर थी।
साफ़ जाहिर हो रहा था, विक्रम काफी पढ़ा-लिखा था।
"मुझे तुम्हारा कैरेक्टर काफी अजीब नजर आता है विक्रम !"
"किसलिये ?"
विक्रम अब घुटनों के बल बैठ गया था और मशीन से घोड़े के पेट का रूआं साफ़ करने लगा।
"तुम नहाते जो नहीं हो। अपना अजीब-सा बुरा हाल जो बनाए रखते हो।"
विक्रम हंसा।
उसकी हंसी भी सीमित दायरे में थी।
"अगर तुमने साफ़-सुथरा रहना न शुरू किया, तो मुझे घोष साहब से तुम्हारी शिकायत करनी होगी।"
"आप मुझे धमकी दे रही हैं ?"
"नहीं, समझा रही हूँ।"
"मुझे समझाने की ऐसी ही कौशिश आप पहले भी एक मर्तबा कर चुकी हैं मैडम।"
यह कहकर विक्रम ने मेरी तरफ देखा।
उसकी आँखों में बड़ी भावनामयी गहराई और सख्ती थी।
एक क्षण के लिये मुझे उसकी आँखों में ऐसा कुछ दिखाई दिया कि एकाएक मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा। वो वही नंगी लालसा थी, जो मैंने कभी सोढा साहब या शंकर की आँखों में देखी थी। वह मेरी कल्पना की उपज नहीं थी। मैंने सचमुच ही उसकी आँखों में वह भाव देखा था, जो किसी स्त्री को यह बताता है कि उस मर्द को हासिल किया जा सकता है या नहीं।
मगर वह जज्बा जल्द ही उसकी आँखों में गायब हो गया।
मैं समझ गयी, आग दोनों तरफ बराबर लगी हुई थी।

□□□
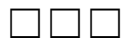
मैं विक्रम की तरफ लगातार खींचती चली जा रही थी।
मैं पानी थी, वो आग !
मैं डोर थी, वो पतंग !
एक अजीब-सा रिश्ता हम दोनों के बीच कायम हो गया था।
अगले दिन अभिजीत घोष के साथ लंच लेते समय मैंने एक महत्वपूर्ण चर्चा छेड़ी।

"क्या बात है ?" अभिजीत घोष गौर से मेरी तरफ देखता हुआ बोला- "आज काफी थकी-हारी नजर आ रही हो।"

"हाँ, जब से लौटी हूँ, तब से काम का बोझ काफी है। उसी को निपटाने की कोशिश कर रही थी।"

"क्या बहुत काम है ?"

"हाँ, पिछले सात दिन में चिट्ठियों और मेल्स का ढेर जमा हो गया है। मैं तो यह सोच-विचार ही कर रही हूँ कि वह सारा काम कैसे निपटेगा। फिर उसमें कुछ बहुत जरूरी मेल्स भी हैं, जिनका जल्दी जवाब दिया जाना आवश्यक है।"

"ओह ! यह तो काफी जटिल बात है।" अभिजीत घोष लंच लेते-लेते ठिठका- "तुम एक काम क्यों नहीं करती ?"

"क्या ?"

"अपना एक सहायक क्यों नहीं रख लेती। वही तुम्हारे काम में हाथ बंटा दिया करेगा।"

वह शब्द कहने के बाद अभिजीत घोष पुन: लंच लेने लगा था।

"सच तो ये है अभिजीत, आज सुबह से यही बात मैं भी सोच रही हूँ।"

"वेरी गुड !"

"लेकिन मेरे दिमाग में एक बात और भी है।"

"क्या ?"

"इस काम के लिये कोई नया नौकर रखने की क्या जरूरत है।" मैंने तुरंत निशाने पर तीर छोड़ा- "क्या बंगले में ही कोई ऐसा आदमी नहीं है, जो सहायक का काम कर सके ? आखिर वह सारा दिन खाली ही तो रहते हैं।"

"यह बात भी ठीक है।"

अभिजीत घोष अब थोड़ा सोच में डूब गया था।

सोच में डूबे-डूबे वह लंच लेता रहा।

जबकि मेरा दिल धड़क-धड़क जा रहा था।

तभी कुमार ने गरम टमाटर सूप लाकर टेबल पर रख दिया।

"मेरी निगाह में बंगले के अन्दर एक आदमी है।" अभिजीत घोष काफी सोच-विचार कर बोला- "जो यह काम कर सकता है।"

"कौन ?"

"विक्रम !"

मेरे मानो मन की मुराद पूरी हो गयी।

मैं मानो हवा में उड़ने लगी।

"नहीं-नहीं।" फिर भी मैं इंकार में गर्दन हिलाते हुए बोली- "विक्रम नहीं !"

"क्यों ?"

"आपने देखा ही है, वह कितना गंदा रहता है। वह तो मेरे नजदीक से भी गुजरता है, तो मुझे बदबू आती है।"

अभिजीत घोष धीरे से हंस पड़ा।

“चिंता मत करो, मैं उससे बोल दूंगा कि वह साफ़-सुथरा रहा करे और तुम्हारे सहायक का काम देखे।”

“क्या वो आपकी बात मानेगा?” मैं थोड़े सशंकित लहजे में बोली।

“क्यों नहीं मानेगा ?”

□□□

अगले दिन से ही विक्रम ने मेरे सहायक का काम देखना शुरू कर दिया।

वह अब नहा-धोकर और अपने सुतली जैसे बालों में हल्का-सा तेल लगाकर मेरे सामने आया, तो मैं उसे अचंभित निगाहों से देखती रह गयी।

वह बिल्कुल जेम्स बांड की तरह स्मार्ट नजर आ रहा था और उसकी मर्दाना चमक बहुत बढ़ गयी थी।

अलबत्ता उसने कपड़े तथा जूते वही पहने हुए थे।

फिर भी उस जैसे जंगली आदमी को सुधारने के लिये शुरूआत अच्छी थी।

“वेरी गुड !” मैं उसे प्रशंसनीय नेत्रों से देखते हुए बोली- “पहली बार लग रहा है, तुम इसी दुनिया की कोई चीज हो।”

वह हमेशा की तरह शांत था।

“अब तुम थोड़ा बहुत बोलना भी शुरू कर दो।”

“मुझे काम क्या करना है ?”

“वह भी बताती हूँ।”

मैंने उसे काम समझाना शुरू किया।

आदमी वह वाकई बुद्धिमान था।

मुझे कोई भी बात उसे दोबारा समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। दो घंटे में ही वह पूरी तरह ट्रेंड हो गया और तेजी से अपना काम करने लगा।

यह देखकर मैं चकित रह गयी, वह टाइप भी करना जानता था।

वह तो मानो कोई हरफनमौला चीज था।

हर मर्ज की दवा।

उसकी उंगलियाँ कंप्यूटर के की-बोर्ड पर इस तरह दौड़ती थीं, जैसे उसे टाइप करने का वर्षों का तजुर्बा हो।

शाम तक ही उसने मेरा काफी काम निपटा डाला।

□□□

उसी दिन एक घटना घटी।

अभिजीत घोष की एकाएक न जाने कैसे तबीयत बिगड़ गयी।

वह राइटिंग रूम में बैठा लेखन कर रहा था, तभी उसके सिर में बड़ा तेज दर्द उठा। दर्द वाकई तेज था।

मैं तुरंत उसके पास पहुँची।

“क्या पहले भी ऐसा दर्द उठा है ?”

"हाँ, दो-तीन मर्तबा उठ चुका है।" अभिजीत घोष दर्द से छटपटाता हुआ बोला।
कुमार भी वहीं आ गया।
"मैं आपके लिये चाय बनाकर लाता हूँ घोष साहब !"
"जल्दी लाओ !"
कुमार दौड़ता हुआ वहां से चला गया।
शीघ्र ही जब वो लौटा, तो उसके हाथ में गरमा-गरम चाय का एक कप था।
अभिजीत घोष चाय पी गया।
चाय पीने से उसके सिरदर्द को कुछ आराम पहुंचा। फिर थोड़ा रूककर उसने एक सिरदर्द की गोली खाई और एक नींद की गोली खाई।
"मैं आराम करना चाहता हूँ।"
"चलिये।"
मैंने अभिजीत घोष की कमर में बांह डाल दी और सहारा देकर उसे उठाया।
वह बिल्कुल लुंज-पुंज आदमी था।
मैं उसे लेकर बेडरूम में पहुँची। बेडरूम में पहुंचते ही वह लेट गया।
"मैं अब थोड़ी देर सोऊँगा।" अभिजीत घोष बोला- "इससे मेरी तबीयत को आराम मिलेगा।"
"क्यों नहीं, जरूर।"
मैंने एक पतला-सा कम्बल उसके ऊपर डाल दिया।
"बेडरूम की लाइट और बंद कर दो।" अभिजीत घोष बोला- "अब मैं सुबह ही उठूंगा।"
"ठीक है।"
मैंने लाइट बंद कर दी और बेडरूम से बाहर निकल आयी।
बाहर से मैंने दरवाजे के दोनों पल्ले और भिड़ा दिए।
मैं हवा में उड़ रही थी।
अब सारी रात मेरी अपनी थी।
मैं ड्राइंग हाल से जुड़े अपने ऑफिस में पहुँची।
विक्रम वहीं था। लेकिन अब वो जाने की तैयारी कर रहा था। कंप्यूटर को उसने ओवरआल से ढक दिया था। चिट्ठियों को लिफ़ाफ़े में डालकर उनके पैकेट बना दिए थे।
"तुम कहाँ जा रहे हो ?" मैं वहां पहुंचते ही बोली।
"आपने मुझे जो काम दिया था, मैं वो सब निपटा चुका हूँ।" विक्रम बोला- "वैसे भी मुझे अस्तबल में जाकर थोड़ी घोड़ों की भी देखभाल करनी है।"
"ओह !"
यह तो मैं भूल ही गयी थी, विक्रम के ऊपर एक दूसरी जिम्मेदारी भी थी।
"मेरी बात ध्यान से सुनो।" एकाएक मैं विक्रम के काफी नजदीक जा खड़ी हुई और धीमी आवाज में फुसफुसाई।
विक्रम चौंका।
"कैसी बात?"
"घोष साहब की तबीयत एकाएक कुछ खराब हो गयी है।" मैंने धाराप्रवाह अंदाज में

कहा- “उनके सिर में कुछ दर्द है। वह नींद की गोली लेकर सो गये हैं और अब वो सुबह उठेंगे। समझ रहे हो, अब वो सुबह उठेंगे।”

विक्रम एकाएक आश्चर्य से मेरी तरफ देखने लगा।

“काम ज्यादा है।” मैं आगे बोली- “मैं आज रात भी थोड़ा काम निपटाना चाहूंगी। तुम आ जाना।”

एकाएक विक्रम की आँखों में ऐसे भाव पैदा हुआ, जैसे वो भांप गया था, मैं क्या चाहती थी।

मैने परवाह न की।

अच्छी बात थी, अगर वो एक ही बार में सब कुछ भांप गया था।

देर-सवेर तो उसने वह बात भांपनी ही थी।

“रात को ?”

“हाँ !”

“लेकिन तब कुमार जाग रहा होगा।”

मेरे चेहरे पर हर्ष की कोपलें फूट पड़ीं।

यानि वह तैयार था।

मेरे लिये वो शुभ संकेत था।

“कुमार की तुम परवाह मत करो।” मैं बेचैनी के साथ बोली- “इसका इंतजाम मैं कर दूंगी।”

“कैसा इंतजाम ?”

“नींद की एक गोली मैंने आज रात कुमार को भी पिला देनी है। फिर घोष साहब की तरह वो भी गहरी नींद सो जायेगा।”

विक्रम अपलक मुझे देखने लगा।

“आज रात दस बजे मैं तुम्हारा इंतज़ार करूंगी विक्रम !”

विक्रम खामोश रहा।

“आओगे न दस बजे?”

वो कुछ न बोला।

“मैं तुम्हीं से पूछ रही हूं।” मैं बुरी तरह झल्ला उठी- “जवाब दो।”

“मैं देखूंगा।”

“देखोगे नहीं।” मैं गुर्राई- “तुम आओगे। मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगी।”

विक्रम कुछ क्षण मेरी आंखों में आंखें डाले मुझे देखता रहा और फिर बिना कोई जवाब दिये चला गया।

मैं झल्ला उठी। अजीब पागल आदमी था।

छत्तीस व्यंजनों से सजी थाली उसके सामने रखी थी और उसे कुछ खबर ही न थी।

सच तो ये है, अगर वह दूसरे मर्दों की तरह शुरू से ही मुझमें दिलचस्पी लेता, तो उसे अपनी जिंदगी से मक्खी की तरह बाहर निकाल फेंकने में मुझे आसानी रहती। फिर मेरी जिंदगी में एक और प्रेमी दाखिल न हो पाता। मगर उसका जुदा व्यवहार ही मुझे उसकी तरफ खींच रहा था।

□□□

मेरे हाथ कांप रहे थे।

मेरा दिल बड़े जोरों से धड़क रहा था।

विश्वास जानिए, कम-से-कम किसी मर्द की वजह से मेरा ऐसा हाल कभी नहीं हुआ था।

मेरा दिल कह रहा था, विक्रम रात दस बजे जरूर आएगा। कुमार को रात के समय चाय पीने की आदत थी। मैंने चुपचाप किचन में जाकर उसकी चाय में दो नींद की गोलियां डाल दी। चाय पीने के मुश्किल से एक घंटे बाद ही वह अपने कमरे में जाकर सो गया और उसके खर्राटे बजने लगे।

अब मेरा रास्ता साफ था।

अब मुझे कोई खतरा न था।

नींद की गोलियां मैंने अभिजीत घोष की ड्रायर में से निकाली थीं। फिर मैं ऑफिस में आकर बेचैनी से विक्रम का इंतजार करने लगी।

पता नहीं वो आने वाला था या नहीं आने वाला था।

मगर वो आया।

ठीक दस बजे आया।

विक्रम के आते ही मैं एकदम दौड़कर उससे चिपट गयी और उसे अपनी बाहों में भर लिया।

उस क्षण के लिये मैं न जाने कब से बेकरार हो रही थी।

"ओह विक्रम! मैं तुमसे प्यार करने लगी हूं।" मैंने लगभग हाँफते हुए कहा।

मेरी सांसों में तूफान आया हुआ था।

"मैं जानता हूं।" विक्रम शान्त लहजे में बोला।

मैंने चौंककर विक्रम की तरफ देखा।

"जानते हो?" मैं बोली- "तब भी इतनी बेरुखी से पेश आते हो। मैंने तुम्हारे जैसा पत्थर की तरह बेहिस मर्द आज तक नहीं देखा।"

वो खामोश रहा।

उसकी खामोशी पर मैं झल्ला उठती थी।

मेरा दिल चाहता था कि मैं उसका सिर फोड़ दूं या फिर अपना फोड़ डालूं। आखिर मैं उस जैसे आदमी से खामखाह उलझ रही थी।

उस क्षण मैं सेक्स के लिये इस कदर व्याकुल हो रही थी कि मैंने दरवाजा भी अन्दर से बंद नहीं किया था।

"पीछे हटो।"

"क्यों?"

"कोई आ सकता है। मैं दरवाजा बन्द कर लूं।"

"ओह!"

मैं हट गयी।

विक्रम ने ही आगे बढ़कर दरवाजा अन्दर से बन्द किया।

दरवाजा बन्द करके वह पलटा ही था कि मैं फिर उसकी बाहों में समा गयी। इतना ही

नहीं, मैं आनन-फानन में उसके कपड़े भी उतारने लगी।

उसकी जैकिट, पैंट, शर्ट, देखते ही देखते मैंने उसके सारे कपड़े उतार डाले।

विक्रम ने कोई प्रतिरोध न किया।

"काफी जल्दी में हो।" वो बहुत धीरे से बोला।

"हां, काफी जल्दी में हूं। तुम नहीं जानते, मैंने कितना इन्तजार किया है।"

शीघ्र ही विक्रम मेरे सामने सिर्फ अण्डरवियर में खड़ा था।

मेरा हाथ सरसराता हुआ उसके अण्डरवियर में समा गया।

उफ!

वह पूर्ण पुरुष था।

पूर्ण से भी ज्यादा पूर्ण पुरुष।

उसका मजबूत जिस्म तथा कसे हुए अंग-प्रत्यंग देखकर मेरी प्यास और भी भड़क उठी थी।

उसी क्षण विक्रम ने मुझे किसी खिलौने की तरह गोद में उठा लिया और फिर मुझे लेकर वहीं ऑफिस में पड़े काफी चौड़े दीवान की तरफ बढ़ा।

उसके बाद उसने बहुत धीरे-धीरे मेरे कपड़े उतारने शुरू किये।

हालांकि मैं व्याकुल हो रही थी।

मेरी इच्छा थी कि वो मेरे कपड़े उतारने की बजाय उन्हें बस जंगलियों की तरह फाड़ डाले।

फिर भी मैंने सब्र किया।

अपने अन्दर से बह निकलने वाले सैलाब को रोका।

मैं अब निर्वस्त्र थी।

मैंने एकाएक अपनी संगमरमरी बाहों में विक्रम को जकड़ लिया।

"विक्रम ! आई लव यू !"

मैं मानों मदहोश हुई जा रही थी।

"आई लव यू !"

मेरे मुंह से बार-बार वह शब्द फूटने लगे।

उसकी बगलों में से, उसकी जांघों में से, उसके सीने में से मुझे अभी भी घोड़े की लीद जैसी दुर्गन्ध आ रही थी। वह दुर्गन्ध उसके रोम-रोम में समा चुकी थी। लेकिन उस क्षण उस दुर्गन्ध से भी मुझे असीम मानसिक शान्ति प्राप्त हो रही थी।

मैं वाकई पागल हो चुकी थी।

मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मैं किसी बहुत तंदरुस्त, जवान, अरेबियन हट्टे-कट्टे घोड़े के साथ सहवास कर रही होऊं।

मैं उस क्षण एक बात दावे के साथ कह सकती थी, मेरी जिन्दगी में अभी तक जितने प्रेमी आए थे, उनमें विक्रम जैसा शानदार और गुबरैला मर्द कोई न था।

कमरे का टेम्परेचर एकाएक बहुत बढ़ गया था।

हम न जाने कितनी देर तक उसी तरह आपस में गुत्थम-गुत्था होते रहे।

मुझे नहीं मालूम, वो खेल कितनी देर चला।

समय का तो जैसे मुझे कोई अनुमान ही नहीं रहा था।

मुझे सिर्फ इतना पता है, अन्ततः एक काफी लम्बी मूठ वाला गरम खंजर मेरी दोनों जांघों को बीच में से फाड़ता चला गया था और मेरे हलक से अत्यन्त हृदयविदारक चीख निकल गयी।

वो चीख ऐसी वीभत्स थी, जैसी चीख मेरी आज तक कभी किसी सहवास के दौरान नहीं निकली थी।

मैं कितनी ही देर पड़ी हांफती रही।

विक्रम ने मेरे सामने वासना की एक नई और रंगीन दुनिया खोल दी थी।

उस क्षण के बाद मैं उस गुबरैल मर्द की और भी ज्यादा दीवानी हो उठी।

□□□

फिर तो जैसे वह सिलसिला चल निकला।

मेरे जीवन में एक नये प्रेमी ने कदम रख दिया था। मेरी उस दृढ़ प्रतिज्ञा की धज्जियां उड़ चुकी थीं, जो मैंने गोरखपुर से भागते समय की थी कि मेरे जीवन में अब कोई नया प्रेमी दाखिल नहीं होगा।

विक्रम रोजाना रूटीन के मुताबिक ऑफिस आता था।

मैं मौका देखकर कभी भी उसे बाहों में दबोच लेती। उसका चुम्बन ले लेती या फिर दूसरी कोई हरकत करती।

“विक्रम !”ऐसे ही एक दिन मैं उसे बाहों में भरे-भरे बोली- “क्यों न वह सब फिर दोहराया जाये।”

“पागल मत बनो।” विक्रम ने आहिस्ता से मुझे खुद से अलग कर दिया- “रोज-रोज इस तरह की हरकत ठीक नहीं। तुम घोष साहब को नहीं जानती।”

“क्या नहीं जानती ?”

“यही कि वह एक जासूसी उपन्यासकार हैं। ऐसे पात्र और घटनाओं की संरचना वह रोज करते हैं। अगर एक बार उन्हें तुम्हारे और मेरे सम्बन्धों की जरा सी भी भनक मिल गई, तो वह उसी क्षण खड़े पैर मुझे नौकरी से निकाल देंगे और तुम्हारा क्या होगा, इसका अंदाजा भी तुम सहज लगा सकती हो।”

“मुझे अपने अंजाम की परवाह नहीं।”

“तुम्हें अपने अंजाम की भले परवाह न हो।” विक्रम बोला- “लेकिन मुझे परवाह है। मैं इतनी अच्छी नौकरी को किसी हालत में छोड़ना नहीं चाहता। तुम नहीं जानती, घोष साहब में चाहे लाख बुराइयां सही, मगर एक खूबी उनमें है, वो निस्संदेह बड़े आदमी हैं और इतने बड़े आदमी के यहां नौकरी मिलना आसान नहीं होता।”

“बेकार की बात मत करो।” मैं गुर्रायी- “नौकरी! नौकरी! क्या तुम्हें मेरी परवाह नहीं ? क्या यह दो टके की नौकरी तुम्हें मेरे से भी ज्यादा प्यारी है ?”

विक्रम कुछ न बोला।

“देखो।” मैंने धैर्यपूर्वक कहा- “हमें दूसरे मिलन के लिये कुछ-न-कुछ करना होगा।”

“क्या करोगी ?” विक्रम बोला- “उस दिन घोष साहब की तबीयत एकाएक खराब हो

गयी थी, इसलिये हमें मौका मिल गया। अब क्या गारंटी है, घोष साहब की तबीयत कब खराब होगी ?"

"तबीयत खराब होने की गारंटी भले न हो।" मैंने कहा- "लेकिन फिर भी घोष साहब से निपटा जा सकता है।"

"कैसे ?"

विक्रम के नेत्र सिकुड़े।

उसके चेहरे पर कौतुहलता जागी।

"पहले उन्होंने नींद की गोली खुद ली।" मैंने तरकीब सुझाई- "मगर इस बार उन्हें नींद की गोली मैं खिला दूंगी। उन्हें भी और कुमार को भी।"

"नहीं ! नहीं !" विक्रम बोला- "मैं रिस्क नहीं लेना चाहता।"

"इसमें क्या रिस्क है ?"

"अगर नींद की गोली खिलाने से उनकी तबीयत कुछ ज्यादा खराब हो गयी तो ? या उन्हें नींद ही नहीं आयी, तब क्या होगा ? बिल्कुल नहीं। हमें समझदारी से काम लेना होगा नताशा।"

"पागल मत बनो।" मैं गुर्रायी- "मैं समझदारी से ही काम ले रही हूं, जो इतनी योजना बुन रही हूं।"

"फिर भी इसमें खतरा है और कुमार, कुमार को तुम क्या समझती हो ? मैंने उसकी आंखों में देखा है। उसके दिल में तुम्हारे लिये कोई बहुत अच्छे भाव नहीं हैं।"

"मैं जानती हूं।"

"जानती हो, तब भी इतना पागलपन दिखा रही हो ?"

"तुम इसे चाहे कुछ भी कहो, लेकिन मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।"

मैं फिर चिपट गयी।

"मेरा चुम्बन लो विक्रम, मेरा चुम्बन लो।" मैं छटपटा रही थी।

मेरी सांसें भभक रही थीं।

विक्रम ने मेरा एक प्रगाढ़ चुम्बन लिया।

□□□

जल्द ही मुझे इस बात का एहसास अच्छी तरह हो गया था कि विक्रम के साथ दोबारा हमबिस्तर होना कोई आसान काम नहीं है।

वह तो इत्तेफाक से एक गोल्डन चांस मुझे मिल गया था और उसका मैंने पूरा-पूरा फायदा उठाया।

फिर एक वाक्या और घटा।

विक्रम काम करने दो दिन तक ऑफिस न आया। इस बीच अभिजीत घोष तथा मेरे सम्बन्ध बिल्कुल सहज थे और उनमें कहीं कोई अवरोध न था। लेकिन लगातार दो दिन तक विक्रम के न आने से मैं बेचैन हो उठी।

क्या बात थी ?

क्यों नहीं आ रहा था विक्रम ?

जब तीसरे दिन भी विक्रम न आया, तो मेरे सब्र का बाँध छूट गया और मैं उसके क्वार्टर में जा पहुँची।

विक्रम तब वहीं था। लेकिन वो अस्तबल जाने के लिये तैयार हो रहा था। जैकेट उसने पहन ली थी और तभी अपने शिकारी जूतों में पैर डाले थे।

मुझे देखते ही वो चौंका।

"तुम ?"

"क्यों मुझे देखकर आश्चर्य हो रहा है ?"

विक्रम कुछ न बोला।

उसने सिर्फ अपने जूतों की जिप ऊपर की तरफ खींची।

"तुम पिछले दो दिन से कहाँ गायब हो ?"

'अस्तबल में कुछ ज्यादा काम था।" विक्रम बोला- "और फिर कल मुझे एकाएक रेसकोर्स जाना पड़ गया, इसीलिये न आ सका।"

मैं उसके सामने जाकर खड़ी हो गयी।

मैंने उसकी आँखों में झाँका।

"मेरी आँख में आँख डालकर जवाब दो विक्रम ! क्या यह सच नहीं है कि तुम मुझसे खिंच रहे हो ?'

"ऐसी कोई बात नहीं है।"

"देखो विक्रम !" मैं सख्ती से बोली- "अगर तुम नहीं चाहते कि यह रिश्ता आगे बढ़े, तो मैं इसे अभी ख़त्म करने के लिये तैयार हूँ।"

"तुम खामखाह बात बढ़ा रही हो। तुम्हारे दिल में मेरे लिये यह वहम बैठ गया है।"

"तो फिर इतने दिन गायब रहने के पीछे और क्या बात है ?"

विक्रम ठिठका।

उसने सीधे मेरी आँखों में झांका।

"सच बताऊँ ?"

"हाँ, सच ही बताओ।"

"म... मैं राज खुलने से डरता हूँ।" विक्रम बोला- "मैं नहीं चाहता कि घोष साहब को हमारे बारे में कुछ पता चले।"

"घोष साहब को कुछ पता नहीं चलेगा।" मैं आंदोलित होकर बोली।

"तुम्हारे सिर्फ एक लाइन कह देने से बात ख़त्म नहीं हो जाती। तुम अभी घोष साहब को नहीं जानती हो।"

"मैं जानती हूँ।"

"नहीं जानती।" विक्रम कर्कश लहजे में बोला- "अगर जानती होती, तो तुम सारा मामला इतनी सहजता से हर्गिज न लेती। वह कोई साधारण आदमी नहीं हैं, जिनकी आँखों में धूल झोंकी जा सके।"

"ठीक है! मैं नहीं जानती तुम्हारे घोष साहब को।" मैंने एकाएक विक्रम के दोनों कंधे कसकर पकड़ लिये- "और मैं जानना भी नहीं चाहती। मैं सिर्फ तुम्हें जानना चाहती हूँ, तुम्हें। समझे ? अब मेरी एक बात ध्यान से सुनो। आज रात मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगी।

घोष साहब आज की रात पहले की तरह गहरी नींद सो जायेंगे और कुमार भी। मुझे उम्मीद है, तुम आओगे। मैं अब चलती हूँ।"

मैंने विक्रम के दोनों कंधे छोड़ दिए।

मैं जाने के लिये मुड़ी।

मैंने यह भी मालूम करने का प्रयास नहीं किया था, विक्रम आयेगा या नहीं।

मैं जैसे ही मुड़ी, तभी मैंने अपने दायें हाथ पर विक्रम के हाथ का स्पर्श महसूस किया। मेरे शरीर में रोमांच की लहर दौड़ गयी। विक्रम ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया और फिर घुमाकर अपनी मजबूत बाहों में समेट लिया। अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए।

उस क्षण मैंने विक्रम की आँखों में अपने प्रति गहन अनुराग के भाव देखे।

"तुम मुझे धोखा तो नहीं दोगे विक्रम ?"

"नहीं, कभी नहीं।"

"सच ?"

"बिल्कुल सच।"

विक्रम ने मेरे चेहरे पर झूल आयी बालों की एक लट को पीछे किया।

यही वो क्षण था, जब मैंने बाहर हल्की-सी आहट की आवाज सुनी।

मैं तुरंत विक्रम से अलग हो गयी।

"मैं चलती हूँ। लगता है बाहर कोई है।"

विक्रम ने प्रतिरोध न किया।

□□□

सर्वेंट क्वार्टर से बाहर निकलते ही मेरे शरीर में तेज झुरझुरी दौड़ गयी।

वह अभिजीत घोष था।

अभिजीत घोष सामने से उसी तरफ चला आ रहा था।

उसे देखकर एक पल के लिये तो मेरे शरीर का सारा खून ही निचुड़ गया और मैं भयभीत हो उठी। लेकिन शीघ्र ही मैंने खुद को बहुत सहज बना लिया। मैं जानती थी, मेरी ज़रा-सी बौखलाहट मेरी असलियत के ऊपर से पर्दा उठा सकती थी।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो ?" अभिजीत घोष मेरे नजदीक आकर बोला।

"कुछ नहीं।" मैंने बहुत सहज उत्तर दिया- "विक्रम पिछले दो दिन से काम पर नहीं आया था, इसलिये मैं देखने चली आयी कि वो क्यों नहीं आ रहा।"

"तुम्हारा इस तरह सर्वेंट क्वार्टर में आना-जाना ठीक नहीं है। इस तरह का जो भी काम हो, कुमार से कराया करो।"

"ठीक है।"

मैंने उस सिलसिले में ज्यादा बहस नहीं की।

"वह आ क्यों नहीं रहा था ?"

"कहता था, अस्तबल में बिज़ी था। आज से आयेगा।"

"मालूम होता है, इस विक्रम का दिमाग कुछ ज्यादा खराब हो गया है।"

मैंने कुछ न कहा।

मैं सिर्फ बंगले की तरफ बढ़ गयी।
थोड़ा आगे जाकर मैंने पलटकर देखा।
मुझे जबरदस्त शॉक लगा।
अभिजीत घोष अभी भी वहीं खड़ा था और मुझे ही देख रहा था।
मैं काँप उठी।
क्या अभिजीत घोष ने मेरी और विक्रम की बातें सुन ली थीं ?
क्या उसे हम दोनों पर शक हो गया था ?
मेरा दिल डरने लगा।
अगर ऐसा था, तो ठीक नहीं था।
लेकिन उसके बाद शाम तक कोई विशेष घटना न घटी। अभिजीत घोष के बर्ताव में भी कोई फर्क न था।
वह मुझसे बिल्कुल सहज ढंग से पेश आ रहा था।
यानि उसे शक नहीं हुआ था।
रात को मैंने योजना के मुताबिक़ अभिजीत घोष और कुमार, दोनों को नींद की गोलियां दे दीं।
फिर वह रात बहुत हंगामाखेज रात गुज़री।
बहुत भूकम्पकारी।
उस रात विक्रम ने और मैंने दूसरी बार सेक्स किया। वह सेक्स पहले से भी ज्यादा हृदयविदारक और भूकंप की तरह झंझोड़ देने वाला था।
एक बार फिर कमरे में जोर का तूफ़ान आया और गुजर गया। मगर तूफ़ान के बाद बादल पूरे वेग से बरसे थे और उस बरसात ने हम दोनों को ही तृप्त कर दिया था।
वह पारी भी अच्छीखासी जोरदार पारी साबित हुई।
मगर नतीजा !
वही !
न कोई हारा, न कोई जीता।
आनंद के गहरे सागर में गोते लगाने के बाद हम दोनों एक-दूसरे की बाहों में कसकर लिपट गये।

□□□

एक बता मैं अच्छी तरह समझ चुकी थी, विक्रम से मेरा दिल कभी भरने वाला नहीं था।
वह तो यूं मेरे खून में घुल गया था, जैसे आज तक कोई नहीं घुला था।
मैं अब विक्रम के साथ बहुत खुलकर पेश आने लगी थी। मैं कभी भी उसके क्वार्टर में चली जाती। हालांकि अभिजीत घोष ने मुझे चेतावनी दी थी कि मैं वहां न जाया करूं।
लेकिन!
विक्रम मेरे होशो-हवास पर हावी होता जा रहा था।
मुझे सोते-जागते, उठते-बैठते अब सिर्फ विक्रम ही दिखाई पड़ता था।

मुझे दुनिया की कोई परवाह न थी। मैं यह तक भूल चुकी थी, अभिजीत घोष एक प्रसिद्ध जासूसी लेखक हैं और उनमें राज सूंघने की अद्भुत शक्ति है।

ऐसे ही एक दिन मैं उसके क्वार्टर में थी।

मैंने विक्रम को बहुत कसकर अपनी बाहों में भरा हुआ था तथा मेरे शरीर पर सिर्फ ब्रा और पैंटी थी।

"तुम उससे क्या कहकर आयी हो ?" विक्रम थोड़ा भयभीत था।

"कुछ नहीं !" मैं बोली- "वह अपने राइटिंग रूम में बैठा उपन्यास लिख रहा है और तुम जानते हो, जब वह उपन्यास लिखता है, तब उसे दुनिया की कोई परवाह नहीं होती।"

विक्रम हंसा।

"लेकिन शायद उसे तुम्हारी परवाह हो ?"

"नहीं !" मैं अफसोस के साथ बोली- "मैं भी उसके लिये दुनिया में ही हूँ। अगर ऐसा होता, तो फिर बात ही क्या थी ?"

"यह तुम्हारा वहम भी तो हो सकता है ?"

"नहीं! वहम नहीं है डियर !" मेरा हाथ सरसराता हुआ विक्रम की शर्ट के अन्दर दाखिल हो गया और होंठ उसकी गर्दन पर सरकने लगे- "कम-से-कम इस मामले में, मैं उसे तुमसे ज्यादा अच्छी तरह जानती हूँ।"

विक्रम का हाथ भी अब सरसराता हुआ मेरे वक्ष पर पहुँच गया था, जबकि दूसरा हाथ मेरे पेट से फिसलता हुआ अन्दर दाखिल होगया।

मैं असीम आनंद से सराबोर होने लगी।

हम दोनों उस समय फर्श पर खड़े हुए एक-दूसरे से चिपटकर 'ऑरल सेक्स' कर रहे थे।

ऑरल सेक्स!

जिसमें रति-क्रीड़ा को छोड़कर स्त्री-पुरुष बाकी सब कुछ करते हैं।

चुम्बन लेते हैं।

अंग-प्रत्यंग छेड़ते हैं।

उस क्रिया में रति-क्रिया से भी ज्यादा सेक्सुअल फीलिंग होती है और आनन्द आता है।

तभी घटना घटी।

अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।

विक्रम ने और मैंने एक-दूसरे की तरफ देखा। मेरे चेहरे से सारा खून निचुड़ गया।

"कौन है ?"

"मैं देखता हूँ।"

विक्रम ने मुझे अपने से परे धकेला और तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ा। विक्रम ने झिरी में से बाहर झांका।

तत्पश्चात वह इतना भयभीत हो उठा, जितना मैंने उसे जिन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था।

"घोष साहब हैं !" वह एकदम से झपटकर मेरे करीब पहुंचा- "जल्दी छुपो, जल्दी।"

घोष साहब का नाम सुनकर मेरा एक-एक रोआं कांप उठा।

मैंने झपटकर जल्दी वहीं पड़े अपने कपड़े उठाये और दौड़कर स्टोर रूम में जा छुपी।

इस बीच विक्रम दरवाजा खोल चुका था।
"बड़ी देर कर दी दरवाजा खोलने में ?"
अभिजीत घोष की आवाज मेरे कान में पड़ी।
"मैं कपड़े बदल रहा था घोष साहब ! क्या हुक्म है ?"
"अस्तबल में तो सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है ?"
"जी हाँ !"
"मैं बाहर चहलकदमी कर रहा था।" अभिजीत घोष बोला- "मैंने सोचा, क्यों न मैं घोड़ों के बारे में तुमसे मालूम करता चलूँ।"
"आपने ठीक किया घोष साहब !"
वह दोनों बात कर रहे थे, जबकि मैं स्टोर रूम में छुपी हुई पसीने में नहाए जा रही थी।
उफ्फ !
अगर मैं सिर्फ ब्रा और पैंटी में अभिजीत घोष के द्वारा वहां पकड़ ली जाती, तो निश्चित ही मेरी कहानी ख़त्म थी।
"जैकी के अब क्या हाल हैं ?" मेरे कान में अभिजीत घोष की आवाज पुन: पड़ी।
"पहले से तो बहुत बेहतर है घोष साहब !" विक्रम बोला- "मैं उसे दवाई दे रहा हूँ।"
"कोई ज्यादा खतरे वाली बात तो नहीं ?"
"नहीं, कोई खतरे वाली बात नहीं। अगर कोई बात होगी, तो मैं आपको इत्तला करूंगा।"
"ठीक है। जैकी का ख़ास ख्याल रखना। वह बहुत कीमती घोड़ा है।"
"आप निश्चिंत रहें।"
"मैं चलता हूँ।"
"अच्छा घोष साहब !"
अभिजीत घोष चला गया।

□□□
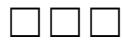
अभिजीत घोष के जाते ही विक्रम तुरन्त स्टोर-रूम में आ घुसा।
मैंने देखा, उसका चेहरा बिल्कुल सफ़ेद झक्क पड़ा हुआ था।
एकदम सफ़ेद चाक की तरह।
"हे भगवान! आज तो बाल-बाल बचे।"
विक्रम रुमाल से अपने चेहरे का पसीना पोंछता हुआ बोला।
मेरा खुद बुरा हाल था।
दिल धड़क-धड़क जा रहा था।
"मैंने तुम्हें पहले ही आगाह किया था।" विक्रम बोला- "उस कम्बख्त के अन्दर राज सूंघने की विलक्षण शक्ति है। अब खेल ख़त्म नताशा! अब हम कभी इस तरह अकेले नहीं मिलेंगे। अब तुम जाओ।"
"लेकिन...।"
"अब इस मामले में कोई बहस नहीं। प्लीज !"

मेरी टांगें काँप-काँप जा रही थीं।
उस क्षण मैं खुद बहस करने की स्थिति में नहीं थी।
मैं दरवाजे की तरफ बढ़ी।
"एक मिनट रुको !"
"अब क्या बात है?"
"पहले मुझे देखने दो। बाहर कोई है तो नहीं।"
विक्रम ने दरवाजा खोला और बाहर झांका।
बाहर कोई न था।
"ठीक है, जाओ।" उसने पलटकर कहा।
मैं तत्काल एक भयभीत चोर की तरह वहां से निकलकर भागी।

□□□

मेरे लिये आफतें बढ़ती जा रही थीं।
सबसे भयंकर मुश्किल ये थी, अभिजीत घोष अब विक्रम और मेरे ऊपर शक करने लगा था।
जबकि मैं निरंतर उसके प्यार में डूबती जा रही थी।
वो मेरी बेइंतहा दीवानगी से भरे दिन थे।
विक्रम! विक्रम!
मुझे हर पल वही एक आदमी चमकता था।
पंद्रह दिन तक फिर हमने एक-दूसरे को छुआ भी नहीं। वह रूटीन के मुताबिक़ ऑफिस में अपना काम करने आता था, काम करता था और चला जाता था। उसने मेरे और अपने दरम्यान एक ख़ास तरह की दूरी बना ली थी। मैं भी उससे बहुत ज्यादा घुल-मिलकर बात नहीं करती थी।
फिलहाल मेरे लिये यही बहुत बड़ा करिश्मा था कि मैं विक्रम को अभी भी अपने सहयोगी के पद पर चिपकाए हुए थी।
लेकिन आखिरकार जहाँ चाह हो, वहां राह निकल ही आती है।
मैंने मिलन का रास्ता खोज ही लिया।
मुझे आज भी याद है, वह बुद्धवार का दिन था। विक्रम रोजाना के मुताबिक़ कंप्यूटर पर कुछ जरूरी चिट्ठियां टाइप कर रहा था। मैं अभिजीत घोष का ही एक उपन्यास लेकर विक्रम के सामने वाली कुर्सी पर जा बैठी और मैंने अपनी निगाहें उपन्यास के पन्नों पर चिपका लीं।
"विक्रम !" मैं उपन्यास के पन्नों पर निगाहें चिपकाए-चिपकाए बोली- "मेरी बात ध्यान से सुनो।"
विक्रम ने चौंककर मेरी तरफ देखा।
"नहीं ! मुझे मत देखो। अपना काम करते रहो।"
विक्रम की उंगलियाँ बिल्कुल पहले की तरह कंप्यूटर पर दौड़ने लगीं।
"क्या तुम्हें मालूम है।" मैं बोली- "कल घोष साहब तीन दिन के लिये पूना जा रहे हैं।"

"मालूम है।"

"विक्रम ! यह हमारे लिये एक शानदार मौक़ा है। घोष साहब का पूना में बहुत व्यस्त प्रोग्राम होगा। उन्होंने क्रिमिनोलॉजी के ऊपर एक समारोह में अध्यक्षीय भाषण देना है। एक स्कूल के सांस्कृतिक प्रोग्राम में जाकर पुरस्कार बांटने हैं और वहीं लेखकों की एक गोष्ठी में भी जाना है। तीसरे दिन कहीं वो शाम तक लौटेंगे।"

"लेकिन तुम शायद जानती नहीं हो।" विक्रम जल्दी-जल्दी टाइप करता हुआ बोला- "तीन दिन के इस अति व्यस्त प्रोग्राम में तुम भी उनके साथ जा रही हो।"

"मैं जानती हूँ।" मैंने नाक-भौं सिकोड़ी- "वो कल ही मुझसे इस बारे में बात कर रहे थे, मगर मैंने अभी उन्हें कोई जवाब नहीं दिया है। मैं उनसे जाने के लिये मना कर दूंगी।"

"बेकार की बात मत करो।" विक्रम तीखे स्वर में बोला- "उनसे पूना जाने के लिये मना मत करना।"

"क्यों ?"

"अगर तुम पूना जाने के लिये मना करोगी, तो घोष साहब को तुम्हारे और मेरे सम्बन्धों पर शक पहले से भी ज्यादा मजबूत होगा।"

मैं सोचने लगी।

विक्रम बात सही कह रहा था।

"ठीक है।" मैं काफी सोच-विचारकर बोली- "तो फिर मैं पूना न जाने का कोई और तरीका निकालूंगी। एक बात तो तुम अच्छी तरह समझ लो विक्रम, मैं जाने वाली तो किसी हालत में नहीं हूँ। तीन दिन, हमारे पास एक साथ गुजारने के लिये पूरे तीन दिन होंगे और सबसे बड़ी बात ये है, वो बुड्ढा भी खतरे की घंटी की तरह हमारे सामने उपस्थित नहीं रहेगा।"

विक्रम ने एकाएक ठिठककर मेरी तरफ देखा।

उसने टाइप करना बंद कर दिया था।

"लेकिन तुम पूना न जाने का क्या तरीका निकालोगी ?"

"कोई-न-कोई तरीका तो मुझे निकालना ही पड़ेगा। मैं कोई अच्छा-सा बहाना बना दूंगी।"

विक्रम कुछ न बोला।

वह सिर्फ मुझे देखता रहा।

□□□

और, आखिरकार मैंने एक अच्छा-सा बहाना ढूंढ ही लिया।

जब पूना जाने का टाइम आया, तो मैंने उससे कुछ घंटे पहले ही लेराइगो (Larigo) की एक साथ चार टेबलेट खा लीं। चार टेबलेट खाते ही मेरा जी मिचलाने लगा, चक्कर आने लगे और फिर बड़ी मुश्किल से आधा घंटे बाद ही मुझे एक के बाद एक दो बड़ी-बड़ी उल्टियाँ हुईं।

उन उल्टियों ने मुझे हिलाकर रख दिया।

मेरी हालत देखकर अभिजीत घोष भी काफी चिंतित हुआ।

"उफ्फ ! तुम्हारी तबीयत भी अभी खराब होनी थी। रुको, मैं डॉक्टर को बुलाता हूँ।"
"नहीं ! डॉक्टर बुलाने की कोई जरूरत नहीं।"
"क्यों जरूरत नहीं !" अभिजीत घोष बोला- "अगर डॉक्टर की दवाई नहीं लोगी, तो तुम्हारी तबीयत और बिगड़ जायेगी।"
बहरहाल !
अभिजीत घोष ने डॉक्टर बुला लिया।
जब तक डॉक्टर आया, तब तक मुझे ठंडा-ठंडा पसीना आकर बुखार भी चढ़ चुका था।
डॉक्टर ने आकर मेरा ब्लड प्रेशर चेक किया। टेम्परेचर नापा और फिर खाने के लिये मेडिसिन दी।
"मुझे कोई ऐसी दवाई दो डॉक्टर।" मैं अभिजीत घोष के सामने डॉक्टर से बोली- "जो मैं जल्द-से-जल्द ठीक हो जाऊं।"
"क्यों ?"
"क्योंकि मुझे थोड़ी देर बाद ही पूना जाना है। वहां घोष साहब के कुछ जरूरी प्रोग्राम हैं।"
"नहीं!" डॉक्टर की गर्दन इंकार की सूरत में हिली- "पूना तो अब आप नहीं जायेंगी मैडम! आपकी तबीयत काफी खराब है, अब आपने दो-तीन दिन तक पूरी तरह बेडरेस्ट करना होगा।"
"लेकिन... ।"
"नहीं नताशा !" अभिजीत घोष ने भी कहा- "पूना तो अब तुम नहीं जाओगी। बल्कि तुम्हारी तबीयत को देखते हुए मैं भी सोच रहा हूँ, अब मैं भी पूना जाने का अपना प्रोग्राम कैंसिल कर दूं।"
मेरा दिल धक्क से रह गया।
अभिजीत घोष ऐसा भी निर्णय ले सकता है, यह तो मैंने सोचा भी न था।
"नहीं-नहीं, घोष साहब !" मैं जल्दी से बोली- "आप अपना प्रोग्राम कैंसिल न करें। वह तीनों जरूरी मीटिंगें हैं। उनकी काफी पहले से तैयारियां हो रही हैं।कार्ड बंट चुके हैं तथा दूसरे लोगों को भी आमंत्रित किया जा चुका है। अगर ऐसी परिस्थिति में आप वहां नहीं गये, तो यह ठीक नहीं होगा।"
"मगर ऐसी हालत में, मैं तुम्हें यहाँ अकेला छोड़कर पूना कैसे जा सकता हूँ नताशा ?"
"मुझे कुछ नहीं हुआ है।" मैं बोली- "मामूली बुखार है, जल्द ही वह भी ठीक हो जायेगा। आखिर डॉक्टर साहब ने दवाई तो दे ही दी है।"
"बिल्कुल ठीक बात है।" डॉक्टर भी स्थिति की गंभीरता को समझता हुआ बोला- "ज्यादा चिंता की कोई बात नहीं है घोष साहब ! मैडम का बुखार आज रात या फिर कल सुबह तक हर हाल में उतर जायेगा। आप निश्चिंत होकर पूना जाएँ और फिर अगर मैडम को पीछे कोई परेशानी होती है, तो उसके लिये मैं यहाँ मौजूद हूँ।"
अभिजीत घोष फिर भी व्यग्रतापूर्वक अपने काले स्याह सिगार के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ इधर-से-उधर घूमता रहा।
वो बेचैन था।

वह फैसला नहीं कर पा रहा था, वो क्या करे।
लेकिन आखिरकार जीत मेरी हुई।
अभिजीत घोष मुझे मड-आइलैंड के उसी बंगले में अकेला छोड़कर पूना के लिये रवाना हो गया।

□□□
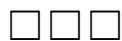
बताने की जरूरत नहीं, अभिजीत घोष के पीठ फेरते ही मेरी तबीयत एकदम ठीक हो गयी थी और मैं पहले से भी ज्यादा चाक-चौबंद व तंदरुस्त दिखाई पड़ने लगी।
मुझे ऐसा लग रहा था, मानो मैंने कोई बड़ा किला फ़तेह कर लिया हो।
अगर अभिजीत घोष जिस प्लेन से पूना रवाना हुआ था, वह प्लेन रास्ते में ही क्रेश हो जाता, तो वह मेरी जिन्दगी का सबसे मुबारक दिन होता। मुझे उस आदमी से इतनी नफ़रत हो चली थी।
आधी रात को लगभग दो बजे का समय था, जब विक्रम एक बार फिर मेरे बेडरूम में था।
"विक्रम !" मैं विक्रम को अपनी बाहों में भरे-भरे बोली- "हमें इस जंजाल से निकलने का कोई उचित रास्ता तलाशना ही होगा। मैं अब और ज्यादा दिन तक यह जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकती।"
"ज्यादा उतावलापन न दिखाओ।" विक्रम ने कहा- "जिस तरह चल रहा है, सब कुछ उसी तरह चलने दो।"
"लेकिन जिस तरह यह सब कुछ चल रहा है विक्रम !" मैं बोली- "वह भी तो कोई आसान रास्ता नहीं है। उसमें भी खतरा-ही-खतरा है। आखिर हम कब तक इस तरह चोरी-छुपे मिलते रहेंगे और कब तक यह सारा सिलसिला यूँ ही चलेगा ?"
"बात तो ठीक है।"
विक्रम भी सोच में डूब गया।
"मैं एक बात कहूं विक्रम !" मैंने विक्रम के गले में अपनी बाहों का हार पिरोया।
"कहो !"
"बहुत दिमाग खपाई करने के बाद मैंने इस समस्या का एक हल सोचा है।"
"कैसा हल?"
"विक्रम, मैं क्यों न अभिजीत घोष को तलाक दे दूं और फिर हम दोनों शादी कर लें?"
"बेवकूफों जैसी बात मत करो।" विक्रम ने एकाएक मुझे अपने से अलग कर दिया- "क्या तुम जानती हो, घोष साहब ने कुछ दिन पहले ही अपने सॉलिसीटर से एक नई वसीयत तैयार कराई है और उस वसीयत में उन्होंने अपनी सारी जायदाद तुम्हारे नाम कर दी है। क्या ऐसी परिस्थिति में तुम यह पसंद करोगी कि तुम घोष साहब को तलाक देकर उनकी सारी दौलत से हाथ धो बैठो? माय डेलीशियस डार्लिंग नताशा ! मैं मानता हूँ कि इस जिन्दगी में मोहब्बत भी कोई चीज होती है। लेकिन मत भूलो, दौलत भी कोई कम बड़ी चीज नहीं होती। और घोष साहब की सारी चल-अचल संपत्ति सौ करोड़ से भी ज्यादा की है।"

"सौ करोड़।"

मेरे मुंह से तीव्र सिसकारी छूट गयी।

मैं विक्रम को बहुत विस्मित निगाहों से देखने लगी। विक्रम का एक नया रूप मेरे सामने उजागर हो रहा था।

"हाँ ! सौ करोड़ !" विक्रम बोला- "और सौ करोड़ की संपत्ति कोई कम नहीं होती नताशा ! ज़रा सोचो घोष साहब तो एक-न-एक दिन मरेंगे ही। वो भला कब तक जीवित रहने वाले हैं। जब तक घोष साहब मर नहीं जाते, तब तक जैसा चल रहा है, वैसा ही चलने दो। मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा ?"

मेरा दिल जोरों से धड़कने लगा।

विक्रम की बात में दम था।

सौ करोड़ !

वाकई सौ करोड़ की उस अथाह संपदा को लात मारना कोई अक्लमंदी नहीं थी।

लेकिन फिर भी यह सोचकर मेरा दम सूखने लगा, पता नहीं अभिजीत घोष अभी कब मरने वाला था। पांच साल ! दस साल ! बीस साल ! अभी तो उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं जा सकता था।

मैं खुद को अजीब से दोराह पर खड़ा हुआ महसूस करने लगी।

अभिजीत घोष ! वह मरे हुए सांप की तरह मेरे गले में पड़ चुका था।

□□□

विक्रम और मेरे बीच काफी देर तक उस सब्जेक्ट पर बातें होती रहीं।

फिर हम दोनों के दरम्यान जब प्रेमलीला शुरू हुई, तो एकाएक बिना किसी अग्रिम चेतावनी के टेलीफोन की घंटी बज उठी।

हम दोनों चौंके।

विक्रम तो तुरंत मुझसे छिटककर यूं अलग हुआ था, जैसे कमरे में कोई आ गया हो।

टेलीफोन की घंटी रात के उस सन्नाटे में निरंतर बज रही थी।

"जरूर वही है।" विक्रम एकाएक भयभीत मुद्रा में बोला- "वही ! घोष साहब !"

"हाँ ! घोष साहब !"

मैं कांप उठी।

"वही हो सकते हैं। वो तुम्हें यहाँ अकेला छोड़कर चले जरूर गये हैं, मगर उन्हें चैन नहीं मिलेगा। उन्हें जवाब दो नताशा ! लेकिन जो भी कहो, बहुत सावधानी के साथ कहना।"

मैंने कंपकपाते हाथों से टेलीफोन का रिसीवर उठाया।

अलबत्ता इतनी अक्ल से मैंने काम जरूर लिया कि बोलते समय ऐसी आवाज बना ली, जैसे अभी-अभी नींद से जागी होऊँ।

"कौन है ?" मैं रिसीवर उठाकर गुर्रायी।

दूसरी तरफ से मुझे तुरंत अभिजीत घोष की आवाज सुनाई पड़ी।

वही था।

कम्बख्त !

"ओह अभिजीत !"
मैं सोच भी नहीं सकती थी, डेढ़ सौ किलोमीटर दूर रहकर भी वह आदमी मेरे और विक्रम के बीच में दीवार बन सकता था।
"हे भगवान !" मैं उनींदे स्वर में बोली- "यह आपको क्या हो गया है ? क्या आप जानते हो, इस वक्त रात के तीन बज रहे हैं।"
"लगता है, मैंने तुम्हें सोते से जगाया है नताशा ?"
"और नहीं तो क्या।"
"नाराज मत होओ डार्लिंग !" अभिजीत घोष बोला- "मुझे तुम्हारी तबीयत की फ़िक्र हो रही थी। तुम्हारा बुखार उतरा या नहीं ?"
"वह तो आपके जाने के थोड़ी देर बाद ही उतर गया था। दवाई ने काफी जल्दी काम किया।"
"और उल्टी ?"
"फिर कोई उल्टी वगैरा भी नहीं हुई। मैं अब पूरी तरह ठीक हूँ।"
"वेरी गुड ! तुम्हारी आवाज सुनकर मुझे काफी राहत मिल रही है नताशा !"
"प्लीज ! अब आप सो जाओ अभिजीत ! काफी रात हो गई है। मेरी आँखों में भी नींद है।"
"लेकिन क्या तुम क्रिमिनोलॉजी की उस मीटिंग के बारे में नहीं जानना चाहोगी डार्लिंग, जिसमें मैंने आज अध्यक्षीय भाषण पढ़ा।"
अभिजीत घोष की बात सुनकर मुझे उस क्षण बेहद गुस्सा आया।
वह रात के तीन बजे अपने अध्यक्षीय भाषण की बात कर रहा था।
"डार्लिंग ! मेरा आज का भाषण बेहद-बेहद कामयाब रहा। मीटिंग में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने मेरे उस भाषण की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।"
उसके बाद वह तकरीबन पांच मिनट तक अपने भाषण का ही राग अलापता रहा।
आखिरकार मैं उसे टोके बिना न रह सकी।
"अभिजीत प्लीज ! अब टेलीफोन बंद कर दो। बहुत रात हो गयी है। मुझे डर है, कहीं इतनी रात को जागने से मेरी तबीयत फिर खराब न हो जाये।"
"ओके ! ओके ! गुड नाइट।"
"गुड नाइट अभिजीत !"
वह बड़ी मुश्किल से टला।
मैंने टेलीफोन का रिसीवर रख दिया।
लेकिन अभिजीत घोष की उस टेलीफोन कॉल ने एकाएक कमरे का सारा माहौल बिगाड़ दिया था और वहां की रूमानियत तो बिल्कुल ही हवा हो चुकी थी।

□□□

सच तो ये है, अपना बेडरूम भी अब मुझे पब्लिक प्लेस जैसा नजर आने लगा था।
ऐसा लगता था, मानो हर तरफ से कई आंखें हमें ही घूर रही हों।
वह आतंक का बड़ा अजीबोगरीब एहसास था।

"नताशा !" विक्रम अपने कपड़े पहनकर बिस्तर से उठ खड़ा हुआ- "मैं अब चलता हूं।"
विक्रम के उन शब्दों ने मेरे दिल-दिमाग पर एक और भीषण वज्रपात किया।
मैं चौंकी।
"जा रहे हो, लेकिन अभी तो दिन निकलने में काफी देर बाकी है विक्रम ! और अभी हमने किया ही क्या है।"
"नहीं, अब इन सब बातों से कोई फायदा नहीं।" विक्रम उदास स्वर में बोला- "इस समय मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे घोष साहब यहाँ कमरे में ही मौजूद हों।"
"लेकिन यह तुम्हारा वहम है विक्रम !" मैंने खड़े होकर विक्रम को अपनी बांहों में लेने का प्रयास किया।
परन्तु विक्रम छिटककर मुझसे पीछे हट गया।
"मैं जानता हूं, यह मेरा वहम है।" विक्रम बोला- "मगर फिर भी न जाने क्यों मुझे अब यहां एक सेकेण्ड और भी ठहरना काफी अजीब लग रहा है।"
मैं विक्रम की मनःस्थिति अच्छी तरह समझ रही थी।
सच तो ये है, उस टेलीफोन कॉल के बाद मेरा भी कुछ-कुछ वैसा ही हाल था।
"ठीक है विक्रम!" मैंने विक्रम का एक प्रगाढ़ चुम्बन लिया- "तो फिर कल रात सही। बताओ, कल रात तुम्हीं मेरे पास आओगे या फिर मैं तुम्हारे पास आऊं ?"
"कल रात !" विक्रम के चेहरे पर अफसोस भरी मुस्कान पैदा हुई- "डार्लिंग! तुम नहीं जानती, कल की रात अब हमारे लिये कभी नहीं आएगी। देख लेना, उससे पहले ही घोष साहब यहां आ धमकेंगे।"
"वो नहीं आएंगे।" मैं बहुत दृढ़तापूर्वक बोली- "उनकी सारी मीटिंगें बहुत अर्जेण्ट हैं।"
"अर्जेण्ट मीटिंग !" विक्रम बोला- "मैं फिर कहूंगा, मैं घोष साहब को तुमसे ज्यादा जानता हूं नताशा ! वो हर हालत में अपनी सारी मीटिंगे कैंसिल करके लौट आएंगे और अगर वो नहीं लौटे, तो यह हमारे लिये अच्छा ही होगा। हम दोनो के लिये।"
विक्रम ने एक बार बड़े अनुरागपूर्ण नेत्रों से मेरी तरफ देखा।
फिर वो चला गया।
विक्रम तो चला गया, परन्तु फिर मेरी वो रात बड़ी उलझनपूर्ण रही। मुझे सारी रात सोच-सोचकर नींद नहीं आयी।

□□□

अगले दिन मैंने विक्रम को बहुत सज-धजकर कहीं जाते देखा।
पहले भी मैं विक्रम को इसी तरह कई मर्तबा बंगले से बाहर जाते देख चुकी थी। वो कहां जाता था, यह मुझे भी मालूम न था।
"इस वक्त कहां जा रहे हो ?"
वह उस समय गैराज से एक पुरानी फियेट कार बाहर निकाल रहा था, जब मैं उसके सामने जाकर बोली।
वह फियेट कार बंगले में खासतौर पर इसलिये रखी गयी थी, ताकि अगर किसी नौकर को जरूरी काम से मुम्बई वगैरह जाना पड़े, तो वह उसका इस्तेमाल कर सके।

"मैं अपनी मां से मिलने जा रहा हूं।" विक्रम संजीदगी के साथ बोला।
"मां !"
मैं चौंक पड़ी।
मेरे नेत्र विस्फारित अंदाज में फैल गये।
"हां, मेरी मां जोगेश्वरी में रहती है।" विक्रम बोला- "वापसी में मैं जैकी के लिये दवाइयां वगैरा भी लेता आऊंगा और महालक्ष्मी रेसकोर्स में भी थोड़ा काम है।"
"लेकिन अपनी मां का जिक्र तुमने पहले कभी तो नहीं किया विक्रम ?"
"जरूरत ही नहीं पड़ी होगी।"
मैं चुप रही।
परन्तु एकाएक मां का विक्रम ने जिस प्रकार जिक्र किया था, वह मुझे थोड़ा अजीब लग रहा था।
"मैं सप्ताह में कम-से-कम एक मर्तबा मां से मिलने जरूर जाता हूं।" विक्रम कह रहा था- "अगर मैं सात-आठ दिन नहीं जाता, तो मां परेशान हो जाती है। वैसे भी उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है।"
विक्रम तब तक फिएट कार गैराज से बाहर निकाल चुका था।
"कब तक लौटोगे ?"
"शाम तक लौट आऊंगा।" विक्रम ड्राइविंग सीट पर बैठा-बैठा बोला।
"रात वाला प्रोग्राम तो याद है न ?"
"याद है।" विक्रम आहिस्ता से मुस्कुराकर बोला।
अगले ही पल फिएट कार ड्राइव-वे पर दौड़ती चली गई।
विक्रम चला गया।

□□□

विक्रम ने एक बात बिल्कुल सही कही थी, कल की रात अब हमारे लिये कभी नहीं आएगी।
और !
विक्रम की वो भविष्यवाणी सच साबित हुई।
अभिजीत घोष अगले दिन शाम को ही पूना से वापस लौट आया।
"अ...आप !" अभिजीत घोष को देखते ही मुझे यूं जोरदार झटका लगा, जैसे एक साथ हजारों बिच्छूओं ने डंक मारा हो।
"क्यों, मुझे देखकर हैरानी हो रही है डार्लिंग ?" अभिजीत घोष ने आते ही मुझे अपनी बाहों में समेट लिया और मेरा एक चुंबन लिया- "दरअसल तुम्हारे बिना वहां मेरा एक सेकेंड के लिये भी दिल नहीं लगा। मैंने क्रिमिनोलॉजी के ऊपर होने वाले समारोह में भाग लिया। आज स्कूल के एक सांस्कृतिक समारोह में जाकर पुरस्कार बांटे और उसके बाद फ़ौरन प्लेन पकड़कर सीधा यहां चला आया।"
"मगर कल आपने लेखकों की एक गोष्ठी में भी तो हिस्सा लेना था अभिजीत ?"
"वह प्रोग्राम मैंने कैंसिल कर दिया। मैंने जब गोष्ठी के आयोजकों को तुम्हारी बीमारी के

बारे में बताया, तो उन्होंने चुपचाप मेरी अनुपस्थिति स्वीकार कर ली।"
"ओह!"
मेरे चेहरे पर निराशा पुत गयी।
विक्रम के साथ गुजरी पिछली रात से अभी मेरी तृष्णा शांत भी नहीं हुई थी कि अभिजीत घोष आ टपका था।
फिर विक्रम के कारण भी काफी बड़ा हंगामा हुआ।
वह उस दिन तो अपनी मां के पास गया ही था। अगले दिन वो फिर अपनी मां से मिलने चला गया। उसने बताया, उसकी मां की तबीयत कुछ खराब चल रही है।
न जाने क्यों मेरे मन में अब संदेह पैदा होने लगा।
माँ!
जरूर उस प्रकरण में कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ थी।

□□□
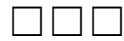
चौथे दिन विक्रम मां से मिलने का बहाना भरकर जब फिर बंगले से रवाना हुआ, तो इस बार मैंने बड़ी खामोशी से उसका पीछा किया।
मैं डर रही थी।
सच तो ये है, अगर मेरी मोहब्बत ने अभिजीत को कमजोर बना दिया था, तो विक्रम की मोहब्बत ने मुझे कमजोर बना दिया था। मैं अपने उस नए प्रेमी को किसी हालत में खोना नहीं चाहती थी।
यह देखकर मैं चौंकी, विक्रम ने अपनी कार जुहू के एक छोटे से सिल्वर बीच होटल की पार्किंग में ले जाकर खड़ी की।
होटल!
विक्रम वहां क्यों आया था?
उसे तो अपनी मां से मिलने जोगेश्वरी जाना था।
मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।
मैंने अपनी कार थोड़ा फासले से खड़ी कर ली और वहीं से विक्रम की गतिविधि देखने लगी।
विक्रम जैसे ही कार से बाहर निकला, तभी एक लड़की तेज-तेज कदमों से उसकी तरफ बढ़ी। वह थोड़े लंबे कद की और साधारण शक्ल-सूरत वाली लड़की थी। कपड़े भी उसने कोई बहुत बढ़िया नहीं पहने हुए थे।
हल्के गुलाबी कलर का कुर्ता-सलवार और दुपट्टा, बस।
"हेलो मारिया!" मेरे कानों में विक्रम की आवाज पड़ी- "कैसी हो तुम?"
"बस ठीक हूं।"
लड़की की आवाज कोई बहुत ज्यादा उत्साहपूर्ण नहीं थी।
मगर विक्रम बहुत घुल-मिलकर उससे बात कर रहा था।
मुझे अपने हाथ-पैर बर्फ की तरह ठंडे पड़ते अनुभव हुए।
मारिया!

तो विक्रम, मुझसे नहीं बल्कि उस लड़की मारिया से प्यार करता था।
मेरा सिर घूमने लगा।
एक बार फिर मेरे कानों में गोरखनाथ मंदिर में मिले साधु के शब्द गूंजने लगे- 'तुम्हारे जीवन में उसका प्रेम नहीं है। तुम सदा पुरुष के प्रेम को तरसोगी।'
यानि विक्रम भी मुझे धोखा दे रहा था।
वो भी धोखेबाज था।
उफ्फ !
धोखा! धोखा!! धोखा!!!
वह एक शब्द मेरे दिमाग में हंटर की तरह बजने लगा।

□□□

आप नहीं जानते, उस क्षण मेरी क्या हालत हो रही थी।
मुझे एहसास हो रहा था, मैंने विक्रम से प्यार करके अपनी जिंदगी की एक और बड़ी भयंकर गलती की है। तभी मैंने विक्रम और मारिया को होटल में अंदर की तरफ जाते देखा।
अब आनन-फानन मैंने भी अपनी कार पार्किंग में खड़ी की। कार से उतरी। फिर उन दोनों के पीछे-पीछे ही होटल में अंदर की तरफ बढ़ी।
वह सिल्वर बीच होटल खासतौर पर नौजवान लड़के-लड़कियों के बीच लोकप्रिय था।
वह एक तरह का प्रेम-घरौंदा था।
प्रेम-घरौंदा, जहां हर तरह के जोड़े ठहरते थे।आप विवाहित हों या न हों। आपके पास सामान हो या न हो, आप जब तक चाहें वहां ठहर सकते थे। उस होटल में आपसे कोई पूछने वाला नहीं था।
उस होटल के पिछले हिस्से में एक काफी बड़ा बगीचा बना हुआ था।
उस बगीचे में छतरियों के नीचे लगी मेजों पर लोगों की भीड़ जमा थी। मैंने देखा, विक्रम और मारिया भी एक टेबल पर आमने-सामने बैठे थे।
मैं एक पेड़ की ओट वाली टेबल पर बैठ गई और वहीं से उन दोनों की गतिविधि देखने लगी।
उन्होंने पहले भोजन किया।
मारिया की शक्ल-सूरत से ऐसा लगता था, जैसे वो विक्रम के साथ वहां बैठ कर बोर हो रही हो। ठीक वैसे ही भाव मैं विक्रम के चेहरे पर उस समय देखती थी, जब वो मेरे साथ होता था।
वह दोनों कुछ बातें कर रहे थे।
लेकिन मारिया की विक्रम की बातों में ज्यादा दिलचस्पी न थी।
भोजन के पश्चात विक्रम ने सौ-सौ के नोट निकालकर मारिया को दिए, जिन्हें मारिया ने तुरंत पकड़ लिये थे। फिर विक्रम ने वेटर को बुलाकर बिल चुकाया और उसके बाद वो लॉबी में आ गये।
मैं भी उनके नजदीक खड़ी हो गई।

“डार्लिंग !” विक्रम उससे पूछ रहा था- “बीच पर चलें ?”
“नहीं, मेरी इच्छा नहीं है ।” मारिया बोली- “वैसे भी मैंने किसी से बहुत जरूरी मुलाकात करनी है ।”
साफ लग रहा था, मारिया झूठ बोल रही है ।
सफेद झूठ !
मारिया की बात सुनकर विक्रम का चेहरा सख्त हो उठा ।
“मारिया ! क्या यह सच नहीं है कि तुम झूठ बोल रही हो ?”
“ओके ! ओके ! !” मारिया बोली- “मैं झूठ बोल रही हूं । देखो विक्रम, मुझे फालतू की बातों के अलावा इस जिंदगी में और भी ढेरों काम करने हैं । अगर मैं वक्त निकाल पाई, तो मैं अगले बुधवार को तुमसे फिर मिलूंगी ।”
“अगला बुधवार ? मगर अभी तो उसमें बहुत दिन बाकी है ।” विक्रम बोला- “देखो मुझे वापस जाने की कोई जल्दी नहीं है डार्लिंग ! हम बीच पर जाकर थोड़ी देर मस्ती कर सकते हैं ।”
“वह सब तुम करो ।” मारिया ने एकाएक बहुत व्यग्र होकर अपनी रिस्टवॉच पर दृष्टि डाली- “ओह ! मैं बहुत लेट हो चुकी हूँ डियर ! मैं अब चलती हूं । गुड बाय ! गुड लक !”
विक्रम उसे रोकने की फिर कोई कोशिश करता, उससे पहले ही मारिया लंबे-लंबे डग रखती हुई वहां से चली गई ।
विक्रम पिटा-सा मुंह लिये अपनी जगह खड़ा रहा ।

□□□

प्रेम की नई नई अनुभूतियां मुझे हो रही थीं ।
विक्रम अब बगीचे में वापस उसी टेबल पर जाकर बैठ चुका था, जिस पर वो थोड़ी देर पहले मारिया के साथ बैठा था ।
मैंने कुछ सोचा ।
फिर मैं धीरे धीरे चलती हुई विक्रम के बिल्कुल सामने वाली कुर्सी पर जाकर बैठ गई ।
विक्रम मुझे देखते ही इस तरह उछला, जैसे बगीचे में एटमबम फट पड़ा हो ।
“त...तुम !” विक्रम हतप्रभ लहजे में बोला- “तुम यहां ?”
“क्यों?” मैं नफरतपूर्णलहजे में बोली- “मुझे देखकर हैरानी हो रही है माय डियर ! मैं दरअसल तुम्हारी जासूसी कर रही थी । अभी-अभी मैंने तुम्हारी मां को देखा, जिससे मिलने के लिये तुम बहुत बेचैन रहते हो । तुम्हारी मां काफी जवान है । वो अभी भी कई बच्चे पैदा करने की क्षमता रखती है ।”
“शटअप !” वो दहाड़ उठा ।
“शटअप नहीं !” मैं उससे भी जोर से दहाड़ी- “यू शटअप ! यू आर ए कनिंग फेलो !”
उसकी गर्दन झुक गयी ।
उसके सारे कस-बस ढीले पड़ गये ।
“तुम्हें इस तरह मेरा पीछा करते हुए यहाँ नहीं आना चाहिए था ।” विक्रम धीमी आवाज में बोला- “घोष साहब से तुम क्या कहकर आयी हो ?”

"मैं उनसे कहकर आयी हूँ, मैं पार्लर जा रही हूं।"
"फिर भी घोष साहब को हमारे ऊपर शक हो सकता है।"
"प्लीज !" मैं सख्ती के साथ बोली- "अब उस चैप्टर को बंद करो। यह बताओ, मारिया तुम्हारी क्या लगती है ?"
"बताऊं ?"
"हाँ, बताओ। मैं बड़ी बेसब्री से इस सवाल का जवाब सुनना चाहती हूं।"
"मेरा जवाब सुनकर तुम चौंक उठोगी।"
"कोई बात नहीं।"
"तो सुनो, मारिया मेरी पत्नी है।"
"पत्नी !"
मेरे दिमाग में एक और विस्फोट हुआ।
जबरदस्त विस्फोट !

□□□

प... पत्नी !
मैंने कल्पना भी नहीं की थी, मुझे विक्रम से ऐसा कोई जवाब मिलेगा।
"यह तुम क्या कह रहे हो, पत्नी !" मैं भौचक्के लहजे में बोली- "क्या यह सच है ?"
"बिल्कुल सच है। आज से तीन साल पहले मेरी और मारिया की शादी हुई थी।" विक्रम मुझे मारिया के बारे में सब-कुछ बताता चला गया- "हालांकि मारिया क्रिश्चियन थी, लेकिन फिर भी हमारी शादी में कोई रुकावट न आयी। अलबत्ता शादी के बाद हमारी जिंदगी में असली झमेला शुरू हुआ।"
"कैसा झमेला ?"
"सबसे पहला झमेला तो बच्चों को लेकर ही हुआ। मारिया बच्चे नहीं चाहती थी, जबकि मुझे बच्चों से प्यार था। बच्चों वाली बात भी मैं किसी तरह बर्दाश्त कर लेता, लेकिन फिर एक ऐसी बात उजागर हुई, जिसने मुझे मारिया से अलग रहने पर विवश कर दिया।"
"ऐसी क्या बात उजागर हुई ?"
विक्रम ने कुछ कहने से पहले अपने शुष्क अधरों पर जबान फेरी।
उसके चेहरे पर ऐसे भाव उजागर हुए, जैसे कोई तल्ख़ बात कहने से पहले किसी के चेहरे पर उजागर होते हैं।
"दरअसल मारिया निम्फोमैनियाक थी।" विक्रम आक्रोश में बोला- "उसके कई पुरुषों के साथ अवैध संबंध थे। मुझे जब उन संबंधों का पता चला, तो हम दोनों के बीच जबरदस्त झगड़ा हुआ। मगर हैरानी की बात ये थी कि मारिया अपने उस कुकृत्य पर जरा भी शर्मिंदा नहीं थी। वह तो उसे ऐब मानने के लिये ही तैयार नहीं थी। वो कहती थी, वो जो कुछ करती है, वह सब ठीक है। आखिरकार विवश होकर मैंने उससे किनारा कर लिया।"
मेरी आंखों में अब अचरज के चिह्न बढ़ते जा रहे थे।
अचरज के भी, कौतुहल के भी।

"जब वो इतनी खानाखराब लड़की है।" मैं बोली- "तो तुम उससे अब भी संपर्क बनाकर क्यों रखे हुए हो ? और जिस तरह तुम उसके साथ पेश आ रहे थे, उससे तो ऐसा लगता है, जैसे तुम्हारे दिल में अभी भी उसके लिये प्यार है।"

विक्रम ने अपनी नजरें झुका लीं।

"प्यार तो नहीं।" उसने बहुत धीमी आवाज में कहा- "अलबत्ता उसके प्रति मेरे दिल में एक तरह का आकर्षण जरूर है। उससे अलग होने के बाद भी मैंने चाहा था, वह सुधर जाये और मैं उसे अपना लूं। परंतु जैसा कि तुमने अब देखा होगा, उसके सुधरने के फिलहाल कोई आसार नहीं है। अब तो बस एक ही तरीका है, मैं उसे बिल्कुल भूल जाऊं।"

"तो फिर तुम उससे तलाक क्यों नहीं ले लेते ?"

मैंने तुरंत अपना पत्ता फैंका।

"यही तो प्रॉब्लम है।" विक्रम बोला- "मारिया मुझे तलाक नहीं देती।"

"क्यों ?"

"वह तलाक के ऐवज में दस लाख रुपए मांगती है, ताकि अपनी जिंदगी पूरे ऐशो-आराम के साथ गुजार सके। अगर उसने दस लाख रुपए की डिमांड न रखी होती, तो मैं न जाने कब का उससे तलाक ले चुका होता।"

मैं सारा माजरा समझ गई।

वह पूरी तस्वीर मेरी आंखों के सामने स्पष्ट होती चली गई।

"तो इसलिये तुम घोष साहब की ऐशो-आराम वाली नौकरी छोड़ने से भी कतराते हो, क्योंकि अगर तुमने वह नौकरी छोड़ दी, तो मारिया के सामने तुम्हारी पोजीशन और भी मुफलिसों वाली हो जायेगी।"

विक्रम कुछ न बोला।

वह खामोश बैठा रहा। मगर उसकी ख़ामोशी भी उस बात को कबूल रही थी।

बहरहाल मामला इतना खतरनाक नहीं था, जितना मुझे होटल में घुसते ही प्रतीत हुआ था। विक्रम ने मुझे मारिया के बारे में न बताकर धोखा जरूर दिया था, लेकिन बात अभी दायरे से बाहर नहीं निकली थी।

मामले को अभी भी संभाला जा सकता था।

"ठीक है।" मैं कुर्सी छोड़कर उठी- "चलो, बीच पर घूमने चलते हैं।"

विक्रम ने एकाएक घोर आश्चर्य से मेरी तरफ देखा।

"क्या तुमने मुझे माफ कर दिया ?"

"माय डियर !" मैं मुस्कुराई- "तुमने ऐसा कुछ नहीं किया है, जो लड़ाई-झगड़े की नौबत आये। अलबत्ता इस तरह की बात मुझसे भविष्य में कभी मत छुपाना।"

□□□

उसके बाद विक्रम ने और मैंने काफी टाइम बीच पर चहलकदमी करते हुए गुजारा।

मेरा दिमाग उस वक्त काफी तेजी से सक्रिय था।

मुझे कोई ऐसी योजना बनानी थी, जो एक ही झटके में सारे संकट समाप्त हो जाये। मैं अभिजीत घोष से छुटकारा पा लूं और विक्रम मारिया से।

मैं सोचती रही।
सोचते-सोचते अकस्मात् मेरे दिमाग में एक ऐसा आइडिया कौंधा, जो मुझे अपनी हरेक समस्या का मुकम्मल हल दिखाई पड़ने लगा। मैं हैरान थी, मुझे वो योजना पहले क्यों नहीं सूझी थी।
"विक्रम !" मैं बीच पर रेत में चलते-चलते बोली- "मेरी एक बात सुनो।"
"क्या ?"
"हम दोनों मिलकर क्यों न घोष साहब की हत्या कर डालें।"
मेरे वो शब्द सुनकर विक्रम इस तरह चौंका, जैसे उसके दिमाग में बम फट पड़ा हो।
यही शुक्र था, उसका हार्टफेल न हो गया।
"ह... हत्या !" वो हकलाए लहजे में बोला- "य... यह तुम क्या कह रही हो ?"
उसका चेहरा एकदम सफेद फक्क पड़ चुका था।
होश गुम।
"धीरे बोलो।" मैंने कहा- "हमारे आस-पास दूसरे लोग भी मौजूद हैं।"
विक्रम भयभीत होकर बीच पर इधर-उधर देखने लगा।
"देखो विक्रम !" मैं विचारपूर्ण लहजे में बोला- "मैंने बहुत सोच-समझकर यह बात कही है। जरा सोचो, अगर हम दोनों मिलकर घोष साहब की हत्या कर देते हैं, तो वसीयत के मुताबिक मैं उनकी सारी चल-अचल प्रापर्टी की मालकीन बन जाऊंगी। इस तरह घोष साहब की रोज-रोज की सिरदर्दी से भी हम बच जाएंगे। और फिर तुम दस लाख रुपये देकर मारिया से भी तलाक हासिल कर सकोगे। इतना ही नहीं, उसके बाद शादी करके घोष साहब के बंगले में ही पति-पत्नी की तरह रहेंगे। यानि एक ही झटके में हमारी तमाम समस्या का समाधान निकल आएगा और उसके लिये हमने सिर्फ एक ही काम करना होगा, घोष साहब की हत्या !"
घोष साहब की हत्या के नाम पर मैंने विक्रम के माथे पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूंदे चुहचुहाते देखीं, जिन्हें उसने रूमाल निकालकर साफ किया।
"ल... लेकिन घोष साहब की हत्या करनी भी तो आसान नहीं है नताशा !" विक्रम भयभीत मुद्रा में बोला।
हत्या के नाम से ही उसकी हवा खुश्क हुई जा रही थी, वो डर रहा था।
और उसका वह डर मैं अनुभव कर रही थी।
"हत्या करनी कुछ मुश्किल नहीं होती विक्रम !" मैं उसके अन्दर का भय मिटाते हुए बोली।
"हो सकता है, हत्या करना मुश्किल न होती हो।" विक्रम बोला- "लेकिन घोष साहब की हत्या करना जरूर मुश्किल है।"
"क्यो ? घोष साहब की हत्या करना क्यों मुश्किल है ?"
"तुम शायद अभी घोष साहब को नहीं जानती।" विक्रम बोला- "घोष साहब एक बेहद फेमस व्यक्ति हैं। अगर उन जैसे व्यक्ति की हत्या हो गयी, तो उससे पूरे देश में हंगामा मचेगा। सोशल और प्रिन्ट मीडिया में भूचाल आ जायेगा। अखबारों में खबरें छपेंगी। बड़े पैमाने पर उस हत्याकांड की तफ्तीश होगी। ऐसी हालत में फिर क्या होगा, इसका

अंदाजा तुम अच्छी तरह लगा सकती हो। फिर इंस्पेक्टर विकास बाली को भी तुम भूल रही हो। इंस्पेक्टर विकास बाली, घोष साहब के हत्यारे को ढूंढने के लिये जमीन-आसमान एक कर देगा।"

"तुम खामखाह घबरा रहे हो।" मैं बोली- "अगर घोष साहब का मर्डर एक फुलप्रूफ योजना बनाकर किया जायेगा, तो हमें कुछ नहीं होगा। कहीं कोई भूचाल नहीं आएगा।"

"फुलप्रूफ योजना!" विक्रम बोला- "लेकिन वो फुलप्रूफ योजना बनाएगा कौन भाई हनी डार्लिंग ?"

"हां, यह बात जरूर विचार करने लायक है।"

मैं सोचने लगी।

एक बात तो मैं भी अनुभव कर रही थी कि घोष साहब की हत्या के लिये कोई बहुत मास्टरपीस योजना की जरूरत थी।

ऐसी योजना की, जो घोष साहब की हत्या भी एक साधारण घटना लगे।

जो कहीं कोई हंगामा न हो।

बहरहाल उस दिन बीच से लौटते समय एक घटना और घटी। मेरी कार का पिछला टायर फट गया। कार का टायर फटने की भीषण आवाज हुई और जबरदस्त एक्सीडेंट होते-होते बचा। मेरी चीख तक निकल गयी।

एक स्पेयर टायर कार की डिक्की में पड़ा हुआ था।

विक्रम ने तभी वो टायर बदल दिया।

वह संकट तो उसी क्षण समाप्त हो गया, लेकिन उस मामूली घटना का कुछ आगामी घटनाओं पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा।

□□□

सारी रात मेरी बहुत बेचैनी के आलम में गुजरी।

मैं बस करवटें बदलती रही।

एक बात मेरे दिमाग में बिल्कुल कील की तरह ठुक चुकी थी कि मौजूदा माहौल में मेरी समस्याओं का बस एक ही समाधान है, घोष साहब की हत्या ! अगर अभिजीत घोष मारा जाये, तो न सिर्फ मैं हमेशा-हमेशा के लिये विक्रम को पा सकती थी, बल्कि मारिया वाले प्रकरण का समाधान भी निकल सकता था।

तमाम रात मैं हत्या की कोई फुलप्रूफ योजना सोचती रही।

मगर मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं, मेरे दिमाग में ऐसी कोई फुलप्रूफ योजना न आयी, जिससे मैं संतुष्ट हो पाती। कुछेक योजनाएं, जो मेरे दिमाग में आयीं, वो बहुत हल्की थीं, बहुत साधारण थीं और उन योजनाओं को आधार बनाकर अभिजीत घोष जैसे बड़े आदमी की हत्या करना बेवकूफी होता।

अन्ततः मेरे दिमाग में हत्या की फुलप्रूफ योजना बनाने का एक बड़ा नायाब विचार कौंधा।

एक बात मैं जरूर कहूंगी।

हत्या की योजना बनाने का इतना नायाब विचार भी मेरे दिमाग में इसलिये कौंध सका,

क्योंकि मैंने थोड़ा बहुत समय अभिजीत घोष जैसे मिस्ट्री राइटर के साथ गुजार लिया था।

उसके साथ कुछेक स्टोरी सीटिंग कर ली थीं।

अगले दिन मैंने अपने ऑफिस में ही विक्रम से फिर बात की।

"एक बात अच्छी तरह समझ लो विक्रम !" मैं धीमी आवाज में बोली।

"क्या?"

"हत्या की कोई ऐसी फुलप्रूफ योजना बनाना आसान बात नहीं है, जिससे पूरे पुलिस डिपार्टमेंट को धोखा दिया जा सके। मैंने सारी रात इसी विषय पर सोचा है, परन्तु मैं कोई ऐसी योजना नहीं बना सकी।"

"मैं क्या कहता था।" विक्रम तुरंत बोला- "यह सब करना कोई आसान नहीं है।"

"चिन्ता मत करो।" मैंने बड़े यकीन के साथ पहलू बदला- "अगर हम हत्या की कोई फुलप्रूफ योजना नहीं बना सकते, तो इस बंगले में एक आदमी ऐसा जरूर है, जो हत्या की ऐसी फुलप्रूफ योजना बना सकता है और जिसका काम ही हत्या की योजना बनाना है।"

"कौन आदमी ?"

"घोष साहब !"

विक्रम उस नाम को सुनकर एकदम इस तरह उछला, जैसे एक साथ हजारों बिच्छुओं ने उसे डंक मार दिया हो।

"घ...घोष साहब !"

"हां।"

"लेकिन भला घोष साहब अपनी हत्या की योजना खुद क्यों बनाएंगे ?" विक्रम बोला।

"वो बनाएंगे।" मेरे स्वर में यकीन कूट-कूट कर भरा था- "तुम बस मेरा कमाल देखते जाओ। बस इस बार वो काम होगा, जो दुनिया में पहले कभी नहीं हुआ।"

विक्रम आश्चर्यचकित-सा मेरी तरफ देखता रहा।

वो यकीन नहीं कर पा रहा था।

वो इस बात पर यकीन नहीं कर पा रहा था कि घोष साहब जैसा आदमी खुद अपनी हत्या की योजना बनाने वाला है।

□□□

चार

मैंने अपने पत्ते फैलाने शुरू किये।

एक बात मैं दावे के साथ कह सकती हूं, मैं जो हत्या करने जा रही थी, वह मेरी जिंदगी की सबसे अद्‌भुत हत्या थी।

सबसे ज्यादा प्री-प्लांड हत्या थी।

मैं समझती हूं, आपने भी ऐसी हत्या के बारे में पहले कभी पढ़ा-सुना नहीं होगा, जब मकतूल ने खुद अपने लिये कब्र खोदी।

खुद अपनी मर्डर प्लानिंग तैयार की।

“वाह!”उसी दिन शाम को मैंने अभिजीत घोष के साथ डिनर लेते समय भूमिका बांधनी शुरू की- “मैंने आज ही आपका नया नॉवल पढ़ा अभिजीत ! आपने एक बार फिर क्या फंटास्टिक मर्डर मिस्ट्री लिखी है। अद्‌भुत ! मैं दावे के साथ कह सकती हूं, आपका यह नया नॉवल भी सुपर-डुपर हिट होगा।”

“थैंक यू !” अभिजीत घोष डिनर लेते-लेते मुस्कुराया- “हालांकि मेरे नॉवेलों की तारीफ बहुत लोग करते हैं, मगर जब तुम तारीफ करती हो, तो अच्छा लगता है।”

“मैं आपको एक राय दूं अभिजीत ?”

“क्या?”

“याद है, आपने एक बार स्टोरी डिस्कशन के दौरान मुझसे कहा था कि आपके दिमाग में एक ऐसी कहानी है, जिसे लिखने की आपकी बड़ी तमन्ना है। जिसे लिखने का आप बरसों से सपना देख रहे हैं।”

“हां !”अभिजीत घोष बोला- “वाकई वह उपन्यास लिखना मेरा एक सपना ही है।”

“तो इस बार आप वही उपन्यास लिख डालो अभिजीत ! मेरा दावा है, वह उपन्यास पूरे उपन्यास जगत में तहलका मचा देगा। जरा सोचो, आपकी वो कहानी कितनी अद्‌भुत

होगी, जिसमें मकतूल खुद अपनी हत्या की योजना बनाएगा।"

"यह तो है।" अभिजीत घोष ने गर्व के साथ कहा- "कहानी तो वह वाकई बहुत अद्भुत होगी। अद्भुत भी और अविस्मरणीय भी, जिसका एक-एक चौप्टर पाठकों को चौंकाएगा। लेकिन अभी इस कहानी की सिर्फ आउटलाइन मेरे दिमाग में है, अभी उसकी पूरी डिटेल मैंने तैयार नहीं की है।"

"तो फिर आप उसकी डिटेल तैयार करो, बल्कि मेरी एक और इच्छा है।"

"क्या ?"

"उस कहानी की डिटेल जब आप तैयार करेंगे, तो उसमें मैं भी आपकी हेल्प करूंगी।"

"वेरी गुड !"अभिजीत घोष ने प्रसन्नचित्त मुद्रा में कहा- "तो फिर मैं कल से ही उस कहानी पर काम शुरू करता हूं।"

□□□

अगले दिन से ही अभिजीत घोष ने अपनी उस उपन्यास की कहानी का ताना-बाना बुनना शुरू कर दिया।

मैं भी ताना-बाना बुनने में हर क्षण उसके साथ थी।

"सबसे पहले हमने यह सोचना है।" अभिजीत घोष बोला- "कि हमारे उपन्यास का जो मुख्य पात्र है, यानि जिसकी हत्या होने वाली है और जो खुद किसी के चक्रव्यूह में फंस कर अपनी हत्या की योजना बनाएगा, वह कैसा आदमी है और उसका प्रोफेशन क्या है।"

"इस बारे में, मैं एक सलाह दूं ?"

"जरूर।"

"वह कोई जासूस होना चाहिए।"

उस क्षण मेरा दिमाग काफी तेज स्पीड से चल रहा था। कोई सोच भी नहीं सकता था, मैं कैसा खौफनाक जाल बुन रही थी।

"जासूस?" अभिजीत घोष चौका।

"हां।"

"जासूस क्यों

"देखिए, एक बात तो आप भी मानेंगे।" मैं बोली- "उपन्यास का पात्र कोई ऐसा होना चाहिए, जो योजनाएं बनाने में बहुत मास्टर माइंड हो। जो ऐसी फुलप्रुफ योजनाएं बनाता हो, जिन्हें कोई साधारण आदमी न बना सके और ऐसी योजनाएं दो ही तरह के लोग बनाते हैं।"

"कैसे-कैसे ?"

"कोई अपराधी या फिर जासूस।"

"तुम एक बात भूल रही हो ?"

"क्या ?"

"हमारे जैसे जासूसी उपन्यासकार भी तो इस तरह की धुआंधार योजना बनाते हैं।" वह बात कहकर अभिजीत घोष बहुत जोर से हंसा।

मैं भी मुस्कुराई।

"यह तो है, लेकिन हम उपन्यास के मुख्य पात्र के तौर पर किसी जासूस को ही चुनेंगे, जिसे योजनाएं बनाकर काम करने में महारत हासिल है। वैसे भी वो व्यक्ति योजना बनाने में इसलिये भी एक्सपर्ट होना चाहिए, क्योंकि तभी तो हत्यारा भी षड्यंत्र रचकर उसी से उसके मर्डर की प्लानिंग तैयार कराता है। इसके अलावा वो जासूस कोई बड़ा अंतरराष्ट्रीय स्तर का जासूस होना चाहिए, जैसे कमांडर करण सक्सेना या फिर जीरो जीरो सेवन जेम्स बॉण्ड।"

"गुड आइडिया!"अभिजीत घोष ने बड़ी तारीफी निगाहों से मेरी तरफ देखा- "वाकई इस दिशा में तुम्हारा दिमाग काफी अच्छा चल रहा है। अब एक सवाल और।"

"क्या?"

"हत्यारा कौन होगा, जो जासूस की हत्या करेगा?"

"हां, यह भी अहम प्रश्न है।"

मैं सोचने लगी।

लेकिन!

बात कुछ और ही थी।

सच तो ये है, मैं सिर्फ सोचने का अभिनय कर रही थी। जैसे मैंने कब-कब क्या-क्या करना था, यह मैं पहले ही फाइनल कर चुकी थी।

आखिर इतना बड़ा खेल खेल रही थी मैं।

फिलहाल अभिजीत घोष वाला रोल मैं एक जासूस को दे चुकी थी। अब मेरे रोल की बारी थी कि मेरा रोल उपन्यास में किसने प्ले करना था।

"मैं समझती हूं।" मैं पहले की तरह ही सोचने-विचारने का अभिनय करते हुए बोली- "कि हत्यारा जासूस के घर का ही कोई सदस्य होना चाहिए, तभी उपन्यास में ज्यादा मजा आएगा, तभी कहानी में ज्यादा ट्विस्ट पैदा होगा।"

"यानि किसी फैमिली मेम्बर ने ही जासूस की हत्या का षड़यंत्र रचना है।" अभिजीत घोष चौंका।

"हाँ!"

"लेकिन फैमिली मेम्बर भला जासूस की हत्या का षड़यंत्र क्यों रचेगा?"

"इसमें क्या मुश्किल है। मान लीजिये, उस जासूस की बीवी किसी दूसरे पुरुष से मिलती है।" मैं थोडा डरते-डरते बोली- "और इसलिये वो जासूस की हत्या करना चाहती है। मगर बीवी को महसूस होता है, जासूस एक प्रसिद्ध व्यक्ति है, इसलिये अगर उसकी हत्या कोई फुलप्रूफ योजना बनाकर न की गयी, तो उसमें फंसने के पूरे-पूरे चांस हैं। लेकिन प्रॉब्लम ये है कि वो हत्या की कोई बहुत फुलप्रूफ योजना बनाने में असक्षम है। वो जानती है, ऐसी योजना वह जासूस ही बना सकता है। तब उसकी बीवी जासूस के सामने एक काल्पनिक कहानी गढ़ती है और पूछती है, अगर ऐसी परिस्थिति में कोई औरत अपने पति का मर्डर करना चाहे, तो कैसे करेगी। उस जासूस की कल्पना में भी यह बात नहीं है कि उसकी बीवी ही उसका मर्डर करना चाहती है। इसलिये वो खुशी-खुशी अपनी पत्नी को एक बहुत फुलप्रूफ हत्या की योजना बनाकर दिखाता है और फिर उसी योजना पर काम करके उसकी बीवी जासूस की हत्या कर डालती है।"

"वैरी गुड!" अभिजीत घोष ने एक बार फिर मेरी मुक्तकंठ से प्रशंसा की- "अद्भुत ! अगर तुम इसी तरह कहानियां गढ़ती रही, तो वह दिन दूर नहीं, जब तुम उपन्यास लेखन में मेरी भी छुट्टी कर डालोगी।"

मैं आहिस्ता से मुस्कुराई।

"अब सिर्फ सोचना है।" अभिजीत घोष बोला- "कि वह फुलप्रूफ योजना क्या होगी।"

"बिल्कुल ! अगर योजना भी अद्भुत बन सकती है, तो फिर इस उपन्यास को सुपरहिट होने से कोई नहीं रोक सकता।"

"इसमें कोई शक नहीं।"

उसके बाद आगामी दस दिन तक अभिजीत घोष हत्या की योजना पर काम करता रहा। उस दौरान एक-एक क्षण मैं उसके साथ रही। अभिजीत घोष योजना बनाने में परिश्रमी था। वह योजना बनाते समय खाना-पीना तक भूल जाता था और बड़ी तल्लीनता से काम करता था।

वह बार-बार बस एक ही बात कहता, वह अपनी जिन्दगी के सबसे बेहतरीन उपन्यास पर काम कर रहा है।

वह उपन्यास जरूर तहलका मचाएगा।

जल्द ही मुझे अहसास हो गया, अभिजीत घोष वाकई एक मास्टरमाइंड आदमी है। खासतौर पर हत्या की योजना बनाने में तो उसे महारथ हासिल थी। वह योजना के हर अलग-अलग पहलू पर गौर करता था। हर पहलू को खूब ठोक-बजाकर देखता था कि कहीं कोई लूज पॉइंट तो नहीं है। कुल मिलाकर अभिजीत घोष के योजना पर काम करने का नजरिया बड़ा व्यापक था। बड़ा वसीह था।

वह इस तरह से योजना को हर एंगल से कसता था कि वो अपने आप फुलप्रूफ बन जाती थी।

इसके अलावा उसे पुलिस डिपार्टमेंट, मेडिकल साइंस, पोस्टमार्टम हाउस और फिंगरप्रिंट जैसे सब्जेक्टों की भी बड़ी अच्छी जानकारी थी। बहरहाल अभिजीत घोष के साथ हत्या की वो योजना बनाते समय मुझे बस एक ही बात का डर रहा था कि कहीं उसे मेरी असली प्लानिंग की भनक न हो जाये।

मगर।

ईश्वर का शुक्र था।

वैसा कुछ न हुआ।

ग्यारहवें दिन हत्या की एक फुलप्रूफ योजना बनकर तैयार हो चुकी थी।

योजना इतनी सुदृढ़ थी कि इन्सपेक्टर विकास बाली जैसे दस-बीस पुलिस ऑफिसर भी अगर अपने दिमाग के घोड़े दौड़ा लेते, तब भी वो अभिजीत घोष की हत्या के इल्जाम में मुझे या विक्रम को गिरफ्तार नहीं कर सकते थे।

गिरफ्तार करना तो दूर, वो हत्या ही साबित नहीं कर सकते थे।

ऐसी अद्भुत थी वो योजना।

□□□

बारहवें दिन मैंने हत्या की उस फुलप्रूफ योजना से विक्रम को भी अवगत कराया।
रात का समय था।
पूरे बंगले में सन्नाटा फैला था।
उसी सन्नाटे का लाभ उठाते हुए मैं विक्रम के क्वार्टर में जा घुसी।
खुद विक्रम का सस्पेंस से बुरा हाल था। वह उस योजना के बारे में सुनने को मरा जा रहा था।
"क्या हुआ ?" वो व्यग्रतापूर्वक बोला और उसने दरवाजे की सिटकनी अन्दर से बंद की- "क्या फाइनल हुआ ?"
"बताती हूँ।" मैंने कहा- "पहले आराम से बैठ जाओ।"
विक्रम एक कुर्सी पर बैठ गया।
मैं भी उसके सामने एक कुर्सी पर जा बैठी।
कौतुहलता इस समय विक्रम के चेहरे के जर्रे-जर्रे से टपक रही थी।
"विक्रम, योजना से पहले एक बात अच्छी तरह समझ लो।"
"क्या ?"
"अगर घोष साहब की हत्या होती है, तो उसमें तुम्हारा भी उतना ही हाथ होगा, जितना कि मेरा। अगर घोष साहब की हत्या के बाद तुमने मुझसे शादी करने से मना कर दिया, तो मैं खुद को पुलिस के हवाले कर दूंगी और उसके बाद तुम्हारा क्या होगा, यह अंदाजा तुम खुद ही लगा सकते हो। इसलिये तुम इस पूरे प्रस्ताव पर एक बार फिर ठंडे दिमाग स विचार कर लो। अगर तुम मुझसे शादी करने के लिये तैयार हो, तभी यह सारा हंगामा करने से फ़ायदा है। जहाँ तक योजना की बात है, योजना सुनाने मैं तुम्हें कल फिर आ जाऊंगी।"
"बेकार की बात मत करो।" विक्रम ने तुरंत मेरा हाथ पकड़ लिया- "मैं खूब ठंडे दिमाग से सोच-विचार कर चुका हूँ। यह तो मेरे लिये खुशी की बात होगी कि मेरी तुम्हारे जैसी सुन्दर लड़की से शादी होगी। लेकिन एक बात मैं तुमसे जरूर कहना चाहूंगा।"
"क्या ?"
"सारा मामला बहुत ज्यादा सुरक्षित होना चाहिए, कहीं कोई खतरे वाली बात न हो।"
"उसकी चिंता तुम मत करो। उस सिलसिले पर अभिजीत घोष और मैं पहले ही काफी गौर कर चुके हैं। फिर भी योजना में अगर तुम्हें कहीं कोई कमी या लूज पॉइंट दिखाई दे, तो मुझे बताना।"
विक्रम कुर्सी पर थोड़ा तनकर बैठ गया।
वह हत्या की योजना के बारे में जानने को काफी उत्सुक था।
"ठीक है, बताओ।"
"घोष साहब की हत्या में हमारे सामने सबसे बड़ी प्रॉब्लम है इन्सपेक्टर विकास बाली !" मैंने उसका योजना के एक-एक पहलू की तरफ ध्यान आकर्षित करना शुरू किया।
"इन्सपेक्टर विकास बाली !" विक्रम बोला- "वह क्यों ?"
"क्योंकि घोष साहब की जब हत्या होगी, तो जैसा कि तुम भी कह रहे हो कि घोष साहब के हत्यारे को पकड़ने के लिये सबसे ज्यादा एक्टिव इन्सपेक्टर विकास बाली ही

होगा। क्योंकि कहीं-न-कहीं वो घोष साहब से आत्मीय रूप से जुड़ा है और घोष साहब की हत्या से उसे गहरा आघात पहुंचेगा।"

"यह तो है।"

"घोष साहब की हत्या के बाद वो एक नतीजे पर और फ़ौरन झटपट पहुँच जायेगा।"

"किस नतीजे पर ?"

"यही कि घोष साहब की हत्या मैंने की हो सकती है। हत्या के ऐसे मामलों में पुलिस का पत्नी पर बड़ी जल्दी शक जाता है। वैसे भी घोष साहब और मेरी उम्र में जो बड़ा फर्क है, उस हालत में पुलिस का मेरे ऊपर शक किया जाना वैसे भी लाजिमी है। फिर घोष साहब की हत्या के बाद उनकी तमाम दौलत की भी मैं मालकिन बनने वाली हूँ, जोकि हत्या का एक और बड़ा कारण है। ऐसे माहौल में योजना की सबसे पहली जरूरत तो यही है कि घोष साहब की हत्या कुछ इस तरह से की जाये कि किसी का भी मेरे ऊपर शक न जाये और सब उसे स्वाभाविक मौत ही समझें।"

"बिल्कुल ठीक बात है।"

विक्रम मेरे मुंह से निकला एक-एक शब्द बहुत ध्यान से सुन रहा था।

"तो फिर घोष साहब की हत्या किस तरह होगी ?" विक्रम ने पूछा।

"उनकी हत्या कार एक्सीडेंट से की जायेगी।" मैं धमाका-सा करते हुए बोली।

"कार एक्सीडेंट ?"

"हाँ ! यह तो तुम्हें मालूम ही होगा विक्रम !" मैं विक्रम की तरफ थोड़ा आगे को झुक गई और बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाई- "कि जब कार का टायर फटता है, तो क्या होता है। कार चलते-चलते बिल्कुल किसी शराबी की भांति सड़क पर लहरा जाती है। आउट ऑफ़ कण्ट्रोल हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में कार अगर किसी पहाड़ी सड़क पर चल रही हो, तो उसके बैरकेट्स तोड़कर नीचे खाई में गिरने के भी पूरे चांस रहते हैं। कहने को कार का टायर फटना एक मामूली-सी बात है, मगर टायर के फटने से एक बड़ी खतरनाक घटना घट सकती है। समझ रहे हो न, मैं क्या कह रही हूँ ?"

"हाँ !" विक्रम ने शुष्क अधरों पर जबान फिराई- "मैं समझ रहा हूँ।"

"बेहतर ! वैस भी बीच पर मेरी कार का जो टायर फट गया था, वह घटना तुम्हीं याद ही होगी कि सब कुछ कितने अप्रत्याशित और आकस्मिक तरीके से हुआ। अब मैं तुम्हें बताती हूँ कि हमने किस तरह पूरे प्लान को अंजाम देना है। जहाँ तक मैं समझती हूँ, घोष साहब को अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ आने वाली किसी न किसी रात को किसी समारोह में भाग लेने के लिये जरूर जाना होगा। इस तरह के समारोह में भाग लेने वो अक्सर जाते रहते हैं। आने वाली किसी रात को जब वो किसी समारोह में भाग लेने के लिये निकलेंगे, तो हमने तभी एक्सीडेंट का प्लान रच देना है।"

"मगर तुम एक बात भूल रही हो नताशा !"

"क्या ?"

"उस समय कार ड्राइवर माधवन भी घोष साहब के साथ ही होगा।"

"मैं कुछ भी नहीं भूली हूँ। पूरा प्लान मेरे दिमाग में है। इसमें कोई शक नहीं, घोष साहब जब भी किसी समारोह में भाग लेने जाते हैं, तो माधवन उनके साथ होता है।

लेकिन उस रात माधवन उनके साथ नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि जाने से कुछ घंटे पहले ही मैं उसे लेराइगो की वही चार टेबलेट खिला दूंगी, जो मैंने खाई थीं। टेबलेट खाते ही उसे चक्कर आने लगेंगे। जी मचलाने लगेगा और दो-तीन बड़ी-बड़ी उल्टियां हो जायेंगी। ऐसी हालत में वो गाड़ी चलाने लायक नहीं रहेगा और तब घोष साहब भी उसे अपने साथ नहीं ले जायेंगे। उस परिस्थिति में वो खुद गाड़ी चलाना पसंद करेंगे। क्या मैं गलत कह रही हूँ ?"

"नहीं।" विक्रम बोला- "तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है। ऐसी हालत में घोष साहब खुद ही गाड़ी चलाएंगे।"

"अब आगे की योजना सुनो।" मैं बोली- "घोष साहब जब अपनी कार निकालने गैराज में पहुंचेंगे, तो उस समय हम दोनों में से कोई एक व्यक्ति गैराज में ही मौजूद होगा और घोष साहब के वहां पहुंचते ही उनके सिर पर भीषण प्रहार करेगा। जिससे घोष साहब अचेत हो जायेंगे। उसके बाद घोष साहब को उनकी कार में ही बिठाकर बंगले से बाहर निकाला जायेगा और फिर ऐसा शो करके जैसे रास्ते में उनकी कार का टायर फट गया हो, उन्हें कार सहित किसी बहुत गहरी खाई में धकेल दिया जायेगा। इस तरह वो एक्सीडेंट का एक ओपन एंड शट केस होगा। वैरी सिंपल ! सब कुछ बहुत सहजता क साथ हो जायेगा।"

विक्रम के चेहरे पर अब सस्पेंस के चिह्न नजर आने लगे।

"क्या सब कुछ इतनी ही सहजता से निपट जायेगा ?" उसने थोड़ी व्याकुलतापूर्वक पूछा।

"नहीं ! कुछ मुश्किलें भी पेश आयेंगी।"

"जैसे ?"

"जैसे घोष साहब की मौत चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो।" मैं बोली- "परन्तु इन्सपेक्टर विकास बाली के संदेह की सुई एक बार मेरी तरफ जरूर घूमेगी और तब अपने आपको किसी भी आफत से बचाने के लिये जरूरी है कि मेरे पास कोई बहुत बख्तरबंद शहादत हो। जबरदस्त ऑई विटनेस हो।"

"एक मिनट !" विक्रम ने अकस्मात मुझे रोका- "मैं तुम्हारे सामने एक बात और स्पष्ट करता चलूँ।"

"क्या ?"

"घोष साहब के ऊपर गैराज में जो हमला होगा, वो मैं नहीं तुम करोगी। इसका कोई गलत अर्थ मत लगाना नताशा। मैंने इस तरह के काम पहले नहीं किये हैं, इसलिये मुझसे चूक हो सकती है। और उस समय की जरा-सी चूक के कारण हमारी पूरी योजना फ्लॉप हो जायेगी। इसलिये बेहतर यही है कि तुम्हीं उस काम को करो, क्योंकि तुम पहले भी इस तरह के काम कर चुकी हो।"

"पहले भी इस तरह के काम कर चुकी हूं।" मेरे नेत्र एकाएक घोर विस्मय से फट पड़े- "क्या मतलब ?"

"देखो, मुझसे कुछ भी छुपा नहीं है।" विक्रम मेरे सामने नजरें झुकाए-झुकाए धीमी

आवाज में बोला- "जब तुम पहले ही दिन घोष साहब को अपने बारे में सब-कुछ बता रही थी, तभी इत्तेफाक से मैंने उस दिन वो सारी बातें सुन ली थीं। गोरखपुर में तुम्हारे साथ क्या-क्या गुजरा। किस तरह तुमने अपने सात प्रेमियों के खून किये। मुझे सबकुछ पता चल गया। लेकिन तुम्हारी उस कहानी को सुनकर मुझे तुमसे हमदर्दी ही हुई। और इस वक्त भी मैं अपनी उस जानकारी का कोई बेजा इस्तेमाल नहीं कर रहा हूं।"

मैं आश्चर्यचकित नेत्रों से लगातार विक्रम को देखे जा रही थी।

विक्रम !

एकाएक विक्रम ने वो रहस्योद्घाटन करके मुझे स्तम्भित कर दिया था।

"मेरी बात समझने का प्रयास करो।" विक्रम मेरे लगातार घूरने के कारण कुछ सकपका उठा- "मुझे घोष साहब पर हमला करने में कोई एतराज नहीं है। मैं तुमसे ज्यादा शक्तिशाली हूं, इसलिये आक्रमण भी जोरदार ढंग से कर सकता हूं। परन्तु यह शक्ति से ज्यादा धैर्य और हौसले का काम है, जो शायद उस क्षण मेरे पास नहीं होगा। क्योंकि मुझे ऐसे कामों का तजुर्बा नहीं है।"

मुझे विक्रम की बात तर्कसंगत लगी।

वो शायद ठीक कह रहा था।

□□□

"ओ.के. !" मैंने काफी सोच-विचारकर स्वीकृति में गर्दन हिलाई- "मैं यह काम करने के लिये तैयार हूं। गैराज में घुसकर घोष साहब के ऊपर हमला भी मैं ही करूंगी और फिर कार को किसी ऊंची पहाड़ी सड़क से धकेल भी दूंगी। मड-आइलैंड में ऐसी बहुत सड़कें हैं, जहां एक्सीडेंट प्लान किया जा सके। मगर एक दूसरे सिलसिले में मुझे तुम्हारी मदद की हर हाल में जरूरत पड़ेगी।"

"बताओ।" विक्रम तत्परतापूर्वक बोला- "क्या करना होगा मुझे ?"

"किस्सा यह है, दरअसल मुझे एक ही वक्त में दो जगह मौजूद रहना होगा। पहाड़ी सड़क पर भी और बंगले के अंदर अपने ऑफिस में भी, जहां मौजूद लोग कसम खाकर यह कह सकें कि उन्होंने मुझे उस समय ऑफिस में काम करते हुए देखा था और सुना था। जबकि हकीकत में उस वक्त मैं पहाड़ी सड़क पर कार को गहरी खाई में धकेलने का काम अंजाम दे रही होऊंगी। लेकिन बंगले में उस वक्त ऐसे गवाह होने जरूरी हैं, जिन पर इंस्पेक्टर विकास बाली यकीन कर सके। उन गवाहों में से एक, कुमार का होना बहुत जरूरी है, जो मेरी उस वक्त बंगले में उपस्थिति की बात करेगा।"

"कुमार ?" विक्रम चौंका- "गवाहों में कुमार का होना क्यों जरूरी है ?"

मैंने वो वजह भी बताई।

"दरअसल घोष साहब की हत्या के बाद जब इन्सपेक्टर विकास बाली जांच-पड़ताल करेगा।" मैं बोली- "तो थोड़ी बहुत जांच पड़ताल के बाद ही उसे पता चल जायेगा कि कुमार मुझे पसंद नहीं करता। ऐसी परिस्थिति में जब कुमार, इन्सपेक्टर विकास बाली से यह कहेगा कि मैं दुर्घटना के वक्त अपने ऑफिस में काम कर रही थी, तो विकास बाली कुमार की बात पर आसानी से यकीन कर लेगा। इसके अलावा हमारा दूसरा गवाह कमल

पॉकेट बुक्स का मालिक कमल जैन होगा। कमल जैन एक इज्जतदार आदमी है। रुतबे वाला आदमी है। फिर पिछले काफी समय से उसकी बड़ी इच्छा है कि वह घोष साहब का कोई नया उपन्यास प्रकाशित करे। मैं जब उसे उपन्यास का प्रकाशन करने संबंधी डिस्कशन के लिये बुलाऊंगी, तो वह दौड़ा-दौड़ा आएगा। ऐसी हालत में वह भी मेरी बेगुनाही का चश्मदीद गवाह बन जायेगा। इन्सपेक्टर विकास बाली के सामने मेरे पक्ष में कमल जैन जैसे प्रतिष्ठित आदमी की गवाही भी बहुत मायने रखेगी। विकास बाली इस बात को अच्छी तरह जानता है कि कमल जैन ऐसा आदमी नहीं है, जो खामखाह झूठा बयान देकर किसी बड़े बखेड़े में फंसने की कोशिश करेगा। इसके अलावा तुम्हारी गवाही तो मेरे पक्ष में होगी ही।"

विक्रम की आंखों में योजना के प्रति प्रशंसा के भाव उभर आए।

योजना ही ऐसी थी, उसे जो भी सुनता, प्रशंसनीय नजरों से देखता।

"मगर एक बात मैं नहीं समझ पा रहा हूं।" विक्रम बोला।

"क्या ?"

"तुम एक ही समय में दो जगह मौजूद कैसे रह सकती हो ?"

"हां, अच्छा सवाल है।" मैं बोली- "दरअसल इसी काम को करने के लिये घोष साहब ने अपना असली दिमाग खर्च किया है। हत्या की योजना का यही सबसे दिलचस्प और झकझोर देने वाला हिस्सा है। हालांकि एक ही समय में दो जगह मौजूद रहना बहुत अविश्वसनीय जरूर लगता है, परंतु अगर थोड़ा बुद्धि से काम लिया जाये, तो यह काम संभव है। अलबत्ता इस काम को करने के लिये थोड़े धैर्य और अभ्यास की जरूरत पड़ेगी। मैं तुम्हें बताती हूं, घोष साहब ने योजना का ताना-बाना किस तरह बुना है। हालांकि योजना फुलप्रूफ है, परंतु फिर भी अगर तुम्हें कहीं कोई कमी दिखाई दे, तो मुझे तुरंत बताना।"

"ठीक है।" विक्रम बोला- "बताओ, किस तरह तुम एक ही समय में दो जगह मौजूद रहोगी ?"

"मान लो घोष साहब शाम को छः बजे किसी समारोह में जाने के लिये घर से बाहर निकलते हैं। उनके जाते ही तुम नौ बजकर दस मिनट पर घंटी बजाकर कुमार को ऑफिस में बुलाते हो। अभी कुमार ड्राइंग हॉल तक ही पहुंचा होता है कि तुम ऑफिस से बाहर निकलते हो और ऑफिस का दरवाजा खुला छोड़ देते हो। अब ड्राइंगहॉल में खड़ा कुमार मुझे ऑफिस के अंदर एक टेप रिकॉर्डर पर चिट्ठी डिक्टेट करते हुए देखता है। उसे कुर्सी पर मेरी पीठ दिखाई देती है, कुर्सी के हत्थे पर रखी मेरी बांह और कोहनी दिखाई देती है। मैं कमरे में मौजूद हूं, कुमार के सामने यह बात जाहिर करने के लिये मैं समझती हूं कि इतना ही काफी है। तुम कुमार से कहते हो कि मुझे कॉफी की जरूरत है। इसके अलावा तुम कुमार को यह भी बताते हो कि थोड़ी बहुत देर में ही प्रकाशक कमल जैन भी वहां पहुंचने वाला है। अगर कमल जैन वहां पहुंच जाये, तो उसे थोड़ी देर ऑफिस के बाहर ड्राइंग हॉल में ही बिठाया जाना है। कमल जैन ऑफिस में तुरंत अंदर इसलिये नहीं जायेगा, क्योंकि मैं कुछ बहुत जरूरी चिट्ठियां डिक्टेट कर रही हूं और अभी उस काम को समाप्त होने में तकरीबन आधा घंटा लग जायेगा। इतना ही नहीं, तुम कुमार को ऑफिस के अंदर भी

दाखिल हो लेने देते हो, लेकिन मेरी कुर्सी और कुमार के बीच में तुम खड़े रहते हो। इसके अलावा तुम कॉफी का मग उससे वहीं पकड़ लेते हो तथा उंगली से चुप रहने का इशारा करते हो, ताकि मेरे डिक्टेशन देने में कुछ विघ्न न पड़े। मेरी चिट्ठियां डिक्टेट करने की आवाज तब कुमार बहुत साफ-साफ सुनता है। कुमार के कॉफी देकर चले जाने के पश्चात तुम ऑफिस के दोनों पल्ले भेड़ देते हो तथा फिर कमल जैन के आने का इंतजार करते हो। तक़रीबन पन्द्रह मिनट बाद कमल जैन वहां पहुंचता है।"

"फिर ?"

"फिर क्या ?" मैं बोली- "योजना के मुताबिक प्रकाशक कमल जैन को बाहर ड्राइंग हॉल में ही बिठाया जाता है। कमल जैन के आने के बाद तुम फिर ऑफिस से बाहर निकलते हो और ड्राइंग हॉल में घुसते हो। यहां तुमने एक बात का खास ख्याल रखना है, तुमने ऑफिस का दरवाजा खासतौर पर खुला छोड़ देना है।"

"क्यों?"

"क्योंकि ड्राइंग हॉल में बैठा प्रकाशक कमल जैन और कुमार, दोनों मुझे कुर्सी पर बैठा देख सकें तथा चिट्ठियां डिक्टेट करती मेरी आवाज सुन सकें। तुम कमल जैन से कहते हो कि मैं कुछ जरूरी काम कर रही हूं और मेरा काम जल्द ही समाप्त होने वाला है। काम समाप्त होते ही उसे अंदर ऑफिस में बुला लिया जायेगा। मैं समझती हूं, कमल जैन उस बात को समझेगा और ड्राइंग हॉल में बैठेगा। उसके बाद तुम वापस ऑफिस में आ जाते हो तथा दरवाजे के पट भेड़ देते हो। बस तुमने यही सब करना है। बोलो, कर सकोगे यह काम ?"

विक्रम कुछ देर शांत बैठा रहा।

बिल्कुल स्थिर।

"एक बात मुझे उलझन में डाल रही है।" उसकी आवाज धीमी थी।

"क्या ?"

"क्या तब तुम वास्तव में ही ऑफिस के अंदर मौजूद होओगी ?"

"नहीं।" मैंने एकदम स्पष्ट लहजे में कहा।

"नहीं ?"

विक्रम बुरी तरह चौंक पड़ा।

आश्चर्यचकित।

"ल...लेकिन अगर तुम ऑफिस में मौजूद ही नहीं होओगी।" विक्रम बोला- "तो इतना सारा नाटक कैसे होगा ?"

"वही तो सारा दिमाग का खेल है।" मैं योजना का एक-एक पत्ता खोलते हुए बोली- "मैं एक टेप रिकॉर्डर के अंदर एडवांस में ही कई सारी चिट्ठियां डिक्टेट कर के रख छोड़ूंगी। तुम प्रकाशक कमल जैन और कुमार को मेरी आवाज सुनाने के लिये वह टेप रिकॉर्डर ऑन कर दोगे। इसके अलावा कुर्सी पर जो मेरी बांह दिखाई देगी, वह तो एक बहुत मामूली-सा काम है। तार के एक मुड़े हुए फ्रेम और कोट की मदद से इस तरह का भ्रम पैदा किया जा सकता है। बात को और भी ज्यादा विश्वसनीय तथा दमदार बनाने के लिये हैट का इस्तेमाल भी किया जा सकता है, जो पीछे से ऐसा भ्रम पैदा करेगा, जैसे वह मेरे सिर पर रखा हो। इन तमाम बातों से किसी को भी यकीन दिलाया जा सकता है कि उस वक्त मैं

ऑफिस के अंदर ही मौजूद हूं।”

“रियली मारवलस!” विक्रम प्रशंसा किए बिना न रह सका- “दिस इज फंटास्टिक प्लानिंग।”

“अभी तो और आगे सुनो।” मैंने योजना बताने का सिलसिला जारी रखा- “जब तुम इधर बंगले में यह सारा ड्रामा अंजाम दे रहे होओगे, तो उधर किसी पहाड़ी सड़क पर मैं घोष साहब की हत्या करने के बाद उनकी कार का एक्सीडेंट प्लान कर रही होऊंगी। मैं बैरकेट्स तोड़कर कार को गहरी खाई में धकेल दूंगी तथा फिर अपना काम समाप्त करके जल्द-से-जल्द यहां पहुंचूंगी और पिछली खिड़की के रास्ते से ऑफिस में आ जाऊंगी। उसके बाद मैं कुर्सी पर टंगा हुआ कोट पहन लूंगी, जिसकी बांह पर सबकी नजर पड़ी होगी और फिर प्रकाशक कमल जैन को अंदर बुलाया जायेगा। विक्रम, योजना के इस हिस्से की सफलता-असफलता सब कुछ तुम्हारे हाथ में है। तुम कमल जैन तथा कुमार के सामने जितने विश्वास के साथ अभिनय करोगे, उतनी ही यह योजना कामयाब रहेगी। तुमने एक क्षण के लिये भी अपना धैर्य नहीं खोना है और उनके सामने बिल्कुल इस तरह पेश आना है, जैसे वास्तव में ही मैं ऑफिस के अंदर हूं। यह सारा खेल कॉन्फिडेंस का होगा।”

“ठीक है।” विक्रम बोला- “मैं सारा काम कर लूंगा।”

“पूरे कॉन्फिडेंस के साथ?”

“हां, पूरे कॉन्फिडेंस के साथ।”

“बेहतर! अगर तुम यह काम इसी तरह से कर लोगे विक्रम, तो मेरे पक्ष में ये आई विटनेस दुनिया की किसी भी अदालत में नहीं टूट पायेगी।”

□□□

थोड़ी देर के लिये सर्वेंट क्वार्टर में सन्नाटा छा गया।

योजना वाकई शानदार थी।

शानदार क्या थी, बहुत-बहुत ज्यादा शानदार थी।

और यह बात मैं भी अच्छी तरह जानती थी।

विक्रम ने एक बार कुर्सी से खड़े होकर अपने क्वार्टर का दरवाजा खोला और बाहर झांका।

बाहर पूरी तरह सन्नाटा छाया था।

कहीं कोई न था।

वो दरवाजा बंद करके वापस इत्मीनान से कुर्सी पर आ बैठा।

“चाय पियोगी?”

“नहीं! उसकी कोई जरूरत नहीं है।” मैं तुरंत बोली- “इस समय हमारा एक-एक सेकेंड कीमती है और हमें सिर्फ योजना पर ही बात करनी चाहिए। यह बताओ, योजना में तुम्हें कहीं कोई कमी तो नहीं दिखाई दे रही?”

विक्रम विचार करने लगा।

“एक जगह मुझे कुछ आशंका मालूम पड़ रही है।” वो काफी सोचने-विचारने के बाद बोला।

"कहां ?"
"मान लो प्रकाशक कमल जैन को वहां पहुंचने में देर हो जाती है और इस बीच टेप भी पूरा चलकर खत्म हो जाता है। तब ऐसी परिस्थिति में क्या होगा?"
विक्रम की आशंका उपयुक्त थी।
ऐसा हो सकता था।
"जहां तक मैं समझती हूं।" मैं बोली- "सर्वप्रथम तो प्रकाशक कमल जैन को बंगले पर पहुंचने में देर ही नहीं होगी, क्योंकि वह घोष साहब का नया नॉवल छापने के लिये बहुत बैचेन है। बहुत उत्सुक है। फिर भी एक प्रतिशत अगर मान लो, कमल जैन को बंगले पर पहुंचने में थोड़ी बहुत देर हो जाती है, तो उसके लिये तुम एक काम कर सकते हो, जो टेप खत्म न हो।"
"क्या ?"
"जैसे ही कुमार कॉफी दे कर जाये, तुम टेप बंद कर देना और कमल जैन के आने का इंतजार करना। कमल जैन जैसे ही ड्राइंग हॉल के अंदर दाखिल हो, तुम फिर टेप चालू कर देना। इस तरह तुम्हारे पास काफी टेप बचेगा। इसके अलावा एक बड़ी नाजुक बात और है, जो योजना को सफल तथा पूरी तरह विश्वसनीय बनाने के लिये बेइंतहा जरूरी है।"
"क्या ?"
"जब तुम ड्राइंग हॉल में जाकर प्रकाशक कमल जैन से बात करोगे, तो उस बातचीत में थोड़ी देर के लिये मैं भी शामिल हो जाऊंगी।"
विक्रम के चेहरे पर हैरानी के भाव पैदा हुए।
वह चौंका।
"तुम शामिल हो जाओगी।" विक्रम बोला- "लेकिन यह सब कैसे होगा ? तुम तो ऑफिस के अन्दर मौजूद ही नहीं होओगी।"
"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस काम को करने के लिये बस थोड़े अभ्यास की जरूरत है। दरअसल वह आवाज भी टेप रिकॉर्डर में ही रिकॉर्ड की जायेगी। मेरी आवाज एकाएक ऑफिस से बाहर निकलेगी। सॉरी मिस्टर कमल जैन! बस थोड़ी देर की और बात है, मैं अभी आपको ऑफिस के अंदर बुलाती हूं। वह बात कहने के बाद मैं फिर टेप रिकॉर्डर पर चिट्ठियां डिक्टेट करने लगूंगी। इससे प्रकाशक कमल जैन तथा कुमार को इस बात का और भी पक्का भरोसा हो जायेगा कि मैं अंदर ऑफिस में ही हूं। क्यों ? कैसी रहेगी यह बात?"
"बढ़िया।"
"लेकिन इस एक लाइन के संवाद को एकदम मौके पर ही फिट करने के लिये थोड़ी सावधानी की जरूरत पड़ेगी। क्योंकि अगर लाइन ज़रा भी आगे-पीछे हुई, तो फिर यह राज खुलने में देर नहीं लगेगा कि मैं अन्दर ऑफिस में नहीं हूँ।"
विक्रम थोड़ा फिक्रमंद नजर आने लगा।
"और अगर कोई गड़बड़ हो गयी तो ?" विक्रम बोला।
"नहीं होगा। मैं कहा न, बस इसके लिये थोड़ी सावधानी और अभ्यास की जरूरत पड़ेगी। हम लोग अभ्यास पहले ही कर लेंगे।"
"एक सवाल और है।" विक्रम ने कहा- "जिसकी तरफ अभी शायद तुमने ध्यान नहीं

दिया है नताशा !"

"क्या ?"

"मान लो, तुम घोष साहब की हत्या करने में भी कामयाब हो जाती हो और किसी पहाड़ी सड़क से उनकी कार खाई में धकेलकर एक्सीडेंट भी प्लान कर बैठती हो। लेकिन उसके बाद तुम घटनास्थल से बंगले तक किस तरह वापस लौटोगी, क्योंकि घटनास्थल बंगले के आसपास भी नहीं होगा। और तुमने वहीं से जल्द-से-जल्द वापस लौटना है। क्योंकि तुम्हारे पास ज्यादा समय भी नहीं होगा।"

"बात तो ठीक है।" मैं बोली- "वाकई तुम दिमाग लगा रहे हो। वैसे इस समस्या का भी एक हल है।"

"क्या ?"

"तुम पहले ही नौकरों के इस्तेमाल में आने वाली फिएट कार घटनास्थल के आसपास ही कहीं छुपा दोगे, मैं उसी से वापस लौटूंगी।"

"ठीक है।"

"फिएट कार घटनास्थल के आसपास छुपाने में तुम्हें तो कोई ऐतराज नहीं?"

"नहीं! कोई ऐतराज नहीं।"

"ओ.के. !" मैं बेसब्री से अपनी रिस्टवाच पर निगाह डालते हुए बोली- "तो अब मैं चलती हूँ। मुझे यहाँ काफी वक्त हो चुका है। मेरे जाने के बाद भी तुम योजना के एक-एक पहलू को खूब अच्छी तरह जांचना परखना और उसमें तुम्हें कहीं कोई कमी दिखाई दे, तो मुझे बताना।"

"बेहतर।"

मैं कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी।

विक्रम भी उठा।

विक्रम ने उठते ही एकाएक मुझे अपनी बाहों के दायरे में समेट लिया और मेरे गाल पर एक प्रगाढ़ चुम्बन अंकित किया।

"आई लव यू नताशा! आई लव यू।" वो बहुत भावपूर्ण लहजे में बोला।

"तुम मुझे धोखा तो नहीं दोगे विक्रम ?"

"कैसी बात कर रही हो।" विक्रम ने कहा- "यह सवाल तो मुझे तुमसे करना चाहिए।"

मैंने भी बहुत समर्पण मुद्रा में विक्रम की पीठ के गिर्द अपनी बाहें कस दीं।

विक्रम जब मेरे पास होता था, तो मैं अपने आपको बहुत संतुष्ट महसूस करती थी।

उसके बाद मैं वहां से विदा हुई।

□□□

अगले पांच दिन बड़ी शान्ति के साथ गुजरे।

इस बीच विक्रम तथा मेरी मुलाक़ातें लगातार होती रहीं। योजना में थोड़ी बहुत जो और कमियाँ थीं, उन्हें भी हमने अच्छी तरह कस लिया।

अब योजना फुलप्रूफ हो चुकी थी।

हालांकि घोष साहब ने ही उस पर काफी मेहनत कर ली थी और उसमें ज्यादा कुछ

परिवर्तन करने के लिये बचा नहीं था। अब सिर्फ वो दिन तय करना बाकी था, जिस दिन वह सारा षड़यंत्र रचा जाता।
जल्द ही वो दिन भी फाइनल हो गया।
बुद्धवार का दिन था, मैं उस दिन डाक देख रही थी। तभी मेरे हाथ शादी का एक निमंत्रण-पत्र हाथ लगा। वह नवभारत टाइम्स के स्थानीय सम्पादक देवीचरण शुक्ला के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र था, जिसमें देवीचरण शुक्ला ने अभिजीत घोष से शादी में आने का विशेष आग्रह किया था।
मेरी आँखें चमक उठीं।
मैं जानती थी, देवीचरण शुक्ला के अभिजीत घोष से काफी अच्छे सम्बन्ध हैं।

मैंने वो निमंत्रण पत्र अभिजीत घोष के सामने रखा।
"हाँ !" अभिजीत घोष ने अपने चिर-परिचित अंदाज में बजक कंपनी के सिगार का कश लेते हुए कहा- "मुझे मालूम है कि देवीचरण के लड़के की शादी होने वाली है। आज सुबह मेरे पास देवीचरण का फोन भी आया था।"
"क्या आप शादी में जायेंगे ?"
"क्यों नहीं।" अभिजीत घोष बोला- "बिल्कुल जाऊंगा। अगर शादी में न गया, तो देवीचरण काफी नाराज होगा। शादी कब की है ?"
"शुक्रवार की।"
"यानि परसों !"
"यस !"
"ठीक है। तुम भी मेरे साथ शादी में जाने के लिये तैयार रहना।" अभिजीत घोष बोला- "ठीक छ: बजे हम यहाँ से निकल जायेंगे।"
"मैं!" मेरे सिर पर एकाएक बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी- "लेकिन मैं कैसे जा सकती हूँ।"
"क्यों ?"
"दरअसल प्रकाशक कमल जैन को मैंने परसों शाम छ: बजे ही बिजनेस मीटिंग के लिये यहाँ बुलाया हुआ है।" मैंने बिल्कुल सफ़ेद झूठ बोला।
"ओह! यह तो काफी परेशानी की बात है।"
"बिल्कुल।"
"क्या वो मीटिंग कैंसिल नहीं हो सकती?"
"नहीं। कमल जैन पिछले काफी टाइम से मीटिंग करने का इच्छुक था, फिर उसने टूर पर कहीं बाहर भी जाना है। और सबसे बड़ी बात ये है कि अगर मेरी उस दिन कमल जैन के साथ मीटिंग न भी होती, तब भी मैं उस पार्टी में नहीं जा पाती।"
"किसलिये ?"
"दरअसल मैं ऐसे समारोहों में जाने से बचना चाहती हूँ, जहाँ काफी सारे लोगों की गैदरिंग होती है। ज्यादा भीड़-भाड़ में, मैं सहज नहीं रह पाती और मेरे मन में यह खौफ भी बना रहता है कि कोई गोरखपुर की नताशा शर्मा के तौर पर मुझे पहचान न ले।"
मेरी बात सुनकर अभिजीत घोष सोच में डूब गया।

मेरी बात उसे ठीक लगी।
“ओके।” वह बोला- “तो फिर शादी में, मैं अकेला ही चला जाऊंगा। माधवन से कहना कि वो कार लेकर तैयार रहे।”
“मैं माधवन से बोल दूंगी।”
वो बात वहीं ख़त्म हो गयी।
अभी तक पूरी योजना ठीक-ठाक चल रही थी।

□□□
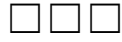
मैंने विक्रम को भी बता दिया, सारा काम शुक्रवार की शाम छ: बजे होना तय हो गया है।
हमारे पास अब सिर्फ दो दिन थे।
दो दिन।
एक क्षण के लिये मेरे शरीर में ठंडक की लहर दौड़ गयी।
अभी तक वो योजना केवल जबानी जमा खर्च थी, लेकिन अब जबकि उसको कार्यरूप देने का का समय आया, तो मुझे दहशत होने लगी।
अगर कहीं भी मुझसे ज़रा-सी भूल हुई, तो वहीं सारा खेल ख़त्म।
विक्रम तो पहले ही काफी भयभीत था। वो चाहे लाख दिलेर था, मगर इस तरह की कार्यवाही उसने पहले कभी अंजाम नहीं दी थी।
उसी दिन मैंने प्रकाशक कमल जैन को भी फोन किया।
“हैलो मैडम !” कमल जैन भारी गरमजोशी के साथ बोला- “आज हमारी याद कैसे आ गयी ?”
“मिस्टर जैन ! मैं आपके साथ एक मीटिंग करना चाहती हूँ।”
“घोष साहब के नए उपन्यास के सिलसिले में ?” कमल जैन चहका।
“जी हाँ !”
“वैरी गुड ! यह तो मेरी खुशनसीबी होगी मैडम !”
“बताईये, मीटिंग कब करनी है ?” मैं धैर्यपूर्वक बोली।
“जब आप चाहें।”
मैं जानती थी, कमल जैन का वही जवाब होगा।
मैं एक-एक शब्द बहुत नाप-तोल कर बोल रही थी।
“क्या आप शुक्रवार की शाम सवा छ: बजे आ सकते हैं ?” मैंने सोचने विचारने का अभिनय करते हुए कहा।
“क्यों नहीं।”
“ठीक है मिस्टर जैन ! तो फिर शुक्रवार की शाम सवा छ: बजे की मीटिंग आपके साथ फिक्स।”
“थैंक यू मैडम !”
“आप कवर आइडिया और पब्लिसिटी बजट के साथ मुझसे मिलें।”
“ओ.के.! मैं पूरी तैयारी करके आऊँगा मैडम !”

"गुड बाय !"
"गुड बाय !"
सम्बन्ध विच्छेद हो गया।
कमल जैन के साथ मीटिंग का वह प्रोग्राम भी आसानी से तय हो गया।

□□□

हालांकि अभी तक कोई मुश्किल पेश नहीं आयी थी। फिर भी कठिनाइयां कई थीं।
मेरी रातें अब अभिजीत घोष के साथ गुजरती थीं।
वह सारी रात मेरे शरीर को नोंचता-खसोटता रहता था और अजीब-अजीब सेक्सुअल हरकतें करता था।
उसके साथ सहवास क्रिया करने के दौरान मुझे जो पीड़ा झेलनी पड़ती, आप उसका अनुमान भी नहीं लगा सकते। वह निस्संदेह घोर यातना से भरी रातें थीं।
इसके अलावा मैंने ऑफिस में काफी सारी चिट्ठियों के जवाब कंप्यूटर पर डिक्टेट भी करने शुरू कर दिए थे। हर चिट्ठी का जवाब ख़त्म होने के बाद मैंने उसका समय नोट कर लिया। यह इसलिये भी जरूरी था, ताकि विक्रम को पता रहे कि प्रकाशक कमल जैन के पहुँचने पर मेरे द्वारा कहे गये महत्वपूर्ण शब्द कब आने वाले हैं।
फिर विक्रम ने और मैंने एक बार पूरे प्रोग्राम की रिहर्सल भी की।
रिहर्सल की जगह भी हमने काफी बेहतर चुनी।
बंगले में सर्वेंट क्वार्टरों से बहुत दूर अस्तबल के पीछे बिल्कुल वीराने में एक केबिन बना हुआ था। आधी रात के वक्त मैं और विक्रम उसी केबिन में जा पहुंचे।
केबिन की चाबी मेरे पास थी।
मैं केबिन का दरवाजा खोलकर अन्दर दाखिल हुई। मैंने कंप्यूटर को वहीं केबिन में पड़ी एक टेबल पर बिल्कुल इस तरह रख दिया, जैसा वो योजना को क्रियान्वित करते समय रखा जाना था।
मुश्किल से दो मिनट बाद ही विक्रम भी वहां पहुँच गया।
एकाएक मेरा दिल चाहा, मैं दौड़कर विक्रम को अपनी बाहों में समेट लूं।
लेकिन मैंने अपनी भावनाओं को काबू किया।
यह इस तरह के काम का समय नहीं था। मैंने देखा, विक्रम उस समय भी थोड़ा डरा हुआ था।
मुझे भय हुआ, कहीं वो डर ही उससे कुछ गड़बड़ न करा दे।
"सब कुछ ठीक है ?" वह आते ही बोला।
"हाँ !"
"तो फिर हमें रिहर्सल शुरू करनी चाहिए।" विक्रम ने कहा- "वैसे भी हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।"
विक्रम ने अब लोहे के तार से बनी हुई एक लम्बी-सी ट्यूब निकालकर मेज पर रख दी।
"यह देखो, यह ट्यूब मैंने तुम्हारी बांह की जगह इस्तेमाल करने के लिये बनायी है। इसे अच्छी तरह देख लो, कहीं कोई कमी हो तो बताना।"

मैंने ट्यूब देखी।
वह लोहे के तार का जाल था।
ट्यूब वाकई बहुत ख़ूबसूरत ढंग से बनी हुई थी।
"अद्‌भुत !" मैं उस ट्यूब को बहुत प्रशंसनीय नेत्रों से देखते हुए बोली- "वाकई तुमने यह काम काफी अच्छे ढंग से किया है।"
मैंने अपना कोट उतारा और ट्यूब को कोट की एक आस्तीन के अन्दर व्यवस्थित कर दिया।
फिर ट्यूब को थोड़ा मोड़ा, तो वह बीच में से बिल्कुल बांह की शक्ल में मुड़ गयी। उसके बाद मैंने वह कोट कुर्सी पर रख दिया और ट्यूब वाली बांह को कुर्सी को कुर्सी के हत्थे पर इस तरह टिकाया, जैसे सचमुच वहां किसी की बांह रखी हो।
फिर हम दोनों ने थोड़ा पीछे दरवाजे के पास खड़े होकर पूरी स्थिति का जायजा लिया।
कोट की बांह बिल्कुल ऐसी लग रही थी, जैसा हम चाहते थे। अगर कोई थोड़े फासले से उसे देखता, तो यही समझता कि कोई व्यक्ति कुर्सी पर बांह रखे बैठा है।
"रियली फैंटास्टिक !" मैं बहुत गरमजोशी के साथ बोली- "सब कुछ बिल्कुल वैसा ही लग रहा है, जैसा हम चाहते थे। बस एक छोटी-सी कमी है।"
"क्या ?"
"अगर हम बांह वाली इस ट्यूब के साथ थोड़ा ऊपर को लाकर लोहे का एक ऐसा तार और जोड़ दें, जिस पर हैट टिकाया जा सके, तो हमारा काम और भी बढ़िया हो जायेगा।"
"वह तार भी मैं कल सुबह ही जोड़ दूंगा।"
"गुड !"
"क्या तुमने टेप पूरी तरह तैयार कर लिया है ?" विक्रम ने पूछा।
"हाँ, वह सब एकदम रेडी है। टेप मैं तुम्हें अभी सुनाती हूँ। बस थोड़ी व्यवस्था और ठीक कर लूं।"
मैंने आगे बढ़कर टेबल को कुर्सी के बिल्कुल सामने कर दिया, अब दोनों चीजें बिल्कुल उस स्थिति में आ गयीं, जैसी ऑफिस के अन्दर रखी हुई थीं। टेप को टेबल पर रख दिया गया और फिर उसे शुरू कर दिया गया।
उसके बाद हम दोनों दरवाजे के पास जा खड़े हुए और कुर्सी की तरफ देखने लगे।
टेप की आवाज कमरे में गूंजने लगी।
हालांकि आवाज हमने काफी कम की हुई थी, मगर फिर भी टेप से निकलती उस आवाज ने कमरे में बड़ा अलौकिक-सा वातावरण पैदा कर दिया था और उस समय ऐसा लग रहा था, जैसे वास्तव में ही कमरे के अन्दर कोई तीसरा प्राणी मौजूद हो।
एकाएक बीच में ही टेप में से मेरी आवाज निकलनी बंद हो गयी।
कुछ देर के लिये केबिन में सन्नाटा छा गया।
गहरा सन्नाटा।
हम दोनों ही उस समय दरवाजे के पास सांस रोके खड़े थे।
"सॉरी मिस्टर कमल जैन!" तभी कंप्यूटरमें से मेरी थोड़ी ऊंची आवाज निकली- "बस थोड़ी देर की और बात है, मैं अभी आपको ऑफिस के अन्दर बुलाती हूँ।"

उसके बाद फिर चिट्ठियां डिक्टेट करने की आवाज आने लगी।
मैंने विक्रम की तरफ देखा।
उसके चेहरे पर अब उम्मीद की हल्की-सी किरण चमक रही थी।
मैंने आगे बढ़कर टेप बंद कर दिया।
"जहाँ तक मेरा अनुमान है, अगर तुम सारा काम ठीक-ठाक करोगे।" मैं बोली- "तो कहीं कोई गड़बड़ होने वाली नहीं है। तुमने सिर्फ यह ध्यान रखना है कि मेरे द्वारा कमल जैन के लिये कहे गये वाक्य टेप में कब आते हैं।"
मैंने एक लिस्ट निकालकर विक्रम की तरफ बढ़ाई।
"यह क्या है?"
"यह उन चिट्ठियों की पूरे टाइम-टेबल के साथ लिस्ट है, जिनके जवाब में मैंने कंप्यूटर पर डिक्टेट किये हुए हैं। तुम इस लिस्ट को देखकर टाइम-टेबल अच्छी तरह कंठस्थ कर सकते हो, ताकि बाद में तुम्हें कोई परेशानी न आये।"
विक्रम ने लिस्ट पकड़ ली।
वह मेरी एक-एक बात बहुत गौर से सुन रहा था।
"आओ! हम एक बार फिर थोड़ी देर रिहर्सल कर लेते हैं। थोड़ी देर के लिये तुम मुझे कुमार समझो और ऐसा अंदाजा लगाओ, जैसे कमल जैन बाहर ड्राइंग हाल में बैठा हुआ है। ठीक?"
"ठीक।"
मैंने टेप को रिवाइंड करके फिर चालू कर दिया।
मेरी आवाज पुन: कमरे के अन्दर गूंजने लगी।
काफी देर तक हम लोग रिहर्सल करते रहे। हम इस बात की पूरी कोशिश कर रहे थे कि कहीं कोई गड़बड़ न हो जाये।

पांच

अगले दिन शुक्रवार था।

यानि हंगामें का दिन।

उस दिन मैंने एक काला लबादा लाकर पहले ही अपनी मेज की ड्रायर में रख लिया।

विक्रम हमेशा की तरह ही सहज मालूम हो रहा था। लेकिन सहज नहीं था। मेरा दिल घबरा रहा था और मैं आज सुबह-ही-सुबह बीयर के दो बड़े पैग डकार गयी थी।

मौसम भी कुछ खराब था।

"ऐसा मालूम होता है।" विक्रम ने कम्प्यूटर वाली अपनी सीट पर बैठे-बैठे कहा- "कि आज बारिश हो सकती है नताशा !"

"हाँ !" मैं भी बोली- "कुछ ऐसा ही लग रहा है। अगर बारिश हो गयी, तो यह ठीक नहीं होगा।"

"क्या तुम तब भी अपना काम करोगी ?"

"वह तो करना ही है।" मेरे स्वर में दृढ़ता थी- "कोई आंधी-तूफ़ान अब इस प्रोग्राम को कैंसिल नहीं कर सकता। आखिर हमने तमाम तैयारियां कर ली हैं।"

"गुड ! और माधवन का क्या किया तुमने ?"

"अभी थोड़ी देर पहले कुमार ने माधवन के लिये चाय बनायी थी।" मैं धीमी आवाज में बोली- "मैंने लेराइगो की चार टेबलेट उसमें घोल दी है।"

"वह कब तक अपना असर दिखायेंगी ?"

"देखो, जल्द ही उन्होंने अपना असर दिखाना चाहिए। धीरे-धीरे हम अपनी मंजिल की तरफ बढ़ रहे हैं विक्रम! बहुत जल्द हम आजाद होंगे। बिल्कुल आजाद !"

"काश ऐसा ही हो।"

विक्रम वह शब्द कहने के बाद बाहर खिड़की की तरफ देखने लगा।

मौसम वाकई अच्छा नहीं था।

कंप्यूटर मेज पर रखा हुआ था। कुर्सी एकदम सही स्थिति में थी और उस बात का ख़ास ख्याल रखा गया था कि ऑफिस में मद्धिम रोशनी रहे।

मेज की ड्रायर में मैंने लबादे के अलावा एक जोड़ी दस्ताने भी लाकर रख लिये थे।

ड्रायर में ही अभिजीत घोष पर आक्रमण करने के लिये लोहे की एक मजबूत रॉड भी रखी थी।

तमाम तैयारियां पूरी हो चुकी थीं।

तभी कुमार ऑफिस में आ पहुंचा।

"मैडम! एक बुरी खबर है।" कुमार ने अन्दर आते ही कहा।

"कैसी बुरी खबर ?"

"एकाएक माधवन बीमार हो गया है, जबकि घोष साहब को उसे लेकर शाम छः बजे किसी शादी में जाना है।"

"माधवन बीमार पड़ गया है।" मैंने चौंक पड़ने का जबरदस्त अभिनय किया- "क्या हो गया उसे ?"

"उस अभी-अभी दो-तीन बड़ी-बड़ी उल्टियां हुई हैं और वो सिरदर्द की भी शिकायत कर रहा है।"

"ओह! जरूर उसने कोई ऊटपटांग चीज खा ली होगी।"

"ऐसा उसने कुछ खाया भी नहीं, जिससे तबीयत खराब होती।" कुमार बोला- "बस थोड़ी देर पहले उसने चाय पी थी और वो चाय भी मैंने ही उसे बनाकर पिलाई थी।"

"फिर उसकी तबीयत कैसे खराब हुई?"

"मालूम नहीं।"

"ठीक है। मैं घोष साहब को इस बारे में इत्तला कर दूंगी।"

"थैंक यू मैडम!"

"कुछ और?"

"नहीं! मैं बस आपको यही सूचना देने आया था।"

कुमार चला गया।

कुमार के जाते ही मेरा दिल और जोर-जोर से धड़कने लगा।

चार बज चुके थे।

धीरे-धीरे वो समय नजदीक आता जा रहा था, जब सारा षड़यंत्र रचा जाना था।

□□□

मैं अभिजीत घोष के कमरे में पहुँची।

कुमार तब वहीं था।

जरूर उसने खुद ही वहां आकर अभिजीत घोष को माधवन के बीमार पड़ने की सूचना दे दी थी। उस समय उसके हाथ में काफी का एक प्याला था, जिसे वो अवश्य ही अभिजीत घोष के लिये लाया था।

"नताशा! तुमने इसकी बात सुनी।" अभिजीत घोष मेरे वहां पहुंचते ही बोला- "यह एक मुसीबत से भरी खबर और सुना रहा है।"

"माधवन के बारे में?"

"हाँ, वही।" अभिजीत घोष बोला- "कहता है, माधवन बीमार पड़ गया। इसने भी अभी बीमार पड़ना था।"

"मैं तो कहती हूँ।" मैं खासतौर पर कुमार को सुनाते हुए बोली- "अब आप देवीचरण शुक्ला के बेटे की शादी में जाना कैंसिल ही कर दो, तो ज्यादा बेहतर है।"

"ऐसा कैसे हो सकता है।" अभिजीत घोष ने तुरंत कहा- "देवीचरण शुक्ला मेरा पुराना मित्र है। अगर मैं उसके बेटे की शादी में न गया, तो वह नाराज होगा।"

कुमार ने कॉफ़ी का कप अभिजीत घोष के सामने टेबल पर ले जाकर रख दिया।

अभिजीत घोष ने कॉफ़ी का एक छोटा-सा घूँट भरा।

"फिर मौसम भी ठीक नहीं है।" मैं बोली।

"मौसम की तो कोई ख़ास बात नहीं।" अभिजीत घोष ने कहा- "थोड़ी देर में बादल छंट जायेंगे और अगर बारिश भी होने लगी, तब भी क्या परवाह है। आखिर मुझे कार में ही तो वहां जाना है।"

“फिर भी मैं समझती हूँ, अब आप वहां जाना कैंसिल ही कर दें, तो ज्यादा बेहतर है।”
“नहीं, मैं कैंसिल नहीं कर सकता।”
“क्यों ?”
“आज सुबह ही देवीचरण शुक्ला ने मुझे फिर फोन किया था और शादी में जरूर आने के लिये कहा था।”
“मगर जब माधवन ही बीमार है।” मैं बोली- “तो आप वहां कैसे जायेंगे?”
“क्या थोड़ी बहुत देर में उसकी तबीयत ठीक नहीं हो जायेगी?”
“नहीं !” कुमार की गर्दन इंकार में हिली- “उसकी तबीयत बहुत खराब है। मुझे तो नहीं लगता, वो कल सुबह तक भी ठीक हो पायेगा।”
“कोई बात नहीं। तो फिर मैं अकेला ही वहां चला जाऊंगा।”
“आप कार अच्छी तरह ड्राइव भी कर लेंगे ?” मैं थोड़े सशंकित लहजे में बोली।
मेरी बात सुनकर अभिजीत घोष हंसने लगा तथा उसने कॉफ़ी के दो-तीन घूँट और भरे।
“तुम मुझे क्या बिल्कुल ही बच्चा समझती हो। मैं माधवन से भी ज्यादा अच्छा कार ड्राईवर हूँ। मेरी चिंता न करो।”
“जैसा आप मुनासिब समझें।” मैं अभिजीत घोष के सामने हथियार-सा डालते हुए बोली।
अभिजीत घोष ने थोड़ी ही देर में काफी का वह कप खाली करके टेबल पर रखा।
साढ़े पांच बज चुके थे।
अभिजीत घोष अब शादी में जाने के लिये तैयार होने लगा।
तभीएकाएक आसमान का सीना चाक करके बहुत जोर से बिजली कड़कड़ाई और बारिश होने लगी।
“लो !” मैंने कहा- “बारिश भी शुरू हो गयी।”
“कोई बात नहीं। बारिश में भी कार ड्राइविंग का अलग ही आनंद है।”
अभिजीत घोष ने टाई की नॉट कसी और दर्पण के सामने खड़े होकर अपने बाल सँवारे। उसने ब्लू कलर का सूट पहना हुआ था, जिसमें वो काफी स्मार्ट दिखाई दे रहा था।
“पता नहीं !” मैं बोली- “ऐसी बारिश में कमल जैन यहाँ आ भी पायेगा या नहीं। मेरे लायक कोई काम तो नहीं है ?”
“नहीं। कोई काम नहीं है।”
“ठीक है, तो मैं ऑफिस में जाकर कमल जैन के साथ होने वाली मीटिंग की थोड़ी तैयारियां करती हूँ।”
“ओ.के.।”

□□□

मैं आनन-फानन ऑफिस में पहुँची।
विक्रम वहीं था।
अलबत्ता उसकी निगाहें बार-बार दरवाजे की तरफ उठ जाती थीं। वो उस क्षण डरा हुआ बिल्कुल नहीं था।

“यह देखो।” मेरे ऑफिस में पहुंचते ही विक्रम बोला- “मैं तुम्हारे लिये प्लास्टिक की टोपी लाया हूँ, इस बारिश में तुम्हारे बाल गीले बिल्कुल भी नहीं होने चाहिए।”

“वैरी गुड!”

विक्रम का दिमाग अब सचमुच काफी स्पीड से काम करने लगा था।

मैंने तेजी के साथ अपना कोट उतारकर कुर्सी पर डाल दिया और ड्रायर से लबादा निकालकर पहन लिया।

फिर मैंने प्लास्टिक की टोपी और दस्ताने भी पहने।

“तुम्हें सब कुछ याद है न ?” मैंने विक्रम की तरफ पलटकर कहा- “कि तुमने पीछे क्या-क्या करना है ?”

“यहाँ की तुम बिल्कुल चिंता मत करो।” विक्रम बोला- “तुम सिर्फ अपने काम की तरफ ध्यान दो।”

मैंने संतुष्टिपूर्ण अंदाज में ड्रायर के अन्दर हाथ डाला और लोहे की रॉड बाहर निकाल ली।

रॉड मैंने फ़ौरन ही लबादे के अंदर छुपा ली थी।

“तुम कितनी देर में वापस आओगी ?”

“मुश्किल से आधा घंटे में वापस आ जाऊंगी।” मैंने फुसफुसाकर कहा- “पीछे एक-एक बात का ध्यान रखना।”

“मैंने कहा न, यहाँ की बिल्कुल फ़िक्र मत करो।”

मैं अब ऑफिस में पीछे की तरफ बनी खिड़की के नजदीक पहुँच चुकी थी।

मेरे कूदते ही खिड़की वापस बंद हो गयी।

बारिश अभी भी हो रही थी। अलबत्ता बहुत तेज बारिश नहीं थी।

मैं बड़ी तेजी के साथ गैराज की तरफ बढ़ी।

अभिजीत घोष को गैराज तक पहुँचने में मुझसे ज्यादा वक्त लगना था। क्योंकि वो काफी घूमकर ढके हुए रास्ते से गैराज तक जाता, ताकि बारिश में भीग न सके। जबकि मैं सीधे कंपाउंड पार करके ही वहां पहुँच सकती थी। आखिर लबादे और टोपी का कम-से-कम यह फ़ायदा तो मुझे मिलना ही था।

□□□

मैं उस गैराज में पहुँची, जहाँ अभिजीत घोष की कैडीलॉक कार खड़ी होती थी।

गैराज काफी लंबा-चौड़ा था। उस समय गैराज का शटर खुला हुआ था। जरूर कुमार पहले ही उस शटर को खोल गया था।

मैं वहीं शटर के नजदीक थोड़े अँधेरे हिस्से में खड़ी हो गयी और अभिजीत घोष की प्रतीक्षा करने लगी।

यही सोच-सोच कर मेरा दिल धड़क जा रहा था कि मैं एक हत्या और करने वाली थी।

अगले कुछ क्षणों में क्या होने वाला था, यह खुद मुझे भी मालूम न था। तभी मैंने अँधेरे में एक साए को गैराज की तरफ ही आते देखा। साया नजदीक आया, तो पता चला कि तो वह अभिजीत घोष ही था।

मैंने लोहे की रॉड लबादे में से बाहर निकला ली और उसे मुट्ठी में कसकर पकड़ लिया।

मेरा दिल जोर-जोर से पसलियों को कूटने लगा। अभिजीत घोष अब काफी नजदीक आ चुका था। मैं अपना सांस रोके खड़ी रही। तभी अभिजीत घोष मेरे बिल्कुल बराबर में से गुजरा और गैराज के अन्दर दाखिल हो गया।

गैराज में पहुंचते ही उसने लाइट जलाई।

मैं अब लोहे की रॉड हाथ में कसकर पकड़े-पकड़े उसके बिल्कुल पीछे पहुँच चुकी थी।

उसी क्षण एक घटना घटी।

अभिजीत घोष को न जाने कैसे इस बात का एहसास हो गया कि कोई उसके पीछे है।

वह बड़ी तेजी से मेरी तरफ घूमा।

और !

उसके घूमते ही मेरा लोहे की रॉड वाला हाथ हरकत में आ गया।

रॉड अपनी प्रचंड गति से अभिजीत घोष की खोपड़ी पर पड़ी।

"नहीं...।"

अभिजीत घोष के हलक से ऐसी हृदयविदारक चीख निकली, जैसे पूंछ पहिये के नीचे आ जाने के कारण कुत्ता बहुत जोर से बिलबिलाया हो।

उसके घुटने मुड़ गये और वह नीचे को झुक गया।

तभी मैंने पुन: उसकी खोपड़ी पर रॉड का शक्तिशाली प्रहार किया। अभिजीत घोष धड़ाम से फर्श पर जा गिरा।

□□□

उसके बाद मैं कैडीलॉक के अन्दर सवार हो गयी।

कार की चाबियां मैंने अभिजीत घोष के कोट की जेब में से निकाल ली थीं। फिर मैंने फर्श पर पड़े अभिजीत घोष को भी कार के अन्दर घसीट लिया और ड्राइविंग सीट पर बिल्कुल इस तरह बिठाया, जैसे वही कार चला वाला हो।

मैंने उसका कोट झाड़कर साफ़ कर दिया।

खोपड़ी पर कनपटी के पास से खून की एक पतली-सी लकीर बह रही थी, मैंने रुमाल से खून की वो लकीर भी साफ़ कर दी और उसके बाल सुव्यवस्थित किये।

अब अभिजीत घोष एकदम चाक-चौबंद नजर आ रहा था।

अलबत्ता अभी वो मरा नहीं था। उसे सांस अटक-अटककर आ रहा था। मैंने उसके दोनों हाथ स्टेयरिंग व्हील पर टिका दिए और खुद भी वहीं ड्राइविंग सीट के नजदीक बैठ गयी। कार की डोम लाइट मैंने जलाई नहीं थी, ताकि कार के अन्दर का दृश्य किसी को भी एकदम स्पष्ट रूप से न दिखाई पड़े।

फिर मैंने कार का इंजन स्टार्ट किया।

तत्काल कार का इंजन घरघराकर जाग उठा और उसके बाद कार गैराज से निकलकर बाहर ड्राइव-वे की तरफ भागी।

मुझे लगा, बारिश का होना उस वक्त मेरे हक़ में अच्छा ही था।

क्योंकि एकाएक चारों तरफ अँधेरा घिर आया था और बारिश की बूंदों के कारण कुछ

भी स्पष्ट नजर नहीं आ रहा था। मैंने कार की विंड स्क्रीन के वाइपर भी ऑन कर दिए और अब वो रह-रहकर इधर से उधर घूम रहे थे।

अभिजीत घोष के हाथ स्टेयरिंग पर रखे जरूर थे, लेकिन कार मैं ही चला रही थी।

बंगले के फाटक के पास पहुंचकर मैंने कार एक क्षण के लिये रोकी। बहादुर बारिश में भीगता हुआ जल्दी से दौड़कर फाटक खोल रहा था। फाटक को खोलते हुए उसने एक नजर ड्राइविंग सीट पर भी डाली, जहाँ उसे स्वाभाविक रूप से अभिजीत घोष ही बैठा हुआ नजर आया।

फाटक खोलकर उसने बहुत जोर से अभिजीत घोष को एक सैल्यूट मारा।

तुरंत कार सर्राटे के साथ बहादुर के बराबर में से गुजरकर फाटक पार कर गयी।

बहादुर भी एक चश्मदीद गवाह बन चुका था।

यही कि उसने अभिजीत घोष को अकेले बंगले में से जाते देखा था।

कार द्रुतगति से सड़क पर दौड़ती रही।

कैडीलॉक अभी थोड़ी ही दूर गयी होगी कि मुझे सामने से सिल्वर कलर की एक टाटा इंडिका आती दिखाई पड़ी।

वह कमल जैन की कार थी।

ओह!

यानि कमल जैन बिल्कुल राइट टाइम पर वहां पहुँच रहा था।

जबकि बारिश को देखकर मेरे मन में संदेह हो गया था कि पता नहीं कमल जैन वहां आएगा या नहीं।

मैंने कार की रफ़्तार बढ़ा दी।

तभी एक घटना और घटी।

अभिजीत घोष को न जाने कैसे होश आ गया। उसके मुंह से कराह निकली और उसने मिचमिचाते हुए आँखें खोलने का प्रयास किया।

उसे होश में आते देखकर मैं भयभीत हो उठी।

एकाएक कार मेरे नियंत्रण से बाहर हो गयी। वह सड़क पर बड़ी बुरी तरह लहराई और एक भयानक एक्सीडेंट होते-होते बचा।

तभी कमल जैन की टाटा इंडिका सर्राटे के साथ मेरे बराबर में से गुज़री।

मैंने किसी तरह कार को संभाला और अभिजीत घोष की खोपड़ी पर एक दोहत्थड़ जमाया।

वह पुन: बेहोश हो गया।

थैंक गॉड!

उन चंद सेकंडों में ही मैं पसीने में लथपथ हो उठी थी।

मैंने पलटकर देखा। टाटा इंडिका पहले की तरह ही सड़क पर दौड़ी जा रही थी। अलबत्ता उसकी रफ़्तार अब कम थी।

अभी कमल जैन को बंगले तक पहुँचने में पांच मिनट और लगने थे।

यानी सारा काम अंजाम देने के लिये मेरे पास पच्चीस मिनट थे।

पच्चीस मिनट!

मैं घबरा उठी।

इन पच्चीस मिनट में मैंने मड-आइलैंड की पहाड़ी सड़क तक भी पहुँचना था। वहां पहुंचकर मैंने कार का पहिया बदलना था और सही पहिया उतारकर उसकी जगह फटा हुआ पहिया लगाना था, ताकि उसे पूरी तरह दुर्घटना का मामला समझा जा सके। फिर मैंने बैरकेट्स तोड़कर कार को पहाड़ी सड़क से नीचे धकेलना था। उस फिएट कार को खोजना था, जिसे विक्रम पहले ही पहाड़ी सड़क के पास छुपा गया था। फिर मैने तूफानी गति से बंगले पर वापस पहुँचना था। अस्तबल की साइड वाली एक खिड़की से बंगले के अन्दर घुसना था। वापस अपने ऑफिस में पहुँचना था। आनन-फानन अपना लबादा उतारकर कोट पहनना था और उसके बाद प्रकाशक कमल जैन के सामने ऐसा शो करना था, जैसे मैं तो शुरू से वहीं थी।

और यह सारा काम मैंने पच्चीस मिनट में करना था।

पच्चीस मिनट !

मुझे झुंझलाहट होने लगी।

मुझे लगा, मैं बहुत बेवक़ूफ़ लड़की हूँ। भला इतने सारे काम पच्चीस मिनट में कैसे हो सकते थे।

असंभव !

नामुमकिन !

किसी उपन्यास की कागजों पर योजना बनाना अलग बात है और उसे प्रैक्टिकल तौर पर अंजाम देना अलग बात है।

मेरे शरीर में सर्द लहर दौड़ गयी।

मुझे घबराहट हो रही थी।

मैंने मौसम का हाल देखा। बारिश कम जरूर हो गयी थी, लेकिन जिस तरह आसमान पर घने बादल घिरे हुए थे, उसे देखकर लगता नहीं था कि थोड़ी बहुत देर में बरसात रुक जायेगी।

□□□

जल्द ही कैडीलॉक पहाड़ी सड़क के नजदीक पहुंचकर रुक गयी।

वह पहाड़ी सड़क गवर्नमेंट गेस्ट हाउस से बस थोड़ा ही आगे थी। बहुत ऊंचाई पर थी और उस सड़क के दोनों तरफ गहरी खाइयाँ थीं।

विक्रम ने और मैंने पहले ही काफी सोच-समझकर उस सड़क का चयन कर लिया था। उस सड़क की सबसे बड़ी खूबी ये थी कि वो ज्यादातर खाली रहती थी और इतने खराब मौसम में तो वहां किसी वाहन के आने का मतलब ही न था।

मैंने पहाड़ी सड़क पर पहुंचकर कार रोकी और नीचे उतर आयी।

बारिश के थपेड़े अब सीधे मेरे ऊपर पड़ने लगे।

परन्तु मैंने परवाह न की।

मैंने कार की डिक्की खोली। फ़ौरन मुझे वो पहिया नजर आने लगा, जो बीच से फट गया था। उस पहिये की अब बड़ी उपयोगिता सिद्ध होने वाली थी। उसी पहिये की बदौलत

अब यह साबित होना था कि कार दुर्घटनाग्रस्त हुई है।

मैंने पहिया बाहर निकाल लिया।

उसके बाद मैं आनन-फानन अगला पहिया बदलने के कार्यकलाप में जुट गयी। मैंने औजार निकाल लिये।

हालांकि ऐसे तूफानी मौसम में किसी लड़की के लिये कार का पहिया बदलना कोई आसान काम न था।

चाबी बार-बार नट के ऊपर से फिसल-फिसल जाती थी।

मैं अब और भयभीत हो उठी।

टाइम भागा जा रहा था, जबकि पहिया बदलने का नाम नहीं ले रहा था।

बड़ी मुश्किल से मैं पहिया उतारने में कामयाब हुई।

अब फटा हुआ पहिया फिट करना और भी मुश्किल काम था। लेकिन मेरा हौसला फिलहाल काफी बढ़ चुका था और मेरे हाथ काफी जल्दी-जल्दी चल रहे थे।

जल्द ही मैं फटा हुआ पहिया फिट करने में कामयाब हो गयी।

लेकिन इस बीच एक घटना घट चुकी थी।

जिस ढक्कन में पहिये के खुले हुए नट रखे थे, न जाने कैसे वो ढक्कन पलट गया। ढक्कन के पलटते ही सारे नट इधर-से-उधर बिखर गये।

मैं और झुंझला उठी।

अँधेरे में इन नटों को तलाशना ही अब आसान काम न था।

मैं जितनी जल्द-से-जल्द वो काम निपटाना चाह रही थी, उतनी देर हो रही थी।

वह कुल छ: नट थे।

बड़ी मुश्किल से मैं उनमें से सिर्फ पांच नट ही तलाश पायी। एक नट की तलाश में और समय बर्बाद करना बेवकूफी थी।

पांच नट अच्छी तरह कसने के बाद मैंने पहिये के ऊपर ढक्कन चढ़ाया और फिर अपनी घड़ी देखी।

मेरे पास अब सिर्फ आठ मिनट बचे थे।

आठ मिनट !

फिर मैंने कार का दरवाजा खोला और अन्दर दाखिल हुई। अब मैंने कार का इंजन दोबारा स्टार्ट करना था और फिर उस कार को लकड़ी की बैरकेट्स तोड़कर नीचे गहरी खाई में धकेल देना था।

लेकिन कैडीलॉक के अन्दर दाखिल होते ही मैं सन्न रह गयी।

मेरे जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

अभिजीत घोष कार की ड्राइविंग सीट पर बिल्कुल चाक-चौबंद हालत में बैठा था। उसे होश आ चुका था और उस समय वो मेरी एक-एक एक्टिविटी देख रहा था।

□□□

"तु... तुम !"

मेरी आवाज भय से बुरी तरह कंपकंपायी।

मुझे ऐसा लगा, जैसे मेरे शरीर में कोई चिंगारी दौड़ गयी हो।

"क्यों ? मुझे होश में आया देखकर हैरानी हो रही है ?" अभिजीत घोष नफ़रतपूर्ण लहजे में बोला- "तुम्हारी सारी योजना मैं अब भांप चुका हूँ। तुमने मेरा ही दांव मेरे ऊपर चला दिया। मैं समझ रहा था कि मैं अपने उपन्यास का प्लाट तैयार कर रहा हूँ, लेकिन मैं नहीं जानता था कि वो सारा षड़यंत्र मेरी हत्या के लिये ही रचा जा रहा है।"

मैं खिलखिलाकर हंसी।

तभी बहुत जोर से आसमान का सीना चाक करके बिजली भी कड़कड़ाई।

"तुम्हें तो खुश होना चाहिए अभिजीत !" मैंने हंसते हुए ही कहा- "कि तुम्हारी जिन्दगी का जो सबसे शानदार प्लाट था, वो अब तुम्हारे साथ ही हकीकत में तब्दील हो रहा है। तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो। गुड बॉय !"

अभिजीत घोष एकाएक चीते की तरह मेरे ऊपर झपटा।

मगर !

मैंने उसे ज्यादा मौका नहीं दिया।

मैंने तत्काल लोहे की रॉड अपनी पूरी शक्ति से उसकी खोपड़ी पर खींचकर मारी।

रॉड इस बार बहुत प्रचंड रूप से उसकी खोपड़ी पर पड़ी थी। लोहे की रॉड पड़ते ही उसकी खोपड़ी फट गयी और वो वहीं ड्राइविंग सीट पर ढेर हो गया। वो अब अपने हाथ-पाँव पटक रहा था और जोर-जोर से सांस ले रहा था। मैं जानती थी, उसके प्राण बस निकलने ही वाले हैं।

मैंने अभिजीत घोष की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। मैंने आगे झुककर कैडीलॉक कार का इंजन स्टार्ट किया और धीरे-धीरे स्टेयरिंग व्हील घुमाना शुरू किया।

कार अब बैरकेट्स की तरफ बढ़ने लगी। फिर धीरे-धीरे उसकी रफ़्तार तेज होने लगी।

जैसे ही कैडीलॉक ने रफ़्तार पकड़ी, मैं तुरंत छलांग लगाकर एक तरफ हट गयी।

तभी कार बहुत जोर से बैरकेट्स से टकराई।

बैरकेट्स टूटने की भीषण आवाज हुई और फिर कार जबरदस्त गर्जना करती हुई नीचे गहरी खाई में जा गिरी।

मैंने नीचे झांककर देखा।

कार कई सौ फुट नीचे अब एक चट्टान पर जाकर अटक गयी थी। मेरे देखते-ही-देखते एकाएक वहां एक बड़ा तेज शोला भड़का और फिर पूरी कार धूं-धूं करके जल उठी।

□□□

बारिश अब रुक गयी थी।

मैंने उस पहाड़ी सड़क पर ज्यादा समय व्यर्थ नहीं गंवाया।

मैंने जल्द ही वो फिएट कार ढूंढ निकाली थी, जिसे विक्रम आज सुबह ही नजदीक की झाड़ियों में छुपा गया था। कुमार और माधवन वगैरा के सामने उसने यह बहाना बनाया कि कार के इंजन में थोड़ी खराबी आ गयी है, इसलिये वो उसे मोटर मैकेनिक के पास छोड़ आया है।

मैं आनन-फानन फिएट में सवार हुई और फिर मैंने वो फिएट तूफानी गति से बंगले की

तरफ दौड़ा दी।
कार मैंने बंगले से थोड़ा पहले ही रोकी और उसे पूर्व की भांति ऊंची-ऊंची झाड़ियों तथा घने पेड़ों के बीच में छुपा दिया।
फिर मैं दौड़ती हुई बंगले की पिछली साइड में पहुँची। वहां एक लोहे की मजबूत ग्रिल लगी हुई थी, जो सीधे अस्तबल की तरफ खुलती थी। मैंने उस ग्रिल को दोनों हाथों से पकड़कर पीछे की तरफ धक्का दिया, तो ग्रिल उखड़ गयी। विक्रम ने अन्दर से उसके बोल्ट पहले ही खोल दिए थे। मैं उसी खिड़की के रास्ते बंगले में दाखिल हुई। ग्रिल को पहले की तरह अपने स्थान पर फिक्स किया।
कुछ क्षण बाद ही जब मैं अपने ऑफिस की खिड़की की चौखट पर चढ़ी, तो मेरे कानों में अपनी ही वो आवाज पड़ी, जो मैंने कंप्यूटर पर रिकॉर्ड की थी।
मेरे चेहरे पर राहत के भाव उभरे।
यानि मेरी शहादत पक्की थी।
मैं कमरे में कूद गई।
जो लबादा मैंने पहना हुआ था, वो बुरी भीग चुका था। मेरे जूते मिट्टी में सने हुए थे और मेरे हाथ गंदे थे।
विक्रम मुझे देखते ही बड़ी तेजी से मेरी तरफ झपटा।
“थैंक गॉड !” विक्रम थोड़े शुष्क लहजे में बोला- “मैं तो सोच रहा था कि तुम पता नहीं आओगी भी या नहीं।”
विक्रम ने झपटकर एक बड़ा-सा तौलिया मुझे पकड़ा दिया।
“जल्दी करो। कमल जैन को इन्तजार करते-करते बहुत देर हो चुकी है और टेप भी बस ख़त्म होने वाला है।”
मैं आनन-फानन तौलिये से अपने हाथ-मुंह पोंछने लगी।
सिर पर मौजूद प्लास्टिक की टोपी भी मैंने उतार फेंकी।
“पीछे तो सब कुछ ठीक रहा न?” मैं अपने बालों को झटका देते हुए बोली।
“हाँ ! सब-कुछ ठीक रहा।” विक्रम बोला- “और वहां क्या हुआ ?”
“वहां भी सब-कुछ ठीक-ठाक निपट गया है।”
“शुक्र है।”
विक्रम के चेहरे पर भी संतोष के भाव उभरे।
अब कुर्सी पर रखा अपना कोट मैं पहन चुकी थी और हैट भी पहन लिया।
कुर्सी के हत्थे पर रखी बांह वाली ट्यूब हटा दी गयी।
लेकिन फिर भी मुझे अपनी टांगें कंपकंपाती महसूस हो रही थी।
“यह लो !” विक्रम ने आधा गिलास ब्रांडी मेरी तरफ बढ़ाई- “इसे पी जाओ, इससे सर्दी का एहसास थोड़ा कम होगा।”
“थैंक यू !” मैंने विक्रम की तरफ प्रशंसनीय नज़रों से देखा।
सच पूछो तो उस वक्त मुझे ब्रांडी की सख्त आवश्यकता अनुभव हो रही थी। मैं एक ही सांस में सारी ब्रांडी पी गयी। ब्रांडी पीते ही मानो मेरे जिस्म में जान पड़ गयी थी। फ़ौरन ही मेरी टांगें कंपकंपानी बंद हो गयीं और मेरे अन्दर हौसला आ गया।

"अब तुम सबसे पहले कमल जैन से जाकर मिलो।"
"ठीक है।"
मेरे चेहरे पर इस वक्त विजेता जैसी चमक थी।
हालांकि मुझे वहां पहुँचने में देर हो गयी थी, लेकिन फिर भी सबकुछ बिल्कुल योजनानुसार ही निपटा था।
इस बीच विक्रम ने तौलिया, लबादा, ट्यूब वगैरा सब चीजें मेज की एक ड्रायर में बंद कर दी थीं और फिर कंप्यूटर भी बंद कर दिया।
ऑफिस में सन्नाटा छा गया।
गहरा सन्नाटा।

□□□
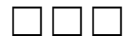
प्रकाशक कमल जैन उस वक्त ड्राइंग हाल में बैठा एक पत्रिका के पन्ने पलट रहा था और बोर हो रहा था।
तभी ऑफिस का दरवाजा खोलकर मैं चौखट पर नमूदार हुई।
"आई एम सॉरी मिस्टर जैन !" मैं खनकते स्वर में बोली- "मेरे कारण आपको थोड़ा इन्तजार करना पड़ा। दरअसल मैं कुछ जरूरी चिट्ठियां डिक्टेट कर रही थी।"
कमल जैन मुझे देखते ही फौरन सोफा चेयर छोड़कर खड़ा हो गया।
"कोई बात नहीं मैडम !" कमल जैन उत्साहपूर्वक बोला- "घोष साहब सचमुच काफी भाग्यशाली हैं, जो उन्हें आप जैसी मेहनत करने वाली पत्नी मिली, जो उनके काम में इतना हाथ बंटाती है।"
"ऐसी कोई बात नहीं है मिस्टर जैन !" मैं बहुत धीरे से मुस्कुराई- "भाग्यशाली तो मैं हूं, जो मुझे घोष साहब जैसे बड़े लेखक की पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आइए, अन्दर आइए।"
कमल जैन ने जब ऑफिस में कदम रखा, तभी विक्रम मेरे बराबर से होता हुआ बाहर चला गया।
मैं अपनी कुर्सी पर आकर बैठ चुकी थी।
मेरी सामने वाली कुर्सी पर प्रकाशक कमल जैन बैठा।
"जब मैं यहाँ आ रहा था।" कमल जैन बोला- "तभी मैंने घोष साहब को जाते देखा था। बाई गॉड, वह तो बहुत तेज कार चलाते हैं। मेरे सामने ही उनकी कैडीलॉक कार का बड़ा भीषण एक्सीडेंट होते-होते बचा था।"
"यह आप क्या कह रहे हैं ?"
"मैं बिल्कुल ठीक कह रही हूँ। और वह कार में भी अकेले थे, क्या उनका ड्राइवर उनके साथ नहीं गया ?"
"नहीं ! उसकी तबीयत आज एकाएक खराब हो गयी थी।"
"ओह !"
"चलिये छोडिये।" मैंने कंधे उचकाये- "अब हम कुछ बिजनेस की बातें करें, जिस सम्बन्ध में यह मीटिंग रखी गयी है। अगर घोष साहब का नया नॉवेल आपको छापने के

लिये दिया जाये, तो उसका पब्लिसिटी बजट क्या होगा, वह डिटेल आप लेकर आये हैं?"

"हाँ ! वह सारी डिटेल मैं लाया हूँ।" कमल जैन ने अपना काले रंग का ब्रीफकेस टेबल पर रखकर खोला और फिर उसमें से निकालकर कुछ पेपर मेरे सामने रखे।

मैं एक-एक पेपर बहुत ध्यानपूर्वक देखने का अभिनय करने लगी।

कमल जैन सारी तैयारी बड़ी मेहनत से करके लाया था, मगर वो बेचारा कहाँ जानता था कि घोष साहब का नया नॉवेल अब उसे तो क्या किसी को भी छपने के लिये नहीं मिलने वाला है।

□□□

तभी एकाएक टेलीफोन की घंटी बजने लगी।

टेलीफोन की घंटी ने मेरा ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया।

मैं चौंकी।

"हैलो !" मैं रिसीवर उठाकर काफी धीमें स्वर में बोली।

"कौन ? मैडम नताशा ?"

"यस।"

न जाने क्यों उस आवाज को सुनकर मैं थोड़ी चौकन्नी हो उठी।

"मैं देवी चरण शुक्ला बोल रहा हूं मैडम !"

"ओह शुक्ला साहब !" मैं खासतौर पर कमल जैन की तरफ देखते हुए बोली- "कहिए, क्या बात है ?"

"घोष साहब अभी तक यहां समारोह में नहीं पहुंचे हैं मैडम ! क्या वजह है, अब तो बारिश भी बंद हो गई।"

"घोष साहब नहीं पहुंचे?" मैं चौंकी- "लेकिन उन्हें तो यहां से चले हुए आधा घंटा हो चुका है। अब तक तो उन्हें पहुंच जाना चाहिए था।"

"मगर वह तो नहीं पहुंचे। हे भगवान ! कहीं रास्ते में कोई अनर्थ तो नहीं हो गया?" देवीचरण का चिंतित स्वर उभरा- "पांच बजे के करीब मैंने घोष साहब को फोन किया था, तो वह बता रहे थे कि एकाएक उनका ड्राइवर बीमार पड़ गया है, इसलिये वो खुद ही कार ड्राइव करते हुए लाएंगे। मेरा दिल घबरा रहा है, मुझे पुलिस को खबर करनी चाहिए।"

पुलिस !

मेरा दिल एकदम उछलकर हलक में आ फंसा।

मुझे फौरन मेज की ड्रायर में बंद अपने गीले लबादे, टोपी और ट्यूब की याद आई। उस फिएट कार की याद आई, जिसका रेडिएटर भी अभी पूरी तरह ठंडा नहीं हुआ होगा। अगर ऐसी परिस्थिति में पुलिस वहां पहुंच गई, तो निश्चय ही मेरी आफत आ जानी थी।

"आप खामखाह परेशान हो रहे हैं।" मैं थोड़े तेज स्वर में बोली- "पांच दस मिनट में घोष साहब वहां पहुंचने ही वाले होंगे। अगर वो न पहुंचे, तब आप मुझे फोन कीजिएगा।"

"उस दौरान उनका चाहे कहीं एक्सीडेंट हुआ पड़ा हो ?"

"प्लीज ! ऐसा कुछ नहीं होने वाला है। और अब मैं फोन बंद कर रही हूं।"

देवीचरण शुक्ला के कुछ भी कह पाने से पहले मैंने टेलीफोन का रिसीवर रख दिया।

फिर मैंने कमल जैन की तरफ देखा।

“आज नवभारत टाइम्स के संपादक देवीचरण शुक्ला साहब के लड़के की शादी है।” मैं कमल जैन से संबोधित हुई- “घोष साहब वहीं गये हुए हैं, लेकिन वो चूंकि अभी तक वहां नहीं पहुंचे, इसलिये शुक्ला साहब खामखाह परेशान हो रहे हैं। अगर नहीं पहुंचे, तो वे पहुंचने वाले होंगे। हो सकता है, रास्ते में ही कहीं रुक गये हों।”

“वह सड़क ठीक नहीं है मैडम।” मेरी बात सुनकर कमल जैन की आंखों में भी आतंक की छाया दौड़ी- “और फिर मैंने आपको पहले ही बताया था, घोष साहब काफी तेज रफ्तार से गाड़ी चला रहे थे।”

“माय गॉड ! अब आप भी बिल्कुल शुक्ला साहब की तरह बात करने लगे हो। अरे भाई ! घोष साहब कोई बच्चे नहीं हैं। यह सड़क उनकी अच्छी-खासी देखी भाली है। और ऐसे मौसम में भी उन्होंने पहले दर्जनों मर्तबा ड्राइविंग की होगी।”

कमल जैन खामोश हो गया।

लेकिन उसकी शक्ल बता रही थी कि मेरी बातों से वह संतुष्ट नहीं था।

वह शुक्ला साहब का फोन आते ही साफ-साफ अभिजीत घोष के लिये फिक्रमंद हो उठा था।

“चलो, हम थोड़ा काम निपटा लेते हैं।”

हम दोनों पहले की तरह ही नॉवेल के पब्लिसिटी मैटर पर बात करने लगे।

हालांकि उन बातों में मेरी भी कोई दिलचस्पी नहीं थी और मेरा ध्यान बार-बार अभिजीत घोष की तरफ चला जाता था, परंतु फिर भी मैं अपने आपको पूरी सहज दर्शा रही थी।

अभी दस मिनट ही और गुजरे होंगे कि तभी टेलीफोन की घंटी पुनः जोर-जोर से चीख उठी।

कोई नया झंझट !

कोई नई आफत !

प्रकाशक कमल जैन से पब्लिसिटी मैटर पर डिस्कस करते-करते मैं ठिठक गई और मैंने टेलीफोन से रिसीवर उठाया।

“हैलो !”

“इन्सपेक्टर विकास बोल रहा हूं।” दूसरी तरफ से एक भारी-भरकम आवाज मेरे कानों में पड़ी।

इन्सपेक्टर विकास बाली !

मेरा मुंह सूख गया।

मेरे चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

मैंने शीघ्रतापूर्वक कमल जैन की तरफ से पीठ फेर ली, ताकि वह मेरे चेहरे के भावों को न पढ़ सके।

“मैडम, मैं शुक्ला साहब के यहां से बोल रहा हूं।” विकास बाली की बहुत चिंतित आवाज मेरे कानों में पड़ी- “क्या आपको मालूम है, घोष साहब अभी तक यहां नहीं पहुंचे हैं।”

"क्या कह रहे हैं ?" मैंने भी अब बैचेनी का प्रदर्शन किया- "घोष साहब अभी तक वहां नहीं पहुंचे ?"

"नहीं ! मैं समझता हूं, जरूर बीच रास्ते में कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ हो गई है ।" इन्सपेक्टर विकास बाली बोला- "वरना घोष साहब ने काफी पहले ही यहां पहुंच जाना चाहिए था। मैं फौरन उन्हें ढूंढने निकल रहा हूं ।"

"मैं भी निकलती हूं ।" मैंने जल्दी से लाइन काट दी ।

मेरे हाथ-पैरों में कंपकंपी-सी दौड़ रही थी ।

"मिस्टर जैन !" मैं जल्दी से कुर्सी छोड़ कर खड़ी हो गई- "लगता है, कोई भारी गड़बड़ हो गई है । घोष साहब अभी तक शादी में नहीं पहुंचे हैं । इन्सपेक्टर विकास बाली उन्हें ढूंढने निकल पड़ा है । मैं भी उन्हें खोजने जा रही हूं ।"

"अगर आपको ऐतराज न हो, तो मैं भी आपके साथ चलूं?" कमल जैन कौतुहलतापूर्वक बोला ।

"क्यों नहीं ? जरूर !"

मैं और कमल जैन तुरंत ऑफिस से बाहर निकले ।

उसी क्षण विक्रम के कदम वहां पड़े ।

"आप कहां जा रही हैं मैडम ?" विक्रम कुछ चौंककर बोला ।

"इन्सपेक्टर विकास बाली को शक है कि कहीं घोष साहब का एक्सीडेंट न हो गया हो । वह उन्हें ढूंढने निकल पड़ा है । मैं भी वहीं जा रही हूं ।"

मेरी बात सुनकर विक्रम को जोरदार झटका लगा ।

साफ जाहिर था, सब कुछ काफी तेजी के साथ हो रहा था ।

"मैं इस सिलसिले में आपकी कुछ मदद कर सकता हूं ?" विक्रम बोला ।

"नहीं, तुम्हारी यहीं जरूरत है ।" मैं सीधे विक्रम की आंखों में झांकते हुए बोली- "मेरी टेबल पर कुछ कागज पड़े हैं, उन्हें तरीके से रख देना और जरा ड्रायर को भी चेक कर लेना । मेरे वापस आने तक हर चीज दुरुस्त रहे ।"

विक्रम तुरंत भांप गया, मैं क्या कह रही थी ।

उसने इन्सपेक्टर विकास बाली के बंगले में पहुंचने से पहले ड्रायर में रखा लबादा, ट्यूब और टोपी गायब करनी थी ।

अस्तबल के पास वाली ग्रिल के बोल्ट कसने थे ।

फिएट कार लाकर यथास्थान खड़ी करनी थी ।

"मैं चलती हूं ।"

"ठीक है मैडम !"

मैं कमल जैन के साथ बाहर निकल गई ।

□□□

कमल जैन की टाटा इंडिका तूफानी रफ्तार से दौड़ती हुई घटनास्थल पर पहुंची ।

परंतु हमारे से पहले ही इन्सपेक्टर विकास बाली वहां पहुंच चुका था और पुलिस का अच्छा-खासा लाव-लश्कर उस जगह मौजूद था ।

बारिश अब बिल्कुल नहीं हो रही थी।

अलबत्ता रात का अंधेरा चारों तरफ फैला हुआ था, जिसे दूर करने के लिये दो बहुत हाई पावर की सर्च लाइटें वहां जल रही थीं। एक क्रेन भी उस वक्त वहां थी, जो लगभग तभी पहुंची थी और अब क्रेन के द्वारा अभिजीत घोष की दुर्घटनाग्रस्त कैडीलॉक कार को बाहर निकालने की तैयारियां हो रही थीं।

मैं अभी टाटा इंडिका से बाहर भी नहीं निकल पाई थी, तभी इन्सपेक्टर विकास बाली तेज-तेज कदमों से चलता हुआ मेरे नजदीक पहुंचा।

"यह सब क्या हो गया है ?" मैं हतप्रभ लहजे में बोली- "क्या कर रहे हैं आप लोग ?"

"आप धैर्य रखें और यहीं बैठी रहें मैडम !" विकास बाली कार की खिड़की के नजदीक थोड़ा झुककर बोला- "दरअसल जिस बात का डर था, वही हो गया है। घोष साहब की कार का भीषण एक्सीडेंट हो चुका है।"

"न... नहीं !" मेरे मुंह से तेज सिसकारी छूटी।

मैं जल्दी से कार से बाहर निकलने को हुई।

"प्लीज, आप यहीं बैठी रहें।"

"लेकिन घोष साहब को क्या हुआ है ?"

"हम जल्द-से-जल्द वही जानने की कोशिश कर रहे हैं। जैसे ही कार बाहर निकलेगी, सब-कुछ साफ़ हो जायेगा।"

मैं आतंक की प्रतिमूर्ति बनी कार की अगली सीट पर बैठी रही।

कमल जैन भी कार से बाहर नहीं निकला था।

तमाम पुलिसकर्मी बड़े जोर-शोर के साथ खाई में से कार निकालने के कार्यकलाप में जुटे थे। कुछेक पुलिसकर्मी क्रेन के आगे लटके छोटे से बक्से में बैठकर नीचे खाईं में ही उतर गये और फिर उन्होंने वापस आकर इन्सपेक्टर विकास बाली से कुछ कहा। उस खबर को सुनते ही विकास बाली का चेहरा यूं सफेद फक्क पड़ गया, जैसे किसी ने मिक्सी में डालकर उसके जिस्म का सारा खून निचोड़ दिया हो।

वह लड़खड़ाते कदमों से दोबारा मेरे नजदीक आया।

"क्या हुआ ?" मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"आपके लिये एक बुरी खबर है मैडम !"

"क... कैसी बुरी खबर ?"

मैं उस समय एक घबराई हुई पत्नी का बड़ा कुशल अभिनय कर रही थी।

मेरे चेहरे पर एक रंग आ रहा था, एक जा रहा था।

"घोष साहब का देहांत हो चुका है।"

"न...नहीं !"

मैं इतनी जोर से चीखी कि आसपास का सारा वातावरण दहल उठा।

मैं एकदम झपटकर कार से बाहर निकली और खाई की तरफ दौड़ी, लेकिन बीच रास्ते में ही इंस्पेक्टर विकास बाली और कमल जैन ने मुझे पकड़ लिया।

"मैडम नताशा !" विकास बाली ने मेरे कंधे पकड़कर बुरी तरह झंझोड़े- "होश में आइए। जो होना था, वह हो चुका है।"

मैं विकास बाली के कंधे पर सिर रखकर जोर से फफक उठी।

मैंने देखा, इन्सपेक्टर विकास बाली और कमल जैन की आंखों में आंसुओं की बूंदे टिमटिमा आई थीं। तब कहीं विकास बाली का ध्यान कमल जैन की तरफ गया।

"यह कौन हैं ?" उसने रुककर पूछा।

"यह कमल पॉकेट बुक्स के मालिक मिस्टर कमल जैन हैं।" मैं धीरे-धीरे फफकते हुए बोली- "जिस वक्त आपका फोन आया, तब यह मेरे ही साथ थे।"

लेकिन शीघ्र ही मैंने अपने होंठ काटे।

मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। मुझे इन्सपेक्टर विकास बाली के सामने यूं अपनी शहादत पेश नहीं करनी चाहिए थी।

□□□

अभिजीत घोष की मौत का समाचार जैसे ही बंगले में पहुंचा, तो वहां भी जबरदस्त शोक की लहर दौड़ गई।

मैं अब वापस बंगले में लौट आई थी। मेरे हाथ-पैर अजीब-सी आशंका से कंपकंपा रहे थे और मुझे लग रहा था, कोई-न-कोई भयानक गड़बड़ होने वाली है।

विक्रम मेरे पास पहुंचा।

"ड्रायर में रखे सामान का क्या किया तुमने ?" मैं बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाई।

"वह सब मैंने ठिकाने लगा दिया है।"विक्रम का चेहरा भी सुता हुआ था।

"और ग्रिल के बोल्ट, फिएट कार?"

"ग्रिल के बोल्ट मैंने कस दिए हैं।" विक्रम बोला-"अलबत्ता फिएट कार मैं दिन निकलने पर लेकर आऊंगा। इतनी रात को मैकेनिक के यहां से फिएट कार लाना काफी अस्वाभाविक लगेगा।"

"ठीक है।"

विक्रम भी अपनी हर जिम्मेदारी को अच्छी तरह निभा रहा था।

मैंने एकाएक आगे बढ़कर विक्रम को अपनी बाहों में समेट लिया और बड़े अनुरागपूर्ण ढंग से उससे चिपट गई।

"अब हम आजाद हैं विक्रम !" मैं अकस्मात् बड़ी गरमजोशी के साथ बोली- "अब हमारी मोहब्बत पर पहरा लगाने वाला कोई नहीं। मैंने रास्ते की हर रुकावट दूर कर दी है। अब हम दोनों शादी करेंगे।"

"पीछे हटो।" एकाएक विक्रम ने मुझे अपने से अलग झटक दिया- "यह इस तरह की फालतू बातें करने का समय नहीं है।"

मैं चौंकी।

विक्रम ने जितनी बेदर्दी के साथ मुझे झटका था, उसने मुझे चौंकाकर रख दिया।

"फालतू बातें ?" मैं विस्मयपूर्वक बोली- "क्या मतलब ?"

"देखो, मैं तुमसे इस बारे में अब कोई बात नहीं करना चाहता।" विक्रम ने दृढ़ता के साथ कहा- "इन्सपेक्टर विकास बाली बहुत चालाक है। अगर उसे हमारे संबंधों की जरा भी भनक लग गई, तो वह फौरन भांप जायेगा कि घोष साहब की हत्या के पीछे हम दोनों

का ही हाथ है । इसलिये फिलहाल अब तुम इस कहानी को यहीं खत्म समझो । अब मैं तुमसे कभी अकेले में मिलने की कोशिश नहीं करूंगा और न ही तुम करना ।"

"कहानी खत्म !" मेरे शरीर में सर्द लहर दौड़ गई- "यह तुम क्या कह रहे हो विक्रम ? अभी तो हमारी कहानी शुरू हुई है । अभी तो हमने शादी करनी है ।"

"शादी?" विक्रम बड़े व्यंग्यात्मक ढंग से हंसा- "तुम क्या समझती हो, मैं तुम्हारी जैसी लड़की से शादी करूंगा मैडम नताशा ! हरगिज़ नहीं ! यह सपना देखना तो तुम बंद कर दो ।"

विक्रम की बातें सुन-सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हुए जा रहे थे । मेरे सिर पर वज्रपात हो रहा था ।

"लगता है, तुम पागल हो गये हो ।" मैं क्रोध में गुर्रा उठी- "तुम भूल गये हो, मैंने तुमसे क्या कहा था । मैंने कहा था कि अगर तुमने बाद में जरा भी चालाकी दिखाने की कोशिश की, तो मैं खुद को पुलिस के हवाले कर दूंगी । और उसके बाद क्या होगा, इसका तुम आसानी से अंदाजा लगा सकते हो ।"

"ठीक है ।" विक्रम हंसा- "अगर तुम इतनी ही बहादुर हो, तो कर दो खुद को पुलिस के हवाले । लेकिन यह मत भूलना कि घोष साहब की हत्या सिर्फ तुमने की है । और उससे पहले अपने सात प्रेमियों की हत्या का इल्जाम भी तुम्हारे सिर पर है । जाओ, और बता दो पुलिस को सब कुछ । मगर अब मुझसे संबंध रखने की कोई जरूरत नहीं है ।"

वह शब्द कहने के बाद विक्रम वहां से चला गया ।

मैं घोर विस्मय से उस दरवाजे को देखती रही, जिसमें से अभी-अभी विक्रम गया था ।

मैं अपने कानों पर यकीन नहीं कर पा रही थी कि विक्रम ने जो कुछ कहा, वो दिल से कहा है ।

वह एकदम इस तरह कैसे बदल सकता था ?

माजरा मेरी समझ में नहीं आ रहा था ।

जरूर कुछ गड़बड़ थी ।

भारी गड़बड़ ।

उस दिन सारी रात मुझे नींद नहीं आई ।

मैं बस बेचौनीपूर्वक करवटें बदलती रही। मेरी आंखों के गिर्द रह-रहकर बचपन से अबतक की तमाम घटनाएं फिरने लगीं । एक-एक करके अपने सभी प्रेमियों के चेहरे मेरी आंखों के गिर्द घूमे और फिर उस साधु की भविष्यवाणी भी याद आई, जिसने कहा था कि मेरे जीवन में पुरुष का प्रेम नहीं है ।

सचमुच मुझसे गलती हो चुकी थी ।

भयानक गलती ।

जो मैंने विक्रम के प्रेम में अंधे होकर अभिजीत घोष जैसे अपने पति को मार डाला ।

मैं मूर्ख थी ।

महामूर्ख ।

अभिजीत घोष, जो मेरी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हो सकता था, मैंने खुद उस पड़ाव को अपने हाथों से नष्ट कर डाला ।

□□□

अगले दिन अभिजीत घोष की लाश पोस्टमार्टम होकर आ गई और फिर उसका दाह संस्कार भी कर दिया गया।

मुंबई शहर की बड़ी-बड़ी हस्तियां उसके दाह संस्कार में सम्मिलित हुईं।

कुमार का तो रो-रोकर बुरा हाल था।

अभिजीत घोष के मरने का सबसे ज्यादा दुख कुमार को ही था।

अगले दिन चार बजे के करीब टेलीफोन की घंटी बजी, मैंने रिसीवर उठाया।

"हैलो !"

"मैडम नताशा !"

उस आवाज को सुनते ही मैं पहचान गई। वो प्रकाशक कमल जैन की आवाज थी।

"जी हां ! मैं नताशा ही बोल रही हूं।"

"मैडम, मैं कमल जैन। मैंने सोचा कि इन्सपेक्टर विकास बाली के बारे में आपको कुछ बताऊं।"

"इन्सपेक्टर विकास बाली !" मेरे शरीर का एक-एक रोआं खड़ा होता चला गया।

न जाने क्यों उस नाम को सुनते ही मेरे शरीर में दहशत की लहर दौड़ती थी।

"दरअसल इन्सपेक्टर विकास बाली अभी थोड़ी देर पहले मेरे पास आया था। वह मुझसे बड़े अजीब-अजीब सवाल पूछ रहा था।"

"कैसे अजीब सवाल ?"

"सवाल तो कई तरह के थे, लेकिन उसका केंद्र आप ही थीं। वह आपके बारे में बहुत खोद-खोदकर सवाल कर रहा था। जैसे वो जानना चाहता था, छः से साढ़े छः के बीच आप कहां थीं ? क्या कर रही थी ?"

"फिर आपने क्या कहा?" मैं बहुत स्तब्ध मुद्रा में बोली।

मेरा दिल धड़कने लगा।

"मैंने वही कहा, जो सच है।" कमल जैन बोला- "मैंने कहा कि उस समय आप अपने ऑफिस में थीं और जरूरी चिट्ठिया डिक्टेट कर रही थीं। लेकिन मेरी बात से वो कुछ संतुष्ट दिखाई नहीं दिया। आपको सुनकर दुख होगा मैडम, मगर यह सच है कि वह घोष साहब की हत्या का शक आपके ऊपर कर रहा है।"

"हत्या ?" मैं बहुत विस्फारित लहजे में बोली- "परंतु घोष साहब की हत्या कहां हुई है, वह तो एक एक्सीडेंट था।"

"बिल्कुल यही बात मैंने भी इन्सपेक्टर विकास बाली से कही। मगर वो उसे एक्सीडेंट मानने के लिये तैयार नहीं है। वो कह रहा था कि यह हत्या का मामला है। मैं समझता हूं, वह इस बारे में बंगले के नौकरों से भी पूछताछ करेगा। इसलिये मैंने सोचा कि उस खब्ती इन्सपेक्टर के बारे में आपको सूचित कर दूं।"

"थैंक यू !"

"अगर मेरे लायक कोई सेवा हो।" कमल जैन बोला- "तो मुझे बे-हिचक बताना मैडम !"

"जरूर !"

मैंने टेलीफोन का रिसीवर रख दिया।
मेरे दिल की हालत बुरी होती जा रही थी।
आफत-पर-आफत आ रही थी।
मैंने सोचा भी न था, ऐसी बख्तरबंद शहादत के बावजूद भी इन्सपेक्टर विकास बाली इतनी जल्दी मेरे ऊपर शक करने लगेगा।

□□□

मुश्किल से एक घंटे बाद ही इन्सपेक्टर विकास बाली की नीली जिप्सी बंगले में जाकर रुकी।
उसकी जिप्सी देखते ही मेरे शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी। जिप्सी से उतरकर उसने सबसे पहले नेपाली चौकीदार बहादुर से बात की और फिर बंगले में अन्दर की तरफ बढ़ गया। परन्तु उसके बाद भी वो काफी देर तक मेरे पास नहीं आया। जरूर वो विक्रम, कुमार और माधवन वगैरा से भी उनके बयान ले रहा था।
फिर वो मेरे पास आया।
मैं उस समय ड्राइंग हॉल में थी और काफी गमगीन हालत में बैठी हुई थी। मैंने उठकर इन्सपेक्टर विकास बाली का स्वागत किया।
"आइये मिस्टर बाली, बैठिये !"
"थैंक यू !"
विकास बाली मेरे सामने वाले सोफा पर बैठ गया।
मैं भी बैठी।
हालांकि उस इंसान का सामना करते हुए मैं काफी घबरा रही थी, परन्तु फिर भी मैंने काफी हौसले से काम लिया। कम-से-कम एक बात मैं बहुत अच्छी तरह जानती थी कि वह इन्सपेक्टर चाहे कितना ही चालाक क्यों न सही, परन्तु आसानी से मेरे ऊपर हत्या का इल्जाम साबित नहीं कर पायेगा। इन्सपेक्टर विकास बाली कुछ क्षण खामोश रहा और उसने एक सिगरेट सुलगा ली।
"कुछ पता चला।" मैं बहुत धीमी आवाज में बोली- "कि घोष साहब का एक्सीडेंट किस तरह हुआ था ?"
"हाँ, पता चल गया है।" विकास बाली ने सिगरेट का एक कश लगाया- "दरअसल उनकी कार का एक टायर फट गया था।"
"ओह !"
मेरे चेहरे पर दुःख और वितृष्णा की लकीरें और भी गहरी हो गईं।
"मुझे मालूम हुआ है।" इन्सपेक्टर विकास बाली ने थोड़ा रुककर पूछा- "कि कल शाम छः बजे तक आप अपने ऑफिस में ही थीं और कुछ जरूरी चिट्ठियां डिक्टेट कर रही थीं।"
"जी हाँ ! यह बात सच है।" मैंने बे-हिचक स्वीकार किया- "मगर इस बात का घोष साहब के एक्सीडेंट से क्या संबंध है ?"
"एक्सीडेंट ! वह एक्सीडेंट नहीं था मैडम ! इट वाज मर्डर ! वह हत्या का बिल्कुल खुला हुआ मामला है।"

मेरे दिल ने मानो धड़कना बंद कर दिया।

मुझे ऐसा महसूस हुआ, जैसे मैं सांस लेना भूल चुकी थी।

"हत्या ! अ... आप शायद मजाक कर रहे हैं मिस्टर बाली ?"

"मैं इतने सीरियस मैटर पर कभी मजाक नहीं करता मैडम !" विकास बाली ने वह शब्द मेरी आँखों में आँख डालकर बहुत दृढ़ता के साथ कहे- "मैं इसीलिये आपकी शहादत की बात कर रहा हूँ कि घोष साहब की हत्या के समय आप कहाँ थीं।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?" मैं एकाएक भड़क उठी- "कहीं तुम यह तो नहीं सोच रहे कि घोष साहब की मैंने हत्या की है ?"

"जब तक हत्यारा पकड़ा नहीं जाता, तब तक मेरा यह दायित्व बनता है कि मैं हर किसी के ऊपर शक करूं।"

"लेकिन मैं उस वक्त ऑफिस में बैठी हुई चिट्ठियां डिक्टेट कर रही थी।" मैं कर्कश लहजे में बोली- "विक्रम मेरे साथ था। मिस्टर कमल जैन मेरे साथ थे। कुमार मेरे साथ था। क्या इतने लोगों की शहादत तुम कम समझते हो ? या फिर हम सभी हत्या के इस षड़यंत्र में शामिल थे ?"

विकास बाली निरुत्तर हो गया।

कुछ देर वो सोफा चेयर पर बड़ी बेचैनी के साथ इधर-से-उधर पहलू बदलता रहा।

"यह सच है, तुम्हारे पास अपने निर्दोष होने की बड़ी बख्तरबंद शहादत है।" फिर विकास बाली ने सिगरेट का एक और कश लगाते हुए कहा- "मगर फिर भी मैं यह दावे से कह सकता हूँ कि घोष साहब का खून तुम्हीं ने किया है। दरअसल जब तुमने घोष साहब से शादी की थी, मैं तभी भांप गया था कि घोष साहब के साथ कुछ-न-कुछ अनिष्ट होने वाला है। तुमने देखा भी होगा कि मैं उस शादी से कोई बहुत ज्यादा खुश नहीं था।"

इन्सपेक्टर विकास बाली बोलता जा रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे भय मेरे कलेजे में अपने खौफनाक पंजे गड़ाने लगा हो।

"मुझे सिर्फ एक रहस्य का पता लगाना है।"

"क... कौन से रहस्य का ?"

"यही कि तुम एक समय में दो जगह उपस्थित कैसे रह पायी, बस यही एक गुत्थी मैं सुलझा नहीं पा रहा हूँ। जिस पल मैंने यह गुत्थी सुलझा ली, उसी पल तुम जेल की सलाखों के पीछे होओगी।"

"तुम जरूर पागल हो गये हो।" मैं गुर्रा उठी- "पता नहीं क्या ऊल-जलूल बात बके जा रहे हो। मैं तो अभी यही नहीं समझ पा रही हूँ कि तुम उस बिल्कुल ओपन एंड शट केस को हत्या का मामला करार देने पर क्यों तुले हुए हो ?"

"क्योंकि वो हत्या का ही मामला था।"

"कैसे जाना ?"

"बताता हूँ।" इन्सपेक्टर विकास बाली पूरी दिलेरी से और बिना विचलित हुए बोला- "दरअसल वो टायर कल रात नहीं फटा था। बल्कि कल रात तो उस फटे हुए टायर का बड़ी खूबसूरती से इस्तेमाल किया गया था। हुआ ये था कि घोष साहब का हत्यारे ने पहले मर्डर किया और फिर उनकी कार को चलाता हुआ पहाड़ी सड़क तक ले गया। पहाड़ी

सड़क पर पहुंचकर उसने कार का टायर बदला। सही टायर उतारकर कार की डिक्की में डाल दिया और उसकी जगह वो फटा हुआ टायर लगा दिया, जो पहले ही कार की डिक्की में मौजूद था। फिर उसके बाद हत्यारे ने घोष साहब को कार की ड्राइविंग सीट पर बिल्कुल इस तरह बैठाया, जैसे वही कार चला रहे हों। फिर उसने कार का इंजन स्टार्ट किया। कार का रुख बैरकेट्स की तरफ मोड़ा और एक्सिलरेटर दबा दिया। तत्काल कार बन्दूक से छूटी गोली की भांति बैरकेट्स की तरफ दौड़ी और बैरकेट्स की धज्जियाँ उड़ाती हुई नीचे गहरी खाईं में जा गिरी।"

मेरा खून बिल्कुल बर्फ की तरफ ज़मने लगा।

उफ़!

कम्बख्त पूरा घटनाक्रम एकदम इस तरह सुना रहा था, जैसे सब कुछ उसी की आँखों के सामने घटित हुआ हो।

"क्यों?" इन्सपेक्टर विकास बाली ने मेरी आँखों में झांका- "क्या सब कुछ इसी तरह नहीं हुआ था?"

"मैंने कहा न, तुम पागल हो गये हो।" मैंने दांत कटकटाये- "पता नहीं क्या-क्या बके जा रहे हो। यह बात तुम किस आधार पर कह सकते हो कि सब कुछ इसी तरह हुआ था?"

"आधार भी है मेरे पास।"

"क्या?"

"दरअसल तुम्हें सुनकर धक्का लगेगा।" इन्सपेक्टर विकास बाली रहस्योद्घाटन करता हुआ बोला- "कि घोष साहब की जो एक्सीडेंटल कार गहरी खाई से निकाली गयी और उसका जो एक टायर फटा हुआ था, उस फटे हुए टायर के अन्दर से काफी सारी रेत मिली है और उसी रेत ने यह तमाम रहस्य खोला है।"

"रेत ने रहस्य खोला, वो किस तरह?"

"वह भी बताता हूँ। दरअसल जिस पहाड़ी सड़क पर वो दुर्घटना घटी, वहां दूर-दूर तक भी रेत नहीं है। ऐसी हालत में अगर उसी पहाड़ी सड़क पर टायर फटा था, तो फिर उसके अन्दर रेत कैसे पहुँच गयी? वो रेत ही सारी कहानी खुद कह रही है। वास्तव में घोष साहब की कार का वह टायर पहले कभी किसी बीच पर फटा था, जहाँ ढेर सारी रेत होती है। टायर फटने के बाद जब वो घिसटा, तो उसके अन्दर रेत भी घुस गयी। पहाड़ी सड़क पर तो सिर्फ नकली एक्सीडेंट प्लांट किया गया था। घोष साहब की सही-सलामत कार का पहिया उतारकर उसकी जगह वो फटा हुआ पहिया चढ़ाया गया। इसके अलावा जब मैंने उस पहिये को अच्छी तरह चेक किया, तो मैंने उसका एक नट भी गायब पाया। उसमें सिर्फ पांच नट चढ़े हुए थे। मैंने पहाड़ी सड़क पर ही उस छठे नट को तलाश किया, तो मुझे वह मिल गया। यह देखो!" विकास बाली ने अपनी जेब से पहिये का छठा नट निकालकर मुझे दिखाया- "यह छठा नट भी इस सारे षड़यंत्र की कहानी खुद बयां कर रहा है। मैडम, यह छठा नट चूंकि पहाड़ी सड़क पर बरामद हुआ, इसलिये स्पष्ट तौर पर साबित हो जाता है कि पहिया वहां बदला गया था। सब कुछ प्री-प्लांड था। पूर्व योजनाबद्ध था। अब आप कहिये कि यह एक्सीडेंट का ओपन एंड शट केस है। यह हत्या का मामला नहीं है।"

मुझे चक्कर आने लगा।

खौफ से मेरे प्राण निकले जा रहे थे।

इन्सपेक्टर विकास बाली ने साबित कर दिखाया था, वो वास्तव में ही अभिजीत घोष के जासूसी उपन्यासों का फैन है और खुद भी उनके उपन्यासों के करैक्टरों से कुछ कम सनसनीखेज नहीं है।

"ल... लेकिन इन सब बातों से यह कहाँ साबित होता है।" मैं विचलित लहजे में बोली- "कि यह सारा षड़यंत्र मैंने रचा था ?"

"यह भी साबित होगा।" इन्सपेक्टर विकास बाली पूरे यकीन के साथ बोला- "इतना ही नहीं, यह भी साबित होगा कि इस पूरे षड़यंत्र को तुम अकेले नहीं रच सकतीं। क्या विक्रम ने तुम्हारा साथ दिया था ?"

मेरी बौखलाहट बढ़ने लगी।

विक्रम !

कम्बख्त ने कितना सही निशाना लगाया था।

"लगता है, तुम बिलकुल पागल हो गये हो।" मैं कातर स्वर में बोली- "विक्रम से भला मेरा क्या ताल्लुक है ?"

विकास बाली चुपचाप मेरी तरफ देखता रहा।

"विक्रम से तुम्हारा कोई ताल्लुक हो या न हो।" वह सिगरेट का कश लगाते हुए बोला- "लेकिन तुम्हारे बाद एक विक्रम ही ऐसा शख्स है, जिसे घोष साहब की मौत से फ़ायदा होगा। बल्कि घोष साहब की मौत से सबसे बड़ा फ़ायदा तो विक्रम को ही होने वाला है।"

मैं चौंकी।

वह मेरे लिये एक नई सूचना थी।

"विक्रम को सबसे बड़ा फायदा होने वाला है, वो कैसे ?"

"लगता है, अभी तुमने घोष साहब की वसीयत नहीं पढ़ी है कि उसमें क्या लिखा है।"

"नहीं !" मेरी गर्दन इंकार में हिली- "मैंने वसीयत नहीं पढ़ी।"

"तभी तो तुम यह बात कह रही हो। दरअसल घोष साहब के अस्तबल में जो आठ घोड़े हैं, घोष साहब की वसीयत के अनुसार वो सभी आठ घोड़े उनके बाद विक्रम को मिल जायेंगे। और तुम्हें सुनकर हैरानी होगी कि उन घोड़ों की कुल कीमत चौदह करोड़ रुपये है।"

"चौदह करोड़ के घोड़े।" मेरे नेत्र विस्मय से फट पड़े।

"जी हाँ ! उनमें जो जैकी नाम का घोड़ा है, उसी अकेले घोड़े की कीमत छ करोड़ रुपये है। इस हिसाब से घोष साहब के बाद उनकी कुल सम्पदा के सबसे बड़े हिस्से का मालिक तो विक्रम ही होगा। तुम्हारे हिस्से में घोष साहब का सिर्फ यह बंगला आया है, जिसकी कीमत दस करोड़ से ज्यादा नहीं है।"

"ल...लेकिन मुझे तो मालूम हुआ है कि घोष साहब की कुल संपत्ति सौ करोड़ से भी ज्यादा है।"

"कौन कह रहा था तुमसे यह बात, क्या विक्रम ?" इन्सपेक्टर विकास बाली के होठों पर हल्की-सी मुस्कान रेंगी- "जरूर वो तुम्हें मूर्ख बना रहा था। जितना वो खामोश रहता है, उतना ही वो दुष्ट और चालाक प्रवृत्ति का आदमी है। घोष साहब की सम्पदा में सबसे

मूल्यवान कोई चीज थी, तो वह आठ घोड़े थे। जिनका अब विक्रम मालिक बन चुका है। अब वो अपनी प्रेमिका मारिया से शादी कर सकेगा।"

"मारिया से शादी !" मुझे एक और जोरदार शॉक लगा- "क्या मारिया पहले से उसकी पत्नी नहीं थी ?"

"मतलब ही नहीं। दरअसल विक्रम की जिन्दगी का एक ही तो सपना है, मारिया से शादी करना। जबकि मारिया किसी दौलतमंद आदमी से शादी करना चाहती थी, जोकि विक्रम नहीं था। इसीलिये वो विक्रम से खिंची-खिंची रहती थी। उससे कम बात करती थी। मगर अब जबकि विक्रम चौदह करोड़ रुपये मूल्य के घोड़ों का मालिक बन चुका है, तो मारिया खुशी-खुशी उससे शादी करना कबूल करेगी।"

मेरी रीढ़ की हड्डी में ठण्ड की लहर दौड़ गयी।

धोखा! धोखा!! धोखा!!!

वही एक शब्द मेरी खोपड़ी में हथौड़े की तरह बजने लगा। एकाएक सारी तस्वीर मेरी आँखों के सामने साफ़ होती चली गयी।

इतना बड़ा धोखा मुझे कभी किसी प्रेमी ने नहीं दिया था।

विक्रम ने मुझे बिल्कुल बलि के बकरे की तरह इस्तेमाल किया था।

मेरी आंखों के गिर्द विक्रम और मारिया की वह मुलाकात घूमने लगी, जो सिल्वर बीच होटल के बगीचे में हुई थी। सच तो ये है, विक्रम ने ही मुझे हत्या के लिये उकसाया था। उसने जान-बूझकर अपने और मेरे दरम्यान एक दूरी पैदा की थी, जो उसको हासिल करने के लिये मेरे अंदर बैचेनी बढ़े। फिर उसने मारिया को दस लाख रुपए देकर तलाक लेने वाला प्रस्ताव भी मेरे सामने इसलिये रखा, ताकि मैं बस अभिजीत घोष को रास्ते से हटा देने का प्लान बनाने लगूं।

सारी साजिश विक्रम की रची हुई थी।

मैं तो सिर्फ उसके हाथों की कठपुतली थी, मामूली कठपुतली।

मैं जितना विक्रम की बारे में सोच रही थी, उतना मेरे अंदर क्रोध का ज्वार-भाटा उमड़ रहा था। विक्रम ने वह तमाम साजिश सिर्फ मारिया को हासिल करने के लिये रची थी।

मैं उस समय इन्सपेक्टर विकास बाली के सामने अपने चेहरे पर भूकंप जैसे भाव उभरने से बड़ी मुश्किल से रोक पा रही थी।

"कोई बात नहीं।" मैं विकास बाली के सामने खुद को पूरी तरह सहज दर्शाते हुए बोली- "अगर घोष साहब अपनी वसीयत में विक्रम के नाम पर वह आठ घोड़े छोड़ गये हैं, तो अच्छी ही बात है। वैसे भी उन जंगली जानवरों की सही ढंग से सेवा विक्रम ही कर सकता है, वह मेरे बस का नहीं है। मेरे लिये यह बंगला ही बहुत है।"

"यह बात तुम दिल से कह रही हो ?"

"क्यों ? भला दिल से क्यों न कहूंगी ?"

इन्सपेक्टर विकास बाली ने सिगरेट के दो-तीन कशऔर लगाए तथा फिर टोटा वहीं एश-ट्रे में रगड़कर बुझा दिया।

"तुम चाहे कितना ही नाटक क्यों न कर लो !" विकास बाली बोला- "मगर मेरे इस विश्वास को तुम डिगा नहीं सकती कि घोष साहब का खून तुम्हीं ने किया है। तुमने और

विक्रम ने । मुझे सिर्फ अब यह पता लगाना है कि तुम दोनों मिलकर प्रकाशक कमल जैन और कुमार को किस तरह बेवकूफ बना पाये । यह कैसे संभव हुआ कि जिस वक्त तुम पहाड़ी सड़क पर घोष साहब की लाश ठिकाने लगा रही थीं, उसी वक्त उन दोनों ने तुम्हें अंदर ऑफिस में भी देखा और तुम्हारी आवाज भी सुनी ।"

मुझे घबराहट होने लगी ।

इन्सपेक्टर विकास बाली हकीकत के बहुत नजदीक पहुंचता जा रहा था ।

एकाएक वह सोफा चेयर छोड़कर खड़ा हो गया ।

"फिलहाल तो मैं जा रहा हूं ।" विकास बाली ने सीधे मेरी आंखों में झांकते हुए कहा- "लेकिन जल्द ही मैं वापस लौटकर आऊंगा । और मेरे पास ऐसे सबूत भी होंगे, जो तुम्हारी यह मजबूत शहादत एक ही झटके में टूट जायेगी ।"

उसके बाद विकास बाली वहां से चला गया ।

मगर उसके जाने के काफी देर बाद तक भी उसके वह धमकी भरे शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे ।

□□□

हालांकि मैं अच्छी तरह जानती थी, इन्सपेक्टर विकास बाली के लिये मेरी उस शहादत को तोड़ना कोई आसान काम न होगा ।

लेकिन जितना तेज-तर्रार वो इन्सपेक्टर था, उस कारण मेरा आतंकित होना स्वाभाविक था ।

अलबत्ता यह विश्वास अब मेरा पक्का हो चुका था कि विक्रम ने मुझे धोखा दिया था ।

उस हरामजादे को शुरू से ही मालूम था कि चौदह करोड़ रुपए के वो बहुमूल्य घोड़े अभिजीत घोष के बाद उसके हाथ लगने वाले हैं ।

गलती मेरी ही थी, जो मैंने गोरखपुर से भागने के बाद एक और प्रेमी को अपने जीवन में आने का मौका दिया ।

विक्रम !

मैं जितना उसके बारे में सोच रही थी, उतना मेरा गुस्सा बढ़ रहा था ।

मैंने विक्रम को उसके किए की सजा जरूर देनी थी ।

मेरे अंदर का वही शैतान जाग उठा, जिसने मुझसे गोरखपुर में पहले सात प्रेमियों के खून कराए थे और फिर उसी शैतानियत की वो जिजीविषा थी, जिसके वशीभूत होकर मैंने अभिजीत घोष को भी मार डाला ।

एकाएक मैंने विक्रम को उस बंगले के अंदर बिल्कुल अकेले घेरने का प्लान बना लिया ।

मैंने इन्सपेक्टर विकास बाली के जाते ही सबसे पहले माधवन, कुमार और बहादुर को ड्राइंग हॉल में बुलाया तथा फिर उनके हाथ पर दो-दो महीने की एडवांस तनख्वाह रखी ।

तीनो चौंके ।

"य... यह आप हमें एडवांस तनख्वाह क्यों दे रही हैं मैडम ?" माधवन ने घोर उत्सुकता के साथ पूछा ।

"दरअसल तुम्हारे लिये एक बुरी खबर है ।" मैं किसी चट्टान की भांति दृढ़ लहजे में

बोली- “मैं तुम तीनों को नौकरी से आजाद कर रही हूं।”
“लेकिन हमारा कसूर क्या है?” कुमार विस्फारित लहजे में बोला।
“कसूर कुछ नहीं है। तुम लोग जानते ही हो, घोष साहब की बहुत अकस्मात ढंग से मृत्यु हुई है और मैं उस दुर्घटना को भुला नहीं पा रही हूं। इसलिये मैंने सोचा है, अब मैं कुछ महीने या फिर साल दो साल गोरखपुर के अपने घर में ही गुजारुंगी।”
“लेकिन...।” कुमार ने कुछ कहना चाहा।
“नहीं!” मैंने उसकी बात काट दी- “अब मैं और इस बंगले में नहीं रहना चाहती, यह मेरा अटल फैसला है।”
फिर कोई कुछ न बोला।
मुश्किल से एक घंटे के अंदर वह तीनों अपना सामान बांधकर वहां से चले गये।
अब पूरे बंगले में सिर्फ मैं रह गई।
बिल्कुल अकेली।
फिर मैं अभिजीत घोष के राइटिंग रूम में पहुंची। उसकी टेबल के सबसे नीचे वाली ड्रायर में मैंने एक मर्तबा छोटी सी रिवाल्वर पड़ी देखी थी।
मैंने ड्रायर खोली, रिवाल्वर अभी भी वहीं थी।
मैंने रिवाल्वर निकाल ली। अपनी पिछली जिंदगी में मैं इतने खून कर चुकी थी कि रिवॉल्वर जैसे वैपन को हैंडिल करना बखूबी जानती थी। मैंने रिवाल्वर का चैंबर खोलकर देखा। वह गोलियों से फूल था। मैंने उसकी नाल देखी, ऐसा मालूम होता था, जैसे उसकी हाल-फिलहाल में ही ऑयलिंग की गई हो। सेफ्टी लॉक भी बढ़िया काम कर रहा था। वह जर्मन मेड रिवाल्वर थी और किसी उम्दा कम्पनी की थी।
मैं रिवाल्वर लेकर वापस ड्राइंग हाल में आकर बैठ गई। उसके बाद मैं बड़ी बेसब्री से विक्रम का इंतजार करने लगी।

□□□

समय धीरे-धीरे गुजरने लगा।
जैसे-जैसे शाम घिरती आ रही थी, ठीक उसी अनुपात में चारों तरफ अंधेरा भी फैलने लगा।
एकाएक इतना बड़ा बंगला यूं प्रतीत होने लगा, जैसे वह कोई भुतहा इमारत हो और वहां सदियों से कोई न रहता हो।
वातावरण में दो ही आवाजें थीं, घड़ी की टिक-टिक की आवाज और मेरे दिल की धड़कनों की आवाज।
काफी देर बाद मुझे लंबे-चौड़े ड्राइव-वे पर फिएट कार आती दिखाई पड़ी।
शीघ्र ही वो कार बंगले के बिल्कुल सामने आकर रुकी। फिर उसमें से विक्रम और मारिया उतरे।
मारिया, तो उस हरामजादे विक्रम की अब इतनी हिम्मत हो गई थी कि वह अपनी सहेली को लेकर बंगले में भी आ पहुंचा था। विक्रम भी आज काफी सजा-धजा नजर आ रहा था। कपड़े बदले हुए थे और बाल शैंपू से धोए थे, इसलिये उसके सिर का एक-एक

बाल खिला हुआ था। मारिया भी उस दिन उससे कुछ ज्यादा सटकर चल रही थी और हंस-हंसकर बात कर रही थी।
उन दोनों को देखकर मेरा खून और भी बुरी तरह खौल उठा।
वह दोनों सीढ़ियां चढ़कर बंगले के विशालकाय चबूतरे पर आए तथा फिर बंगले के अंदर की तरफ बढ़े।
उनके कदमों के पदचापों की आवाज मेरे कानों में गूंजने लगी।
"कुमार !" विक्रम बंगले में आते ही गला फाड़कर चिल्लाया- "कुमार !"
खामोशी !
निस्तब्धता !
रिवाल्वर की बैरल पर मेरे हाथ और भी ज्यादा सख्ती के साथ कस गये तथा मैंने रिवाल्वर अपने कोट की जेब में छुपा ली।
मैं कान लगाकर सुनने लगी।
वह दोनों अब गलियारे में थे और धीरे-धीरे उसी तरफ बढ़ रहे थे।
"कुमार !" विक्रम फिर चिल्लाया।
मगर उसे कोई उत्तर न मिला।
"आश्चर्य है।" वह बोला- "यह कुमार न जाने कहां चला गया। मेन गेट पर बहादुर भी नहीं था। बंगले में ऐसी खामोशी मैंने पहले कभी नहीं देखी।"
"कहीं ऐसा तो नहीं।" मारिया का सशंकित स्वर- "कि सब बंगले से कहीं चले गये हों ?"
"एक साथ भला सब कहां जा सकते हैं। और फिर देख नहीं रही, पूरा बंगला खुला पड़ा है।"
विक्रम मेरे ऑफिस की तरफ आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।
मैं ही चेयर छोड़कर खड़ी हो गई तथा फिर बाहर निकली।

□□□

विक्रम और मारिया उस समय किचन के पास थे तथा कुमार को ही खोज रहे थे।
उसे किचन में भी न देखकर वह दोनों कुछ बेचौन हो उठे और टेरेस के सामने की तरफ झांककर देखने लगे। माधवन भी उन्हें नहीं नजर नहीं आया।
"हेलो विक्रम !" तभी मैं उन दोनों के पीछे जा खड़ी हुई- "क्या मुझे तलाशने की कोशिश नहीं करोगे ?"
वह दोनों एकदम इस तरह चौंके, जैसे किसी ने उन्हें आकाश से धरती पर पटक मारा हो।
विक्रम की आंखों में तो मुझे देखकर साफ-साफ खौफ के चिन्ह उभर आए थे।
"क्या बात है, आज काफी स्मार्ट नजर आ रहे हो विक्रम !" मैं मुस्कुराई- "इस तरह के नए कपड़े पहने हुए मैंने तुम्हें जिंदगी में पहली बार देखा है और कोई खुशबू भी लगाई हुई है, शायद कोई विलायती सेंट है।"
"ऐसी कोई बात नहीं।" वह थोड़ा खिसियाने लहजे में बोला- "मारिया के पास ही एक

सेन्ट की शीशी थी, इसी ने लगा दिया। लेकिन बंगले में कोई दिखाई नहीं पड़ रहा, सब कहां चले गये ?"

"मैंने सबकी छुट्टी कर दी है।" मैं इत्मीनान के साथ बोली।

"छ...छुट्टी !" विक्रम और हड़बड़ाया- "क्या मतलब ?"

"छुट्टी का क्या मतलब होता है डियर ! अब इस पूरे बंगले में तुम्हारे और मेरे सिवा कोई नहीं है। मैंने सोचा तुम अपनी मल्लिका को लेकर यहां आ रहे हो, इसलिये तुम्हारे स्वागत की भरपूर तैयारियां की जायें। और एक रहस्य का तो मुझे आज ही पता चला कि तुम चौदह करोड़ की विपुल धनराशि के स्वामी बन चुके हो।"

"हां !" विक्रम सिटपिटाकर बोला- "मुझे भी घोष साहब की वसीयत के बारे में थोड़ी देर पहले ही मालूम हुआ कि वह सभी आठ घोड़े मेरे नाम कर गये हैं।"

"अच्छा !" मैंने बड़ी वेधक नजरों से उसकी तरफ देखा- "थोड़ी देर पहले ही पता चला।"

"हां !" विक्रम की आवाज कुछ कंपकपाई।

मारिया की आंखों में मुझे सबसे ज्यादा डर दिखाई दे रहा था। वह अपने आप में ही सिकुड़ी-सिमटी जा रही थी।

वो बहुत घबराई हुई थी।

"और मारिया को तुम यहां किसलिये लेकर आए हो।"

"तुम्हीं से तो मिलाने के लिये लाया था।" विक्रम तत्परता के साथ बोला- "मैं समझता हूं, मारिया वाले अध्याय को अब खत्म कर देना चाहिए। तुम इसे दस लाख रुपए देकर रुख्सत करो। फिर यह भी आजाद होगी और मैं भी आजाद होऊंगा।"

"अच्छा ! परंतु तलाक लेने से पहले शादी करनी भी तो जरूरी होती है माय डियर ! और अभी थोड़ी देर पहले इन्सपेक्टर विकास बाली से मुझे मालूम हुआ है कि अभी तो तुम्हारी शादी भी नहीं हुई। अभी तो तुम लोग सिर्फ प्रेम की पींगे ही बढ़ा रहे हो।"

मेरे इस वाक्य ने विक्रम जैसे धुरंधर की भी मुकम्मल हवा खराब करके रख दी।

वो भांप गया, सारा रहस्य मेरे सामने उजागर हो चुका है।

"मुझे अब चलना चाहिए।" वह एकाएक मारिया को लेकर पलटा।

"नहीं ! इतनी आसानी से अब तुम लोग नहीं जा सकते।" मैं फौरन उन दोनों के सामने जाकर खड़ी हो गई।

इतना ही नहीं, मैंने तुरंत अपने कोट की जेब से रिवाल्वर भी बाहर निकाल लिया।

"य...यह सब क्या है ?"

"तुम जानते ही हो, मैं गोरखपुर की लेडी किलर हूं विक्रम ! जो लड़की अपने साथ प्रेमियों का खून कर सकती है, वह आठवें प्रेमी का खून क्यों नहीं कर सकती ?"

"त...तुम मेरा खून करोगी ?"

विक्रम की सारी हरकतें मानों फ्रीज हो गयीं।

"हां, तुम्हारा भी।" मैंने दांत किटकिटाए- "और तुम्हारे साथ तुम्हारी इस सहेली का भी, जिसके कारण तुमने मुझे धोखा दिया।"

"न...नहीं।" मारिया की चीख निकल गई।

वह एकाएक विक्रम को भी वहां छोड़कर भागी।
मगर !
वो अभी भागकर थोड़ी ही दूर गयी होगी कि फौरन मैंने रिवाल्वर का ट्रेगर दबा दिया।
धांय !
गोली भागती हुई मारिया की टांग में लगी। वो चीखते हुए नीचे गिरी और उसने पुनः खड़े होकर भागने का उपक्रम किया।
धांय !
मैंने एक फायर और किया।
मारिया की अत्यन्त कष्टदायक और घुटी-घुटी चीख निकल गयी।
इस बार गोली ठीक उसकी गर्दन में जाकर लगी थी। गोली लगते ही वह वहीं धड़ाम से नीचे फर्श पर ढेर हो गई और उसकी गर्दन से थुल-थुल करके खून बहने लगा।
"मारिया !" विक्रम चिल्लाता हुआ उसकी तरफ झपटा, लेकिन वह उसे छू भी पाता, उससे पहले ही मारिया के प्राण पखेरू उड़ गये।
मारिया की लाश देखते ही विक्रम वहशी हो उठा।
वह एकदम मेरी तरफ पलटा।
मगर सच तो ये है, उस समय मैं भी कुछ कम वहशी नहीं थी। मैंने एक फायर और किया।
गोली विक्रम की बिल्कुल खोपड़ी को हवा देती हुई गुजरी।
विक्रम चीख उठा। वो चाहे लाख दिलेर आदमी था, मगर इतना दिलेर नहीं था, जो यूं मौत से आंख-मिचौली खेल सके। गोली जैसे ही उसकी खोपड़ी को हवा देते हुए गुजरी, उसके माथे पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूंदें चुहचुहा उठीं।
"अगर इतने ही मर्द के बच्चे हो।" मैंने उसे साफतौर पर कर्कश लहजे में ललकारा- "तो आगे बढ़ो और मार डालो मुझे। वरना जो दगाबाजी तुमने मेरे साथ की है, उसके ऐवज में आज तुम्हारी खैर नहीं है।"
"म...मैंने तुम्हारे साथ कोई दगाबाज नहीं की।" विक्रम की आवाज काफी सहमी-सहमी थी।
"क्या तुम्हारा यह झूठ दगाबाजी नहीं है।" मैं गरजी- "जो तुमने मुझसे मारिया के बारे में बोला। तुमने मुझसे कहा कि वो तुम्हारी बीवी है और तुम उससे तलाक लेना चाहते हो।"
विक्रम चुप !
उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।
"और क्या तुमने घोष साहब की वसीयत के बारे में मुझसे झूठ नहीं बोला था ?" मैं रिवाल्वर उसके सीने की तरफ ताने-ताने गरजी- "तुमने मुझसे कहा कि उनकी सौ करोड़ से भी ज्यादा की चल-अचल संपत्ति है। और क्या तुम यह बात पहले से नहीं जानते थे कि वह सभी आठ घोड़े वसीयत के मुताबिक तुम्हें मिलने वाले हैं ? उन घोड़ों को हासिल करने के लिये ही तुमने न सिर्फ मुझे धोखा दिया, बल्कि घोष साहब की भी हत्या करा डाली।"
मैं धीरे-धीरे अब विक्रम की तरफ बढ़ने लगी।

सिर्फ मारिया का खून करके ही मेरा दिमाग ठंडा नहीं हुआ था।

"म... मेरे नजदीक मत आना।" विक्रम की आवाज कंपकंपा उठी- "तुम्हारा दिमाग फिर गया है।"

"हां, मेरा दिमाग फिर गया है।" मेरी आंखें लाल सुर्ख हो रही थीं- "लेकिन जरा सोचो, यह दिमाग किसकी वजह से फिरा है विक्रम ! तुम्हारी वजह से। तुम्हें मैंने कितना टूट-टूटकर चाहा था। तुम्हारे कारण मैंने अभिजीत घोष जैसे अपने पति को भी मार डाला, जो मेरी एक-एक बात का ख्याल रखता था। और तुमसे मुझे क्या मिला, धोखा ! सिर्फ धोखा ! जब तुम मेरे पास होते थे, तब भी तुम्हारे दिमाग पर मारिया सवार रहती थी। तुम तो सिर्फ उसे हासिल करने के लिये मेरा इस्तेमाल कर रहे थे।"

मैं जब बोलने में तल्लीन थी, तभी एकाएक विक्रम छलांग लगाकर सामने गलियारे में भागा।

मैं भी उसके पीछे दौड़ी।

विक्रम अब भागता हुआ जल्दी से अभिजीत घोष के राइटिंग-रूम में घुस गया। वहां घुसते ही उसने आनन-फानन मेज की सबसे नीचली ड्रायर खोली और उसमें जल्दी-जल्दी कुछ तलाशने लगा।

मैं हंसी।

"तुम ड्रायर में जो रिवाल्वर तलाश रहे हो विक्रम !" मैं फुंफकारी- "वही रिवाल्वर इस वक्त मेरे हाथ में है।"

विक्रम ने झटके से गर्दन ऊपर उठाई।

उसकी हवा और भी ज्यादा खुश्क हो गई।

"मैं समझती हूं।" मैं राइटिंग रूम के दरवाजे पर हिमालय की तरह खड़े होकर बोली- "अब तुम्हें भी यमलोक के लिये प्रस्थान कर ही लेना चाहिए विक्रम ! मारिया मर चुकी है, क्या अब अपनी प्रेमिका का तुम अंत तक साथ नहीं दोगे ?"

मैंने रिवाल्वर का सेफ्टी कैच पीछे खींचा।

"नहीं !" वो दहाड़ उठा- "गोली मत चलाना।"

"क्यों ? मरने से डर लगता है।" मैं जोर से हंसी- "मारिया के लिये अपने अभिजीत घोष जैसे वफादार मालिक की जान ले सकते हो, खुद अपनी जान नहीं दे सकते।"

विक्रम तभी चीते की तरह मेरे ऊपर झपट पड़ा।

वह एकदम अकस्मात तौर पर मेरे ऊपर झपटा था।

मेरी चीख निकल गई।

वो मुझे लिये-लिये सीधा धड़ाम् से नीचे गिरा और फिर उसका हाथ मेरे रिवाल्वर के ऊपर झपटा।

मगर जैसाकि आप लोग जानते ही हैं, मौत के खेल की मैं उससे बड़ी खिलाड़ी थी। मैंने शंकर और रंजीत पटेल जैसे महारथियों को इस खेल में पछाड़ डाला था। विक्रम मेरे हाथ से रिवाल्वर छीन पाता, उससे पहले ही मैं कलाबाजी खा गई।

न सिर्फ कलाबाजी खा गई, बल्कि एकदम उसके शिकंजे से आजाद होकर जम्प लेकर उठी।

फिर मैंने विक्रम को मौका नहीं दिया। मैं रिवाल्वर का ट्रेगर दबाती चली गई।
धांय! धांय! धांय!
गोलियों की आवाज से वह पूरा बंगला थर्रा उठा।
विक्रम खून से लथपथ होता चला गया।
हालांकि पहली ही गोली उसका काम तमाम कर गई थी, लेकिन फिर भी मैं तब तक ट्रेगर दबाती चली गई, जब तक रिवाल्वर का पूरा चैम्बर खाली न हो गया।

□□□

उस अत्यंत विशालकाय बंगले में अब दो लाशें पड़ी थीं।
विक्रम और मारिया की लाशें।
विक्रम की हत्या करने के बाद मैं वहीं राइटिंग रूम की चौखट के पास नीचे फर्श पर बैठ गई।
मैं हांफ रही थी, जैसे मैं किसी बहुत लंबी मैराथन दौड़ में भाग लेकर आ रही होऊं।
मेरी आंखें धुआं-धुआं हो रही थीं।
मैं नहीं जानती थी, अब मेरा भविष्य क्या है। पति और प्रेमी, दोनों को मैं अपने हाथों से मार चुकी थी।
समय धीरे-धीरे गुजरता रहा। अंधेरा अब और भी ज्यादा बढ़ गया था। तभी मैंने बाहर बंगले के ड्राइव-वे पर एक कार के रुकने की आवाज सुनी। मगर मैं जरा भी आतंकित न हुई। अब मुझे किसी की परवाह न थी। मैं अपना काम कर चुकी थी।
फिर कोई जल्दी-जल्दी सीढ़ियां चढ़ता हुआ अंदर आ गया।
उसके बाद गलियारे में किसी के चलने की आवाज सुनाई पड़ी।
"कुमार !" कोई जोर से चिल्लाया- "कुमार !"
आवाज मेरी जानी-पहचानी थी।
मैं लाश से थोड़ा फासले पर किंकर्तव्यविमूढ़-सी अवस्था में बैठी रही। लाश के आसपास अब खून का तालाब-सा बनने लगा था। वो रिवाल्वर अभी भी मेरे पास थी, जिससे मैंने दो-दो खून किए थे।
आगंतुक कुछ देर बंगले में इधर-से-उधर घूमता रहा और फिर मेरे सामने आ खड़ा हुआ।
वह इन्सपेक्टर विकास बाली था।
मुझे उस हालत में देखकर वह चौंका।
"आओ इंस्पेक्टर ! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी।" मेरी आवाज उस समय बहुत निर्जीव, बहुत धीमी थी, जैसे कुएं में से निकल रही हो- "तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है। अब तुम्हें मेरी बख्तरबंद शहादत को तोड़ने के लिये ज्यादा सिर खपाने की आवश्यकता नहीं है। मैं कबूल करती हूं, मैंने ही घोष साहब का खून किया है। सिर्फ घोष साहब का ही नहीं, बल्कि विक्रम का भी, मारिया का भी।"
विक्रम के नाम पर इन्सपेक्टर विकास बाली की निगाह मुझसे थोड़ा फासले पर पड़ी विक्रम की लाश पर गई।
विक्रम की लाश देखकर वह और चौंका।

वह कितनी ही देर बहुत स्तंभित-सी अवस्था में मेरे नजदीक खड़ा रहा । मेरी हालत देखकर मानो उसे सदमा पहुंचा था । उसने अपनी जेब से सफेद रुमाल निकाला और फिर मेरे हाथ में मौजूद रिवाल्वर, मेरे फिंगर प्रिंट सहित उस रुमाल में लपेटकर अपने अधिकार में कर लिया । उसके बाद वो वहीं घुटनों के बल मेरे पास बैठ गया ।

"और क्या तुम आज अपने उन सात प्रेमियों की हत्याओं को कबूल नहीं करोगी ।" वह मेरी आंखों में झांकता हुआ बोला- "जो हत्याएं तुमने गोरखपुर में कीं ?"

अब मेरे चौंकने की बारी थी ।

मैंने एकदम विस्मयपूर्वक अपनी गर्दन ऊपर उठाई ।

"तुम मेरे अतीत के बारे में कैसे जानते हो ?"

"दरअसल जब तुमने बताया था कि तुम गोरखपुर की हो ।" इन्सपेक्टर विकास बाली बोला- "और तुम्हारा नाम नताशा शर्मा है, मुझे तभी तुम्हारे ऊपर शक हुआ था । अखबार में भी मैंने लेडी किलर वाले प्रकरण के बारे में पढ़ा कि नताशा शर्मा गोरखपुर से गायब है । मैं तभी भांप गया था कि तुम्हीं वो नताशा शर्मा हो । लेकिन फिर भी मैंने तुम्हें कभी कुछ नहीं कहा ।"

"क्यों ?" मैं कौतुहलपूर्वक बोली- "क्यों कुछ नहीं कहा ?"

"क्योंकि जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा ।" विकास बाली बहुत भाव-विह्वल स्वर में बोला- "तभी मुझे तुम्हारे अंदर अपनी गीता नजर आई थी ।"

"ग...गीता ।"

"हां गीता, मेरी बीवी, जिसे एक दुर्दांत अपराधी ने मार डाला था । तुम्हारी शक्ल काफी कुछ गीता से मिलती थी । फिर मैंने देखा कि तुम एक नई जिंदगी शुरू करने की तलबगार हो, इसीलिये मैंने तुम्हारे शान्त जीवन में पत्थर मारना मुनासिब नहीं समझा । लेकिन फिर जब तुमने घोष साहब से शादी की, तो मुझे अच्छा नहीं लगा । बहुत फर्क था तुम दोनों की उम्र में । सिर्फ घोष साहब का ही नहीं, बल्कि तुम्हारा भी वो फैसला गलत था । और उससे भी बड़ी गलती तुमने घोष साहब की हत्या करके की ।"

मैंने अपनी नजरें झुका लीं ।

"मिस्टर बाली !" मैंने गहरी सांस लेकर कहा- "गलतियां तो मैंने अपनी जिंदगी में न जाने कितनी की थीं । यह सब मेरी किस्मत का दोष था ।"

अब मुझे इन्सपेक्टर विकास बाली से भी उतना डर नहीं लग रहा था । मैंने उसे पहचानने में देर की थी । सच तो ये है, वह शुरू से ही मेरा शुभचिंतक था ।

"गीता !" एकाएक इंस्पेक्टर विकास बाली ने मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया और बड़बड़या- "कभी मैंने अपनी गीता की हत्या के इल्जाम में एक अपराधी को गोली मार दी थी । ल... लेकिन आज मेरी वही गीता खुद कई हत्याओं के इल्जाम में अदालत के कटघरे में जाकर खड़ी होगी । यह मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी हार है, सबसे बड़ी हार ।"

इन्सपेक्टर विकास बाली बड़बड़ाने लगा । उसकी हालत अर्द्धविक्षिप्तों जैसी थी ।

वह सचमुच शुरू से ही मुझमें अपनी पत्नी गीता के रूप में देख रहा था और अब उसे सदमा पहुंचा था ।

"मिस्टर विकास बाली ! आई एम सॉरी !" मैं मानो अपना दुख भूल गई और मैंने उसका

कंधा थपथपाया।

लेकिन विकास बाली ने मानो मेरे शब्द सुने ही नहीं।

□□□

मुझे अदालत में पेश किया गया।

वो मुकदमा कई मायनों में विचित्र था। सबसे ज्यादा विचित्र तो वह इसलिये था, क्योंकि इंस्पेक्टर विकास बाली जिन्दगी में पहली बार किसी अपराधी के साथ रियायत से पेश आया। उसने मेरा गोरखपुर की लेडी किलर वाला चरित्र अदालत के सामने उजागर नहीं किया। मेरे ऊपर सिर्फ अभिजीत घोष, विक्रम और मारिया की हत्या के इल्जाम में अदालत में मुकदमा चला।

मुझे अदालत ने दस वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

मैं जानती थी, मैंने जो अपराध किये थे, उसके ऐवज में वह सजा बहुत कम थी और यह सब इंस्पेक्टर विकास बाली के विशेष प्रयासों से हुआ था।

मैं जब महिला पुलिसकर्मियों के घेरे में कोर्ट रूम से बाहर निकली, तो इन्सपेक्टर विकास बाली मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। उसकी आंखों में अभी भी दुख के काले साए मंडरा रहे थे।

"नताशा !" वो धीमे स्वर में बोला- "मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं।"

"क्या ?"

"मेरी इच्छा है कि जब तुम दस साल की सजा काटकर जेल से बाहर निकलो, तो गोरखनाथ मन्दिर के उस साधु की वो भविष्यवाणी गलत साबित हो जाये, जो उसने तुम्हारे बारे में की थी। यही कि तुम्हारे जीवन में पुरुष का प्रेम नहीं है।"

"लेकिन कैसे होगी वो भविष्यवाणी गलत ?" मैं चौंकी।

"मैं उस भविष्यवाणी को गलत साबित करूंगा।" इंस्पेक्टर विकास बाली गरमजोशी के साथ बोला- "मैं तुम्हें पुरुष का प्रेम दूंगा।"

मेरे हलक से एकाएक ऐसा हंसी का कहकहा उबल पड़ा, जैसे किसी ने कोरे लट्ठे का थान फाड़ दिया हो।

जैसे मैं पागल हो गयी होऊं।

"त... तुम !" विकास बाली हड़बड़ा उठा- "तुम हंस क्यों रही हो ?"

"एक और प्रेमी !" मैंने हंसते हुए ही कहा- "आखिर मेरी जिन्दगी में एक और प्रेमी आ गया।"

"मैं एक और प्रेमी बनकर नहीं।" इन्सपेक्टर विकास बाली ने एकाएक सख्ती से मेरी बात काट दी- "बल्कि एक पति बनकर तुम्हारी जिंदगी में आना चाहता हूं और मैं गोरखपुर की नताशा शर्मा को नहीं बल्कि अपनी पत्नी गीता को अपनाना चाहता हूं। गीता, जिसका मेरा जन्म-जन्मांतर का साथ है।"

मेरी हंसी भक्क से गायब हो गई।

मैं आश्चर्य से विकास बाली की तरफ देखने लगी। जबकि महिला पुलिसकर्मी मेरी हथकड़ी पकड़कर धीरे-धीरे मुझे उससे दूर लेती चली गई।

□□□

दस वर्ष !

दस वर्ष का वह विराट समय भी यूं ही पंख लगाकर उड़ता चला गया था, जैसे हिमालय की गगनचुम्बी चोटी पर बैठा कोई गिध्द अनन्त आकाश में उड़ता चला जाये।

इन दस वर्षों ने काफी बदल दिया था मुझे। मेरे सुर्ख गालों की ललछोही आभा अब नदारद हो चुकी थी। और मेरे बाल भी अब हल्के-हल्के सफेद होने लगे थे।

जेल के फाटक से बाहर निकलते ही मैं चौंकी।

मैंने देखा, इंस्पेक्टर विकास बाली अपनी नीली जिप्सी के साथ मुझे ले जाने के लिये बाहर ही खड़ा था। इन दस वर्षों ने उसे भी काफी बदला था और उसकी कलमें भी सफेद हो चली थीं।

"ओह !" मैं धीमी आवाज में बोली- "मैंने समझा था, इन दस वर्षों के दौरान तुम मुझे भूल भी चुके होओगे।"

"मैं हर किसी को भूल सकता हूं।" विकास बाली ने फौरन आगे बढ़कर मुझे अपनी बाहों में समेट लिया- "लेकिन अपनी गीता को कभी नहीं भूल सकता, कभी नहीं।"

मेरी आंखों में खुशी के आंसू झिलमिलाने लगे।

मैं जानती थी, मुझे अब वाकई एक सच्चा प्रेमी मिल गया था।

प्रेमी, जो अगर अन्तर्मन से प्यार करे, तो उसकी बाहों जैसा स्वर्ग दुनिया में और कहीं नहीं।

समाप्त